

आधुनिक महिलाओं के विचारों का दर्पण

माधुरी

जीतिए 10 हजार रु. के गिफ्ट हैम्पर पृष्ठ ११ पर

सितंबर 1997
रुपए: 18.00

आंतरिक सज्जा व बागवानी पर विशेष सामग्री

- गृहसज्जा और वास्तुशास्त्र
- साहित्य की मोहिनी- शोभा डे
- फूलों की सुंदर व्यवस्थाः इकेबाना
- मिलिए मिस इंडिया (नार्थ) से

घर के कैनवास पर कल्पना के रंग


सुन्दर
त्वचा निखारे
भीतर से
SAFI
THE BLOOD PURIFIER
कम से कम तीन महीने तक साफ़ी पिजिए और मुहाँसों व त्वचा की अन्य परेशानियों से हमेशा के लिए छुटकारा पाइये। कुछ और इस्तेमाल करके आपको स्थायी लाभ नहीं मिलेगा क्योंकि केवल साफ़ी ही खून के भीतरी विकारों को दूर करती है जो कील, मुहाँसे, फ़ोड़े-फुसिंयों और झाइयों आदि के कारण है – तो आज ही से साफ़ी अपनायें और अपनी त्वचा को हसीन व जवान बनायें। सुन्दर दिखें और सुन्दरता दिखायें, अब छुपने की जरूरत नहीं।
100, 200 व 500 मि.ली में उपलब्ध.
हमदर्द
साफ़ी
अब मुहाँसों से छुटकारा पाईये। हमेशा के लिए

सितंबर 1997

माधुरी

आधुनिक महिलाओं के विचारों का दर्पण

वर्ष : 1
अंक : 8



परिचर्चा

माधुरी महिला

आपकी संस्था

कैरियर

पर्यटन

फैशन

85

कथा माधुरी

रूप माधुरी

स्वाद माधुरी



103

आवरण : मोहन कुमार

ी के पाठकों में जुलाई अंक के गिफ्ट हैंपर
कार की विजेता हैं : नीना खन्ना, 287, बाग
खान, किशन गंज, दिल्ली - 110 007.

20



74



संपादक व प्रकाशक
चन्द्रप्रभा

संपादकीय कार्यालय :
चन्द्रप्रभा पब्लिकेशंस प्रा. लि.,
टी-6, आकर्षण भवन,
चौथी मंजिल, 4754/23,
अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली - 110002.
दूरभाष : 3289616, 3289626

मुंबई कार्यालय :
बी-10, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल
एस्टेट, एम.बी. रोड, मरोल नाका
अँधेरी पूर्व, मुंबई - 400059
दूरभाष : 8508949

विज्ञापन कार्यालय :
● दिल्ली
देवेंद्र झाँजी
मुख्य विज्ञापन प्रबंधक
मुख्य विज्ञापन प्रबंधक
310, दीपशिखा बिल्डिंग,
8, राजेंद्र प्लेस,
नई दिल्ली - 110008
दूरभाष : 5727667, 5765950
● मुंबई
पी. एस. कोरगाँवकर
दूरभाष : 2661599, 2661946,
2654641
● चेन्नई
एस. वेंकटारमन
दूरभाष : 2456112.
● भोपाल
रवींद्र कुमार सोनी
दूरभाष : 793610.
● अमृतसर
शम्मी सरीन
दूरभाष : 224596.

●

चन्द्रप्रभा पब्लिकेशंस प्रा. लि. के
लिए मुद्रक व प्रकाशक चन्द्रप्रभा
द्वारा गोपसंस पेपर्स लिमिटेड,
ए-28, सेक्टर-9, नोएडा-201301,
गौतम बुद्ध नगर से छपवाकर टी-6,
आकर्षण भवन, चौथी मंजिल,
4754/23, अंसारी रोड, दरिया गंज,
नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित.

आपकी बात

'माधुरी' में वे सब बाते हैं, जो हमें चाहिए. हमें जुलाई अंक, 'प्रेम विशेषांक' बेहद पसंद आया. 'उर्वशी' कहानी बहुत अच्छी लगी. इस जैसी कहानियाँ आगे भी शामिल करें.

– दिनेश चतुर्वेदी, महाराष्ट्र

★ ★ ★

'माधुरी' पत्रिका इतनी मनोरंजक, लुभावनी और ज्ञानवर्द्धक हो सकती है, मैंने सोचा भी नहीं था. पर जब पढ़ी, तो मजा आ गया. 'माधुरी' का जुलाई, 1997 का 'प्रेम विशेषांक' पढ़ा. बहुत अच्छा लगा. 'प्यार अखिर है क्या', 'कल्पना लोक की सैर नहीं है प्रेम विवाह', 'प्रेम में असफलता', स्वाद माधुरी, स्वास्थ्य, फैशन व मनोरंजन आलेख बहुत अच्छे लगे. अब मैं माधुरी का हर अंक पढ़ना चाहूँगा. मुझे माधुरी का बेसब्री से इंतजार रहेगा.

– अक्षय पटीदार, रतलाम

★ ★ ★

'माधुरी' आसानी से गाँव-कस्बों के बुक स्टालों पर मिल जाती है. इससे सहज ही इसकी बढ़ती लोकप्रियता का अंदाजा लग रहा है. कृपया 'माधुरी' में एक 'माधुरी' क्लब की स्थापना करें ताकि यह पत्रिका अपनी लोकप्रियता में सबसे आगे नजर आए.

आपकी संपादकीय हर बार विशेष तौर पर पसंद आती है. 'कैलाश मानसरोवर का यात्रा विवरण,' 'पत्रकारिता में कैरियर,' कहानी 'उर्वशी,' तथा कविताएँ विशेष तौर पर पसंद आईं.

– बद्री प्रसाद वर्मा, गोरखपुर

★ ★ ★

'कैरियर पर 16 पृष्ठों की विशेष सामग्री' व मुझे बहुत अच्छा लगा. मैं सोचता हूँ यह पत्रिका नवयुवकों के लिए भी लाभदायक साबित होगी. मैं 'माधुरी' का नियमित पाठक हूँ. आपका हर अंक अच्छा लगा, पर सबसे बेहतरीन अंक मुझे इसका जून अंक लगा. **– प्रदीप वर्मा, भिलाई**

★ ★ ★

मैं आपकी पत्रिका की नियमित पाठिका हूँ और साथ ही आपको धन्यवाद देना चाहती हूँ कि आपने फिर से 'माधुरी' पत्रिका अपने पाठकों को दी. 'माधुरी' का हर अंक संभालकर रखने योग्य है. भविष्य में भी आप इसी तरह पत्रिका हम तक पहुँचाते रहेंगे, यही मेरी कामना है.

– किरण बाला

★ ★ ★

यूँ तो घर में ढेरों पत्रिकाएँ आती हैं, मगर हमें जितनी पसंद 'माधुरी' है, उतनी अन्य पत्रिकाएँ नहीं. मैं हर माह इसे पढ़ती हूँ. मुझे काफी काम की जानकारी इससे हासिल होती है. महिलाओं के इर्द-गिर्द घूमती, हर वक्त 'माधुरी' अपनी पकड़ मजबूत बना रही है. घर में हमारे बच्चे भी इसे पढ़ते हैं, मगर बच्चों की शिकायत है कि इसमें बच्चों की कहानियाँ, कविताएँ नहीं होती हैं. लिहाजा बाल जगत की चार पृष्ठ सामग्री दें तो हमें खुशी होगी.

जुलाई अंक में प्रकाशित कहानियाँ 'रेशमा', 'अम्मां' काफी पसंद आईं. परिचर्चा 'कैसा हो सपनों का राजकुमार' काफी दिलचस्प लगी. 'क्या डेटिंग एक अपराध है', 'प्रेम विवाह' पर लेख अच्छे लगे.

– शकुंतला अनजान, गोरखपुर



अरी ओ 'माधुरी

अरी ओ सद्यस्नाता सुंदरी
तुम्हारी ये रूप माधुरी
बजा रही मेरे मन में प्रीत की बाँसुरी
नैन-बेचैन हुए
मूक सारे बैन हुए
धड़कनें दिल की हुई बावरी
खुशबू महकी तोड़ के हर बंधन
चंदन हो गया तेरा गोरा बदन
बादल का टुकड़ा है या कोई पंखुरी
छाँह रहे चाहे धूप रहे
मेरे सामने तेरा ये रूप रहे
जब तक शेष है साँस आखरी
अरी ओ रूप माधुरी.

– बलबीर प्रकाश गुप्ता, डोंबिवली

★ ★ ★

'माधुरी' अपने छोटे से प्रकाशन समय में ही आज महिलाओं की सर्वप्रिय पत्रिका के रूप में उभरकर सामने आई है. आपके इस दावे के साथ मैं तो क्या, वे सभी पाठक सहमत हैं, जिन्होंने 'माधुरी' के किसी भी अंक की झलक पाई हो.

– मोनिका शर्मा, अमृतसर

★ ★ ★

'माधुरी' का जुलाई अंक पढ़ा. बेहद पसंद आया. पत्रिका बेहद अच्छी लगी. 'क्या डे[टिंग] एक अपराध है' लेख बेहद अच्छा बन पड़ा दरअसल कॉलजों में डेटिंग के नाम पर हरकतें हो रही हैं, उन्हें बंद किया जा[ना] चाहिए. दिल्ली के अनेक कॉलेजों में खुलेआ[म] ऐसा आप देख सकते हैं. बच्चों पर नजर रख[ने] की जिम्मेदारी माँ की होती है, लेकि[न] महानगरों में इसका अभाव है. पत्रिका में काफ[ी] अच्छी जानकारी दी गई है. आशा है पाठ[क] इसका लाभ उठा सकेंगे.

– मुन्ना खान पठान, गाजियाबा[द]

★ ★ ★

'कैलाश मानसरोवर का विवरण' जुलाई अं[क] का प्रमुख आकर्षण रहा. 'डेटिंग', 'प्यार', 'प्रे[म] विवाह' एवं कहानियाँ 'उर्वशी' व 'तसवीर' म[न] को छू गईं.

मेरी ओर से यह सुझाव है कि कुछ पृष्ठ कम करके मूल्य रु. 15 करें तथा फिल्मों पर कम देकर एक पृष्ठ बच्चों पर अवश्य दें.

– माधुरी मिश्र, कानपु[र]

★ ★ ★

पत्रिका के दो अंक देखे. 'साँप' औ[र] 'दावानल' कहानियाँ विशेषतः पढ़ी. यह पहल[ी] पत्रिका है जो यौन संबंधों के जीवन पर व्यापक प्रभाव संबंधी कहानियों को बेबाक ढंग से छापने का साहस कर रही है. यह निश्चय ही पत्रिका को प्रसार देगा. मेरी बधाई स्वीकार करें.

– दिनेश चंद्र दूबे, ग्वालिय[र]

★ ★ ★

पिछले दो माह से मैं 'माधुरी' पढ़ रही हूँ. इ[न] दो अंकों को पढ़ने के बाद मुझे पहले न पढ़े जा[ने] वाले अंकों का बेहद अफसोस हुआ. अब तो मैं इसे हर माह पढ़ना चाहूँगी. इसका हर पहल[ू] आकर्षक है.

'माधुरी' को गागर में सागर कहा जाए, त[ो] कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी.

– सरिता शर्मा, भावनग[र]

★ ★ ★

'माधुरी' के अगस्त अंक में मेहँदी लगाने के बारे में छपी जानकारी मेरी बीवी को भा गई सचमुच 'माधुरी' ने मेरी रूठी हुई बीवी को मन[ा] लिया.

– तारिक अहमद, दिल्ल[ी]

★ ★ ★

'माधुरी' अगस्त अंक में छपी परिचर्चा [में] व्यक्त किए गए विचारों से मैं सहमत हूँ. हमा[रा] देश आजादी के पचास वर्ष बाद भी उन सपन[ों] को पूरा करने में असफल है, जो आजादी के पू[र्व] देखे गए थे.

– गौरीनाथ पाठक, पला[मू]

★ ★ ★


UNITED
GROUP OF INDUSTRIES
यूनाईटेड ®
रसोई के सर्वश्रेष्ट कुकवेयर
United
UNITED PRESSURE COOKER
United
UNITED PRESSURE COOKER
प्रेशर कुकर * प्रेशर पॅन * नॉन-स्टिक कुकवेयर

Have the power of a great mind

• Subscribe to the most informative monthly

FREE *with*

COMPETITION REFRESHER

Junior SCIENCE REFRESHER







This elegant Prestige wristwatch
(Rs. 750 in the market)

Stanrose Mafatlal Pedro jeans
(Rs. 480 in the market)

Premium Products A kit for you
(Rs. 120 in the market)

Select your subscription term & claim your free gift

My accepted subscription offer is given below:

Tick One	Period	Your payment	FREE GIFT
☐	3-years	Rs. 720	Wristwatch (Rs. 750)
☐	2-years	Rs. 480	Pedro Jeans (Rs. 480)
☐	1-year	Rs. 240	Premium Set (Rs. 120)

Name: Mr.\ Ms.____________________

Address: ____________________

____________________ Pin: ☐☐☐☐☐☐

Please find enclosed DD/MO No..................Dated...............for Rs.720☐ Rs.480☐ Rs.240☐

My Jeans (Waist) size is..................cm.

Fill in the coupon in capital letters and mail to, 2767, Bright House, Darya Ganj, New Delhi-110002.

★ Subscription will start after 6-8 weeks.
★ Please allow 6-8 weeks for the delivery of your FREE gift.
★ Rates and offer valid in India only.
★ If interested in both magazines, double the amount.

Paste this coupon on your MO/Letter. Last date September 30, 1997

यह वर्ष भारतीय इतिहास के लिए अविस्मरणीय है. मौका स्वतंत्रता की पचासवीं वर्षगाँठ के उत्सव का है. इस पावन मौके पर 'माधुरी' के पाठकों को हमारी शत-शत बधाई एवं शुभकामनाएँ. साथ ही आजादी के दीवानों, शहीदों और सेनानियों को सिर नवाकर नमन करते हैं, जिनकी बदौलत अपने विशाल, धन-धान्य से पूर्ण, सुंदर भारत में हम आजादी की साँस ले रहे हैं.

यह संयोग ही कहिए कि इस बार हमारी परिचर्चा का विषय है 'कितना असर रखती हैं महिलाएँ राजनीति में.' यह विचारणीय है कि लोकसभा में महिलाओं की भागीदारी कुल आठ फीसदी भी नहीं है, जबकि कुछ राज्यों की महिला पंचायतों ने साबित कर दिया है कि उनकी कार्यप्रणाली बेहतर है, सत्ता पूरी तरह उनके हाथ में है. फिर राष्ट्रीय स्तर पर उनके नेतृत्व एवं कार्यक्षमता का विस्तार क्यों नहीं हो पा रहा है?

'लोकतंत्र' एक पवित्र शब्द है और इसका अर्थ भी अतिव्यापक है. लोकतंत्र सत्ता का विस्तार करता है, लेकिन आज के माहौल को देखते हुए महसूस होने लगा है कि सत्ता धीरे-धीरे सिकुड़ती जा रही है. भ्रष्टाचार को सहज स्वीकृति मिल गई है, उसे रोजमर्रा के जीवन का अंग मान लिया गया है. ऐसे में स्मरण हो आता है नारी शक्ति का. जरूरत नारी शक्ति के उभरने की है. महिलाएँ पूरी शिद्दत से शक्तिरूपा अवतार बनकर सामने आएँ क्योंकि उनमें काबिलियत है, साहस है, कुछ कर दिखाने का जज्बा है. इस आधी आबादी को देश में हो रहे हर गलत कदम पर अंकुश लगाना ही होगा. अपने स्वतंत्र अस्तित्व को उजागर करते हुए खुद से सृजित इस मानव संसार को संभालना होगा.

एक और बुनियादी सपना है, हम सबका घर, अपना घर. ईंट, पत्थर, गारे से निर्मित, पर हमारी कोमल भावनाओं से सज्जित घर, जो हमें हिफाजत, अपनापन ही नहीं देता, जिस पर हमारा हक भी होता है. यह तो हुई सपनों के साकार होने की बात, लेकिन जिस घर में हम रहते हैं, वह हमारा आश्रय-स्थल है और उससे लगाव हो जाना स्वाभाविक है. इस अंक में गृहसज्जा तथा इससे जुड़े एक महत्त्वपूर्ण पक्ष बागवानी पर विशेष जानकारी दी गई है. बागवानी से संबद्ध विभिन्न पक्षों, किचन गार्डन हो या टैरेस गार्डन, नन्हे से लॉन से लेकर बड़े भूखंड पर कब, किस मौसम में क्या और कैसे उगाएँ, इसकी जानकारी दी गई है. गृहसज्जा पर दी गई चुनिंदा रचनाओं को पढ़कर अपने घर-आँगन के विभिन्न कोनों में मनमोहक रंग भरें, कुछ अपनी कल्पना के, कुछ हमारे सुझावों के.

चन्द्रप्रभा



• अमर आ

कितना असर रखती हैं महिलाएँ राजनीति में?

ला, व्यवसाय व राजनीति आदि अनेक ऐसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हैं, जहाँ महिलाओं ने पिछले कुछ वर्षों में ती से अपनी अहमियत का एहसास कराया है. किंतु राजनीतिक परिदृश्य ये बताते हैं कि इस क्षेत्र में हिलाओं की प्रगति कोई खास नहीं रही है. संसद में महिला प्रतिनिधियों की निरंतर घट रही संख्या भी न बात को सिद्ध करती है. ऐसा मान लेना भी बेमानी होगा कि राजनीति में महिलाओं का असर नहीं पर इसे मजबूत या प्रभावी मानकर तथ्यों की अनदेखी करना भी अनुचित होगा. महिलाओं के राजनीति असर और महिला आरक्षण विधेयक आदि कुछ मुद्दों पर प्रस्तुत है, कुछ महिला सांसदों-राजनीतिज्ञों न दृष्टिकोण, जो संभवतः इस तथ्य का बेहतर विश्लेषण करते हैं.

बंद होंठों का है सबब कोई, वक्त आया तो हम भी बोलेंगी



गिरिजा व्यास
(सांसद व अध्यक्षा, अखिल भारतीय महिला काँग्रेस 'ई')

भारत की सांस्कृतिक विरासत ने हिलाओं को अहम दर्जा दिया है. इतिहास वाह है यहाँ महिलाओं पर अत्याचार करनेवाले बर्दाश्त नहीं किया जाता.

राजनीति महिलाओं के लिए सुरक्षित भी है र असुरक्षित भी, दोनों ही बातें हैं. पर मैं हमेशा पेक्ष दृष्टि से देखती हूँ. महिलाएँ जब खुद गे आई हैं तो यह क्षेत्र ज्यादा मुश्किल नहीं है.

महिलाओं की संख्या पूरी आबादी की आधी इसलिए उनके पास एक पुख्ता वोट बैंक है. दल उन्हें खुश करना चाहता है ऐसे में हिलाओं की राजनीति में महत्त्व बढ़ना लाजमी फिर महिलाओं के लिए इसे कैसे प्रतिकूल ना जा सकता है.

महिलाएँ यदि राजनीति में नहीं आती हैं या कर भी तरक्की नहीं कर पाती हैं तो इसका रण यह है कि वर्षों से समाज में पुरुषवाद का म्राज्य रहा है. बहुत हद तक उनकी अपनी झक भी इसके लिए उत्तरदायी है.

महिलाओं की संख्या यदि राजनीति में कम तो इसका प्रमुख कारण यह है कि उन्हें अवसर न मिले हैं. आप स्वयं देख लिजिए संसद में महिलाओं का प्रतिशत जहाँ राजीव गाँधी के समय में 11.8% था वहाँ अब घटकर मात्र छह प्रतिशत ही रह गया है.

महिलाओं का राजनीति में आना दो तरह से होता है. कभी पीढ़ी दर पीढ़ी तो कभी अपनी प्रतिभा पर. यहाँ बहुत-सी ऐसी महिलाएँ हैं जो अपने परिवार का सहारा लेकर राजनीति में आई हैं पर प्रगति वे ही कर पाई हैं जिन्होंने बाद में अपनी प्रतिभा को निखारा है और अपने राह के काँटे खुद साफ किए हैं.

महिला नेताओं की प्रतिद्वंद्विता पुरुषों से इस मायने में है कि उन्हें पुरुषों की अपेक्षा चौगुनी मेहनत करनी पड़ती है और पुरुषों के मामले में उन्हें प्रमुखता कहीं कम मिलती है तो कहीं ज्यादा कहीं तो उन्हें इतनी प्रमुखता दी गई कि वे प्रधानमंत्री भी बन गई.

अभी भी महिला राजनीतिज्ञों में बहुत सारी कमियाँ व कमजोरियाँ हैं. सर्वप्रथम तो उनका हिचक ही उनकी प्रगति में बाधक है. उनमें प्रशिक्षण का अभाव भी है. यही कारण है कि वे कहीं-कहीं तो पुरुषों की अपेक्षा अधिक मुखर रही हैं तो कहीं बिल्कुल चुप.

बंद होंठों का है सबब कोई, वक्त आया तो हम भी बोलेंगी.

मेरी राय में महिला आरक्षण विधेयक पारित होना बिलकुल आवश्यक हो गया है क्योंकि दिन ब दिन लोकसभा व विधान सभा में महिलाओं की संख्या कम पड़ती जा रही है.

जिनमें लड़ने की क्षमता है, वे आगे बढ़ेंगी

ममता बनर्जी
(सांसद व संस्थापिका, तृणमूल काँग्रेस)



राजनीति में जाति, धर्म आदि को साथ लेकर चला जा सकता है. मैं यह भी मानती हूँ आज की राजनीति भ्रष्ट है, पर महिलाएँ अपेक्षाकृत ईमानदार हैं. राजनीति में महिलाओं की सहभागिता काफी कम है. यदि वे राजनीति में अधिकाधिक संख्या में होतीं तो वे भी ज्यादा से ज्यादा भ्रष्ट होती. फिर भी मेरा मानना है राजनीति के निरंतर अवमूल्यन को महिलाएँ निश्चित रूप से नियंत्रित कर सकती हैं. उन्हें अधिक से अधिक संख्या में राजनीति में आना चाहिए और घरेलु व सामाजिक जीवन के अपने अनुभवों का इस्तेमाल करना चाहिए. जो महिलाएँ घर में काम कर सकती हैं, वे बाहर भी काम कर सकती हैं.

अभी तक जो महिलाएँ राजनीति में आई हैं उनमें दो तरह की हैं. पहली तो वे हैं जो पुरुष राजनीतिज्ञों से संबंधित हैं और दूसरी वे जो बुनियादी स्तर से या स्टूडेंट मुवमेंट से राजनीति में अपनी पहचान बनाई हैं.

महिलाओं के लिए राजनीति में कठिन संघर्ष है, यह मैं मानती हूँ लेकिन संघर्ष कहाँ नहीं है. हाँ, यहाँ थोड़ा अधिक जरूर है पर जिसमें लड़ने की क्षमता है, वे आगे बढ़ेंगी.

महिला राजनीतिज्ञों के रास्ते में काँटों की कमी नहीं है. सबसे पहले तो उसे महिलाएँ ही राजनीति में नहीं आने देना चाहती.

राजनीति में यदि कुछ महिलाओं ने तरक्की की है तो उसके कई व्यक्तिगत कारण रहे हैं साथ ही उन्हें ऐसी जिम्मेवारी भी मिलती रही है जिसके माध्यम से उन्हें कामयाबी मिलती गई और वे शिखर पर पहुँच सकीं. इंदिराजी इसका प्रमुख उदाहरण हैं.

आज महिलाएँ राजनीति में आने पर शीघ्र ही अनुभवी हो जाती हैं. पहले वे अपने क्षेत्र के विकासात्मक पहलुओं तथा अन्य समस्याओं को ज्यादा नहीं उठा पाती थीं पर अब उनमें जागृति आ गई है और वे अपने क्षेत्र की समस्याओं को प्रमुखता से उठाने में रुचि लेती हैं.

फिर भी संसद में महिलाओं की संख्या बिल्कुल कम है और इसे बढ़ाने के प्रयास होने चाहिए. इसलिए यह जरूरी हो गया कि महिला आरक्षण विधेयक लागू हो. पंचायत स्तर पर लागू महिला आरक्षण की सफलता से संसद में भी महिला आरक्षण विधेयक की सफलता की उम्मीदें जगी हैं.

राजनीति ही नहीं, सारे समाज पर महिलाओं का जबरदस्त असर है



श्यामा सिन्हा
(सक्रिय सदस्या, अखिल भारतीय काँग्रेस कमिटि 'ई')

राजनीति ही नहीं सारे समाज पर महिलाओं का जबरदस्त असर है. सरोजिनी नायडु से मेकर भारत रत्न अरूणा आसफ अली तक इस बात की प्रमाण हैं. इसे और भी पुष्ट करने के लिए इंदिरा जी के 16 साल के शासन को उद्धृत किया जा सकता है.

महिलाओं का राजनीति में भविष्य उतना ही सुरक्षित है जितना पहले था, शेष उनके आत्मबल पर निर्भर करता है. राजनीति चूँकि समाज से अलग नहीं है इसलिए इसे समाज सेवा मानकर महिलाएँ इसकी ओर आएँ और वह इसके लिए पूर्णतः सक्षम हैं.

आज राजनीति में अ[illegible] समझदार महिलाओं की जरूरत है ऐसी महिलाओं की तादाद बढ़ेगी तो राजनीति में उनकी [illegible] भी बढ़ेगी. तब साधारण महिलाओं के [illegible] और भी अनुकूल हो जाएगा. पर, मेरा [illegible] है कि महिलाओं को राजनीति में नहीं [illegible] की पीछे स्वयं महिलाएँ ही दोषी हैं.

जो महिलाएँ राजनीति में आकर नाम कमा चुकी हैं, उनके पक्ष में सबसे बड़ी बात रही है कि वक्त और तकदीर ने उनका साथ दिया और उन्हें गॉड फादर भी मिला. पर, उन्हें पति या पुरुष का सहारा नहीं लेना चाहिए. हाँ, आवश्यक होने पर सहयोग लेना बुरा नहीं है.

महिलाएँ राजनीति में तभी ज्यादा प्रभावी हो सकती हैं जब वे अपनी आवाज मुखर करती है और अपनी श्रेष्ठता को साबित करती है.

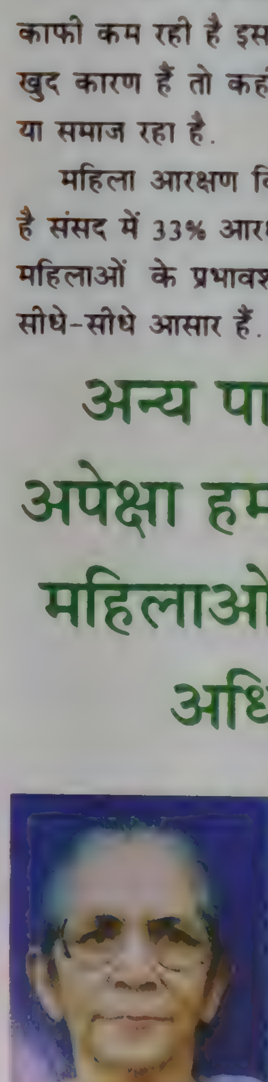
महिलाओं को संसद में अपनी बात, अपने क्षेत्र की समस्याएँ रखने से पहले उसे समझने के लिए सुझबुझ और उसे संसद में पेश करने का शैली होना आवश्यक है. वे संसद में अपनी बात को इस तरह रखें जिससे लोगों के दिमाग में असर करे और इसके समाधान के प्रयास में उनका समर्थन हो.

भारतीय महिलाओं को हर क्षेत्र में अभी बहुत कुछ करना है यद्यपि कस्तुरबा व इंदिराजी की उपलब्धियों को देखकर महिलाओं की राजनीतिक उपलब्धियों का कयास लगाया जा सकता है.

अभी तक महिलाओं की राजनीति में तादाद काफी कम रही है इसके पीछे कहीं-कहीं तो वे खुद कारण हैं तो कहीं उनका पति, अन्य पुरुष या समाज रहा है.

महिला आरक्षण विधेयक एक अच्छा कदम है संसद में 33% आरक्षण मिलने से राजनीति में महिलाओं के प्रभावशाली बनकर उभरने के सीधे-सीधे आसार हैं.

अन्य पार्टियों की अपेक्षा हमारी पार्टी में महिलाओं का असर अधिक है



गीता मुखर्जी
(सांसद, भाकपा)

पहली बात तो यह है कि हमारी राजनीति समाज से अलग नहीं है, और समाज पर पुरुष प्रधान सोच का शिकंजा है. राजनीति में व्याप्त इसी पुरुष[illegible] सोच की शिकार हैं महिलाएँ.

राजनीति में पहले महिलाओं को म[illegible] नहीं दिया जाता था, पर अब दिया जाने लग[illegible] इसका सबसे बड़ा कारण तो यह है [illegible] महिलाएँ अपने प्रतिभा को पहचानने में स[illegible] रही है और राजनीति समेत हर क्षेत्र में [illegible] बढ़कर समाज को अपना स्थान बनाने में स[illegible] रही हैं.

हमारी पार्टी की महिलाएँ अपने वाजिब [illegible] के लिए हमेशा पार्टी नेतृत्व से लड़ती रही [illegible] खासकर बंगाल में जहाँ हमारी पार्टी का प्र[illegible] बहुत ज्यादा है, वहाँ महिलाएँ काफी मुखर [illegible] हैं. वहाँ के पार्टी नेतृत्व ने भी महिलाओं [illegible] समुचित ध्यान दिया है. यदि तुलनात्म[illegible] दृष्टिकोण से देखा जाए तो वहाँ सारे भारत [illegible] महिलाओं की स्थिति अच्छी है.

मैं राजनीति को महिलाओं के लि[illegible] बिल्कुल उपयुक्त मानती हूँ क्योंकि इस क्षेत्र [illegible] भी उनकी पुरुषों पर निर्भरता खत्म हो रही [illegible] और उन्हें अपने अस्तित्व का आभास हो र[illegible] है. पहले पंचायत चुनावों में जीतनेवा[illegible] महिलाओं पर पुरुष हावी रहते थे पर अ[illegible] धीरे-धीरे यह सिलसिला खत्म हो र[illegible] है.

राजनीति का अपराधीकरण महि[illegible] राजनीतिज्ञों के लिए नकारात्मक पक्ष है. इस[illegible] महिलाओं की परेशानी बढ़ सकती है. उन[illegible] संघर्ष का दायरा बढ़ सकता है.

राजनीति में पारिवारिक संबंधों के आध[illegible] पर आई महिलाओं ने भी प्रगति की है लेकि[illegible] वे महिलाएँ ज्यादा अनुभवी पाई गई हैं जिन्हों[illegible] 'ग्रासरूट पॉलिटिक्स' के माध्यम से राजनी[illegible] में जगह बनाई हैं. राजनीति से जुड़ी कु[illegible] महिलाएँ काफी निष्ठा से काम करती [illegible] उनकी नजर में खुद से ज्यादा महत्त्व उन[illegible] काम का होता है.

सारे पुरुष महिलाविरोधी मानसिकता न[illegible] रखते, उनमें भी नारी कल्याण की भावना हो[illegible] है. राजाराम मोहन राय और ज्योतिबा फ[illegible] सरीखे हमारे महापुरुष सदा महिलाओं [illegible] कल्याण की बात किया करते थे. राजनीति [illegible] महिलाओं को अपने पुरुष सहकर्मियों के लि[illegible] सिर्फ चुनौती उत्पन्न करनेवाली ही नहीं, बल्कि मिल-जुलकर काम करनेवाली भी हो[illegible] चाहिए. स्त्री व पुरुषों का साथ-साथ का[illegible] करना जरूरी है. बिना इसके कोई भी आंदोल[illegible] सफल नहीं होगा.

मेरा अपना सामान्य अनुभव है कि महिलाएँ सद में भी अपने क्षेत्रीय समस्याओं के प्रति नी मुखर अवश्य रही हैं, जितना उन्हें होना हिए. किंतु दुखद बात तो यह है कि उन्हें का उपयुक्त अधिकार नहीं मिला. सारे जनीतिक दलों ने चुनाव के समय अपने षणा पत्र में महिला आरक्षण की वकालत की . और आज वही मुकर रहे हैं. संसद में इसे स नहीं होने दे रहे हैं. महिला आरक्षण धेयक महिलाओं पर कोई एहसान नहीं है, ह उनका हक है, बल्कि हम तो कम माँग रहे हमारी आबादी चूँकि आधी है इसलिए हमें सद में 33% के बजाय 50% आरक्षण माँगना ाहिए.

चुनौती का सामना हर क्षेत्र में करना पड़ता है



उमा भारती
(सांसद व राष्ट्रीय अध्यक्षा, भाजयुमो)

राजनीति में महिलाएँ पूरा प्रभाव खती हैं और उनमें राजनीति करने की री-पूरी क्षमता है. राजनीति में उनका भविष्य र्णत: सुरक्षित है. मुझे राजनीति में महिलाएँ भी असुरक्षित नजर नहीं आती. बात यदि सुरक्षा की जाए तो राजनीति में रहकर सही ायने में कोई भी सुरक्षित नहीं है.

महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमती स्वअनुशासित होती है. उनके क्रिया-कलापों ी सीमारेखा केवल घर तक ही नहीं तय की जा कती.

राजनीति में महिलाओं के आगे बढ़ने और शखर पर आने के दो कारण रहे हैं, पहला शवाद दूसरा स्वयं की विकासोन्मुख प्रतिभा. हले जितनी भी महिलाएँ राजनीति के शिखर र आईं सरोजिनी नायडू, विजयालक्ष्मी पंडित, चेता कृपलानी आदि महिलाएँ वंशवाद या कसी न किसी आधार पर राजनीति में आईं. दिरा गाँधी की राजनीति का आधार भी पहले शवाद ही था लेकिन बाद में उन्होंने अपनी यक्तिगत राजनीतिक प्रतिभा का परिचय देते हुए ष्ट्रीय राजनीति में अपना प्रभाव जमाए रखा.

आज की राजनीति में ममता, रेणुका और स्वयं मैंने राजनीति में अपनी प्रतिभा का उपयोग किया है. और उसी पर कायम भी हैं. पर अभी भी कुछ ऐसी महिलाएँ हैं जो वंशवाद व परिवार वाद या किसी न किसी अन्य आधार पर राजनीति में काबिज है.

पुरुष सहकर्मियों से भी महिला राजनीतिज्ञों को कोई चुनौती नहीं है, यदि है भी तो क्या हुआ, चुनौती का सामना तो हर क्षेत्र में हर जगह करना पड़ता है. मेरे विचार में महिलाओं के राजनीतिक प्रतिभा के विकास में पुरुषों की चुनौती नहीं उनकी अपनी हिचक बाधक बनती है.

महिला आरक्षण विधेयक के संबंध में मेरी राय है कि उन्हें संसद में आरक्षण का लाभ मिले, मगर केवल उन महिलाओं को जो ओ. बी. सी. कैटिगिरी से आती हैं.

राजनीति में संख्या बल आवश्यक है



सुमित्रा महाजन
(सांसद, भाजपा)

हालाँकि वर्तमान राजनीतिक दौर में महिलाओं को पहले की अपेक्षा अधिक संघर्ष करना पड़ रहा है और उन्हें पुरुषों की तुलना में दुगनी कार्यक्षमता साबित करनी पड़ रही है. फिर भी इस क्षेत्र में महिलाओं का भविष्य काफी उज्जवल है. आज की तारीख में मैं राजनीति को महिलाओं के लिए बिल्कुल अनुकूल नहीं मानती क्योंकि यहाँ बाहुबल व धनबल का जोर है. जातीयता और संकीर्णतावादी ताकतें आज राजनीति की दशा और दिशा तय करती हैं.

उन महिलाओं को राजनीति में आने और अपनी जगह बनाने में काफी मेहनत करनी पड़ती है. हाँ उनके लिए यह क्षेत्र थोड़ा आसान जरूर है जो पुरुष अथवा पति का सहारा लेकर पदार्पित होती है.

अभी तक कुछ गिनी-चुनी महिलाएँ ही प्रगति कर सकी हैं वे या तो आजादी से संघर्ष करके आगे आई हैं या सचमुच काम करके खुद अपनी जगह बनाई हैं. यदि इंदिराजी की बात करें तो यह स्पष्ट करना आवश्यक नहीं है कि वे राजनीति में आई तो थीं अपने पिता नेहरू जी के सहारे पर, बाद में उन्होंने अपनी राजनीतिक प्रतिभा का परिचय दिया. राजनीति में उन्हें अपने पिता का नाम व अनुभव का फायदा अवश्य मिला पर अंततः उन्होंने अपनी योग्यता और कार्यक्षमता साबित कर दी.

महिलाओं के लिए सबसे बड़ी समस्या यह है कि पुरुषप्रधान समाज का महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण खराब है. उन्हें दुर्बल, कमजोर तबकावाला तथा द्वितीय स्तर का नागरिक माना जाता है. हालाँकि महिलाओं में योग्यता और कार्यक्षमता की कमी नहीं है, वह जिस दिन अपनी प्रतिभा व ताकत दिखलाती है, वह पुरुष से ज्यादा सक्षमता से काम करती है. यद्यपि हमारी भारतीय संस्कृति महिलाओं को उच्च स्थान देती हैं, फिर भी आजादी के पचास वर्ष बाद भी समाज में महिलाओं की भूमिका दबी-कुचली लगती है. राजनीति में भी इसी का असर है.

महिलाओं को जागरूक बनाना और उन्हें अपनी क्षमता दिखाने के लिए प्रेरित करना अत्यंत आवश्यक है. हालाँकि संसद में महिला प्रतिनिधित्व का बिल्कुल अभाव नहीं है. लेकिन सदस्यों की संख्या कम के कारण उनका प्रभाव नगण्य है, जबकि राजनीति में संख्या बल आवश्यक है. फिर भी पुरुष सांसदों की अपेक्षा उनका प्रदर्शन अच्छा है. उनमें दोहरा संघर्ष करके भी योग्यता दिखाने का भाव होता है. वे काफी सिंसियरिटी से काम करती हैं.

अभी तक जो महिलाएँ राजनीति में आई हैं उनमें से कुछ तो स्वावलंबी हैं और कुछ पुरुषों को आधार मानकर आई हैं और वे उन्हीं की इच्छा से कार्य भी करती हैं जबकि उन्हें अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करनी चाहिए, अपने आत्मविश्वास को मुखर बनाना चाहिए तथा जनसेवी की अपनी छवि बनानी चाहिए. राजनीतिक जीवन में अभ्यास व सहकर्मियों के प्रति अपनत्व ही उन्हें ऊपर उठा सकता है.

राजनीतिक दल यद्यपि महिलाओं को कम प्रश्रय देते हैं फिर भी मैं अपनी पार्टी की स्थिति अन्य पार्टियों की तुलना में अच्छी मानती हूँ.

राजनीति में आनेवाली महिलाएँ सांसद में भी मुखर रही हैं, उन्हें अपने स्त्रीत्व का लाभ मिला है और सेवाभाव के एहसास के कारण अपने क्षेत्र की समस्याओं के प्रति वे काफी गंभीर रही हैं.

महिलाएँ चूँकि समाज की एक प्रमुख घटक हैं. समाज के विकास में उनका योगदान है. इसलिए उन्हें राजनीति में आरक्षण का लाभ मिलें पर पुरुषों के प्रति उनका रूख प्रतिस्पद्धमिक न होकर सहयोगात्मक हो.

मेरा मत है सांसद में महिला आरक्षण विधेयक को एक राष्ट्रीय बहस के बाद पारित किया जाना चाहिए.

गरीब व अभावग्रस्त महिलाएँ राजनीति में कम हैं



भगवती देवी
(सांसद, राजद)

मेरा मानना है कि राजनीति में महिलाओं की भागीदारी अभी मात्र दस प्रतिशत ही है और उनमें भी गरीब व अभावग्रस्त महिलाएँ राजनीति में कम हैं. बड़े घरानों में जन्म लेने वाली वैसी महिलाएँ ही अधिकांशत: राजनीति में आकर सत्तासीन हुई हैं जिनका भूख, गरीबी व अभावग्रस्तता से कभी वास्ता नहीं रहा.

महिलाएँ राजनीति में अधिक से अधिक संख्या में आकर ही अपनी नीति तय कर सकती हैं. राजनीति में उनका भविष्य मुझे इसलिए सुरक्षित नजर नहीं आता क्योंकि महिलाएँ अपने दिमाग का इस्तेमाल कम करती हैं आज भी वे मरदों के कहने पर चलती हैं. राजनीति में महिलाओं के भविष्य को तो छोड़ दीजिए वर्तमान ही महिलाओं के लिए दुखद है. परिवार और समाज की ओर से लगाया जानेवाला प्रतिबंध महिलाओं के राजनीति के आगमन में अत्यंत बाधक रहा है. पुरुष या पति का सहारा लेकर राजनीति करना उनका शगल बन गया है. हालाँकि यह सब बातें धीरे-धीरे खत्म हो रही हैं मगर अभी भी एक-चौथाई ही खत्म हो पाई हैं, इसका तीन-चौथाई अभी भी शेष है.

महिलाओं का अपना महत्व कम ... इतिहास यह बताता है कि पहले ... लिया गया उसके बाद ही राम का, ... के बाद ही कृष्ण कहा जाता है. बिना ... सहारे के सामाजिक प्रतिबंधों को तोड़कर महिलाएँ राजनीति में बहुत कुछ कर सकती हैं. राजनीति में पुरुषों की चुनौतियों का सामना खुद को बिना मजबूत किए संभव नहीं है.

राजनीति में संसद या विधान सभा में और तेजी से मुखर होने के लिए महिलाओं का कठिन संघर्ष जरूरी है. उन्हें योद्धाबाई और लक्ष्मीबाई की तरह लड़ाई करनी होगी.

मैं महिला आरक्षण विधेयक के वर्तमान स्वरूप का विरोध करती हूँ. मेरी राय में संसद महिलाओं की प्रतिशतता पचास प्रतिशत होनी चाहिए. साथ ही आदिवासी, हरिजन, पिछड़ी व मुसलमान महिलाओं का हिस्सा भी तय होना चाहिए जिससे ग्रामीण व अभावग्रस्त महिलाओं को भी इसका लाभ मिल सके.

पहला ब्रेक मिलना ही बड़ी मुश्किल है



प्रो. रीता वर्मा
(सांसद, भाजपा)

सिर्फ राजनीति को भ्रष्ट, जातिवादी, संकीर्णतावादी तथा महिला विरोधी क्यों कहा जाए, सारा समाज ही तो ऐसा है, तो क्या ऐसे समाज में महिलाएँ अपनी पहचान नहीं बना रही है? फिर राजनीति समाज से अलग कैसेहै?

मैं इसे महिलाओं के लिए अनुकूल या प्रतिकूल नहीं मानती, पर इतना आवश्य कहूँगी कि इसमें वे ही महिलाएँ आएँ जिनमें भरपूर धैर्य जबरदस्त जुझारूपन और लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पण हो. इन सबके बाद आदर्शवाद तो आवश्यक है ही.

तब यह बात है कि महिला होने से यहाँ संघर्ष थोड़ा और बढ़ जाता है क्योंकि बिना परखे ही लोग स्त्री को कमजोर व बेवकूफ मान लेते हैं. उन्हें पहचान बनाने तक काफी संघर्ष करना पड़ता है. पहचान बनाने के बाद कोई खास फर्क नहीं पड़ता. सबसे बड़ी समस्या तो यह है कि यहाँ पहला ब्रेक मिलना ही बड़ी मुश्किल है.

राजनीति में स्त्रियाँ अकसर पुरुष या पति के ...योग से आती हैं. मेरा राजनीति में आना भी ...से ही हुआ. मुझे सर्वप्रथम तो बैंक डकैतों से हुए मुठभेड़ में शहीद पति स... रणधीर वर्मा के नाम का लाभ मिला. किंतु ब... में मेरी अपनी प्रतिभा व कार्यक्षमता काम आ... मैं किसी पुरुष या सहयोगी पर निर्भर न... करती, स्वतंत्र निर्णय लेने की पूरी क्षमता मुझ... हैं.

राजनीति ही नहीं बल्कि हर क्षेत्र के लि... काम करते समय महिलाओं के यह बात मन... निकाल देनी चाहिए कि वे महिला है. वैसे... महिला व पुरुषों की राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा व... बात को स्वीकार नहीं करती. मेरी पार्टी में इ... तरह का कोई वातावरण नहीं है और मैंने क... ऐसा भी महसूस नहीं किया कि पुरुषों की तुल... में मेरी उपेक्षा हो रही है. वस्तुत: महिलाओं क... अपने स्त्रीत्व के लिए गर्व होना चाहिए उ... अपने आप में हीन ग्रंथि नहीं पालना चाहिए. उ... पुरुष होने या बनने की कोशिश नहीं कर... चाहिए. स्त्रियाँ नैसर्गिक रूप से पुरुषों से सर्व... श्रेष्ठ हैं.

यदि राजनीतिक उपलब्धियों की बात करें त... मैं यह कहूँगी कि महिला ही क्यों, अभी तक क... पुरुषों की राजनीतिक उपलब्धियाँ भी पर्याप्त नह... है.

सर्वप्रथम तो मैं महिला आरक्षण विधेयक क... विरोध करती थी किंतु मैं अब मैं विधेयक के... संबंध में अपनी पार्टी की उस राय के साथ ह... जिसमें सिर्फ पंद्रह वर्षों तक महिला आरक्षण क... बात कही गई है. पार्टी की इस संबंध में य... सोचा है कि 15 वर्ष में संसद में महिलाओं क... पर्याप्त संख्या हो जाएगी. किंतु फिर भी ... आरक्षित संसदीय सीट से चुनाव नहीं लड़... चाहूँगी.



खबरों का झरोखा

प्रजनन के मामले में प्रकृति को चुनौती

ब्रिटेन के वैज्ञानिक पॉल रेसबरी ने एक नई कनीक ढूँढ निकाली है. इसके चलते अब हिलाओं को अपनी मनपसंद संतान मिल कती है.

इस तकनीक के तहत तीन दिन पुराने भ्रूण ी एक कोशिका को निकालकर उसके गुणसूत्र जीन पदार्थ) की लाखों फोटो कॉपियाँ बनाई एँगी, तब यह मालूम होगा कि वह भ्रूण ड़का होगा या लड़की. इस प्रक्रिया का नाम ॉलिमिरेस चेन रिएक्शन' है. यह वास्तव में टेस्ट यूब तकनीक का ही एक विकसित रूप है.

पर यह तकनीक काफी महँगी है तथा यह ावश्यक नहीं कि प्रथम बार में ही इसमें फलता मिल जाए. प्रत्येक इलाज में 30 से 35 तिशत सफलता की आशा रहती है. सबसे हले इलाज में दस हजार पौंड, इसके असफल ोने पर दूसरे इलाज में सात हजार पौंड तथा ीसरे इलाज के लिए चार हजार पौंड का खर्च ाता है. तीसरे प्रयास में 80 प्रतिशत तक फलता की उम्मीद रहती है.

ब्रिटेन में गर्भधारण करने जा रही चार हिलाओं ने पहले ही यह निर्णय ले लिया है कि न्हें बेटा चाहिए या बेटी? ब्रिटेन की 34 वर्षीया भिनेत्री के तीन बेटे हैं और एक बेटी की चाहत वह अपना इलाज करवा रही है. अब वह गर गर्भवती हुई तो उन्हें बेटी ही होगी.

भूखे कुत्तों ने ऐसे मिटाई भूख

यों तो कुत्ते को वफादार जानवर माना गया है, र एक अजीब स्थिति में कुत्तों को अपने ालिक की हड्डियाँ खाकर अपनी भूख मिटानी ड़ी.

न्यूयार्क में एक 51 वर्षीय व्यक्ति की मौत हो ई, जो अपने अपार्टमेंट में अकेला रहता था. सके पास सात कुत्ते थे. भूख से व्याकुल इन त्तों को कोई और उपाय न मिला, तो उन्होंने पने मालिक की हड्डियाँ खानी शुरू कर दी. ह सिलसिला तब तक चलता रहा, जब तक पड़ोसियों ने इसकी शिकायत पुलिस को न कर दी. यह अनजान व्यक्ति एड्स से पीड़ित था.

दूल्हे की बाँहों में दुलहन की मौत

शादी के समय 24 वर्षीया खूबसूरत सुमन और उसके पति को क्या पता था कि वे हनीमून भी नहीं मना पाएँगे. वे तो अपने को विश्व का सबसे खुसनशीब जोड़ा महसूस कर रहे थे.

शादी के 12 घंटे बाद सुसन अपने पति के साथ 'हनीमून सूट' की सीढ़ियाँ चढ़ रही थी. अचानक वह अपने पति की बाँहों में लुढ़क गई तथा तुरंत उसकी मौत हो गई.

शव परीक्षण के अनुसार मौत हृदय की गति रुकने के कारण हुई.

30 वर्षीय व्यक्ति के लिए नया गुप्तांग

'माइक्रोवास्कुलर रिकंस्ट्रक्टिव सर्जरी' के एक असाधारण मामले में एक व्यक्ति को एक नया गुप्तांग प्रदान किया गया. 30 वर्षीय इस व्यक्ति ने 20 साल पहले एक भीषण दुर्घटना में अपना गुप्तांग खो दिया था.

इस गुप्तांग का निर्माण इस व्यक्ति के अपने टिशु से किया गया है. कोची के ट्रस्ट अस्पताल के मुख्य प्लास्टिक सर्जन डॉ. अशोक कौल ने यह सूक्ष्म ऑपरेशन किया, जो दो स्तरों पर 12 घंटे तक चला. नए गुप्तांग के निर्माण में रोगी के अग्रबाँह की त्वचा की एक परत, एक मुरक धमनी (आर्टरी), एक नस (वेन) और दो स्नायुओं (नर्व्स) का प्रयोग किया गया है.

मौत पर रोनेवाला अब भी न मिला

35 वर्ष पहले ग्लत्र स्कॉटी वूल्फे का नाम 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड' में सबसे ज्यादा 29 बार शादी करने के लिए दर्ज किया गया था. पर उसे उस समय यह ख्याल भी नहीं होगा कि उसकी मृत्यु पर कोई आँसू बहानेवाला उसके पास नहीं फटकेगा.

दिल की बीमारी से 88 वर्ष की आयु में इस व्यक्ति की मृत्यु हो गई, पर दो सप्ताह बाद तक कोई उसके मृत शरीर को लेने नहीं आया.

11 महीने पहले जिस महिला से उसकी शादी हुई थी, वह शहर से काफी दूर रहती है तथा उसे यह बात चोट पहुँचा रही है कि न तो वह अपने पति को दफना सकती है, न ही उसके दाह संस्कार में शामिल हो सकती है. उसके पास इसके लिए पैसे नहीं हैं.

ग्लत्र अकसर शादियाँ करता रहता था. वह सेलेक्टिव तथा जिद्दी था. उसने अपनी एक पत्नी को बिस्तर पर सूरजमुखी के बीज खाने के कारण तथा दूसरी को उसका टूथब्रश इस्तेमाल करने के कारण तलाक दे दिया था.

उसके 35 वर्षीय बेटे की आय भी बहुत कम है. जिसके कारण वह भी अपने पिता के दाह संस्कार में शामिल नहीं हो सकता. वह अपनी ढेर सारी सौतेली माताओं को भी नहीं बुला सका. शायद कइयों का तो उसे पता भी मालूम नहीं होगा.

रोगी की नाक से निकला 80 सेंमी. का कपड़ा

नाक से निकले 80 सेंमी. कपड़े ने जहाँ रोगी को असीम राहत दिलवाई, वहीं डॉक्टरों को हैरानी में डाल दिया.

स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में एक व्यक्ति ने ब्रेन ट्यूमर का ऑपरेशन करवाया. ऑपरेशन के बाद ही उसे साँस में तकलीफ महसूस होनी शुरू हो गई. एक दिन उसे अपने सिर में कुछ भारीपन और अपने नाक के भीतर कुछ फँसता हुआ-सा महसूस हुआ. उसने अपनी नाक छिड़की, तो कपड़े का एक कोना बाहर निकल आया. हैरान व परेशान होकर उसने इस कोने को पकड़कर खींचना शुरू कर दिया. देखते ही देखते करीब 80 सेंटीमीटर लंबा एक कपड़ा उसके हाथ में था. गोरेन नाम का यह व्यक्ति तुरंत अस्पताल के लिए दौड़ पड़ा और वहाँ पर भेद खुला कि उसके ब्रेन ट्यूमर के ऑपरेशन के दौरान यह कपड़ा उसके मस्तिष्क में छूट गया था.

एक दिन में 30 व्यक्तियों से यौन संबंध

धार्मिक अंधविश्वास में पड़कर कोई किस हद तक मूर्ख बन सकता है और अपना सब कुछ लुटा सकता है. इसका एक उदाहरण हांगकांग में देखने में आया है. इसके चक्कर में पड़कर एक लड़की ने एक दिन में 30 व्यक्तियों के साथ यौन संबंध बनाने शुरू कर दिए ताकि वह चीन के एक धार्मिक संप्रदाय के लिए चंदा इकट्ठा कर सके.

इस 19 वर्षीया लड़की की एक दोस्त ने चीन के ग्रीन ड्रैगन टेंपल संप्रदाय के एक सदस्य के साथ उसका परिचय करवाया. उसके बहकावे में आकर उसने वेश्यावृत्ति का यह धंधा अपनाया, ताकि उसका स्वयं का भविष्य सुधर जाए. चार महीने तक चले इस वेश्यावृत्ति के धंधे में उसने दो लाख हांगकांग डॉलर (25 हजार 900 अमेरिकी डॉलर) इकट्ठे करने का दावा किया है. इसके बाद ही उसे मालूम हुआ कि यह संप्रदाय एक पाखंड है. ■



राबड़ी देवी

किचन से कैबिनेट तक

नाम-राबड़ी देवी, उम्र-अड़तीस साल, शिक्षा-[illegible] पास, संतान-नौ बच्चों की माँ, पति-[illegible] में, पद-बिहार की मुख्यमंत्री.

• नि. त्यागी

रा ष्ट्रीय जनता दल के विधायकों ने राबड़ी देवी को जब अपना नेता चुना, तब वे न तो विधानसभा की सदस्या थीं ौर न विधान परषिद की. राजनीति से उनका श्ता अगर था तो इसलिए कि उनके पति लालू ाद यादव बिहार में सालों मुख्यमंत्री रहे. अगर ालू की गिरफ्तारी न होती तो राबड़ी देवी ुख्यमंत्री कहाँ बन पातीं. एक तरफ पति हिरासत और दूसरी तरफ चौका-बरतन का काम छोड़ ाधे मुख्यमंत्री का दफ्तर संभालना. यह विडंबना या किस्मत का खेल..

राष्ट्रीय जनता दल के लोग इन दिनों नए सिरे चापलूसी के नए कोरस इजाद कर रहे हैं कि ाबड़ी देवी का मुख्यमंत्री बनना 'आजादी के ाचासवें बरस पर नारी आंदोलन की विजय' है. ुख्यमंत्री के दफ्तर से जारी उनके व्यक्तिगत ावरण में राबड़ी देवी को 'एक सच्ची देशभक्त ौर भारतीय नारीत्व की पावन प्रतीक' बताया ाया है. उनकी तुलना इंदिरा गाँधी से की जा रही ..

राबड़ी यादव समाज के किसी भी वर्ग का ्रतिनिधित्व अगर नहीं करती हैं, तो उनका ुख्यमंत्री बनना असंवैधानिक भले ही न हो, पर ंविधान के आशय से अधूरा जरूर कर देता है. ाज वे भले ही मुख्यमंत्री हों, सत्ता का ्मोट उनके पति के हाथों में है. उनकी ्पयोगिता बड़ी सीमित है. वे मुख्यमंत्री हैं, परिस्थितिवश और तभी तक, जब तक ालू यादव चाहें. राबड़ी ने अभी तक एक ी लंबा भाषण नहीं दिया. वे सारे फैसले ाहब' या साहब के सिपहसालारों की लाह से करती हैं. हर तरह से यह जनीतिक इस्तेमाल है.

राबड़ी दरअसल उन पत्नियों में से एक , जिनके पति उनका इस्तेमाल करते हैं ौर पति का आदेश पाकर इस्तेमाल होने में जी भी रहती हैं. पिछले आम चुनावों में ांग्रेस के पूर्व केंद्रीय मंत्रियों कमलनाथ ौर अरविंद नेताम ने अपनी पत्नियों को ्कट दिलवाए थे. ये दोनों हवाला मामले में ारोपी थे. तमिलनाडु में मुख्यमंत्री म.जी.रामचंद्रन की मृत्यु के बाद उनकी ्नी जानकी रामचंद्रन मुख्यमंत्री बनीं, लेकिन कुछ ही दिनों के लिए. सत्ता संघर्ष में जानकी को एम.जी.आर. की परदे और राजनीति की जोड़ीदार जयललिता ने हरा दिया. दक्षिण के दूसरे नेता-अभिनेता नंदमूरि तारक रामाराव की पहली पत्नी के बच्चों ने उनकी दूसरी पत्नी लक्ष्मी पार्वती को पार्टी निकाला दे दिया.

लालू प्रसाद यादव के राष्ट्रीय जनता दल में एक भगवती देवी हैं, जो कुछ साल पहले तक पत्थर तोड़ती थीं. वह पहले विधायक बनीं और फिर सांसद, पर जब सत्ता के असली केंद्र पर उत्तराधिकारी नियुक्त करने की बारी आई तो राबड़ी देवी मिलीं. मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद और विधानसभा का विश्वास पाने से पहले राबड़ी देवी ने करीब पचपन फाइलों पर दस्तखत किए. इस दौरान उनके पति उनके साथ रहे. आज जब लालू यादव जेल में हैं, तो उनके भाई साधू यादव और सुभाष यादव उन्हें 'सलाह-मशविरे' देते हैं. तो यह है आजादी के पचासवें बरस में आजादी महिलाओं की. लोकतंत्र के साथ मजाक तभी से होने लगता है, जब सत्ता का असली केंद्र संवैधानिक पद के बाहर होता है, जैसे इंदिरा गाँधी के समय संजय गाँधी थे, जयललिता के तमिलनाडु में शशिकला थीं, उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन के दौरान केंद्र में रक्षामंत्री मुलायम सिंह यादव थे. महाराष्ट्र में बाल ठाकरे हैं. इस्तीफा देने के बाद लालू प्रसाद यादव भी अब ऐसी ही सत्ता का केंद्र बन गए हैं, जो राबड़ी देवी के जरिए सही-गलत जो चाहे, फैसले करवा सकते हैं. और राबड़ी देवी के लिए पति का वचन आदेश है. वे रोज सुबह एक घंटे पति के लिए पूजा करती हैं.



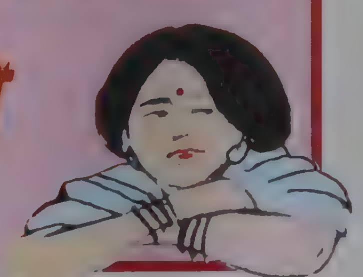
राबड़ी देवी के बिहार की मुख्यमंत्री बनने जैसी घटनाएँ सबसे पहले और सबसे ज्यादा खतरनाक नारी मुक्ति आंदोलन के लिए ही है, क्योंकि उन पर उपलब्धियों का कितना ही मुलम्मा जड़ दिया जाए, वे राजनीतिक स्वार्थ सिद्धि का जरिया ही रहती हैं. राबड़ी देवी अकेली नहीं हैं और वे किसी आम भारतीय नारी से कम बेबस भी नहीं. पंचायती राज वाले भारत में जितनी महिला सरपंच हैं, ज्यादातर ऐसी हैं, जहाँ उनके पीछे कोई न कोई मर्द सत्ता चला रहा होता है या अपना स्वार्थ सिद्ध करवाता है. संसद में नेताओं की पत्नियों और टीवी, फिल्म के कलाकारों को हटा दें तो कितनी कम महिला सांसद रह जाती हैं, जिनका राजनीति में इतिहास हो, सिद्धांतों और मूल्यों में निष्ठा हो और जनता के प्रति कोई सरोकार हो.

राबड़ी देवी भी यह सब सीख सकती हैं, अगर उनके पति, भाई और उनके 74 मंत्री उन्हें सत्ता का जरिया बनाना छोड़ दें. और बिहार के लोग इंतजार के लिए तैयार हों तो. ■

किस वर्ग का प्रतिनिधित्व?

इस पूरे घटनाक्रम में कुछ बातें एकदम साफ हैं. राबड़ी देवी का मुख्यमंत्री बनना लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ कैसा भी मजाक हो, असंवैधानिक बिलकुल नहीं है. राबड़ी देवी समाज के किस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं? महिला वर्ग की, जबकि खुद उनकी जिंदगी घर के भीतर चूल्हा-चौका, बरतन का काम और नौ बच्चे संभालने में लगी रही. पिछड़े और दलित वर्ग की, जबकि पिछले कई सालों से वे पटना की आलीशान रिहाइश में बड़े सुख और शानोशौकत के साथ रहती आई हैं? बिहार की जनता की, जो भुखमरी, बेकारी, जातीय संघर्ष और प्रशासनिक असफलताओं की सबसे बड़ी शिकार है. ■

जो भुलाए न भूले



आलस की वजह से

सर्दियों के दिन थे. कार्यालय समीप होने की वजह से रोज एक बजे तक हमारे पतिदेव लंच के लिए घर आ जाते थे. पर उस दिन पता नहीं किस कार्य में उलझ गए थे कि तीन बजे तक उनका पता ही नहीं था. अचानक घंटी बजी और ये हाजिर हो गए. मुझे बहुत तेज भूख लगी थी. निसंदेह इन्हें भी लगी ही थी, सो मैंने फटाफट आँगन की हलकी-तेज धूप में छोटी मेज पर खाना लगा दिया.

मेरे आँगन का द्वार खुला था, जिससे सामने मेरी पड़ोसन के घर बँधी हुई उनकी पालतू भैंस मुझे साफ नजर आ रही थी.

अभी दो-तीन कौर ही खाए होंगे कि मैंने देखा, डोरी पर सूखने के लिए डाली गई मेरी पड़ोसन की साड़ी हवा से उनकी भैंस की तरफ उड़ी. मेरे मन में आया कि दौड़कर साड़ी भैंस से छुड़ा लूँ, पर भूख इतनी जोर से लगी थी कि खाना



छोड़कर वहाँ तक जाने का मन ही नहीं हुआ. जल्दी ही भैंस डोरी से खींचकर आधी साड़ी की जुगाली कर चुकी थी. तब पल्ले में छपे हुए बड़े से फूल को देखकर मेरे दिमाग में अचानक बिजली-सी कौंधी. मैंने अपने हाथ का कौर वहीं रखा, दौड़कर उनके आँगन में पहुँची और साड़ी भैंस की मुँह से खींच ली. पीछे से हमारे पति भी दौड़े-दौड़े आए. मैंने चबाई हुई साड़ी उनको दिखाते हुए रोनी सूरत से कहा, ''मेरी इतनी अच्छी साड़ी भैंस चबा गई''.

दरअसल सुबह हमारी डोरी पर कपड़े अधिक होने की वजह से धोबिन मेरी साड़ी पड़ोसन की डोरी पर डाल गई थी और यह बात मेरे दिमाग से बिल्कुल उतर गई थी. अपने नुकसान को पड़ोसन का नुकसान समझा. आलस की वजह से मुझे अपनी साड़ी से हाथ धोना पड़ा आज भी [illegible] भुलाए नहीं भूलता है. — **शारदा दुबे, जयपुर**

इस स्तंभ में पाठक कोई ऐसा अप्रकाशित संस्मरण भेज सकते हैं जो भुलाए न भूलता हो. प्रत्येक प्रकाशित किए जानेवाले संस्मरण पर 200 रु. की उपयोगी पुस्तकें भेंट की [illegible] इस पते पर भेजें: माधुरी, जो भुलाए न भूले, ए-28,सेक्टर 9, नोएडा - 201301.

बेटे की बात

बात उन दिनों की है, जब मेरा बेटा पाँच साल का था. मैं डॉ हूँ, कभी-कभी जब घर पर कोई नहीं होता था, मैं उसे क्ली ले जाती थी.

एक दिन एक मरीज की मैं जाँच कर रही थी कि अचानक उलटी होने लगी. मैंने प्यार से कहा, ''घबराओ नहीं, उलटी हो रह तो हो जाने दो.'' उसने क्लीनिक में ही उल्टी कर दी. मैंने उसे सांत देकर थोड़ी देर आराम करने को कहा. दाई को उलटी साफ करने निर्देश देकर मैं दवाइयाँ लिखने लगी. मेरा बेटा, जो आसपास खेल था, सब कुछ देख रहा था.

कुछ दिनों बाद घर पर मैं अपने बेटे को खाना खिला रही थी. ख खाते-खाते उसने मुँह का कौर जमीन पर उगल दिया. मैंने थोड़ा डाँ हुए कहा, ''बेटा! गलत बात! ऐसा नहीं करते, गंदी आदत है यह. तु उगलना था तो कचरे के डिब्बे में क्यों नहीं उगला? फर्श गंदा हो ग बेटा थोड़ा रुआँसा होते हुए बोला, ''मम्मी! आप मुझे कम और मरी को ज्यादा प्यार करती हैं. उस दिन वह उलटी कर रहा था तो आप उस प्यार से कह रही थीं कि उलटी कर लो और मुझे डाँट रही हैं''. की बात सुनकर मुझे हँसी भी आई और महसूस भी हुआ कि ब कितना विचार करते हैं. मैंने बेटे को गले लगाया. प्यार से उसके सि पर हाथ फेरते हुए कहा,''आप मुझे पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा प्य हो, पर मुझे ही आपको अच्छी आदतें सिखानी हैं , इसलिए बस थो सा डाँटा.''

आज बेटा 11 साल का हो गया है, पर उसकी वह भोली-स शिकायत मैं आज भी नहीं भूली.

— डॉ. संध्या तिवारी,ग्वालिय

प्रतिभाशाली छात्र

मैं प्राथमिक विद्यालय में गणित का अध्यापक था. विवेक कक्षा च का छात्र था. वह स्कूल के माने हुए नटखट लड़कों में से थ वार्षिक परीक्षा में उसने अपना गणित का प्रश्न-पत्र मात्र 15 मिनट कर डाला, जो दो घंटे का था. यही नहीं, उसने अपने हल की मौलिक और असाधारणता से मुझे भी आश्चर्यचकित कर डाला.

पूरी खेल-घंटी के दौरान विवेक की कॉपी स्टाफ़ रूम में एक अध्यापकों के बीच एकदूसरे को दिखाई जाती रही. हम सभी अध्याप इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि लड़का असाधारण रूप से प्रतिभाशाली है अ उसे अवश्य ही गणित की विशेष शिक्षा के स्कूल में भेजा जाना चाहि

उसी समय विवेक की स्कूल डायरी में मैंने लिख दिया, 'प्रि अभिभावकगण! आपके पुत्र से संबंधित एक अत्यंत गंभीर विषय बात करने के बारे में कृपया स्कूल आइए. कक्षा अध्यापक.' नीचे हस्ताक्षर थे.

अगले दिन उदास विवेक ने मुझसे आँखें मिलाए बिना मुझे अप डायरी दे दी. मैंने डायरी खोलकर पढ़ी तो आँखें आँसुओं से भर आ डायरी में निर्णायक लिखावट में लिखा था, 'क्षमा कीजिए. आने असमर्थ हूँ. बेटे की पिटाई कर दी है और वचन देता हूँ, वह सुध जाएगा. दोबारा शिकायत का मौका नहीं देगा.'

कुछ दिनों बाद मेरा तबादला हो गया, लेकिन आज भी उस घटना याद करता हूँ तो आँखें आसुओं से भर आती हैं. 30 वर्ष बाद भी मैं घटना को भुलाए नहीं भूलता.

— ओम प्रकाश नेहरा, झुंझ



हरित क्रांति के अग्रणी

किचन गार्डन एसोशिएशन

सरला भार्गव संस्था के एक कार्यक्रम में संबोधित करती हुईं.

लालबहादुर शास्त्री ने देशवासियों को नारा दिया था, 'जय जवान-जय किसान' का. शास्त्रीजी के 18 महीने के शासनकाल के समय उनके असमय निधन पर उनको सच्ची श्रद्धांजलि के रूप में 'किचन गार्डेन एसोशिएशन' का जन्म हुआ. शास्त्रीजी के नारे से जबरदस्त रूप से प्रभावित सरला भार्गव ने इस संस्था की स्थापना में प्रमुख भूमिका निभाई.

विगत 30 वर्षों से आल इंडिया 'किचन गार्डेन एसोशिएशन' देश भर में पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए फल-फूल, जड़ी-बूटी और सब्जियों को अपने घर में उगाने के लिए जनता को प्रोत्साहित करती आ रही है. यह संस्था सिर्फ प्रोत्साहित ही नहीं करती, वरन लोगों को फल-फूल, साग-सब्जी उगाने का प्रशिक्षण भी देती है. परिणामस्वरूप आज कितने ही लोग यहाँ से प्रशिक्षित होकर अपनी नर्सरी चलाकर स्वरोजगार में लगे हुए हैं.यह संस्था प्रशिक्षण के अलावा लोगों को गमले,खाद, उन्नत किस्म के बीज, कीड़े मारने की दवाएँ और बागवानी के लिए अच्छा साहित्य भी उचित दामों पर मुहैया कराती है.

इस गैर राजनीतिक संस्था की स्थापना 60 के दशक में तब हुई, जब देश में अनाज की भारी कमी हो गई थी. उस समय देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने देशवासियों को नारा दिया था, 'जय जवान-जय किसान' का. शास्त्रीजी के 18 महीने के शासनकाल के समय उनके असमय निधन पर उनको सच्ची श्रंद्धाजलि के रूप में किचन गार्डेन एसोशिएशन का जन्म हुआ. शास्त्रीजी के नारे से जबरदस्त रूप से प्रभावित सरला भार्गव ने इस संस्था की स्थापना में प्रमुख भूमिका निभाई. सरलाजी एक समाज सेविका होने के साथ-साथ इस संस्था की अवैतनिक सेक्रेटरी भी हैं. 30 वर्षों से उनकी मेहनत और लगन से ही यह संस्था फल-फूल रही है. सरलाजी को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए कई बार पुरस्कृत भी किया गया है.

किचन गार्डेन के महत्त्व के बारे में बताती हुई सरलाजी कहती हैं कि अपनी आवश्यकतानुसार दैनिक उपयोग में आनेवाली साग-सब्जियों, फल-फूल आदि उगाकर पर्यावरण संतुलन के साथ-साथ भारत में व्याप्त कुपोषण की समस्या को भी समाप्त किया जा सकता है. साग-सब्जियाँ हर दृष्टि से लाभदायक भी हैं, जैसे पोषण संबंधी महत्त्व, औषधि संबंधी महत्त्व, कृषि पूरक, औद्योगिक महत्त्व व सामाजिक महत्त्व आदि. इसीलिए हमारी संस्था लोगों को अपने घर के उद्यान, बालकनी, छत और घर में गमलों में साग-सब्जी उगाने के तरीके बताती है. आज पूरे देश में किचन गार्डेन एसोशिएशन के 600 सदस्य हैं तथा विभिन्न शहरों में 41 केंद्र स्थापित हैं. हर वर्ष कुछ नए केंद्र खुलते रहते हैं.

किचन गार्डेन एसोशिएशन गृहिणियों को प्रोत्साहित करती है कि वे अपने घर की खाली पड़ी छोटी-सी छोटी जगह पर फल-फूल या सब्जी उगाकर उसका सदुपयोग करें. यदि जमीन न भी हो, तो गमले में सब्जियाँ उगाएं. उसी का परिणाम है कि आज किसी भी प्रकार के फल-फूल या सब्जियों से जुड़े 'शो' में कितने ही ऐसे लोगों के गमले पहुँच जाते हैं, जो किचन गार्डेन एसोशिएशन द्वारा प्रशिक्षण पा चुके हैं. कुछ सदस्य तो स्वरोजगार के रूप में अपनी नर्सरी चला रहे हैं, कुछ फार्म हाउस खोल चुके हैं.

इस संस्था की सफलता का राज बताते हुए श्रीमती भार्गव कहती हैं कि शुरू में तो हम लोग

शेष पृष्ठ 125 पर

गृहसज्जा

इंटीरियर डेकोरेशन

घर के कैनवास पर कल्पना के रंग

● शैल मा

बड़ा-सा कैनवास और खूब सारे रंग हों तो कलाकार काम करने में ज्यादा आजादी महसूस करता है. यह बात अलग है कि विशाल कैनवास को घर या दीवार मिलना आसान नहीं है, जबकि छोटी-सी तस्वीर अगर खूबसूरत हो तो उसे कोई भी अपने घर में

सजाना चाहेगा. इंटीरियर डेकोरेटर तो कैनवास पर काम करने यानी सजाने का व सोचते हैं क्योंकि शहरों में जमीन की बढ़ती कीमतों की वजह से ज्यादा लोग छोटे-छोटे में रह रहे हैं.अन्य मामलों में जीवन स्तर में सु होने के बावजूद ज्यादातर लोग पैसा खर्च क

1



2



ो अपने छोटे से घर या दफ्तर को रहने अथवा ाम करने की बेहतर जगह नहीं बना पाते ्योंकि वे व्यावसायिक इंटीरियर डेकोरेटर की ावाएँ लेने से कतराते हैं. लोग इस भ्रम में रहते हैं कि अगर जगह और बजट कम हो तो इंटीरियर डेकोरेटर की सेवाएँ लेने से कोई लाभ नहीं, जबकि यह सच नहीं है. इंटीरियर डेकोरेटर की सूझबूझ से खाली घर, दफ्तर रहने और काम करने की बेहतर जगह बन सकते हैं

वेद पाहुजा दिल्ली के एक वरिष्ठ इंटीरियर डेकोरेटर हैं. उन्होने एक व्यावसायिक इंटीरियर डेकोरेटर के रूप में दिल्ली पुलिस के कुछ उच्चाधिकारियों सहित कई कंपनियों के कार्यालय और तमाम लोगों के घरों को सजाया है. उनका कहना है कि एक कुशल इंटीरियर डेकोरेटर आपके घर, दफ्तर को कम पैसे में भी सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाने में अहम भूमिका निभा सकता है. आइए, वेद पाहुजा के सजाए घर, दफ्तरों की कुछ तस्वीरों पर नजर डालकर देखें कि किस तरह उन्होंने इन जगहों को ज्यादा खुशनुमा और ज्यादा उपयोगी बनाया है.

दो-तीन कमरे के घर में रहनेवाले यह सोचकर बैठ जाते हैं कि घर में फालतू जगह ही कहाँ है, जिसे इंटीरियर डेकोरेटर सजाए. जबकि अपनी सूझबूझ से कुशल इंटीरियर डेकोरेटर आपके घर के मुख्य कमरे को बहुपयोगी और ज्यादा सुखद बना सकता है (**चित्र-1**) जैसे इस तस्वीर में लैमीनेट की अलमारियाँ और ड्रेसिंग टेबल बनाकर इस शयनकक्ष को ऐसा बना दिया गया है कि यहीं आप तैयार भी हो सकते हैं और वक्त-बेवक्त आ टपकनेवाले करीबी परिवारिक मित्रों का स्वागत भी कर सकते हैं. टेलीविजन,

3





4

फोन और कुछ कुर्सियां तो आप देख सकते हैं.जो चीजें नजरों से बचाकर इसे इतना साफ-सुथरा और खाली-खाली स्वरूप दिया गया है वह हैं, बच्चों के खिलौने और चादर, [illegible] आदि, जिन्हें 'बाक्स बेड' में छिपाया गया है. सिरहाने वाले बॉक्स में टेलीफोन [illegible] डायरी और दवाइयाँ जैसी चीजें हैं. टेलीविजन के करीब वाली अल्मारी के आधे हिस्से में पति-पत्नी का 'वार्डरोब' और आधे में छोटी-सी निजी लाइब्रेरी है.जिस दीवार की ओर से फोटो ली गई है, उसमें और अल्मारियाँ हैं. दूसरे कमरे में खुलनेवाला दरवाजा और कमरे से जुड़ा 'लैट-बाथ' का दरवाजा है.

प्रकाश व्यवस्था में भी कमाल दिखाया गया है. टेलीविजन बालकनी खुलनेवाले दरवाजे के पास इस रखा है कि स्क्रीन सीधे न च और कमरे में रोशनी आ सके. तरह कमरे में सिर्फ दो तेज लैंप तरह लगे हैं कि बिस्तर के सिर की ओर वाले लैंप की रोशनी आराम से लेटकर पढ़ सकते हैं ड्रेसिंग टेबल के ऊपर वाले लैंप तैयार होते वक्त जरूरी रोशनी मि

इस छोटे से कमरे को ब होशियारी से 'डाइनिंग रूम' बन गया है. जगह की कमी का एहस न हो, इसलिए एक ओर ऊँचे कम चौड़ा शोकेस बनाया गया मेज के पीछे रखी अल्मारी बमुश्किल चौदह इंच चौड़ी है, क्रॉकरी और कटलरी के लि उपयुक्त है. कोने में विसरित पत्ति वाला ऊँचा 'चाइनीज बंबू प्लां लगाया गया है. (**चित्र-2**) इस कमरे में जरूरी हरियाली के रूप खाली पड़े कोने में जीवंतता आ गइ इसकी जगह कोई घना और फैला सा पौधा होता तो कमरा कितन भरा-भरा सा लगने लगता है. ए बड़ा तैलचित्र और दो-तीन छो शोपीस सुरुचिपूर्ण चुनाव की बा कहते हैं.

कोने की सज्जा में जरा स सावधानी बरतकर ड्राइंग रूम क खास माहौल पैदा किया जा सकत है. जहाँ 'सेंटर टेबल' के उस ओ दीवार से सटाकर रखा गया अंग्रेज के 'एल' आकार का सोफा ज्या लोगों की आवभगत के लिए उपयोग है (**चित्र-3**), वहीं सफेद संगमरम का खुला फर्श, जमीन से छत त उठे सादे से 'शोकेस' और ऊँचे पौ होने से दो फायदे हैं— एक तो कमर बड़ा-बड़ा लगता है, दूसरे छत उतन नीची नहीं लगती, जितनी व वास्तव में है. (**चित्र-4**)

दूसरी ओर (**चित्र-5**) फर्श पर काली बिछाने से माहौल में औपचारिकता आ जाती है

सीधी सतह, सरल ज्यामितीय डिजाइन औ सौम्य भूरे रंग के प्रभाव से इस दफ्तर की गरिम बढ़ गई है. (**चित्र-6**) बड़े खिड़की- दरवाज पर कोई पर्दे अथवा ब्लाइड न लगने से जहाँ दि





प्राकृतिक प्रकाश
कमी नहीं रहती,
सादगी का भी
सास होता है.
र से पर्दे बनवाने
उनके रख-
व के खर्चे से
छुट्टी. सूर्यास्त
बाद प्रकाश
स्था के लिए
में चारों ओर
विसरित प्रकाश
लैंप के अलावा
करने के लिए
प्त रोशनी के
छत में लगा
र के बीचोबीच
ट्यूबलाइट भी

दफ्तर का
प्शन' हो या घर
लॉबी, दोनों ही जगह की साज-सज्जा का
ष महत्त्व है, क्योंकि आगंतुक सबसे पहले यहीं पधारता है और आनेवाले पर पहला प्रभाव तो अच्छा पड़ना ही चाहिए. चित्र-7 में दिखाया गया 'रिसेप्शन एरिया' अपनी सादगी के कारण ही सुरुचिपूर्ण लग रहा है. सिर्फ दो बड़े सोफे



आपसी समानता
पूरा ध्यान रखा
है. धीमी रोशनी
गमलों में बेत
वृद्धि वाले
आरामदेह सोफे
बैठनेवालों के
अनौपचारिक मा
बनाते हैं.

इसके विप
चित्र 9 में करीने
लगे क्रमवार
पत्तियों वाले
फर्श पर बिछा न
कालीन
विक्टोरियन शैली
सोफे औपचारि
की दीवार ढहने
देते.





और दोनों ओर की दीवारों पर महराबदार बनावट से मेल खाते बड़े 'पिन [illegible] के निचले हिस्से के चारों कोने में बने हुए '[illegible]' [illegible] पौधों के लिए उपयोगी हैं. चि[illegible] [illegible] एक कोने में इंतजार करनेवालों [illegible] पत्रिकाएँ रखी जा सकती हैं.

चित्र 8 में दिखाए कोने का संयोजन [illegible] पर उन दफ्तरों के लिए उपयोगी है. जहाँ काम करनेवालों से मिलने आनेवालों के लिए बैठने की व्यवस्था कार्यालय में होकर रिसेप्शन एरिया में ही है.अधिकारी की मेज से लेकर फाइलिंग कैबिनेट [illegible] विशेष डिजाइन में बनाई गई है तथा



हरी-हरी वसुंधरा पर फूलों भरा यह चमन

...ष्णा मोहन के बँगले के प्रवेश ... पर ही आपको हर साल ...लों व लताओं की नई सजावट ...खने को मिलती है. प्रवेश द्वार ... हरी-हरी उगी मखमली घास ... फूलों से पति-पत्नी का ...खा नाम देखकर मैं ठगी-सी ... गई. बगीचे के अंदर जाकर ... जैसे अचानक मेरे मुँह से ...कल गया, "यह तो दूसरा ...ल गार्डन है."

राउज एवेन्यू के 204 नं. बँगले में प्रवेश करते ही ऐसा आभास होता है जैसे किसी ने प्रकृति के असीमित सौंदर्य को अपनी संपूर्ण व्यक्तिगत निष्ठा व लगन के साथ यहाँ आकर रच-बस जाने का निमंत्रण दिया हो. एक क्षण के लिए व्यक्ति हतप्रभ रह जाता है, इस अपूर्व व अनोखे सौंदर्य को देखकर. इस जीवंत पेंटिंग में अपनी कल्पना का रंग भरा है, अरुणा मोहन ने, जो एक वरिष्ठ आई.पी.एस. अधिकारी की पत्नी हैं. अरुणा मोहन के पास बहुत कुछ है, जिन पर वह गर्व महसूस कर सकती हैं. सौंदर्य, प्रतिभा एवं मृदु स्वभाव के अलावा भगवान ने उन्हें एक अद्भुत कल्पना शक्ति दी है, जिससे हर साल उनका बगीचा एक नए रूप-रंग में सजता है और सालों से हर प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करता रहा है. बोंसाई और किचेन गार्डेन में भी उन्हें महारत हासिल है. किचेन गार्डेन और हॉर्टिकल्चर संगठनों के साथ ही इकेबाना प्रतियोगिताओं में भी उन्हें प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है.



बागवानी के अलावा अरुणा मोहन को पेंटिंग और मूर्तियाँ बनाने का शौक है. उनकी बनाई मूर्ति बगीचे में सजी है. कभी-कभी पेंटिंग भी करती हैं, जो उनके कमरों की शोभा बढ़ाती है, पर मुख्य शौक फूलों और बागवानी का है.

फूलों के बीच रहकर वह कभी थकान महसूस नहीं करतीं. उनका कहना है, "मेरा मन करता है मैं हमेशा फूलों के बीच बैठी रहूँ." उनका सारा समय दो भागों में बँटा है, पति, घर और उसके बाद सारा समय फूल-पौधों को समर्पित है. फूलों व पेड़-पौधों से इतना जुड़ा महसूस करने के कारण ही वह हर रोज छह-सात घंटे अपने बगीचे में कार्य करती हैं. हर साल वह अपने बगीचे का स्वरूप और रूपरेखा बदल देती हैं. हर समय वह ऐसे उपाय सोचती रहती हैं, जिससे बगीचे को बेहतर रूप प्रदान किया जा सके. उनके अनुसार, "यह बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि अगर प्रतियोगिता में भाग

लेना है तो प्रत्येक चीज एकदम सही व विशिष्ट होनी चाहिए."

अरुणा मोहन के बँगले के प्रवेश द्वार पर ही आपको हर साल फूलों व लताओं की नई सजावट देखने को मिलती है. एक बार मैं फरवरी में खुलनेवाले राष्ट्रपति भवन का मुगल गार्डन देखने के बाद अरुणा मोहन का बगीचा देखने गई. प्रवेश द्वार पर हरी-हरी उगी मखमली घास व फूलों से पति-पत्नी का लिखा नाम देखकर मैं ठगी-सी रह गई. बगीचे के अंदर जाकर तो जैसे अचानक मेरे मुँह से निकल गया, "यह तो दूसरा मुगल गार्डन है."



एक तरफ किचेन गार्डन, दूसरी तरफ बोंसाई, एक तरफ झरना और दूसरी तरफ खूबसूरत गुलाब. 14 इंच से भी बड़े सफेद डेहलिया के फूल, गमले व ट्रे में लगा पीपल का पूरा पेड़ तथा संतरे, अमरूद, चीकू, अनार के बोंसाई पौधे और उन पर लगे फूलों को देखकर व्यक्ति आश्चर्यचकित रह जाता है. बड़े प्रेम से बगीचे की सैर करवाती अरुणा मोहन ने कई जड़ी-बूटियों वाले पौधे भी दिखाए. बगीचे का एक कोना भी आपको खाली नहीं मिलेगा.

फूलों के प्रति उनका प्यार व अनुराग जुनून की हद तक है. उनका कहना है, "मैं अपने बाग के पौधों से उसी तरह जुड़ी हूँ, जैसे एक माँ अपने बच्चे से जुड़ी रहती है."

स्कूल, कॉलेज के दिनों में जब सभी खेलकूद में लगे रहते थे, ये प्रकृति के अनोखे रूप को देखती थीं. जेबखर्च के लिए मिले पैसे माली को देकर उससे फूलों के पौधे या बीज मँगवाती थीं. अपने घर के आँगन में लगा, उन्हें फलते-फूलते देखकर खुश होती थीं. घरवाले उनकी प्रशंसा कर उनका उत्साह बढ़ाते. शादी के बाद उनके पति को मिले सरकारी बँगले में उनका यह शौक परवान चढ़ा. प्रतियोगिता में तो भाग लेना तब शुरू किया, जब उन्हें यह वर्तमान बँगला मिला. उस समय इस बँगले की हालत एकदम जीर्णशीर्ण थी. इसे नष्ट किया जानेवाला था, पर आज उस पुराने बँगले को इनकी सूझबूझ ने एकदम आधुनिक रूप प्रदान कर दिया है. आज फूलों, लताओं से घिरे इस बँगले को देखने के लिए राह चलते लोग रुक जाते हैं. साँसों में फूलों की खुशबू वाली ताजा हवा भर फिर आगे बढ़ जाते हैं. कुछ जोड़े तो तसवीरें खिंचवाने के लिए खड़े हो जाते हैं.

इनके पति भी इसमें कम दिलचस्पी नहीं लेते. इनकी प्रशंसा सुन वह भी आह्लादित होते हैं.

वसंत ऋतु में यहाँ के फूलों व पेड़-पौधों की सुंदरता देखते ही बनती है. कई तरह के फूलों की भरमार होती है, पर इसे ज्यादा आकर्षक बनानेवाली सूक्ष्म व्यवस्था है, विभिन्न रंगों के फूलों की क्यारियाँ. विभिन्न रंगों के खिलाकर जैसे अल्पना बनाई गई हो और कहीं पर कोई खूबसूरत डिज बनाई गई हो. फूलों को विशिष्ट शैली प्रदान करने के लिए वह अ कलात्मक हुनर इस्तेमाल करती हैं. इसके लिए वह अपने बीज खुद तै करती हैं. बरसात में उन्हें रोपने का कार्य शुरू हो जाता है. इसी समय वह बगीचे की योजना बनाना शुरू करती हैं कि कहाँ क्या लगाना है. बगीचे रूपरेखा बनाते समय वह कागज, पेंसिल लेकर बगीचे के शांत वातावरण बैठती हैं और उनका मस्तिष्क पौधों के रंग और रूप की कल्पना को का पर उतारता है. वह फूलों को खिलता हुआ देख सकती हैं. फिर बाकी च की योजना बनाना आसान हो जाता है. पहले वे फूलों की सुंदरता को पें के द्वारा प्रदर्शित करती थीं, धीरे-धीरे पेंटिंग के साथ उन्हें बगीचे में जी रूप दे उगाने भी लगीं.

बगीचे की व्यस्तता के कारण उन्हें सामाजिक कार्यों व किटी पार्टी लिए कम ही समय मिलता है. उनके पति की नौकरी ऐसी है कि वह ब ही व्यस्त रहते हैं, पर जैसा कि अरुणाजी बताती हैं, "बागवानी की व्यस ने मुझे भी उतना ही व्यस्त बना दिया है."

फूलों व पेड़-पौधों से वह इतना जुड़ा महसूस करती हैं कि एक जाड़े की एक रात जब तेज बारिश होने लगी, वह गहरी नींद से जाग बगीचे में दौड़ पड़ीं, अपने पौधों को देखने के लिए. उनके पति ने मज भी किया कि तुम्हें इनके लिए छतरियाँ भी बनवानी चाहिए.

बगीचे में पीछे की तरफ उन्होंने दो ग्रीन हाउस भी बनाए हैं, जहाँ पौध तैयार की जाती है तथा तेज धूप व वर्षा में पौधों की सुरक्षा मिलती



हालाँकि इसके लिए इन्होंने कोई प्रशिक्षण नहीं लिया पर बागवानी के सूक्ष्मतम पहलू से वह पूरी तरह वा हैं.

इसी प्रकृति प्रेम व बागवानी के शौक ने अरुणा मोहन शारीरिक रूप से स्वस्थ व स्लिम रखा है. जहाँ भी वे जाती एक पौधा जरूर लाती हैं. अब अपने पति के बहुत आग्रह पर अपनी जैसी गृहिणियों के लिए एक पुस्तक लिखना च हैं. अपने बगीचे के लिए वे अपनी किटी पार्टियाँ और किस तरह का सामाजिक समारोह छोड़ने के लिए तैयार हैं. फूल वे जुनून की हद तक प्यार करती हैं. उनके अनुसार, "पुरस व ट्रॉफियाँ जीतना एक संयोग है. सबसे ज्यादा संतोष व स बड़ा पुरस्कार तो लोगों की प्रशंसा व प्रेम है." उनकी सफ का राज है, हर चीज में उनकी व्यक्तिगत रुचि, देखभाल व ध्यान.

– शीला श्रीवास्त

आपकी संस्था

नशे के अँधेरों में प्रकाश की किरण

नवज्योति

• विमला रस्तोगी



नशाखोरी की बढ़ती प्रवृत्ति को रोकने के लिए कई सरकारी तथा गैर सरकारी संगठनों ने समय-समय पर प्रयास किए हैं. इसी प्रयास के अंतर्गत नशे के खिलाफ जंग जारी कर नशाखोरी की अंधी दुनिया में आशा की किरण चमकाई है, 'नवज्योति' ने.

नशा करनेवालों की अपनी एक अलग ही दुनिया होती है. नशीली वस्तुओं के शिकंजे में जकड़कर वे घर या बाहर चोरी करते हैं, घर का सामान बेच देते हैं, मार-पीट पर उतारु हो जाते हैं. कैसे भी हो, उन्हें नशा करना है. वे नहीं जानते कि नशे ने उन्हें मौत और बरबादी के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है.

एक अनुमान के अनुसार अकेली दिल्ली में ही दो से साढ़े तीन लाख के बीच नशेड़ी हैं, जो कोकीन, स्मैक, हेरोइन, एल.एस.डी. और शराब आदि नशीली वस्तुओं का इस्तेमाल करते हैं. पुलिस रिकार्ड के अनुसार प्रतिवर्ष लगभग 15 हजार नशा करनेवाले बढ़ जाते हैं. अफसोस की बात यह है कि नशे से पीड़ित व्यक्तियों में अपने इलाज के प्रति जागरूकता नहीं है. केंद्रीय समाज कल्याण विभाग ने नशा विधेयक अभियान के अंतर्गत गत वर्षों में लाखों रुपए खर्च किए हैं. वास्तव में नशाखोरी के खिलाफ जन जागरण की आवश्यकता है. नशाखोरी की बढ़ती प्रवृत्ति को रोकने के लिए कई सरकारी तथा गैर सरकारी संगठनों ने समय-समय पर प्रयास किए हैं. इसी प्रयास के अंतर्गत नशे के खिलाफ जंग जारी कर नशाखोरी की अंधी दुनिया में आशा की किरण चमकाई है, एक नई सुबह दी है, दिल्ली के सराय रोहिल्ला स्थित नवज्योति, दिल्ली पुलिस फाउंडेशन ने.

नशाखोरों को नई जिंदगी, नई दिशा देनेवाली इस संस्था नवज्योति की नींव रखी गई 1987 में, लीक से हटकर साहसपूर्ण काम करनेवाली डॉ. किरण बेदी ने. वेद मारवाह ने उन्हें सहयोग दिया. नवज्योति की जनरल सेक्रेट्री किरण बेदी उस समय उत्तरी दिल्ली में डी.सी.पी. थीं. किसी भी पद पर रहने के बावजूद अपनी व्यस्त दिनचर्या में से समय निकालकर किरण बेदी नवज्योति में समय-समय पर आती रहती हैं. वहाँ भर्ती लोगों तथा संस्था के कार्यकर्ताओं से बातचीत करके उनका मनोबल बढ़ाती हैं. 1988 में डॉ. सुनील वात्सायन ने निदेशक के रूप में यहाँ का कार्यभार संभाला और आज तक अपने दायित्व को बखूबी निभा रहे हैं.

निस्सहायों की सहायतार्थ प्रस्तुत नवज्योति नशाखोरों से नशे की आदतों को छुड़ाने, नशे की अँधी गलियों से बाहर निकालकर उनमें आत्मविश्वास जगाकर सामाजिक एवं आर्थिक पुनर्स्थापन के लिए प्रयासरत हैं.

नवज्योति ने अपनी स्थापना के कुछ समय बाद इस तरह के पाँच 'इंटरवेंशन सेंटर' पुलिस स्टेशन के अहातों में खोले हैं. 1990 में 'डे केयर सेंटर'

खोला गया, जिसमें नवज्योति कुटीर उद्योग के माध्यम से नशे से मुक्त हो जाने पर व्यक्ति यदि चाहे तो 'वोकेशनल ट्रेनिंग' भी ले सकता है.

नवज्योति में नशे के मरीज का चार सप्ताह का इलाज होम्योपैथिक दवाइयों, काउंसिलिंग, योग, व्यायाम तथा भीतरी एवं बाह्य मनोरंजन द्वारा किया जाता है.

नवज्योति में बतौर इंडोर इंचार्ज कार्यरत, प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ता (सोशल वर्कर) अजय कुमार सिंह ने बताया कि नशे की हालत में जकड़ा व्यक्ति पहले ओ.पी.डी. में आता है. रजिस्ट्रेशन के बाद उसकी डॉक्टरी जाँच की जाती है. दाखिल करने के बाद 'फर्स्ट स्टेज' में नशा छुड़ाने की कोशिश में रोगी ज्यादा परेशान रहता है. उसका शरीर अकड़ता है. रोगी तड़पता है, भागने की कोशिश करता है. उस समय योग पद्धति, मनो-सामाजिक पद्धति (साइको सोशल थेरेपी) तथा आध्यात्मिक कक्षाओं द्वारा उसका इलाज किया जाता है. मानसिक शक्ति के लिए जलनेति और कुंडलि तथा शारीरिक शक्ति के लिए व्यायाम कराए जाते हैं. विशेषज्ञों द्वारा तरह-तरह से बातचीत (काउंसिलिंग) द्वारा व्यक्ति को नशे की दुनिया से बाहर निकालने का प्रयास किया जाता है. यह शुरू के सात दिन चलता है. इसी दौरान हम रोगी की फैमिली हिस्ट्री (पारिवारिक इतिहास) लेते हैं. इसे हम 'केस स्टडी' लेना कहते हैं. फिर हम अमुक व्यक्ति की समस्या और आदतों को जानकर उसके इलाज की योजना (ट्रीटमेंट प्लान) बनाते हैं. कभी-कभी उसके परिवार के सदस्यों की सहायता भी माँगते हैं. ग्रुप तथा व्यक्तिगत काउंसिलिंग की जाती है. ऐसे नशाखोर व्यक्तियों की इगो कमजोर हो जाती है, जिससे वह बाहरी दुनिया से अपना तालमेल नहीं बिठा पाते. अतः व्यक्ति की इगो मजबूत कर उसके व्यवहार में परिवर्तन लाने के प्रयास किए जाते हैं. जीवन की सच्चाइयों के प्रति उसे जागरूक बनाकर उसे उसकी शक्ति और क्षमताओं से अवगत कराते हैं. [illegible] का प्रयास करते हैं. सोशल ट्रेनिंग में [illegible] समाज से जुड़ने की बात समझाई जा[illegible] 36 दृष्टिकोणों (एटीट्यूट्स) पर काम कर[illegible]

अंतः (इंडोर) विभाग में व्यक्ति को 30 [illegible] रखा जाता है.



डायरेक्टर सुनील वात्सायन, डॉ. किरण बेदी व डॉ. एस.डी. द्विवेदी संस्था के एक कार्यक्रम में.

तीन समय डॉक्टर विजिट को आते हैं. दो डॉक्टर हैं. एक प्रोग्राम ऑफिसर है जो मनोविज्ञान में एम.ए. हैं. दो प्रशिक्षित सोशल वर्कर हैं. कभी-कभी निदेशक भी उपचार देते हैं. चार सुपरवाइजर हैं. प्रतिदिन एक घंटा प्रोग्राम ऑफिसर राजरानी सक्सेना काउंसिलिंग लेती हैं. उनका निराशावादी दृष्टिकोण खत्म करने का प्रयास करती हैं. दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र भी अपने नाटकों द्वारा ऐसे व्यक्तियों का मनोबल बढ़ाते हैं.

यहाँ व्यक्ति को चार अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है. पहली अवस्था में अमुक व्यक्ति कहीं भी नहीं जा सकता. बाहर जाने की इजाजत नहीं हैं. दूसरी अवस्था में सामान आदि खरीदने जा सकता है. तीसरी अवस्था [...] अपने घरवालों से मिलने (ह[...] विजिट) जा सकता है. चौ[...] अवस्था में उसे ट्रेनिंग पर भे[...] जाता है.

नवज्योति नाट्यमंच द्वारा प्रस्तुत एक नाटक का दृश्य.



'डे केयर सेंटर' में उ[...] समय तीस व्यक्ति थे. आ[...] पर्वत में एक बड़ा हॉल ले र[...] है. ये लोग रात को सोने [...] लिए वहाँ जाते हैं, वहीं [...] खाना बनाकर लाते [...] नवज्योति में इस समय [...] व्यक्तियों के रहने की व्यवस[...] है. जगह की कमी है. य[...] आनेवाले व्यक्ति को सा[...] सेवाएँ निःशुल्क दी जाती हैं.

डॉ. किरण बेदी समय-समय पर यहाँ आक[...] व्यक्तियों से मिलती हैं. यहाँ रहनेवालों में किर[...] बेदी के प्रति बहुत श्रद्धा है.

नशे की अँधेरी गलियों से बाहर निकल आय[...] बाइस वर्षीय प्रवीन कुमार इस समय नवज्योति [...] कार्यरत है. अपने सात भाई-बहन में सबसे छोट[...] है प्रवीन. पिता रेलवे से रिटायर्ड हैं, फिलहाल[...] अपनी दुकान चलाते हैं. प्रवीन ने मुझे बताया कि[...] स्कूल के समय से ही उसने नशा करना आरंभ क[...] दिया था. नशा करने से पहले हमारी आदतें खरा[...] हो जाती हैं. संगति गलत हो गई. घर में चोरी कर[...] लगा. जेबें काटने लगा. मैंने 6 वर्ष तक नशा किया[...] दोस्तों के साथ झुग्गी-झोंपड़ी में ही रहने लगा. मे[...] बड़े भाई मुझे यहाँ लेकर आए. मैं तब नशे में ह[...] था. पहले ओ.पी.डी. में ले गए. एक सप्ताह [...] बहुत परेशान रहा. नशीली चीजें नहीं मिलीं तो मैं[...] भागने की कोशिश की, भाग नहीं सका. धीरे-धी[...] मैं समझने लगा. पहले मैं गुस्से पर काबू नहीं क[...] सकता था. अब कर लेता हूँ. यहाँ जीवन के प्र[...] हमारे नजरिए को बदला जाता है. हमारे अंदर भ[...] निराशा को निकालकर हमें आशावान बनाया जा[...] है. यहाँ आकर हमें पता चला कि हम कित[...] गलत सोचते थे. इसीलिए गलत काम करते थे[...] अब मैं दोबारा नशा नहीं करूँगा. घर जाक[...] पिताजी के साथ दुकान पर बैठूँगा. पहले वाले दोस[...] मिलेंगे तो क्या करोगे? पूछने पर प्रवीन ने कहा कि[...] वह उनसे नहीं मिलेगा, मनाकर देगा. यहाँ उस[...] 'न' कहना भी सीख लिया है. अब वह अप[...] जीवन, अपने भविष्य के बारे में सोचना चाहता [...]

बी.ए. तक पढ़े लक्ष्मण सिंह अमृतसर [...] रहनेवाले हैं. अब 35 वर्ष के हैं. 17-18 वर्ष [...] आयु से उन्होंने शराब पीनी शुरू कर दी. उन्हो[...] बताया कि मैं सोने-चाँदी का काम करता [...]

ने की आदत दिन पर दिन बढ़ती चली ई. घरवालों ने यह सोचकर शादी कर दी क शादी होने के बाद छोड़ देगा. पर मेरी गति की गलत थी. वैसे मैं सरदार हूँ, पर ने दाढ़ी और केश कटा दिए. बीच में क बार मैंने अमृत चखा. दस-ग्यारह हीने को पीना छोड़ दिया, फिर पीने गा. दिन-रात नशे में रहता. तीन बच्चे ो गए. उनका भी ध्यान नहीं रखता. रवाले मेरी पत्नी को दोष देते कि अपने भादमी को नहीं संभाल सकती. रोजगार प हो गया. जिनका माल बनाने को लिया, समय से नहीं दिया. तगादेवाले घर आते. मैं दोस्तों के घर शराब में डूबा रहता. घर आने पर पत्नी कुछ कहती तो उसे मारता-पीटता. उस पर शक करता. मेरे कई औरतों से संबंध थे. मैं दिन पर दिन पियक्कड़ होता गया. रात को दो बजे उठकर पीता. घरवालों ने मुझ से संबंध तोड़ लिए. मैं सबसे बड़ा हूँ.

मेरी पत्नी मुझ से मिलने आई थी. माँ नहीं आई. सुना है वह भी आएँगी. मुझे नवज्योति में आए हुए चार महीने हो गए. 3 महीने और रहना है. यहाँ रहकर मैंने पीना छोड़ दिया. मेरे अंदर दूसरों से बात करने की, अपनी गलती मानने की हिम्मत आई है, वरना मैं बिना पिए एक शब्द नहीं बोल पाता था. यहाँ से जाने के बाद मैं नए सिरे से जिंदगी शुरू करूँगा. इस संस्था का मैं आभारी हूँ. लक्ष्मण सिंह के आशान्वित चेहरे पर नए जीवन की शुरुआत की ललक स्पष्ट दिखाई दे रही थी.

निदेशक डॉ. सुनील वात्सायन ने बातचीत के दौरान बताया कि 1987 में स्थापित इस संस्था को सरकार ने आर्थिक सहायता 1992 से देनी आरंभ की है. यहाँ जगह की कमी है. आनेवाले



नशे की लत से मुक्ति के पश्चात उपहार वितरण.

प्रत्येक नशा पीड़ित को हम भर्ती नहीं कर पाते. म्यूनिसिपिल कॉरपोरेशन में आवेदन किया है. नई जगह मिल गई तो हम ज्यादा काम कर सकेंगे. यहाँ कई बार वेटिंग चलती है. यहीं से हम अपनी अन्य शाखाओं का भी कार्य करते हैं.

जागरूकता अभियान

दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ मिलकर हम जागरूकता के लिए काम करते हैं, प्रदर्शनियाँ लगाते हैं. विचार-विमर्श और वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ कराते हैं. हम दूसरे देशों से 'विचार विनिमय प्रोग्राम' भी करते है. नेपाल और भारत के बीच 'विनिमय कार्यक्रम' हुआ था. दूसरे देशों के अनुभव लेकर, अपने बताकर हम काम करने के बेहतर तरीके तलाशते हैं.

क्या नवज्योति संस्था के कार्यों से आम लोगों की निगाह में दिल्ली पुलिस की छवि बदली है, पूछने पर डॉ. वात्सायन बोले, "पुलिस की छवि सुधारने का हमने पूरा प्रयास किया. पहले लोग समझते थे कि यहाँ 'डंडा थेरेपी' ही होती होगी, लेकिन जब लोग यहाँ आकर देखते हैं तो उन्हें पता चलता है कि कई सौ पुलिस स्टेशनों में से एक पुलिस स्टेशन ऐसा भी है, जहाँ नशेड़ी को चोर नहीं समझा जाता, वरन उसे नशे की दुनिया से निकालने के लिए कार्य किया जाता है.



आप संसार के सबसे सफल इंसान हैं... हर सफल इंसान के पीछे एक महिला होती है, और आपके पीछे तो एक नहीं, अनेक महिलाएँ हैं!

बच्चों का क्रेच

तिहाड़ जेल में एक क्रेच नवज्योति संस्था की देखरेख में चल रहा है. तिहाड़ जेल क्रेच की इंचार्ज रमा जायसवाल ने बातचीत के दौरान बताया, "तिहाड़ जेल के क्रेच में पाँच-छ वर्ष तक की उम्र के 64 बच्चे हैं. क्रेच में छोटे-छोटे झूले हैं. बच्चों को खाना-पीना हम लोग ही देते हैं. क्रेच 11 बजे खुल जाता है. क्रेच में आनेवाले बच्चों को पहले हम नहलाते हैं, साफ कपड़े पहनने को देते हैं. बच्चों को खाना-पीना सब हम देते हैं. कपड़े शाम को वापिस ले लेते हैं. जेल में कोई बच्चा पैदा होता है, उसे हम कपड़े देते हैं. उसकी माँ को खाना देते हैं. क्रेच में आनेवाले बच्चों को खेलों की, रंगों की पहचान कराते हैं. ड्राइंग कराते हैं. महिला प्रतिरक्षा मंडल वालों का तिहाड़ जेल में एक क्रेच स्कूल है उसमें 5 वर्ष के बच्चे 9 बजे से 12.30 बजे तक पढ़ते हैं. हम बीस औरतों को ट्रेनिंग भी दे रहे हैं कि बच्चों को कैसे रखें? बच्चों की बीमारियों की जानकारी तथा बचाव के उपाय बताते हैं. गर्भवती महिला के बारे में जानकारी कराते हैं. कोई बच्चा बीमार हो जाए तो डॉक्टर को बुलाकर दिखाते हैं. जेल के अधिकारी हमें डॉक्टर की सुविधा देते हैं.

महिला विकास कार्यक्रम

नवज्योति संस्था का 'वीमेन डेवेलपमेंट प्रोग्राम' जहाँगीरपुरी में चलाया जा रहा है.

यमुना पुश्ते की 30,000 झुग्गी-झोपड़ी में रहनेवाले बच्चों के सुधार के कार्यक्रमों के साथ उनके माता-पिता को भी जागरूक किया जाता है. यमुना पुश्ते की संजय अमर कालोनी में नवज्योति प्राइमरी स्कूल में बच्चों को पढ़ाया जाता है. अब तक 500 से अधिक बच्चे लाभांवित हो चुके हैं. यमुना पुश्ते पर नवज्योति संस्था के अंतर्गत बालवाड़ी ट्रेनिंग योजना भी चल रही है. नवज्योति दिल्ली पुलिस फाउंडेशन से अब तक 500 के आसपास नशे से पीड़ित व्यक्ति लाभ उठा चुके हैं. कई व्यक्ति ठीक होने के बाद वहीं किसी न किसी पद पर काम कर रहे हैं.

दिल्ली पुलिस फाउंडेशन 'नवज्योति' ने नशे के खिलाफ विभिन्न आश्रमों में विभिन्न कार्यों हेतु शीर्ष सम्मान 'पहला अंतर्राष्ट्रीय मार्को एवार्ड' जीता है.

रिश्तों की सुगंध

नीता देवी की गोद में मुँह छिपाकर बैठ गई अनीता. नीता देवी ने आश्चर्य से पूछा, "क्या बात है अनीता? आज आते ही गोद में आकर बैठ गई, वरना रोज तो आते ही कहती थी कि भूख लगी है माँ, कुछ खाने को दो... क्या तबीयत ठीक नहीं है या प्यार आ रहा है माँ पर."

• सुधा आदेश

सातवीं कक्षा में पढ़नेवाली अनीता स्कूल से आते ही नीता देवी की गोद में मुँह छिपाकर बैठ गई. नीता देवी ने आश्चर्य से पूछा, "क्या बात है अनीता? आज आते ही गोद में आकर बैठ गई, वरना रोज तो आते ही कहती थी कि भूख लगी है माँ, कुछ खाने को दो...क्या तबीयत ठीक नहीं है या प्यार आ रहा है माँ पर."

"माँ, क्या सास बहुत खराब होती है?" माँ की बातों को अनसुना कर अनीता ने पूछा.

"सास क्यों खराब होगी? वह भी तो किसी की माँ होती है, लेकिन तू यह क्यों पूछ रही है?" नीता देवी ने अनीता से प्रश्न किया.

"तुम झूठ बोल रही हो माँ. यदि सास खराब नहीं होती तो रीमा की बहन नीना को क्यों जलाकर मार देती?" क्रोधित स्वर में अनीता ने कहा.

अब चौंकने की बारी नीता की थी. क्या नीना को जलाकर मार डाला? उफ! कैसे इंसान हैं, जो बहू को इंसान नहीं, निर्जीव वस्तु समझते हैं, जिसमें सुख, दुख, भावना, इच्छा, आकांक्षा नाम की कोई अनुभूति नहीं होती. जब जैसे चाहा उपभोग कर लिया, जब चाहा दुत्कार दिया...धिक्कार है ऐसे लोगों पर...नरपिश पर...! मन में विचारों का सैलाब उमड़ प किंतु प्रकट में बोली, "तुझे किसने बताया? रीमा स्कूल आई थी?"

"नहीं माँ, रीमा तो नहीं आई थी, उस बगल में रहनेवाली शशि बता रही थी कि र तो रो-रोकर पागल हुई जा रही है. उसके प कल ही रींवा चले गए," थोड़ा रुककर पु बोली, "माँ, रीमा अकसर कहती थी कि उस दीदी को उसके सास-ससुर बहुत परेशान क थे. थोड़ी-सी भी गलती हो जाने पर खाने नहीं देते थे तथा अकसर कुछ न कुछ माँग कर घर भेज देते थे. इस बार तो वह जाना ही न चाह रही थी किंतु जीजाजी आकर आश्वास देकर ले गए थे कि अब कोई शिकायत का मौ नहीं देंगे. यदि फिर कभी ऐसा हुआ तो वे अल घर बसा लेंगे. माँ, मैं कभी शादी नह करूँगी...तुम्हें छोड़कर कभी नहीं जाऊँगी," म के आँचल में मुँह छिपाकर सिसकते हुए अनीत बोली.

"अच्छा बाबा, रो मत. जैसी तेरी इच्छा ह वैसा ही करना. अभी तो हाथ धोकर खाना ख ले," नीता देवी ने उसके बालों में उँगलियाँ फेरत



प्यार से कहा.

रीमा की माँ मिसेज भंडारी से [illegible] की कोई ज्यादा जानपहचान [illegible] थी. किंतु रीमा अनीता की [illegible]भ्र मित्र होने के नाते अकसर [illegible]के घर आती रहती थी. कभी [illegible]से भी नीना के ऊपर हुए [illegible]याचार का जिक्र रीमा ने किया [illegible] किंतु घर-घर की कहानी [illegible]मकर उन्होंने इस बात को तूल नहीं [illegible]ा था. किंतु आज ऐसा भयानक [illegible] सुनकर वह सन्न रह गई थीं.

[illegible]बीस वर्ष पूर्व का वह दृश्य उन्हें [illegible] आ गया, जब उनकी अपनी माँ [illegible] काम बिगड़ने पर तुरंत बोल [illegible] थी, "खूब आराम कर ले, जब [illegible] के घर जाएगी तो पता चलेगा."

[illegible] बार वह भी झल्लाकर बोल उठी थी कि [illegible] सास इतनी बेरहम होती है तो वह शादी ही [illegible] करेगी और सचमुच शादी पर से उसका [illegible]वास उठ गया था, जब उन्होंने देखा कि [illegible]की चचेरी बहन अनुपमा को चार साल तक [illegible] न भर पाने के कारण उसके ससुरालवालों ने [illegible] की पदवी से विभूषित कर उसे वापस [illegible]के भेज दिया था. वह तो भाग्य अच्छा था [illegible]पमा दीदी का कि चाचाजी के ऑफिस के ही [illegible] ऑफिसर ने उनका हाथ माँग लिया था, [illegible]की पत्नी दो वर्षीया पुत्री उनको सौंपकर एक [illegible]ारी के कारण असमय ही चल बसी थीं.

आज अनुपमा दीदी अत्यंत खुश हैं. उनका एक बेटा भी है, जिसने उनकी [illegible]नी कोख से जन्म लिया. कमी उनके पहले [illegible] में थी और दोष मढ़ दिया बेचारी दीदी पर. [illegible]ह पशु के सदृश बेचारी चली आई थीं [illegible]मानित...बेआबरू होकर अपने तथाकथित [illegible]से.

[illegible]स्त्री का घर कौन-सा है, नीता को आज तक [illegible]झ में नहीं आया था. उसका जीवन एक ऐसी [illegible] की भाँति है जिसकी जड़ें तो कहीं हैं, [illegible]कन जीवनयापन के लिए उसे किसी मजबूत [illegible] के तने का सहारा लेना पड़ता है.

[illegible]शादी के आरंभिक दिनों में थोड़ी-सी भी त्रुटि [illegible]असावधानी पर जब व्यंग्यबाणों की बौछार [illegible] थी तो अत्यंत पीड़ा होती थी और तन-मन [illegible]तार हो जाता था. लगता था अपना कोई [illegible]तत्व, अभिलाषा है ही नहीं. अपने लिए नहीं, [illegible] के लिए, दूसरों की इच्छानुसार [illegible]नयापन करना है. किंतु समय अंतराल के पश्चात सब कुछ अच्छा लगने लगता है. पति और बच्चे उसके त्याग को, कार्य का महत्त्व देने लगे हैं. कुछ खोकर ही कुछ पाया जा सकता है. लेकिन कैसे हैं वे लोग, जो कुछ पैसों के लालच में अपनी बेटी जैसी बहू को जिंदा जला देते हैं? सोच-सोचकर सिर में दर्द होने लगा था.

प्रदीप ने ऑफिस से लौटकर घर में अँधेरा देखा तो कहा, "नीता, कहाँ हो तुम? लाइट क्यों नहीं जलाई? क्या हुआ तुम्हें? क्या तबियत खराब है?"

"कुछ नहीं, बस सिर में दर्द है." नीता ने उठकर लाइट जलाते हुए कहा.

"कुछ तो बात होगी, वरना तुम इतनी जल्दी उदास नहीं होती. तुम्हारी इसी जिंदादिली के तो कायल हैं हम," प्रदीप मुसकराकर बोले.

"हाँ, बात ही कुछ ऐसी है. अनीता की सहेली रीमा की बहन को उसके ससुरालवालों ने दहेज के लिए जिंदा भून डाला."

"उफ! यह तो अच्छा नहीं हुआ. ऐसे लोगों को कठोर सजा मिलनी ही चाहिए."

"बाद में सजा मिले भी तो क्या? कितने लाड़-प्यार से माता-पिता अपनी औलाद को पालते हैं. पैर में काँटा भी चुभ जाए, तो यूँ लगता है जैसे किसी ने सीने में छुरा भोंक दिया हो. मैं अपनी अनीता की शादी ऐसे घर में करूँगी, जहाँ सास-ससुर, ननद, देवर का कोई झंझट ही न हो, सिर्फ अकेला लड़का हो..."

"पागल मत बनो...प्रत्येक रिश्ते का अपना महत्त्व है, रस है. रिश्ते ही जीवन में मधुरता का एहसास कराते हैं. सभी तो एक जैसे नहीं होते. हमारा भी बेटा है...क्या हम अपनी बहू के साथ ऐसा व्यवहार करेंगे? जहाँ फूल हैं, वहाँ काँटे भी होंगे."



बेडरूम में गई तो देखा, अनीता तौलिया लपेटे ड्रेसिंग टेबल में स्वयं को विमुग्ध होकर निहारे जा रही थी.

"शायद आप ठीक कह रहे हैं," कहकर नीता चाय बनाने के लिए चली गई.

सृष्टि का चक्र चलता रहा, पतझड़ ने आकर कभी अरमानों को कुचला तो कभी बसंत की बासंती बयारों ने मन को सहलाकर ठंडक पहुँचाई. कब यौवन ने अपने रंग दिखाकर बच्ची से अनीता को एक खूबसूरत, बुद्धिमान, साहसी नवयुवती में परिवर्तित कर दिया, पता ही नहीं चला. एक दिन नीता रसोई में खाना बनाने में व्यस्त थी. शाम को प्रदीप के कुछ मित्र सपरिवार खाने के लिए आ[illegible] थे. नैपकिन लेने के लिए बेड[illegible] गई तो देखा अनीता तौलिया लपेटे ड्रेसिंग टेबल में स्वयं को विमुग्ध होकर निहारे जा रही थी. उसकी अचानक उपस्थिति से सचेत होकर अलमारी खोलते हुए बोली, "माँ, कपड़े बाथरूम में गिरकर गीले हो गए थे. कब से आपको आवाज लगा रही थी, किंतु आपने सुना ही नहीं..."

"मैं खाना बनाने में व्यस्त थी, अतः सुना नहीं होगा." नीला देवी अपनी पुत्री के सौंदर्य पर स्वयं मुग्ध हो उठी थीं: शृंगार करना स्त्री की बेबसी है, चाहे वह खूबसूरत हो या बदसूरत. किंतु शीशे में स्वयं को देर तक बार-बार निहारना यौवन के आगमन की पूर्वसूचना नहीं तो और क्या है?

रात्रि में सबके जाने के पश्चात प्रदीप की तरफ मुखातिब होकर बोली, "अपनी अनीता आगामी माह में बाइस साल की हो जाएगी. अब उसके विवाह के लिए उपयुक्त वर की तलाश प्रारंभ कर दीजिए."

"अभी कौन-सी उम्र बीती जा रही है. एम.बी.बी.एस. तो कर लेने दो. अपनी अनीता बुद्धिमान है, खूबसूरत है, कोई राजकुमार आकर हमसे उसका हाथ माँग लेगा."

"यह आपकी गलतफहमी है. लड़की चाहे कितनी भी बुद्धिमान या सुंदर क्यों न हो, लड़की के माता-पिता ही रिश्ता लेकर लड़केवालों के घर जाते हैं."

"ठीक है बात करूँगा," प्रदीप ने करवट बदलकर लेटते हुए कहा.

प्रत्येक बात को हलके-फुलके ढंग से लेना प्रदीपजी की खासियत थी. कभी तनाव या चिंता में उनको नहीं देखा. कभी नीता उदास होती तो कहते, "ऐसे चेहरा लटकाकर मत बैठा करो. तुम

उदास होगी तो उनका मनोबल टूटेगा और इस बीमारी में मनोबल ही इंसान को कभी-कभी लंबे समय तक जीने के लिए बाध्य करता है. अकसर कहते कि कर्तव्य किए जाओ, फल की आशा मत करो. जहाँ इच्छाओं ने अपनी जड़ें फैलानी प्रारंभ कीं, वहीं दुख जैसी जंतु पैरासाइट की भाँति चिपक जाएगा." किंतु नीता देवी कभी भी चिंता नामक जीवन से बच नहीं पाईं. फलस्वरूप असमय ही डायबिटीज, ब्लडप्रेशर नामक बीमारियों की शिकार हो गईं.

एम.बी.बी.एस. की परीक्षाफल निकलने के पश्चात प्रदीप भी अनीता के विवाह के लिए उत्सुक हो उठे. परिचितों ने कुछ रिश्ते सुझाए

"माँजी, आप सचमुच मुझसे प्रसन्न हैं तो मैं एक बात कहना चाहती हूँ. वादा कीजिए, नाराज नहीं होंगी."



किंतु कहीं परिवार बड़ा था तो कहीं लड़के की आयु अधिक, कहीं लड़का मोटा तो कहीं साँवला. जहाँ सब कुछ ठीक होता तो वहाँ परिवार का रहन-सहन और आर्थिक स्थिति आड़े आ जाती. जहाँ सब कुछ मनमुताबिक होता, वहाँ दहेज की इतनी माँग होती कि पूरा करने में स्वयं को असमर्थ पाते. नीता देवी को सदैव यही लगता कि उनकी सुंदर, पढ़ी-लिखी, छुई-मुई लड़की कैसे ऐसे परिवारों में स्वयं को स्थापित कर पाएगी? यदि घर का काम करती रह गई तो उसका कैरियर नष्ट हो जाएगा. लड़की डॉक्टर है तो लड़का भी डॉक्टर ही होना चाहिए. तभी कैरियर से संबंधित कठिनाइयों को समझकर सहयोग [illegible] अतः चुनाव का क्षेत्र भी सीमित हो [illegible] देखते-देखते दो वर्ष बीत गए. पी.जी. में दा[illegible]

मिल जाने के कारण वह व्यस्त हो गई थी. अत्यधिक काम, तनाव के कारण चेहरे की स्वाभाविक कमनीयता, लावण्य धीरे-धीरे लुप्त होने लगा था. इस बीच एक-दो रिश्ते और आए, लेकिन कहीं भी बात न बन पाई.

अनीता ने भी घोषणा कर दी कि देखने-दिखाने का सिलसिला अब और सहन नहीं होता. अतः उसके लिए परेशान न हों. सतीश भी बी.ई करके एक प्राइवेट फर्म में नौकरी करने लगा था. यद्यपि उसके लिए अनेक ऑफर आ रहे थे, किंतु बड़ी बहन के होते छोटे की शादी कैसे करें? नीता देवी आदतन झुँझलाने लगी थीं. अनीता की शादी में देरी का जिम्मेदार वे प्रदीप को मानने लगी थीं.

क्योंकि वह ही कुछ कमी निकालकर वर को अनीता के अनुपयुक्त घोषित कर देते.

एक दिन ऑफिस से आकर प्रदीप बैठे ही थे कि अनीता आकर बोली, "पिताजी, मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूँ. क्रोधित मत होइएगा, धैर्य से मेरी बात सुनिएगा.

"मैं कॉलेज के एक प्रोफेसर से प्यार करने लगी हूँ. वह भी मुझे चाहते हैं. वह मुस्लिम हैं. उनकी विधवा माँ और एक अपाहिज भाई है. उन्होंने अभी तक इसीलिए विवाह नहीं किया क्योंकि उन्हें अपनी विधवा माँ एवं भाई की देखभाल के लिए समान विचारों तथा समान प्रोफेशन में संलग्न युवती चाहिए. वह विकलांग बच्चों के सहायतार्थ एक [illegible]र्सिंग होम खोलना चाहते हैं जिससे कि उनके भाई [illegible] बच्चों में से कुछ के जीवन को वह खुशियों से भर सकें. मैं भी उनकी पत्नी बनकर उनके [illegible] में हाथ बँटाना चाहती हूँ."

"बेटी, क्या तुम प्रोफेसर से प्यार करती [illegible] वह तुम्हारे लक्ष्य प्राप्ति का साधन है? दूस[illegible] हम सरयूपारीण ब्राह्मण हैं और [illegible] मुस्लिम...तुम्हारी माँ सुनेगी तो मर जाएग[illegible] तुम्हारी सदैव अच्छे कार्यों के लिए हिमाय[illegible] है, गलत कार्यों के लिए मुझसे अपेक्षा [illegible] तुम्हारा भ्रम है," किंचित क्रोध में अनीत[illegible] समझाते हुए प्रदीप बोले.

"पिताजी, मैं आपकी और माँ की आ[illegible] बिना कोई कदम नहीं उठाऊँगी, लेकिन [illegible] बताना अवश्य अपना कर्तव्य समझती ह[illegible] विवाह करूँगी तो सलीम से अ[illegible] अपना जीवन समाज सेवा में [illegible] कर दूँगी."

यद्यपि प्रदीप प्रारंभ से [illegible] उदारवादी रहे थे. धर्म, जात-पात [illegible] सदैव ही उन्होंने त्याज्य माना था [illegible] नीता को कभी भी अपने विचार[illegible] अनुरूप नहीं ढाल पाए.

अनीता की जिद को देखकर [illegible] अर्द्धविक्षिप्त हो गई थीं. अनीता [illegible] देखकर वह उखड़ ज[illegible] अनाप-शनाप बकने लगतीं, ले[illegible] अनीता के निर्णय में कोई बदलाव [illegible] आया. नीता के कहने पर कि तुम [illegible] मुस्लिम से विवाह करोगी तो स[illegible] का कहीं विवाह नहीं हो पा[illegible] अनीता ने कहा, "मुझे कोई जल्दी [illegible] है. तुम पहले सतीश का विवाह [illegible] दो. मेरा निश्चय अटल है."

घड़ी की सूइयाँ धीरे-[illegible] खिसकती रहीं, दिन-रात होते गए [illegible] साथ ही समय गुजरता गया. सतीश का वि[illegible] भले ही इकलौती कन्या सुकन्या से हो [illegible] सलीम ने अपना नर्सिंग होम खोल लिया [illegible] अनीता पी.जी. करके उसकी सहायक ब[illegible] नर्सिंग होम में काम करने लगी.

सुकन्या अपने नाम के अनुरूप ही धीर-[illegible] एवं मृदु स्वभाव की थी. धीरे-धीरे उसने घ[illegible] संपूर्ण प्रबंध अपने हाथों में ले लिया. घर के [illegible] सदस्यों से ऐसे हिल-मिल गई मानों सदि[illegible] वह यहीं रह रही हो. अनीता, उसकी न[illegible] ज्यादा उसकी मित्र, बड़ी बहन जैसी थी [illegible] नीता, उनको तो माँ से भी अधिक मान-स[illegible] देती थी, चाहे वह कितना भी क्यों न झुँझ[illegible] समय-समय पर उनके नाश्ते, खाने एवं द[illegible]

– शेष पृष्ठ [illegible]

स्पौंडलाइटिस (गरदन का दर्द)

आ ज की इस तेज रफ्तार जिंदगी में आदमी मानसिक रूप से इतना व्यस्त हो गया है कि शारीरिक श्रम करने के लिए उसके पास समय ही नहीं है. और जो थोड़ा-बहुत समय निकलता भी है तो व्यक्ति अपने को अधिक से अधिक आराम पहुँचाने कि कोशिश में रहता है. इस दौरान अपने बैठने, खड़े होने व लेटने के गलत तरीकों कारण अनजाने में ही वह अपने को एक नया रोग लगा लेता है, जिसे डॉक्टरी भाषा में ंडलाइटिस कहते हैं. यह किस उम्र में होता है, किन कारणों से होता है, इससे शरीर को क्या कसान पहुँचता है तथा इससे कैसे बचा जा सकता है? ऐसे ही प्रश्नों की वैज्ञानिक व्याख्या के ए हमने दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल के वरिष्ठ अस्थि रोग विशेषज्ञ व परामर्शदाता डॉ. ीश गोयल से बातचीत की.



डॉ. हरीश गोयल



गर्दन का दर्द या स्पौंडलाइटिस क्यों और किस उम्र में होता है?

गर्दन का दर्द या स्पौंडलाइटिस गलत तरीके से बैठने की वजह से होता है. ज्यादातर यह डेस्क वर्क करनेवाले या अध्ययन का काम करनेवालों को होता है. यह दर्द 40 वर्ष की आयु के बाद शुरू होता है. आजकल युवा वर्ग तथा बच्चे भी इसकी चपेट में आने लगे हैं.

बच्चों या युवा वर्ग में यह कैसे हो जाता है?

युवा वर्ग या बच्चों में यह दर्द गलत ढंग से बैठने, लेटकर टीवी देखने या बिस्तर पर टेढ़े लेटने से हो जाता है.

स्पौंडलाइटिस होने के लक्षण क्या हैं? कैसे पता चलता है कि स्पौंडलाइटिस है?

इसके अनेक लक्षण हैं :

1. ज्यादातर तो गर्दन में दर्द होना.

2. दर्द के साथ चक्कर आना.

3. गर्दन में दर्द के साथ बाजू में दर्द होना तथा हाथों का सुन्न हो जाना.

क्या यह बीमारी स्त्री और पुरुष दोनों को होती है?

यह बीमारी स्त्री और पुरुष दोनों में होती है. 40 वर्ष के बाद 80% लोग इस बीमारी की चपेट में आ जाते हैं. गरीबों में यह बीमारी न के बराबर होती है. शारीरिक श्रम के कारण वे इससे बच जाते हैं.

क्या गर्दन दर्द के अन्य कारण भी हो सकते हैं?

हाँ, गर्दन दर्द के और भी कारण हैं, जैसे गर्दन की टी.बी., बोन ट्यूमर का होना. कई बार गर्दन की हड्डियों में पैदायशी खराबी होती है. बचपन में इसका पता नहीं लगता, बल्कि इसका पता बड़ी उम्र में आकर लगता है.

इसके इलाज के लिए क्या करना चाहिए?

सबसे पहले हर गर्दन दर्द को स्पौंडलाइटिस समझकर अनदेखा न करें. डॉक्टर को बिना दिखाए स्वयं एक्सरसाइज या इलाज नहीं करें. इलाज डॉक्टर को दिखाकर उसकी सलाह से करें. अगर 15 से 16 वर्ष की उम्र से ही सावधानियाँ बरती जाएँ तो इससे बचा जा सकता है. 40 वर्ष की उम्र के बाद व्यायाम करना लाभदायक होता है. अपने बैठने का सही तरीका अपनाएँ.

क्या हृदय, दमे और डाइबीटिज के रोगी भी व्यायाम द्वारा ही ठीक होते हैं? क्या वे व्यायाम कर सकते हैं?

स्पौंडलाइटिस का मुख्य इलाज व्यायाम ही है. यह बहुत कठिन व्यायाम नहीं है, जिसको करने से हार्ट या दमा के रोगी को कोई परेशानी हो. परंतु सावधानी के लिए उस रोगी को डॉक्टर से बात करके ही व्यायाम करना चाहिए.

क्या इस दर्द में दवाइयाँ भी दी जाती हैं?

स्पौंडलाइटिस के दर्द में दवाइयों की कोई भूमिका नहीं है, पर यदि किसी रोगी को दर्द बहुत ज्यादा है, वह गर्दन नहीं हिला सकता या चक्कर आ रहा हो, तो उस अवस्था में दर्द या चक्कर को कम करने के लिए दवा दी जा सकती है. उस दौरान व्यायाम करने से दर्द बढ़ सकता है. जब दर्द रुक जाता है, तब डॉक्टर की सलाह से व्यायाम शुरू करना चाहिए.

क्या इस बीमारी में ऑपरेशन की जरूरत होती है?

गर्दन की हड्डी में स्पाइनल कोर्ड गुजरती है. अगर स्पौंडलाइटिस की वजह से स्पाइनल कोर्ड पर कुछ दबाव पड़ता है, तो रोगी को पैरालाइसिस (लकवा) होने का खतरा हो जाता है. ऐसी अवस्था में दबाव को हटाने के लिए ऑपरेशन जरूरी हो जाता है.

हमने देखा है कि बाजार में इस दर्द के लिए दिन प्रतिदिन नए तकिए आ रहे हैं. क्या रोगी को तकिया लगाना चाहिए? रोगी का बिस्तर कैसा होना चाहिए?

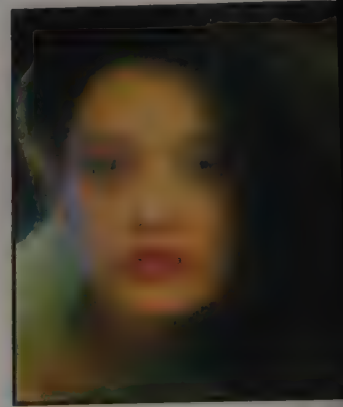
सोने के लिए पलंग का बेस सख्त होना चाहिए. गद्दा न बहुत ज्यादा मुलायम हो और न ही ज्यादा सख्त हो. तकिया कोई भी इस्तेमाल करें, पर यह देखना जरूरी है कि अगर आप सीधे सोते हैं तो तकिया नहीं लगाना चाहिए, पर करवट से सोते हैं तो तकिए का इस्तेमाल अति आवश्यक है. तकिया भी ज्यादा मुलायम और ज्यादा सख्त नहीं होना चाहिए.

फोल्डिंग या बान की चारपाई सोने के लिए ठीक नहीं है. अगर उस पर सोते हैं, तो वह ठीक से कसी होनी चाहिए अर्थात ढीली नहीं होनी चाहिए.

इस रोग के बारे में कुछ विशेष कहना चाहेंगे?

इसे साधारण दर्द समझकर टालें नहीं. कभी-कभी इसकी वजह से लकवा तक होने के संभावना होती है. अतः इस रोग के लक्षण दिखते ही इलाज शुरू कर देना चाहिए. अपने बैठने, लेटने के तरीके को ठीक रखें. अपने को तनाव से मुक्त रखें व नियमित व्यायाम करते रहें. ■

छिलकों से सौंदर्य



फल-सब्जियों के छिलकों को हम बेकार समझकर फेंक दे हैं, जबकि ये छिलके भी स्वास्थ्य और सौंदर्य संबंधी अने समस्याओं को दूर कर सकते हैं. आयुर्वेद में सौंदर्यवर्द्धन हे छिलकों के प्रयोग की पुरानी परंपरा रही है. इनमें से कुछ सर और सफल प्रयोगों का विवरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है :

झाईं

संतरे और नीबू के छिलकों को सुखाकर महीन पीस लें. इ चूर्ण में गाय का कच्चा दूध और थोड़ा गुलाब जल मिलाकर चेह पर उबटन की भाँति लगाएँ. सूख जाने पर ताजे पानी से चेहरे क धो डालें. इस प्रयोग से चेहरे पर पड़ी झाईं मिट जाती है.

मुँहासे

अनार और संतरे के छिलकों को हल्दी के साथ पीस लें. इसमें थोड़ा-सा नीबू का रस मिलाकर चेहरे पर नियमित लगाने से मुँहासे में काफी लाभ मिलता है.

त्वचा की कालिमा

रस निकालने के बाद नीबू के छिलकों को फेंके नहीं. कोहनी घुटनों, उँगलियों के पोर और तलवों पर इन्हें रगड़ें. इससे इन स्थान पर जमी मैल आसानी से साफ हो जाती है और यहाँ की त्वचा भ कोमल हो जाती है.

जलने के निशान

इन निशानों पर पपीते के छिलकों को रगड़ने से ये धीरे-धी मिट जाएँगे.

स्वस्थ बालों के लिए

संतरे एवं नीबू के छिलकों का चूर्ण आँवले डाले पानी मिलाकर बालों को धोने से बालों की रूसी खत्म होती है और बा लंबे व घने बनते हैं.

नाखून

नीबू के छिलकों को नाखूनों पर रगड़ने से ये दाग रहित, स्वच और चमकीले हो जाते हैं.

दाँतों की चमक

इसी तरह दाँतों को चमकाने के लिए नीबू के छिलकों व सप्ताह में एक-दो बार दाँतों पर रगड़ें. साथ ही इसके छिलव को सुखा एवं पीसकर इसमें थोड़ा-सा पिसा हुआ नमक मिलाव इसे मंजन की भाँति भी इस्तेमाल कर सकती हैं. इससे दाँत व कीड़े भी दूर होते हैं. ध्यान रहे कि नीबू यों भी दाँतों और मसू के स्वास्थ्य के लिए उत्तम माना गया है, खासकर विटामिन 'स की वजह से.

– डॉ. प्रकाश कुमार



हिला बस स्टॉप पर एक युवक को देखकर बोली, "हाय! कितना सुंदर है."

"कौन, मैं?" युवक ने चहककर पूछा.

"नहीं, आपके स्वेटर का डिजाइन." महिला जवाब दिया.

–☆–

त्रकार ने फिल्म अभिनेता से प्रश्न किया, "आपने पाँच शादियाँ क्यों की?"

अभिनेता ने फिल्मी अंदाज में जवाब दिया, ख़तरों से खेलने का शौक है हमें."

–☆–

क सज्जन सीढ़ी लगाकर दीवार पर पेंट कर रहे थे. तभी उनका दोस्त आया और बोला, अरे यार, ब्रश तो मजबूती से पकड़ रखा है न?"

"क्यों? सज्जन ने प्रश्न किया.

"मैं थोड़ी देर के लिए सीढ़ी ले जा रहा हूँ." स्त ने बताया.

–☆–

र से बाहर जाते हुए माँ ने अपने बच्चों को समझाया, "देखो, कोई भी आए और पूछे कहना कि पिताजी के साथ बाजार गई ."

थोड़ी देर में जब बच्चों के पिताजी आए तो होंने पूछा "तुम्हारी मम्मी कहाँ हैं?

"मेरे पिताजी के साथ बाजार गई हैं." बच्चे ने जवाब दिया.

–☆–

धोबी ने एक व्यक्ति से पूछा, "क्या इस मुहल्ले में आपसे भी बेहतर गानेवाला कोई गायक आ गया है क्या?"

"क्यों, क्या बात है?" उस व्यक्ति ने पूछा.

"रोज तो मेरा गधा आपके घर के पास मिल जाया करता था, परंतु आज पता नहीं किधर चला गया." धोबी ने स्पष्ट किया.

–☆–

"समझ में नहीं आता कि मैं लेखक बनूँ या कवि?" एक युवक ने अपने मित्र से पूछा.

"लेखक बनो." मित्र ने सलाह दी.

"क्या तुमने मेरे लेख पढ़े हैं?" युवक ने पूछा.

"नहीं, कविताएँ पढ़ी हैं." मित्र ने स्पष्ट किया.

–☆–

एक आलसी व्यक्ति ने एक दुर्घटना में अपनी दोनों टाँगें गँवा दीं.

डॉक्टर ने उस व्यक्ति से कहा, "एक बुरी खबर है. आप जीवनभर चल नहीं सकेंगे."

"वह तो ठीक है... हाँ, पर... वह बुरी खबर क्या है?" आलसी व्यक्ति ने प्रश्न किया.

–☆–

जयप्रकाश : "मुझे अपनी सास अच्छी नहीं लगती."

सुशील : "पर सोचो, यदि वह नहीं होती, तो तुम्हारी पत्नी कहाँ से आती?"

जयप्रकाश : "वही तो..., न वह होती, न बीवी आती."

–☆–

पत्नी : "बस, अब और तकलीफ न करो. गाड़ी तक जाने में प्लेटफॉर्म टिकट भी लेना पड़ेगा."

पति : "कैसी बातें करती हो. तुम्हें विदा होते देखने में तकलीफ कैसी. और इस अवसर के लिए मैं दो रुपए भी खर्च नहीं कर सकता क्या?"

–☆–

शराब के नशे में धुत्त पति से पत्नी ने कहा, "क्या आप यह नहीं पहचानते कि मैं आपकी पत्नी हूँ?"

"हम शराब पीकर हर नाम भूल जाते हैं." शराबी पति ने जवाब दिया.

–☆–

"क्यों, तुमने रामू को कितने थप्पड़ मारे?" समाचार उद्घोषक ने अपने छोटे बेटे से पूछा.

"पाँच." जवाब मिला.

"पापा, यह झूठ बोल रहा है. पूरे दस मारे थे." दूसरा बेटा रोता हुआ बोला.

"जी, मैं तो सरकारी सूत्र के अनुसार बता रहा था." छोटे बेटे ने स्पष्ट किया.

–☆–

युवती सज-धजकर अपने प्रेमी की प्रतीक्षा कर रही थी. प्रेमी आकर बोला, "हमारी आज की रात एक यादगार होगी. मैं एक बढ़िया फिल्म के तीन टिकट ले आया हूँ."

"तीन... क्यों?" युवती अचकचा कर बोली.

"तुम्हारे पिता, माँ और भाई के लिए." प्रेमी ने स्पष्ट किया.

–☆–

"मैं कवि हूँ, और आप?" एक कवि ने बस स्टॉप पर एक सज्जन से पूछा.

"मैं बहरा हूँ." व्यक्ति ने जवाब दिया. ■

श्रीमान – श्रीमती

– अर्जुन





महिला साक्षरता से ही विकास संभव

• महेंद्र पां

विकास के अंतरराष्ट्रीय पैमाने पर भारत की गिनती विकासशील देशों में की जाती है, पर इतिहास के पत्रों पर हमारे देश के लिए 'सोने की चिड़िया' जैसे संबोधन भी अंकित हैं. आज कुपोषण और गरीबी से जूझते हमारे देश में कभी समृद्धि का यह आलम था कि यहाँ घी और दूध की नदियाँ बहती थीं. अब स्थिति यह है कि पिछले वर्ष विश्व बैंक द्वारा 192 देशों के समृद्धि के आँकड़ों में भारत का स्थान 173वाँ था.

अभी तक धनी देशों के आकलन में घरेलू उत्पाद को ही प्राथमिकता दी जाती थी, पर उपर्युक्त अध्ययन की विशेषता यह है कि इसमें प्राकृतिक संसाधनों, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक मूल्य और इसी प्रकार के अन्य विषयों को प्रमुखता दी गई थी. विश्व बैंक के अधिकारी ईस्माइल सेरागोल्डिन के अनुसार, नए अध्ययन में लोगों की संख्या और उनकी आय से अधिक महत्त्व देश की संपूर्ण संपदा और समृद्ध करने की क्षमतावा[illegible] जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य और अ[illegible] पहलुओं को दिया गया है. आस्ट्रेलिया [illegible] धनी देश है. इसके बाद क्रमशः [illegible] लक्समबर्ग, स्विट्ज़रलैंड और जापान का स्थान है. अमेरिका का स्थान बारहवाँ है. इथियोपिया सर्वाधिक गरीब देश है और इसके बाद नेपाल, बुरुंडी, मलावी, उगांडा और तंजानिया का स्थान आता है.

प्रति व्यक्ति आय की गणना में भी साक्षरता और सामाजिक सुरक्षा को जोड़ा गया है. इस संदर्भ में विश्व में प्रति व्यक्ति आय औसतन 86,000 डालर प्रति वर्ष है, जबकि भारतीय औसत मात्र 4,300 डॉलर प्रति वर्ष है.

उपर्युक्त अध्ययन में भारत के पिछड़ने का एक प्रमुख कारण है, साक्षरता की कम दर. क्या

किसी भी देश का विकास वहाँ की महिलाओं के विकास से जुड़ा है. अतः भारत जैसे विकासोन्मुख देश में महिलाओं का संपूर्ण विकास और भी जरूरी है. पर यह तभी संभव है जब उन्हें पूर्ण रूप से साक्षर बनाया जाए. वस्तुतः साक्षर महिलाएँ ही विकसित समाज की नींव होती हैं.

आपने कभी सोचा है कि जो देश सैकड़ों पहले ज्ञान के क्षेत्र में सर्वोपरि माना जाता था, ज तक्षशिला, मगध, नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालय और काशी तथा कांचीपुरम शिक्षा केंद्र स्थापित किए गए थे, ऐसे देश में शि की स्थिति इतनी खराब कैसे हो गई? इतिहास पत्रों पर नजर डालने से स्पष्ट होता है कि ' की चिड़िया' की समृद्धि से जलनेवाले अ विदेशी शासकों के आक्रमण से यहाँ के जीव उथल-पुथल शुरू हुई और इसका प्रभाव शिक्ष भी पड़ा. मुगलों और अंग्रेजों के लंबे शासनव में शिक्षा का तेजी से पतन हुआ. मुगल साम्राज तो महिलाएँ घर की चारदीवारी में बंद कर दी अतः उनकी शिक्षा का प्रश्न ही नहीं उठता इसका प्रभाव बच्चों पर भी पड़ा. इस तरह सौ वर्षों तक विदेशी शासकों ने शिक्षा के संद देश को बहुत पीछे धकेल दिया.

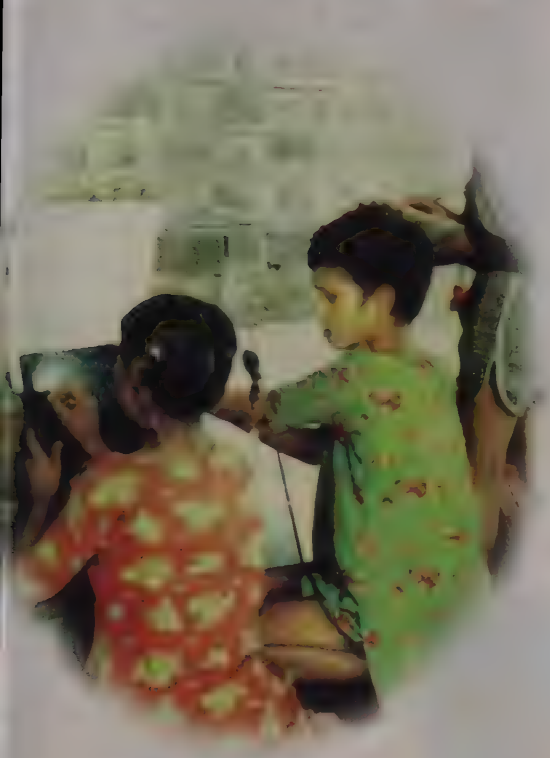
शिक्षा और स्वास्थ्य : किसी भी स अथवा देश में महिलाओं की शिक्षा होने पीढ़ियाँ, एक अपनी और दूसरी बच्चे शिक्षित होती हैं. विकास के लिए स्वस्थ म संसाधन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है और स समाज तभी रह सकता है, जब महिलाएँ शि हों. अधिकतर समाजशास्त्री और शिक्षाविदे

ा रहा है कि यदि महिलाएँ शिक्षित हों तो बच्चे स्वस्थ एवं शिक्षित रहते हैं और उनका विष्य सुरक्षित रहता है.

1979 में निकारागुआ की तानाशाह सरकार का ख्ता पलटने के बाद आई मार्क्सवादी सरकार ने ोगों के जीवन स्तर में सुधार के लिए अनेक दम उठाए. इनमें 'सबके लिए शिक्षा' और 'प्रौढ़ ाक्षा' का कार्यक्रम भी था. कई राष्ट्रीय और ंतरराष्ट्रीय संस्थानों ने इस दौरान वहाँ साक्षरता के भावों का अध्ययन किया और तीन हजार शिक्षित वं अशिक्षित महिलाओं का साक्षात्कार लिया. ध्ययन से निष्कर्ष निकला कि साक्षर महिलाओं े बच्चे अनपढ़ महिलाओं के बच्चों की अपेक्षा धिक स्वस्थ थे तथा साक्षर महिलाओं के बच्चों ी मृत्यु दर भी काफी कम थी.

इस अध्ययन से यह स्पष्ट हो गया कि एक बल और स्वस्थ मानव संसाधन के लिए शिक्षा ावश्यक है.

भारत में महिला साक्षरता और स्वास्थ्य:



ाजादी के समय देश में पाँच वर्ष से कम उम्र े बच्चों में से 25 प्रतिशत अकाल मौत की गोद ं चले जाते थे. अब यह संख्या आधी रह गई है, फर भी प्रतिवर्ष 30 लाख बच्चे अकाल मृत्यु का ास बन जाते हैं. इनमें से अधिकतर बीमारियाँ फाई की कमी, खुली वस्तुएँ खाने और गंदा ानी पीने के कारण होती हैं. ऐसे अधिकतर ामलों को रोका जा सकता है, बशर्ते भिभावक, विशेषकर महिलाएँ थोड़ी-बहुत शक्षित हों. साक्षरता बच्चों के स्वास्थ्य के ाथ-साथ जनसंख्या नियंत्रण के लिए भी ावश्यक है. निरक्षर माँ हमेशा अधिक बच्चों ो जन्म देती है. इसके विपरीत साक्षर दंपतियों े बच्चे कम, परंतु स्वस्थ रहते हैं.

दक्षिण एशियाई देशों की आय और शिशु-मृत्यु दर

देश	प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद (डॉलर में)	5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर (प्रति हजार)	गर्भवती महिलाओं की मृत्यु दर (प्रति हजार)
श्रीलंका	600	19	8
पाकिस्तान	430	137	50
भारत	290	122	46
बंगलादेश	220	122	60
भूटान	170	197	131
नेपाल	160	128	83

सामाजिक विकास और साक्षर महिलाएँ :

महिलाओं की पूरी भागीदारी के बिना समाज विकास नहीं कर सकता. शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, परिवार नियोजन, बाल विकास तथा संसाधनों के उपयोग के निर्णय में महिलाओं का सहयोग आवश्यक है. यह तभी संभव है, जब वे शिक्षित हों.

अपने देश के जिन राज्यों में शिक्षा का व्यापक प्रसार हुआ है, वे अन्य राज्यों के मुकाबले अधिक विकसित हैं. 1951 से 1991 के बीच महिला साक्षरता की दर 8.86 प्रतिशत से बढ़कर 39.29 प्रतिशत हो गई और बालिकाओं के प्राथमिक विद्यालयों की दर 28.1 फीसदी से बढ़कर 42.6 फीसदी तक पहुँच गई.

राज्यों के संदर्भ में शिक्षा और सामाजिक विकास के क्षेत्र में अनेक असमानताएँ हैं. हिंदी क्षेत्र के राज्य शिक्षा के संदर्भ में बहुत पिछड़े है. बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में महिला साक्षरता की दर क्रमशः 23.1, 28.4, 20.8 और 26.0 प्रतिशत है. दूसरी तरफ केरल, तमिलनाडु, गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब में यह दर 86.9, 52.3, 48.5, 50.5 और 49.4 प्रतिशत है. इन राज्यों में विकास तेजी से हुआ है.

कुल मिलाकर निरक्षरता के मामलों में महिलाओं के आँकड़े खतरनाक हैं. विश्व के निरक्षरों में 60 प्रतिशत महिलाएँ हैं. भारत में भी यही स्थिति है.

महिलाओं के संबंध में कहा जाता है कि बच्चों को भावी नागरिक बनाने में माँ की मुख्य भूमिका रहती है. अतः महिला साक्षरता की दिशा में सार्थक प्रयास आवश्यक है. महिला निरक्षरों की बढ़ती समस्या का एक कारण यह भी माना जाता है कि घरेलू कार्यों में ही महिलाओं के प्रतिदिन दस से 14 घंटे व्यतीत हो जाते हैं. इसके बावजूद पढ़ाई के लिए कुछ वक्त निकालने के लिए उन्हें प्रेरित करना पड़ेगा. देश के विकास और भावी पीढ़ी को आदर्श नागरिक बनाने के लिए यही आवश्यक भी है. ■

लघुकथा

चील और कौए

भीतर फिर चक-चक शुरू हो गई. पूरे चार दिन हो गए हैं, तीनों भाइयों को आपस में लड़ते हुए. वे अपनी बूढ़ी आँखों से सब देखती और सुनती रही है, किंतु बीच में नहीं पड़ी. बाल-बच्चेदार अपने लड़कों से वे कहें भी तो क्या कहें?

"तुम पूछ लो, मैं नहीं पूछता," उन्हें मँझले की आवाज सुनाई दी.

"माँ का हम लोगों से अधिक तुझ पर प्रेम है. फिर क्यों झिझक रहा है." यह बड़े की आवाज थी.

"नहीं, मैं नहीं पूछूँगा...साफ कह देता हूँ." उन्हें फिर से मँझले की आवाज सुनाई दी.

थोड़ी देर उन लोगों के मध्य मौन छाया रहा. उन्हें मालूम है कि इन लोगों में अपने पिता की संपत्ति के बँटवारे के लिए चक-चक हो रही है. इनके पिता को मरे सात-आठ माह हुए हैं और इन लोगों ने घर की एक-एक वस्तु को तीन-तीन टुकड़ों में विभक्त कर दिया. सोचते हुए उनके झुर्रीदार चेहरे पर आँखों से पानी बहने लगा. बीच-बीच में वे अपनी धोती से आँसुओं को पोंछती जातीं. अच्छा होता कि रिटायर होने पर मिला पैसा इन लोगों के नाम जमा करके चले जाते. कम-से-कम ये दिन देखने को तो न मिलते!

"ग्रेच्युटी और फंड के ही उन्हें डेढ़ लाख से ऊपर मिले थे. पता नही किस बैंक में डिपॉजिट कर गए हैं?" छोटे की आवाज ने उनके विचारों का क्रम तोड़ा, "बड़ी अजीब बात है कि माँ को हम पर विश्वास नहीं."

"पैसा हाथ में आ जाता तो हमारी थोड़ी-बहुत उधारी चुक जाती." मँझली बहू की चिंता भरी आवाज उन्होंने सुनी.

"चुप रहो तुम लोग." बड़े ने उन लोगों को डाँटा, "सब अपनी-अपनी सोच रही हो, लेकिन यह नहीं सोच रही हो कि माँ को अपनी तरफ कैसे मिलाया जाए...उनके हाथ से कैसे..."

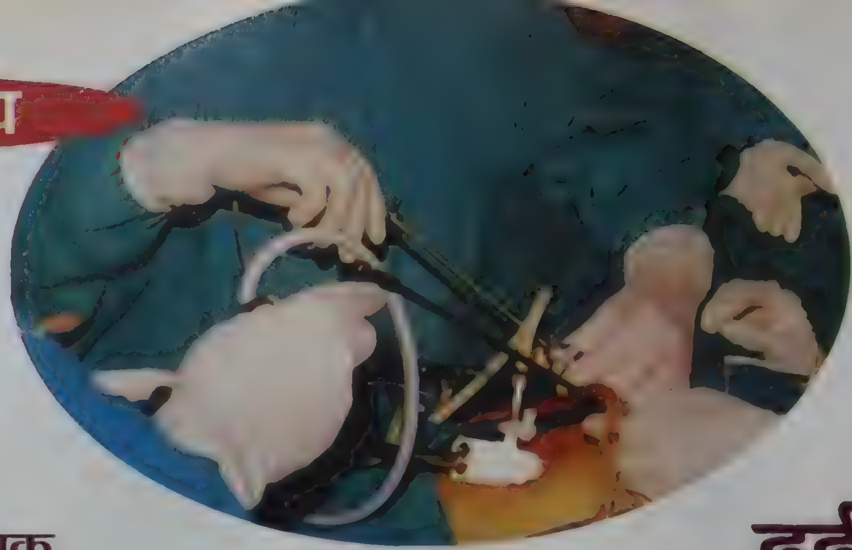
"माँ नहीं मिलेंगी अपनी तरफ...पिताजी पट्टी पढ़ाकर गए हैं." उन्हें मँझले की आवाज सुनाई दी. ये लोग मरे आदमी को भी नहीं छोड़ रहे.

"मरने पर भी नहीं बताएँगी...देख लेना तुम लोग." छोटी बहू की फुसफुसाती आवाज उन्होंने सुनी. कलेजा फटने लगा उनका.

भीतर फिर सन्नाटा छा गया.

थोड़ी देर बाद फिर से चील और कौए मांस के एक ही टुकड़े के लिए लड़ने लगे. ■

– पवन शर्मा



लेप्रोस्कोपिक सर्जरी द्वा

पथरी का

दर्द रहित ऑपरेशन

लेप्रोस्कोपिक सर्जरी ने आज 'गाल ब्लैडर स्टोन' जैसे ऑपरेशन को काफी सरल बना दिया है. न अधिक रक्त स्त्राव न ऑपरेशन का कोई भद्दा निशान .रोगी एक ही दिन में अस्पताल से घर आ सकता है और सामान्य दिनचर्या भी तत्काल शुरू हो जाती है.

पिछले कुछ दशकों से लेप्रोस्कोपिक सर्जरी में भारी प्रगति हुई है. साठ दशक तक यह केवल डायग्नोस करने के उपकरण के रूप में जानी जाती थी, किंतु आज यह विभिन्न प्रकार की सर्जरी से जुड़ी हुई है. आधुनिकतम वीडियोस्कोप का आविष्कार लेप्रोस्कोपी सर्जरी की प्रगति में मील का पत्थर साबित हुई है.पित्त की थैली की बीमारियों और पथरी निकलवाने के लिए आज आपको यह पीड़ा नहीं सहनी पड़ेगी कि आपके पेट में पाँच -छह इँच का चीरा लगेगा, फिर इसका निशान आजीवन रहेगा. इतना ही नहीं छह -सात दिन तक अस्पताल में रहने और फिर बाद की परेशानियों की आशंका से मुक्ति दिला चुकी है आज की अत्याधुनिक उन्नत तकनीकी लेप्रोस्कोपिक कॉलस्टेक्टोमी.

इस क्षेत्र में कार्य कर रहे जानेमाने डॉ. विनय सभरवाल से हमने बातचीत की. डॉ. सभरवा सिंगापुर में लेप्रोस्कोपी सर्जरी का प्रशिक्षण लि और 1991 से इस तकनीक से इलाज कर हैं. अब तक तकरीबन पाँच हजार ऑपरेशन चुके हैं, जिनमें से 99 फीसदी में इन्हें लेप्रोस्क में सफलता मिली है, और एक प्रतिशत परंपरा तरीके से करना पड़ा. डॉ. सभरवाल अ क्लीनिक में जापानी मशीन का प्रयोग करते उन्होंने बताया कि लेप्रोस्कोपिक सर्जरी शुरुआत 1970 में अमेरिका में हुई. इसका प्रय मुख्य रूप से डायगोनॉस्टिक (नैदानिक प्रक्रियाओं के लिए किया जाता है. डॉ. सभरव अंडाशय और गर्भाशय के ट्यूमर के इलाज लिए इसका प्रयोग करते हैं. उन्होंने बताया लेप्रोस्कोपिक सर्जरी से रसौली, बाँझपन, हर्नि अपेंडिक्स, वेरीकोसेल, अवस्थित नलिका जैसी बीमारियों का निदान किया जाता है. इ कैंसर का इलाज और उस पहचान भी की जाती है.

डॉ. सभरवाल ने बताया लेप्रोस्कोपिक कॉलस्टेक्टोगी की थैली की बीमारियों और प को निकालने के लिए अत्याधुनिक उन्नत तकनीक पथरी गुर्दे, पेशाब की नली, की थैली में होती है. पेट के ऊपरी भाग में पाँच -छह घंटे रहना, हाजमा खराब रहना, पीलि अथवा पेशाब में खून आना, ख डकार आना, पेट फूलना, सीने जलन महसूस करना आदि प के लक्षण हैं.ज्यादा तली-भुनी च खाने, बहुत अधिक मात्रा में भो करने, खूब वसायुक्त आहार और लंबे समय तक उपवास र से पथरी होने की आश अधिकांशतः रहती है. अधिक

डॉ. सभरवाल लेप्रोस्कोपिक सर्जरी द्वारा पित्त की थैली का ऑपरेशन करते हुए.





डॉ. विनय सभरवाल

हेलाएँ ही पथरी से पीड़ित होती हैं.

उन्होंने बताया कि लेप्रोस्कोपिक लस्टेक्टोगी तकनीक के तहत पेट में एक सूई बराबर लेप्रोस्कोप लगाया जाता है और उसे डियो कैमरे से जोड़ा जाता है. इससे यह लाभ ता है कि आकृतियाँ 20 गुनी बड़ी दिखाई देने ाती हैं, जिसे हम मॉनिटर पर स्पष्ट रूप से देख ते हैं. इसके बाद एक मामूली से छेद के जरिये री सहित पित्त की थैली को निकाल दिया ता है. डॉ. सभरवाल के मुताबिक पित्त की ली में पथरी का समय पर इलाज नहीं कराने से लिया, पैंक्रियाटाइटिस, पित्त की थैली के फटने पेरीटोनियल कैविटी में पित्त का विषैला प्रभाव से पैरिटोनाइटिस कहते हैं एवं पित्त की थैली कैंसर जैसे लक्षण भी उभर सकते हैं.पित्त की ली में पथरी होने पर यह काम करना बंद कर ी है, इसीलिए थैली को निकालना ही उत्तम ाज है.

लेप्रोस्कोपिक कॉलस्टेक्टोगी तकनीक से ी को अपेक्षाकृत कई फायदे होते हैं. अव्वल इसमें चीर-फाड़ नहीं की जाती, मात्र एक टीमीटर लंबा चीरा लगता है . यही वजह है कि से कोई निशान भी नहीं बनता और ऑपरेशन दौरान ज्यादा रक्त नहीं निकलता. यह दर्द रहित ाज है. ऑपरेशन में केवल 30 से 40 मिनट य लगता है. अधिकांश मामले में सिर्फ एक न अस्पताल में रहना पड़ता है, जबकि परागत इलाज में कई दिन तक अस्पताल में ना पड़ता है और पूर्ण स्वस्थ होने में तकरीबन महीने का समय लगता है, जबकि इस नीक से इलाज होने पर मात्र एक सप्ताह में ी पूर्णत: स्वस्थ हो जाता है. ऑपरेशन करते य डिस्पोजेबल औजारों का प्रयोग करते हैं. इलाज से रोगी को संक्रमण(इंफेक्शन), िया अथवा मवाद आदि की शिकायतों का कम खतरा रहता है.

डॉ. सभरवाल ने बताया कि ऑपरेशन के लिए उम्र की कोई बाध्यता नहीं है. कुछ मामलों में नौ साल की लड़की को भी पथरी देखने को मिली है. चूँकि रोगी को बेहोश करके ऑपरेशन किया जाता है, इसीलिए ऑपरेशन के बाद रोगी में खुमारी-सी छाई रहती है.एनसेथेसिस्ट के निर्णय के अनुसार ही रोगी को कुछ घंटे रिकवरी कक्ष में रखा जाता है. ऑपरेशन के बाद थोड़ी-सी मिचलाहट हो सकती है, जो स्वाभाविक है. एक सप्ताह तक वसायुक्त भोजन से परहेज करना चाहिए. एक बार में बहुत ज्यादा न खाएँ और खाने के बीच लंबा अंतराल न रखें. चार-चार घंटे के अंतराल पर आहार लेते रहना चाहिए. ऑपरेशन के तुरंत बाद शारीरिक रूप से सक्रिय हो जाना लाभप्रद होता है. लेप्रोस्कोपिक प्रक्रिया की सबसे बड़ी यही खासियत है कि इससे आपकी सामान्य क्रियाओं पर रोक नहीं लगता. नींद से जागते ही आप चल सकते हैं, सीढ़ियाँ चढ़ सकते हैं और हिम्मत है तो खुद ड्राइव भी कर सकते हैं. पाँच से सात दिन के अंदर ड्रेसिंग हटा दी जाती है . इस दौरान उक्त स्थान पर पानी नहीं लगना चाहिए . जब ड्रेसिंग हट जाए तो सामान्य ढंग से साबुन और पानी से नहाया जा सकता है.ऑपरेशन के बाद के दिनों में घाव से खून या सफेद पदार्थ निकले तो घबराने की जरूरत नहीं है. उसे साफ, जीवाणुरहित मुलायम कपड़े से पोंछ लें और उस पर एंटीबायोटिक छिड़क लें. अगर ज्यादा स्त्राव हो रहा हो तो तुरंत डॉक्टर से परामर्श लें.

जहाँ तक ऑपरेशन के खर्च का प्रश्न है, पित्त की थैली में पथरी के इलाज पर तकरीबन 10 से 15 हजार रुपए खर्च होते हैं, जबकि परंपरागत तरीके से ऑपरेशन में भी 12 हजार खर्च हो जाते हैं और ठीक होने तथा ऑपरेशन में ज्यादा वक्त लगता है.

डॉ. सभरवाल हर वर्ष अप्रैल माह में अपने जीवन नर्सिंग होम में एक सप्ताह तक कैंप लगाते हैं.इस दौरान तकरीबन सौ रोगियों का मुफ्त ऑपरेशन करते हैं. कई सरकारी अस्पतालों में भी यह सुविधा उपलब्ध है. डॉ. सभरवाल ने बताया कि एक डॉक्टर होने के नाते हमें नैतिकता का हमेशा ख्याल रहता है. यह जरूरी नहीं है कि हमारे नर्सिंग होम में केवल संपन्न रोगियों का ही इलाज होता है. ऐसे रोगी भी, जो दस-बारह हजार खर्च नहीं कर सकते ,हम कम फीस व खर्च पर उनका इलाज करते हैं.

-विशेष प्रतिनिधि



भले ही भारत में शो[illegible] डे को अश्लील साहित्य की मल्लिक[illegible] समझा जाए, लेकि[illegible] विदेशों में उनके उपन्यास को विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामि[illegible] किया गया है. विदे[illegible] में उन्हें भारतीय साहित्य की मोहिन[illegible] की संज्ञा दी जा रह[illegible] है. पत्र-पत्रिकाओं म[illegible] कॉलम लिखकर प्रतिमाह 50 हजार रुपए की आय करनेवाली डे का कहना है कि मैं रुप[illegible] के लिए नहीं, अनुभ[illegible] के आधार पर लिख[illegible] हूँ.

● संध्या राय चौधरी

साहित्य की मोहिनी शोभा डे

"शर्म से अमृता [illegible] लालिमा बढ़ती जा रही थी. वह अपने कमरे में [illegible] लेकिन मिंकस ने उसे धक्का देकर टेबल पर [illegible] अपने घुटनों को मोड़कर तथा गोद में बिल्ली के बच्चे को [illegible] लगाती है. कुछ देर पहले जो कुछ हुआ था, उसका मीठा-सा एहसास होने लगता है. मि[illegible] लंबी साँस खींचकर कहता है, जानती हो, इस रूप में तुम्हें कभी कोई [illegible] देख सकता है, सिवाय मेरे''.

अँगरेजी की मशहूर लेखिका शोभा डे ने उपरोक्त अंश '[illegible]

बसेशन' उपन्यास में लिखे हैं. वह अपने उपन्यास में जिस खुलेपन से शारीरिक र्चा करती हैं, उससे यह शंका होने लगती है कि वे शोभनीय हैं या अशोभनीय? शोभा डे के उपन्यासों को अश्लील साहित्य की संज्ञा दी जा सकती है? क्या भा डे को अपने पाठक-पाठिकाओं पर आस्था नहीं है? उनकी सोच, उनकी प्रस्तुति त्र है. वह स्पष्ट कथन पर विश्वास करती हैं. वर्णन की अंतिम बिंदु श्लील है या लील या नैतिक है या अनैतिक, इसकी परवाह उन्हें बिल्कुल भी नहीं है. संभवत: सीलिए उन्हें अहंकारी की संज्ञा दी जाती है. उनका यह अहंकार उनके उपन्यासों में लकता है. यहाँ तक कि व्यक्तिगत जीवन में भी उन्हें अहंकारी कहा जाता है. उनकी बसूरत तस्वीर देखकर उन्हें 'साहित्य की मोहिनी' कहा जाता है. प्रश्न उठता है कि खूबसूरत हैं या उनके उपन्यास अच्छे होते हैं? उनकी सौंदर्य चर्चा आकर्षित करती या लेखनी? उनका शारीरिक गठन प्रशंसा के योग्य है या गद्यों का गठन. प्रश्न जगता कि शोभा डे के प्रति वास्तविक मुग्धता क्या हो सकती है, उनके उज्ज्वल साहित्य उज्ज्वल सान्निध्य के प्रति? आखिर शोभा डे के मामलों में आलोचक भी चुप क्यों ?

वैसे शोभा डे ने प्राकृतिक जीत हासिल की है. छह बच्चों की माँ होने तथा 48 वर्ष आयु होने के बाद भी वे रमणी लगती हैं. उत्तेजक साहित्य की रचना के लिए 'राइटिंग सेक्स' अर्थात लेखन की तीव्रता और यौन क्रिया की तीव्रता में कोई फर्क महसूस नहीं रती हैं वे.

शोभा डे को भले ही विवादास्पद लेखिका कहा जाए, लेकिन विदेशों में उनके प्रति म्मान की भावना है. खबर है कि शोभा डे के उपन्यासों 'सोललाइट इवनिंग्स', 'स्टार इट्स', 'सिस्टर्स' व 'स्ट्रेंज ऑबसेशन' को लंदन विश्वविद्यालय के 'लंदन स्कूल ऑफ रिएंटल व अफ्रीकन स्टडीज' के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है.

आस्ट्रेलिया के विश्वविद्यालयों में शोभा डे को भारतीय साहित्यकार का सम्मान प्राप्त शोभा डे खुद डंके की चोट पर कहती हैं कि मैं भारतीय समाज और मूल्य बोध को द्रित कर उपन्यास लिखती हूँ, लेकिन और कोई लेखक कहाँ लिख पाते हैं. इसलिए देशों में मैं ज्यादा लोकप्रिय हूँ. यह सत्य है कि उनके उपन्यासों की धड़ल्ले से बिक्री ती है. उनके उपन्यासों में पुरुष व महिला के संबधों को सदैव तनावग्रस्त दर्शाया जाता वे पुरुषों पर गंभीर आघात करती हैं. पुरुषप्रधान समाज से उन्हें रत्तीभर भी भय नहीं

एक बार उनसे पूछा गया कि 'पोर्नोग्राफी' की रचना करने के लिए आपको किस कार के अनुभव से गुजरना पड़ता है, तो उन्होंने तपाक से जवाब दिया ,"मैं अनुभव दौर से ही गुजरती हूँ वरना सिर्फ शब्दों से ही साहित्य की रचना संभव नहीं है". भा डे मूलत: मराठी हैं, लेकिन उनकी शादी बंगाली पुरुष से हुई है. वे कहती हैं क मेरे लेखन में मेरे पति का प्रोत्साहन प्रशंसनीय है.

शोभा उपन्यास लिखने के अलावा पत्र-पत्रिकाओं में कॉलम लिखकर ही प्रतिमाह 50 जार रुपए कमाती हैं. इन रुपयों को वह जेबखर्च की संज्ञा देती हैं. उनके पतिदेव जहाज का नाम है, 'डे डीमर'. तात्पर्य यह है कि शोभा डे के लिए लेखन आर्थिक जबूरी नहीं है. इसलिए वे उन्मुक्त भाव से लिखती हैं. शोभा डे के लेखन का भारत में ाफी विरोध किया गया, लेकिन वे निडर होकर लिख रही हैं. हाल ही में विदेश में शोभा नाइट का भी आयोजन किया गया था. शोभा को पत्रकारिता का अच्छा-खासा अनुभव . वे 'स्टार डस्ट,' 'सोसाइटी' की संपादिका रह चुकी हैं. साथ ही 'सन डे' व 'मेगासिटी' ी वे सलाहकार संपादिका थीं.

शोभा डे अब काफी व्यस्त हो गई हैं. विदेशों में उन्हें आमंत्रित करने का सिलसिला रू हो चुका है. हर कोई इस भारतीय मोहिनी को देखना चाहता है. विद्यार्थियों की त्सुकता यह है कि जिनके लेखन में इतना खुलापन है,वे स्वयं कैसी हैं. जो महिला रतीय नारी की शारीरिक चर्चा स्पष्ट शब्दों में करती है, यदि उसके प्रति आकर्षण बढ़ता जा रहा है,तो क्या शोभा डे को अशोभनीय कहा जा सकता है? क्या भारत के पुरुष माज को शोभा डे के विरोध में आवाज उठाना चाहिए? शायद अब यह संभव नहीं है योंकि शोभा को विश्वास की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है: ■

आपबीती

अनुराग

केश अपने दोस्तों के साथ जैसे ही बस में चढ़ा, उसके चेहरे पर शरारतपूर्ण मुसकान चमकने लगी. वह अपने दोस्तों की ओर एक आँख दबाकर इशारा करते हुए बोला, "यारो! मजा आ गया. क्या चीज है."

पहले मित्र ने हँसते हुए उत्तर दिया,"आज तो आनंद ही आनंद है". कहते हुए उसने बड़े ही रोमानी अंदाज में आँखें बंद करके गहरी साँस ली.

दूसरा मित्र तपाक से बोला, "और खूब जमेगी महफिल, जब मिल बैठेंगे चार यार."

बेचारी ने एक नजर उनकी ओर देखा. तुरंत दूसरी ओर नजर घुमा ली.

वे तीनों उसके पास खड़े होकर उसे परेशान करने लगे. द्विअर्थी अश्लील टाइप के फिल्मी गाने गाने लगे और मोड़ या ब्रेक का बहाना करके उसके शरीर से टकराने लगे.

"आप लोग जरा ढंग से खड़े हो जाएँ."

"मैडम, हम क्या करें? आप देख तो रही हैं कि कितनी भीड़ है." मुकेश ने बड़े ही बेहूदे ढंग से जवाब दिया.

उसने कंडक्टर की ओर देखा. कंडक्टर उन्हें कुछ कहने के बजाय बड़े ही घटिया ढंग से मुसकराया. सवारियाँ भी मूकदर्शक बनी रहीं.बस अपनी रफ्तार से दौड़ती रही.

बस स्टैंड आया. तीनों उतर गए. मुकेश ने उतरते समय उसकी कमर में चिकोटी काट दी और आगे बढ़ गया. बस फिर अपनी रफ्तार से दौड़ने लगी.

"यार , आज तो वाकई मजा आ गया. रास्ते का पता ही नहीं चला कि एक घंटा कैसे बीत गया."

"चलो,कल मिलते हैं", कहकर मुकेश अपने घर की ओर मुड़ गया.

मुकेश घर पहुँचा तो देखा कि उसकी बहन के बाल अस्त-व्यस्त हैं. चेहरे पर आँसू सूखकर लकीर बना गए हैं और रो-रोकर आँखें सूजी हुई हैं.

मुकेश सीधा अपनी माँ के पास गया, " क्या बात है? दीदी ने यह क्या हाल बनाया हुआ है?"

उसकी माँ जो अब तक अपनी बेटी को सांत्वना दे रही थी, फट पड़ी, "आज स्कूल से आते समय बस में लड़कों ने बदतमीजी की है. न जाने आजकल लोग कैसे हो गए हैं? चुपचाप देखते रहे, लेकिन किसी ने उन लड़कों को नहीं रोका, और लड़कों को भी कुछ काम रहा नहीं. कॉलेज जाने के नाम से घर से जाते हैं और आवारागर्दी करते हैं. माँ- बहन का कुछ ख्याल नहीं करते. शर्म नाम की तो कोई चीज बची ही नहीं है. ऐसे नालायक लड़कों को तो बीच चौराहे पर कोड़े पड़ने चाहिए."

मुकेश और कुछ नहीं सुन सका. वह चुपचाप सिर झुकाए घर से बाहर निकल गया. बीच चौराहे में पड़नेवाले कोड़ों की मार असहनीय जो हो गई थी. ■



ताजमहल की तरह खूबसूरत शिवपुरी की छत्रियाँ

सिंधिया राजवंश के पूर्व महाराजा माधोराव सिंधिया ने अपनी .माँ सख्याराजे सिंधिया और जीवाजीराव सिंधिया ने अपने पिता माधोराव सिंधिया की स्मृति में शिवपुरी में जिन आकर्षक छत्रियों का निर्माण कराया है, वे किसी भी मायने में विश्वविख्यात आगरा के ताजमहल से कम खूबसूरत नहीं हैं.

पर्यटन के क्षेत्र में विश्व के मानचित्र पर शिवपुरी की पहचान सिंधिया राजवंश की इन मनमोहक छत्रियों के कारण ही हुई है. यदि आप इतिहास के पृष्ठों को पलटें तो आपको जानकारी मिलेगी कि ग्वालियर से 116 किलोमीटर की दूरी पर आगरा-मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग ,क्रमांक 3 पर स्थित शिवपुरी नगर पर 17वीं शताब्दी में नरवर के कछवाह राजाओं का अधिकार रहा. 1948 तक मध्य भारत बनने से पूर्व यह सिंधिया राजवंश के अधीन रहा. इस दौरान ग्वालियर स्टेट के तत्कालीन महाराजाओं ने उसे ग्वालियर राज्य की ग्रीष्मकालीन राजधानी के रूप में वि[illegible] किया और पर्यटन की दृष्टि से सख्यासागर, म[illegible] एवं जाधवसागर नामक तीन सुंदर झील[illegible] निर्माण करवाया. इन्हीं झीलों के मध्य भाग में माधोराव सिंधिया ने अपनी माँ सख्याराजे सिंधिया व उनके पुत्र जीवाजीराव सिंधिया ने अपने पिता

माधोराव सिंधिया की छत्री में लगा संगमरमर का सुंदर द्वार.



माधोराव सिंधिया की स्मृति में सफेद स[illegible] की आकर्षक छत्रियों का निर्माण [illegible] सख्याराजे सिंधिया की मृत्यु के पश्चात [illegible] उनके पुत्र माधोराव सिंधिया ने अपनी [illegible] स्मृति में स्मारक स्वरूप एक भव्य छ[illegible] निर्माण कराया तथा इसके संचालन के लि[illegible] ट्रस्ट बनाया. 1925 में माधोराव सिं[illegible] स्वर्गवास के पश्चात उनके पुत्र जीव[illegible] सिंधिया ने अपने पिता की स्मृति में स[illegible] सिंधिया की छत्री के सामने एक अन्य [illegible] निर्माण कराया. इस छत्री का निर्माण [illegible] जनवरी 1926 में आरंभ होकर 1932 म[illegible] हुआ. इसके निर्माण कार्य की देखरेख ल[illegible] कर्नल हशमत उल्ला खाँ ने की.

सफेद संगमरमर के पत्थरों से माँ-[illegible] स्मृति में निर्मित इन छत्रियों को देखने [illegible] प्रतिवर्ष देश-विदेश से लाखों पर्यटक [illegible] पहुँचते हैं. 40 एकड़ के रंग-बिरंगे फूल[illegible] उद्यान में आमने-सामने माँ-बेटे की इन [illegible] के बीचोबीच चार रास्तों से घिरा हुआ ए[illegible] कुंड है, जिसके मध्य भाग में भगवान शं[illegible] मंदिर है. यह स्थान पर्यटकों की श्रद्धा क[illegible]



सख्याराजे सिंधिया की छत्री.

द्र रहता है. सख्याराजे सिंधिया एवं उनके पुत्र धोराव सिंधिया की स्मृति में बनाई गई इन त्रियों में संगमरमर के पत्थरों को काट-काटकर चीनकाल के कलाकार कारीगरों ने अपने जादू : हाथों से छोटे-मोटे उपकरणों के माध्यम से कोर दरवाजे और अर्द्धगोलाकार रोशनदानों का र्माण किया है. वास्तुकला के ऐसे बेजोड़ नमूने नया में सिर्फ कुछ गिनेचुने स्थानों पर ही देखने मिलते हैं.

सख्याराजे सिंधिया की छत्री में लकड़ी के ड़े लगे हुए हैं, जो कि आज भी विद्युत द्वारा नते हैं. इसमें इटेलियन टाइल्स का फर्श लगा ना है तथा भजन मुद्रा में लीन सख्याराजे की शाल मूर्ति स्थापित है, जबकि माधोराव धिया की छत्री में सफेद संगमरमर को छेनी-ौड़ी से खोदकर कारीगरों ने अपने कलात्मक यों से उसमें नीलम, पन्ना, मणिक, मूँगा इत्यादि भिन्न रंगों के किस्म-किस्म के कीमती रत्नों को कर आकर्षक फूल-पत्तियों और बेल-बूटों का र्णाण किया है. इसकी छत पर लगी मेहराबदार ों पर गोल्डन पॉलिस देखते ही बनती है.इसमें ी और बेल्जियम काँच के बड़े-बड़े झाड़-ूस भी लगे हुए हैं. इस छत्री में लगे दरवाजों निर्माण बेंगलूर में हुआ था. इनकी सुंदरता का मुकाबला नहीं है. इस छत्री में भगवान शंकर पिण्डी और नांधिया के सामने माधोराव सिंधिया की भजन मुद्रा में लीन एक विशाल प्रतिमा है, जिसके सम्मुख प्रतिदिन सुबह-शाम स्थानीय संगीतज्ञ एकत्रित होते हैं और स्व. महाराज को संगीत सुनाते हैं. यहाँ पर संगीत की यह परंपरा 1932 से अबाध गति से जारी है.

छत्री कार्यालय के पास एक कमरा है. मजबूत किवाड़ों वाले इस कमरे में लगभग

माधोराव सिंधिया की छत्री में लगा एक आकर्षक झाड़-फानूस.



300 किलोग्राम वजन का चाँदी का एक रथ पिछले कई वर्षों से धूल खा रहा है. इस रथ के विषय में बताया जाता है कि माधोराव सिंधिया ने अपनी माँ सख्याराजे सिंधिया के देहांत के पश्चात इसका निर्माण करवाया था. सख्याराजे की मृत्यु 1920 में अनंत चतुर्दशी के दिन हुई थी. 1921 में इसी दिन सख्याराजे सिंधिया की छत्री में उनकी मूर्ति स्थापित की गई और उसके पश्चात इस चाँदी के रथ में उनका चित्र रखकर छत्री से लेकर शिवपुरी के माधव चौक तक एक भव्य छबीना (चल समारोह) निकाला गया, ताकि ग्वालियर स्टेट के आम नागरिक उन्हें अपनी ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित कर सकें. इस दौरान चाँदी के इस रथ को सिंधिया राजवंश के राजा-महाराजाओं ने अपने हाथों से खींचा था. सख्याराजे सिंधिया की प्रथम पुण्यतिथि पर निकला गया यह छबीना इतना अधिक लोकप्रिय हुआ कि सिंधिया राजपरिवार ने प्रतिवर्ष छबीना निकालने की अपने परिवार की परंपरा बना ली और उनके परिवार की यह परंपरा कई वर्षों तक जारी रही.

शिवपुरी में सिंधिया राज परिवार का आखिरी छबीना 1955 में निकला था. बाद में यह बंद हो गया. -जयकिशन शर्मा ■

सजा-सँवरा आशियाना उस पर अंदाज शहाना



सुनहरे रेशमी ल[illegible] बिल्कुल नए अंदाज क[illegible] की डिजाइनिंग में आ[illegible] [illegible] शैली [illegible] आकर्षक लिबास में देखकर भला [illegible] नहीं चाहेगा आपका अजीज बनना.



रॉयल ब्लू और मयूरपंखी का कितना अनोखा मेल है. अंगरखा स्टाइल की रॉयल ब्लू चोली पर सुनहरी कढ़ाई. मयूरपंखी लहंगे से मेल खाता शिफॉन का दुपट्टा. एक तो शाही परिधान, उस पर तुम्हारे मोती की सी दंतपंक्ति. होंठ यों खुले हैं, गुलाब खिल गए हों जैसे.



हलके कॉफी रंग के लाचा की कमर और चोली पर सफेद रेशमी धागे और जरी से खूबसूरत कढ़ाई की गई है. पहनावे से मेल खाते [illegible] के गहने और हलके कॉफी रंग का [illegible] दुपट्टा पहन इस स्याह शाम में है [illegible] उन्हीं का इंतजार.



सूर्ख लहँगा-चोली पर जरी का खूब घना काम, कमर पर तगड़ी की सी आकर्षक कढ़ाई, उस पर त्रिभंगी मुद्रा. सचमुच बेमिसाल है पूरा का पूरा नजारा.



घर की खूबसूरती में चार चाँद लगा देती है आपकी प्रकाश व्यवस्थ

घर में रोशनी के लिए एक-दो जगह बल्ब लगा देना बुद्धिमानी नहीं है, बल्कि इसके कलात्मक प्रयोग से ही घर की शोभा बढ़ाई जा सकती है. अतः यदि आप भी यह चाहती हैं कि आपका घर रात में भी आकर्षक लगे तो घर की प्रकाश व्यवस्था पर ध्यान दें.

वैसे तो हर व्यक्ति चाहे गरीब हो या अमीर, छोटा हो या बड़ा, सभी अपने घर को खूबसूरत देखना चाहते हैं. इसके लिए हर तरह से उपाय किए जाते हैं, चाहे वह दीवारों पर रंगरोगन लगाकर किया जाए या फिर सुंदर-सुंदर चित्र, कलात्मक वस्तुएँ या अन्य कई तरह के फूल आदि लगाकर. लेकिन ये सब उपाय महज दिन में ही आपको सुख पहुँचा सकते हैं, क्योंकि जब रात का अँधेरा जरा बढ़ता है तो आपकी सारी हसरत उस वक्त धरी रह जाती है. जब घर में प्रकाश की उचित व्यवस्था न हो पाए न तो आपके ड्राइंग रूम में कोने पर रखी किसी पोर्टेट की आँखों की चमक किसी को आकर्षित कर पाती है और न ही पोर्टिको कतारबद्ध रखे रंग-बिरंगे फूलों के गमले.

प्रश्न उठता है, फिर क्या करें कि दिन ज ही सुख मिले, रात में भी चीजों को देखने से जनाब, व्याकुल मत होइए. बस आपको दिमाग से काम लेना होगा और इसके लिए ध्यान दीजिए कि आपके बल्ब कैसे, कितने कहाँ लगे हैं, क्योंकि बस इन्हीं की जरा- हेरफेर से आपको मिलेगी मन की मुराद, वह रात के अँधेरे में.

वास्तव में घर में रोशनी के लिए सीधे-स एक-दो जगह या घर के हर हिस्से में 60 100 वाट का बल्ब लगा देना ही बुद्धिमानी



े, बल्कि आज जब बल्बों की क्षमता, रंग, उनके कोण सब विज्ञान के नियमों पर आधारित हैं तो उनका कलात्मक प्रयोग ही घर की शोभा में चार चाँद लगाता है. घरेलू प्रकाश की व्यवस्था को वैसे तीन प्रमुख भागों में बाँटा जा सकता है, जैसे पूरे कमरे में एक-सी रोशनी देनेवाले बल्ब, किसी स्थान विशेष के लिए प्रयुक्त बल्ब या मूड बनाने के लिए खास तरह के प्रकाश को उपलब्ध करानेवाले बल्ब. फिर भी एक खास बात जरूरी है कि वे विभिन्न बल्ब कहाँ और कैसे लगाए जाएँ कि हमारे घर की खूबसूरती में चार चाँद लग जाए. तो आइए, एक ऐसे ही घर की सैर करें जो बल्बों के हेरफेर से सबका मन मोह रहा है.

प्रवेश द्वार के लिए : घर के बाहरी भाग के लिए लगाए गए दूधिया बल्ब के बाद जब घर में प्रवेश करते हैं तो प्रवेश द्वार की रोशनी भी गहरा प्रभाव डालती है, अत: इसके लिए लगाए जानेवाले बल्बों को यदि मूर्ति मॉडल के द्वारा आलोकित किया जाए तो प्रवेश द्वार आपका स्वागत द्वार भी बन सकता है, जो घर आए किसी भी परिचित-अपरिचित को आपकी समझदारी का एहसास करा सकता है. अत: बजाय सीधा-सीधा बल्ब लगा देने के यदि बल्ब को इस ढंग से लगाया जाए कि रोशनी भी पर्याप्त हो तथा प्रकाश स्रोत भी कुछ अलग ही हो, तो क्या कहने.

लेकिन जैसे ही घर के अंदर के गलियारे की बात आए तो कुछ और ही सोचना चाहिए क्योंकि छोटी-छोटी सीढ़ियाँ या जीने की सीढ़ियों में भी पर्याप्त रोशनी जरूरी है. इसके लिए यदि ऐसी लाइट की व्यवस्था करें, जो सीढ़ियों को स्पष्ट तथा परछाईं रहित दिखाए तो उत्तम रहता है. अत: इन स्थानों में डाउनिंग लाइट का प्रयोग करना चाहिए, वह भी रंग रहित ताकि सीढ़ियाँ साफ दिखें.

ड्राइंग रूम के लिए : घर का सबसे अहम हिस्सा होने के नाते इस कमरे की लाइट व्यवस्था में यदि थोड़ी बुद्धि और कला का प्रयोग कर

दिया जाए तो बात की बदल जाती है क्योंकि यहाँ पढ़ना, लिखना, टीवी देखना या लोगों का आने-जाने का काम बना रहता है. सबसे पहले तो यह ध्यान देना चाहिए कि यहाँ ऐसी रोशनी होनी चाहिए कि सब कुछ स्पष्ट दिखे. इसके लिए कमरे की छत में बीचो- बीच बल्ब लगाने के बजाय राउंड कांपैक्ट फ्लौरोसेट लैंप लगाया जा सकता है.

यहाँ पढ़ने-लिखने वाले स्थान में भी ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि पढ़नेवाले के पीछे से रोशनी आए तथा वह लौटकर आँखों में न जा सके. अत: सबसे उत्तम कंट्रोल गियर वाली ट्यूब या फिर दूधिया बल्ब, जो चारों ओर से पर्याप्त रोशनी करे और पढ़ने के स्थान में 30% ज्यादा रोशनी दे, लगाना चाहिए.

ड्राइंग रूम में चूँकि टीवी भी रखा होता है और ज्यादातर लोग टीवी अँधेरे में देखना पसंद करते हैं, जो गलत है. अत: टीवी स्क्रीन से निकले प्रकाश को आँखों में आने से बचाने के लिए कमरे में पर्याप्त रोशनी चाहिए, जो उसे वहीं लौटा दे. इसके लिए ऐसा बल्ब लगाएँ जो रोशनी को छितरा दे.



रोशनी भी पर्याप्त हो और साथ ही प्रकाश व्यवस्था भी कुछ अलग हो, तो कहने ही क्या!

हो सकता है आपकी कला की रुचि के चलते आपके यहाँ कुछ कलाकृतियाँ या चित्र आदि भी रखे हों, तो जरूरी है कि चित्रों के रंग आदि के मुताबिक रोशनी हो तो वे कुछ ज्यादा ही प्यारे लगेंगे. इसके लिए कम शक्ति का हैलोजन परावर्तक, जो बगैर गरमी पैदा किए रोशनी देता है, लगाना हितकर रहता है.

डायनिंग रूम : यहाँ चूँकि घर-बाहर के सभी लोग भोजन करते हैं, इसलिए यह कम महत्त्वपूर्ण भाग नहीं है. इसलिए यहाँ ऐसी रोशनी हो, जो सीधा टेबल पर प्लेटों आदि पर ही न पड़े बल्कि भोजन करनेवालों के चेहरों पर भी पर्याप्त रोशनी हो. दूधिया कोरेड बल्ब को या... के ऊपर लगाया जाए तो ठीक रहता है. ... टेबल से ऊँचाई 60-65 सेंटीमीटर रखी ...

सकती है.

रसोई : यह घर का एक अहम हिस्सा है, इसलिए यहाँ रोशनी की ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि रसोई का कोना-कोना साफ नजर आए. गैस से लेकर बरतन माँजने तक के स्थान में पर्याप्त रोशनी होनी चाहिए. एक खास ख्याल यह भी रखें कि रोशनी ऐसी हो कि अलमारी के अंदर रखे कप-प्लेटों या सामग्री के डिब्बे भी साफ दिखने चाहिए.

एक और खास बात का ध्यान रखें कि रसोई में होनेवाला प्रकाश ऐसा न हो, जो खाने के मूल रंग में ही परिवर्तन करता नजर आए, अत: ऐसी रोशनी, जो रंग-रूप वास्तविक दिखाए, होनी चाहिए.

चूँकि रसोई में काम ज्यादा देर का हो सकता है, इसलिए कवर लगे कांपैक्ट फ्लौरोसेट लैंप लगाए जा सकते हैं.

बेडरूम : किसी भी घर के खास
इस कमरे की अलग अहमियत होती
यही वह कमरा है जहाँ
प्रभाव जिंदगी में अंति
डालता है.

मंद-मंद संगीत की
साथ यदि बेडरूम के प्र
भी व्यवस्था ऐसी हो,
तरफ रात होने का
दिलाए, दूसरी तरफ क
सभी चीजें भी स्पष्ट दि
नवदंपती को मूड बनाते
लगती. बेडरूम में लंबी
परछाइयों वाली चौंधिया दे
लाइट से बचना चाहिए त
भी ध्यान रखना चाहि
रोशनी इतनी धीमी भी
क्योंकि बच्चे कम रोशनी
भी जाते हैं. कुछ लोग
खास हिस्से के लिए
रोशनी की व्यवस्था करते
ऐसा ठीक नहीं होता. बेड
एक समान उजाला होना च

बाथरूम : कहते हैं
मालिक की बुद्धि और कौश
क्षमता का दर्पण बाथरूम ही
है. इसलिए बाथरूम में भी
प्रकाश की व्यवस्था होनी च
जो हर आनेवाले को आकर्षि
व सुख भी दे.

सबसे ध्यान देने की बात
बाथरूम की लाइट एक
प्रकाश दे, लेकिन यदि कुछ
अलग से रखने की व्यवस्था
वहाँ भी पर्याप्त रोशनी हो, ऐसी व्यवस्था

ध्यान रखें बाथरूम में लगी प्रकाश व्य
से प्रकाश चेहरे पर पड़े, दर्पण या वहाँ लगे
पर नहीं. इसके लिए प्रकाश को दो छोरों से
चाहिए. इसके लिए सही वाट का इनकैं
लैंप उत्तम कहा जा सकता है.

इस तरह यदि हम प्रकाश की भी
भूमिका घर की साज-सज्जा में मानकर य
व्यवस्था कर लें तो निश्चित ही घर की
सज्जा में कई गुना इजाफा हो सकता है औ
आपको अपने घर की खूबसूरती निहारने के
सिर्फ सूर्य के प्रकाश के भरोसे नहीं
पड़ेगा. आप तो दिन-रात किसी भी क्षण
घर-आँगन के सौंदर्य को निहार स
हैं.

– दे


PREMIUM
Ultimate in luxury
PREMIUM
Beauty Talc
Creates a sensation all day long
A FAMILY FAVOURITE BY
Helene Curtis
HELENE CURTIS
Impulse/96
J.K. Helene Curtis Limited

बालविधवा सुनयना के मन में गुरु श्री महाराज के प्रति असीम श्रद्धा का भाव था. पर क्या गुरुजी वाकई उस श्रद्धा के पात्र थे या कुछ सम्मोहित करनेवाले हथकंडों के माध्यम से अपने समर्थकों की फौज खड़ी करने का उन्होंने ढोंग रचा था.

• नीलम कुलश्रेष्ठ

गुरु श्री महाराज

वैसे तो बस या रेल में बैठे हों तो पता भी नहीं लगता कि हम कब चुपके से एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में पहुँच गए हैं. सभी प्रदेशों की (शायद देशों की भी) धरती एक-सी ही होती है. ये विभाजन रेखाएँ तो मन ने बनाई हैं, लेकिन इस स्थान की दो प्रदेशों की यह सीमा रेखा मुझे बहुत रोमांचक लग रही थी. गुजरात के समुद्र तट पर बने गुजरात की सीमा रेखाओं को छूता गाँव अहमदपुर. इस गाँव में बना पर्यटन विभाग का रेस्टहाऊस 'वेहमदपुर माँडवी', लगता है कि किसी सौराष्ट्र के गाँव में निकले हैं, लेकिन उन झोंपड़ियों के अंदर जाकर कलात्मकता का एहसास होता है क्योंकि अंदर भरपूर आधुनिक सुविधाएँ हैं.

अहमदपुर माँडवी से आगे जाती मुख्य सड़क लंबी चलती-चलती अचानक ठिठक जाती है, कुछ रुककर साँस लेती है, आजू-बाजू क दीवारों का सहारा लेकर और बस गुजरात सीमा खत्म. दरवाजों के बीच के गेट के उस फैला हुआ है, केंद्रशासित प्रदेश गोवा, दमन दीव में से सिर्फ दीव. यहाँ की इमारतें भी की इमारतों जैसी यूरोपियन बनावट की और की गंध में गुँधे समुद्री थपेड़े बरबस गोवा याद दिला देते हैं.

गुजरात की सीमा रेखा पार करके बस में पाँच-सात मिनट में गोधुला पहुँच गए. लंबी जैसे समुद्र तट के एक तरफ फैले दीव देखकर ऐसा लगता है कि गोवा की ही भूमि टुकड़ा यहाँ-वहाँ भटकता हुआ गुजरात सीमा के पास आकर ठिठक गया है.

यहाँ की लंबी बाँह से समुद्र तट पर फैले द को भरपूर आँखों से मैं देखने में मगन हो ग



फैरी नाव आकर तट पर लग गई. उसमें सब
ड़े, बूढ़े, कुछ स्कूली बच्चे, टोकरीवाली
आरिनें.

दिविक के हाथ में रमा के दिए पैकेट्स हैं.
ने बहुत आग्रह से कहा था, "दीव में मेरी
के पास ये पहुँचा देना. बिचारी कम उम्र में
विधवा हो गई थीं. अपने घर में स्कूल
नकर वहीं की होकर रह गई हैं. कभी-कभी
ी आ जाती हैं. हमें वहाँ जाने की तो कम ही
सत मिलती है."

कैसी होंगी सुनयना जी? बड़ा भला-सा लग
था कि घूमने के दौरान. अनजानी-सी जगह
कोई पहचान का सूत्र तो जुड़ा. चलते-चलते
किनारे से आ लगी थी. अब हम लोगों को
इने हाथ की तरफ मुड़कर जाना था. काफी
तक रास्ता कच्चा था. समुद्र के किनारे बने
थे मछुआरों के झोंपड़े. उन झोंपड़ों पर
लियाँ सूख रही थीं. मछली की गंध से हम
ों का सिर भन्ना रहा था. बदबू थी कि रूमाल
आर-पार जाकर भी दिमाग में कब्जा किए
थी. जब मछुआरों की वह छोटी-सी बस्ती
हुई, तब कुछ जान में जान आई.

उस घर का दरवाजा खोले जो महिला खड़ी
, वे सुनयना जी ही होंगी. उन्होंने हमें देखते



ही पूछा, "गुप्ता परिवार?"

'हाँ' कहने पर वे बोलीं, "रमा भाभी ने मुझे आप लोगों के बारे में लिखा था. आपके आने से मुझे बेहद खुशी हो रही है क्योंकि अपनी तरफ के लोगों की सूरत देखने के लिए आँखें तरस जाती हैं."

मैंने उनकी दी हुई कुर्सी पर बैठते हुए पूछा, "आज आपका स्कूल बंद है?"

"आप लोगों के आने की खबर थी, इसलिए मैंने बच्चों की जल्दी छुट्टी कर दी."

उनकी यह आत्मीयता मुझे छू गई. सुनयनाजी जब चाय बनाने में लगीं तो मैं उनके घर में घूम-घूमकर उनके छोटे से स्कूल की दीवारों पर लगे चार्ट, नर्सरी में रखे खिलौने देखने लगी. चाय पिलाने के बाद उन्होंने कहा, "आओ तुम्हें अपने गुरु महाराजजी से मिलवाऊँ."

"क्या वह भी आपके साथ रहते हैं?" मैंने उस छोटे कमरे में कदम रखते हुए पूछा.

"हाँ, उन्हीं के आशीर्वाद व उन्हीं के साथ के कारण मैं अपना यह अकेलापन काट रही हूँ." कहते हुए उन्होंने अपने छोटे से मंदिर के सामने पड़ा फूलों के प्रिंट वाला छोटा-सा पर्दा हटा दिया, जिसमें कृष्ण की मूर्ति, शिवलिंग, सरस्वती, रामसीता की फोटो थी. इन सबके बीच एक व्यक्ति की तस्वीर थी, जिस पर ताजे फूल की माला पहनाई हुई थी. उस व्यक्ति पर नजर जाते ही मैं बुरी तरह चौंक पड़ी. गुजरात की सीमा पार करके दीव तक भी इन गुरु की अनुकम्पा पहुँच गई है. सुनयनाजी ने श्रद्धा से हाथ जोड़कर सिर झुकाया, "मेरी जिंदगी तो इन्हीं के आशीर्वाद से कट रही है. आपका भी गुरु कल्याण करें."

मन हुआ कहूँ कि एक धोखेबाज पाखंडी मेरा क्या कल्याण करेगा? जाने किस कोने में पड़ा अपने कल्याण को तरस रहा होगा, लेकिन उनकी श्रद्धा ने जैसे मेरे होंठ सिल दिए.

दीव का नगीना द्वीप, सफेद गिरजाघर की विशाल मूर्ति में कहीं भी मेरा मन नहीं लग रहा था. बार-बार गुरुजी व सुनयनाजी की तस्वीर आँखों में घूम रही थी.

पुराने किले में बनी ऊँची वास्कोडिगामा की मूर्ति के सामने खड़े होकर दिविक ने पूछा, "क्या बात है? तुम क्यों अनमनी लग रही हो?"

"पता है सुनयनाजी के मंदिर में किसकी तस्वीर रखी है?"

"किसकी?"

"राधेश्याम गुरु की."

"क्या? तुमने उनके बारे में उन्हें कुछ बताया."

"क्या बताती? बहुत भक्तिभाव से उन्होंने उनकी फोटो मंदिर में रखी है. उस पर पड़ी माला को देखकर लग रहा था कि वे रोज अपने हाथों से गूँथकर माला चढ़ाती हैं. सच्चाई क्या है, यह तो उन्हें पता ही नहीं."

जब हम घूमकर लौटे तो खाना तैयार था. नीचे चटाई बिछाकर भोजन परोसा गया था. सुनयनाजी ने गिलास से थोड़ा पानी हाथ में डाला और बोली, "कहिए, जय गुरुजी महाराज."

अनचाहे ही हमें भी कहना पड़ा, "गुरुजी महाराज." उन्होंने कहकर जल छिड़का और बोलीं, "आरंभ कीजिए."

रोटी का कौर तोड़ते हुए दिविक ने पूछा, "आपकी इनसे पहचान कैसे हुई?"

"मेरा अहोभाग्य ही था कि वे इस द्वीप पर दस वर्ष पूर्व पधारे थे. मैं उन दिनों गहन अंधकार से घिरी हुई थी. उन्हीं दिनों मेरे पति की मृत्यु हुई थी. वे हमारे पड़ोसी के यहाँ पधारे थे. मैं इनके प्रवचन में जाने लगी. उनकी अमृतवाणी से मुझे ऐसी शांति मिली कि मैंने एक सप्ताह बाद ही उनसे दीक्षा ले ली. अब तो आप ऐसा कहिए कि वही मेरी जीवन नैया को पार लगा रहे हैं."

"कैसे?"

"जब उन्हें दो-तीन महीने में समय मिलता है, वे दीव चले आते हैं व शांति जाप करवाते हैं."

"उसके लिए रुपया जरूर ऐंठते होंगे." मेरे मुँह से जल्दी में निकल गया.

सुनयनाजी का चेहरा एकदम लाल पड़ गया, "आप मेरे गुरुजी महाराज के लिए ऐसी अशिष्ट भाषा मत बोलिए. वे कुछ नहीं माँगते. जो मेरी श्रद्धा होती है, उन्हें भेंट कर देती हूँ."

उनकी झिड़की से मेरी तो बोलने की हिम्मत ही नहीं हुई. दिविक ने पूछा, "क्या-क्या भेंट करती हैं?"

"कभी उनके लिए, कभी उनकी पत्नी के लिए वस्त्र, फल और कुछ रुपए."

उस ढोंगी राधेश्याम पर मुझे क्रोध उमड़ आया. एक विधवा स्त्री, जो कि एक छोटे-से स्कूल से अपना जीवनयापन कर रही है, का शोषन करने से भी नहीं चूक रहा.

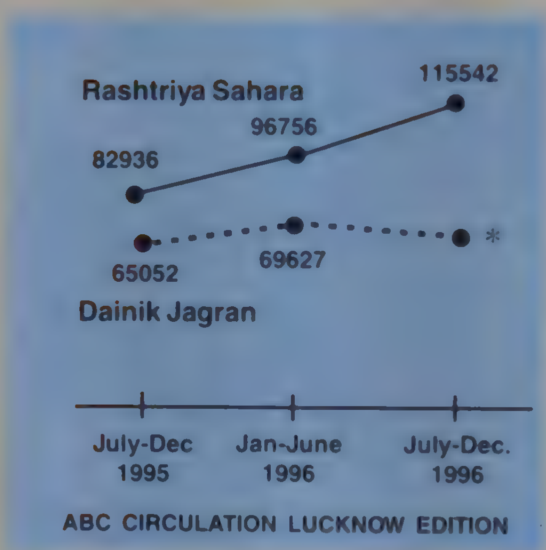
रात को बिस्तर पर लेटने पर भी मुझे नींद नहीं आई. राधेश्याम का कुटिल चेहरा साधू के वेश में मेरी आँखों के सामने घूम रहा था. सत्या भी तो उनकी कितनी बन गई थी. उसने मुझसे कितनी जिद की थी, राधेश्याम गुरु श्री के प्रवचन में मैं भी उसके साथ चलूँ. मैंने ही 'ना' कर दी थी.

RASHTRIYA SAHARA

Undisputed Leader in Lucknow Region

The ABC of Leadership

Growth and acceptance come through a commitment to quality and adherence to the highest standards of journalism.



* Dainik Jagran circulation figure for July-Dec. 1996 not accepted by ABC, hence Jan-June '96 figure shown.

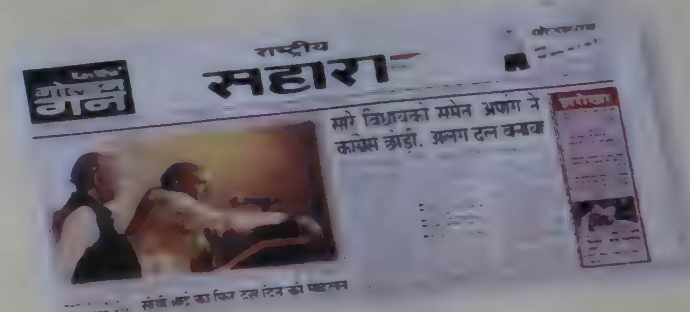


Map showing high penetration areas of Rashtriya Sahara in Eastern U.P.

For three consecutive circulation audits Rashtriya Sahara continues to be the No. 1 Hindi daily in Lucknow and places around it. With 1,15,542 copies selling every day (ABC : July - Dec. 1996) it's averaging over 17.8% growth in every ABC audit.

With a high penetration in Eastern U.P. the newspaper today has a combined Delhi & Lucknow edition circulation of 2,12,276 (ABC: July-Dec. '96) and is moving ahead steadily.

A noteworthy performance indeed that not only speaks well of its quality and editorial policy but is also good news for the advertisers.



राष्ट्रीय सहारा

हिन्दी दैनिक

PUBLISHED SIMULTANEOUSLY FROM DELHI & LUCKNOW WITH 14 MORNING EDIT

हले ही प्रवचन से सत्या के सिर पर गुरुजी भूत चढ़ गया था. मैं लाख उसे समझाती, "तू -चार घंटे वहाँ क्यों बर्बाद करने जाती है?"

'ऐसा मत कह, भगवान तुझ पर पाप एगा. मैं समय बर्बाद करने जाती हूँ? गुरु की ी में तो अमृत है. घर की झिकझिक से मैं रा जाती हूँ. उनकी बात सुनकर मेरा सारा व दूर हो जाता है."

"तुझे तनाव दूर करना है तो घर में कढ़ाई, ई, चित्रकारी कर. क्या प्रवचन में तीन-चार हाथ पर हाथ रखकर बैठी रहती है."

"मेरी बात तेरी समझ में नहीं आती. इसी ामोह में फँसकर ही तो लोग अपना परलोक ाड़ लेते हैं. उन्हें स्वर्ग कहाँ मिलता है? गुरु मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बता रहे हैं, स्त्रियों को लग, पुरुषों को अलग."

"क्या स्त्री-पुरुषों के लिए मोक्ष मार्ग भी लग होते हैं? यह बात तो मैंने नई सुनी है." मैं य करती.

"मेरे साथ प्रवचन में चल, और भी नई बातें ने को मिलेंगी."

"मुझे फालतू समय नष्ट नहीं करना. मुझे इस या में बहुत कुछ करना है. तू दुनिया से पीछा ड़ा और मोक्ष प्राप्त कर स्वर्गधाम को सिधार." गुस्से से कहा.

"अरे! अरे! इतनी जल्दी मुझे स्वर्ग मत भेज, बच्चों का क्या होगा?"

"ओ हाँ, तेरे तो बच्चे भी हैं. तेरी यात्रा की ते धीमी हो. बच्चों की परवरिश के बाद तुझे क्ष प्राप्त हो." मैंने जल-भुनकर कहा था.

पढ़ी-लिखी सत्या की बातों से मेरा दिल कई न तक कुढ़ता रहा था. एक हफ्ते बाद ही वह ँखें नचाती आ गई थी, "इनका प्रमोशन होने ला है."

मेरा ध्यान स्वेटर बुनने में था, "वह तो तू दो ल से कहती आ रही है."

"नहीं, इस बार एक महीने में ही प्रमोशन हो एगा."

"क्यों, क्या मुख्यालय से खबर आई है?"

"नहीं, नहीं, ग्रह खराब हो तो मुख्यालय क्या रेगा? गुरुजी ने एक उपाय करके ग्रह सीधे र दिए हैं. तू देखना, अब खबर आती ही गी."

मैं भी हैरान हो गई थी. दस दिन बाद ही वह क प्लेट में मिठाई लिए चली आ रही थी. उसने ी तरफ गर्वीली मुद्रा से देखा व प्लेट में से एक ड़ा उठाया, "मुँह खोल."

"लेकिन क्यों?"

"इसलिए कि गुरुजी की कृपा से इनका प्रमोशन हो गया है." कहते हुए उसने वह पेड़ा मेरे मुँह में ठूँस दिया.

मुझे वह पेड़ा व सत्या की बात निगलते नहीं बन रही थी. सभी गुरुजी जैसे चमत्कारी हो जाएँ तो दुनिया से तो संकट ही दूर हो जाएँ.

दूसरे-तीसरे दिन सत्या व उसके पति राजेश हमारे घर आए. दोनों ही बहुत खुश थे. सत्या ने पानी का गिलास हाथ में लेते हुए अपने पति से कहा, "ये तो अब भी नहीं मानती है कि गुरुजी के प्रभाव से यह हुआ है."

उसके पति अचरज से बोले, "अब भी भाभी आप मानने को तैयार नहीं हैं? सबूत के तौर पर हम आपके सामने बैठे तो हुए हैं. मेरा प्रमोशन दो वर्षों से रुका हुआ था. गुरुजी के उपाय करते ही

सबके बीच एक व्यक्ति की तस्वीर थी, जिस पर ताजे फूल की माला पहनाई हुई थी. उस व्यक्ति पर नजर जाते ही मैं बुरी तरह चौंक पड़ी. गुजरात की सीमा पार करके दीव तक भी इन गुरु की अनुकंपा पहुँच गई है. सुनयनाजी ने श्रद्धा से हाथ जोड़कर सिर झुकाया, "मेरी जिंदगी तो इन्हीं के आशीर्वाद से कट रही है. आपका भी गुरु कल्याण करें."

दस दिन में हो गया."

"यह संयोग भी हो सकता है."

"किसी एक के साथ संयोग हो सकता है, लेकिन हर किसी के साथ ऐसा नहीं हो सकता. प्रकाश नारायणजी को आप जानती हैं?"

"कौन से?"

"अरे! वही, जिनकी बिजली के उपकरणों की दुकान है." दिविक बीच में बोले.

"हाँ, तो उन्हें क्या हुआ?"

"उनकी बड़ी इच्छा थी कि उन्हें देवी के दर्शन हों. उन्हें भी देवी के दर्शन हो गए. प्रवचन में उन्होंने मुझसे स्वयं कहा था."

"कैसे हुए? गुरुजी ने क्या उपाय किया था?"

"यह मुझे नहीं पता." राजेश बोले.

"उनकी बात छोड़ो, तुम अपनी बात बताओ कि तुम दोनों ने क्या उपाय किए थे, जो प्रमोशन की लॉटरी हाथ आ लगी." दिविक ने राजेश से पूछा था.

"उपाय नहीं बताऊँगा, गुरुजी ने कसम ली है."

"अरे यार! बता भी दे. अब तो तेरा काम पूरा हो गया है और कौन मैं तेरे गुरु के पास जा रहा हूँ बताने?"

"नहीं, नहीं मैं नहीं बताऊँगा."

"वैसे तो बड़ी दोस्ती का दम भरता है. मेरे भी ऑफिस के काम अटके पड़े हैं. मैं सोच रहा था कि यदि वह उपाय मुझे सही लगे तो मैं भी गुरुजी के पास चलूँ." दिविक ने बात उगलवाने के लिए पासा फेंका.

राजेश बड़े असमंजस में फँस गए थे, फिर यही सोचा कि प्रमोशन तो हो गया है. अब क्या छिपाना, "देख यार! बता तो रहा हूँ, लेकिन तू किसी से नहीं कहना."

"हाँ, हाँ, बोल न!"

"गुरुजी ने मुझे अकेले में बुलाकर उपाय बताया था कि एक रुपए का सिक्का लेकर मैं उसे अपने घर के मंदिर में रखूँ. उसे रोली चावल का टीका करूँ. दिए से उसकी आरती उतारूँ और बाद में उसे उठाकर शहर के तालाब में फेंक आऊँ. वही सिक्का मुझे तीसरे दिन अपने घर के मंदिर के कपड़े के नीचे मिलेगा."

"तो ऐसा हुआ?"

"हाँ!" राजेश उत्तेजित हो कहने लगा, "पूनम की रात यानी कि सिक्का तालाब में फेंकने के ठीक तीसरे दिन वह मुझे मंदिर के कपड़े के नीचे मिल गया. सबसे बड़ा चमत्कार तो यह था कि तालाब के पानी में दो दिन रहने के बाद भी उस पर लगा रोली चावल ज्यों का त्यों था."

"क्या?" मेरे और दिविक के मुँह से एक साथ निकला.

"सुनो तो." सत्या को अपनी उत्तेजित साँस पर काबू पाना जैसे मुश्किल हो रहा हो.

"तुम्हें क्या हुआ?" हम सब उसकी हालत देखकर घबरा गए थे.

"वह...वह सिक्का गुरुजी के कहने पर पूनम के दिन रोली चावल से पूजकर उसकी आरती उतार कर मैंने रखा था, राजेश के ऑफिस जाने के बाद. मुझसे भी गुरुजी ने कहा था कि यदि यह बात तू ने किसी और को बताई तो तेरा पति मर जाएगा."

"तो वह सिक्का वह नहीं था, जिसे मैंने तालाब में फेंका था? गुरुजी ने मुझसे भी यही कहा था कि यदि अपने उपाय के बारे में किसी और को बताया तो तुम्हारी पत्नी मर जाएगी. इस उपाय के लिए, पूजा-पाठ के लिए उन्होंने एक हजार एक रुपया लिया है. वह सिक्का भी उन्होंने एक सौ एक में दिया था."

"मुझे भी." सत्या बोली.

अब जैसे सारी ट्रम्प्स मेरे हाथ में थीं. "मैं कहती थी न! इन साधुओं के चक्कर में मत पड़.

लग गई न एक हजार दो सौ दो रुपए की चपत, ऊपर से गुरुजी के आश्रम में आने-जाने व फल-मिठाई का चढ़ावा चढ़ाने में खर्च किया होगा, वह अलग. एक बात बता, क्या वे तुम्हें व राजेश को अलग-अलग बुलाते थे?"

"वे तो स्त्रियों व पुरुषों की सभा एक साथ नहीं करते थे. उपाय बताने के लिए हमेशा पत्नी, पति को भी अपने कक्ष में अलग-अलग बुलाते थे."

"उन्हें कसम दे देते होंगे कि किसी को बताना नहीं."

"तो फिर प्रकाश नारायण को भी देवी के दर्शन देने के लिए बेवकूफ बनाया होगा." राजेश ने कहा.

दिविक ने उठते हुए कहा. "चल! अब उसके पास पहुँचकर देखें तो सही, उसे कैसे देवी के दर्शन करवाए थे."

राजेश ने मुझे सम्मान देते हुए कहा, "चलो भाभी! तुम भी चलो न."

वे दुकान पर ही मिल गए. दिविक व राजेश से हाथ मिलाते हुए खुश होकर बोले, "आज आप लोग कैसे रास्ता भूल गए? चलिए, ऊपर घर में चलकर बैठते हैं." उन्होंने काउंटर पर बैठे अपने सहायक को निर्देश दिए और हमें ऊपर अपने घर में ले गए. उनके बड़े लड़के ने दरवाजा खोला. राजेश को देखकर तपाक से गले मिला, "जय श्री गुरुजी महाराज!"

"जय श्री गुरु श्री महाराज!" राजेश ने जबरदस्ती कहा व मुझे असमंजस में देखकर बोला, "राधेश्याम, गुरु के गुरु भाई ऐसे ही गले मिलते हैं."

थोड़ी-सी इधर-उधर की बातचीत के बाद दिविक असली बात पर आ गए. "प्रकाशजी! सुना है आपको एक बार देवी के दर्शन हुए थे?"

"ओह! आपने क्या बात याद दिला दी. पहले तो ऐसे लगा कि मैं हवा में उड़ा जा रहा हूँ. बादल को पार करके स्वर्ग में पहुँच गया हूँ, जहाँ सिंह पर सवार साक्षात दुर्गा माँ बैठी हुई थीं."

"अच्छी तरह सोचिए, दर्शन के पहले आपने कुछ उपाय किया होगा?"

"हाँ, जब मैंने अपनी प्रबल इच्छा गुरुजी महाराज के सामने प्रकट की त[illegible] उपाय बताया था."

"क्या उपाय था वह?"

"माफ कीजिए, वह उपाय मैं नहीं बता सकता. यदि बताता हूँ तो मेरा व मेरे बेटे का अनिष्ट हो जाएगा. गुरुजी ने मुझे कसम दी है."

"उन्होंने मुझे व सत्या को भी कसम देकर बेवकूफ बनाया था." राजेश ने सारी घटना संक्षेप में बता दी.

सारी घटना सुनने के बाद प्रकाशजी जोर से हँस पड़े, "माना आपको धोखा हुआ है, लेकिन मेरे साथ तो यह प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि मेरी पत्नी को मरे हुए पाँच वर्ष हो गए हैं."



"हमें माफ कर दीजिए. मेरे पति ने जिस भगवान का नाम लेकर लोगों को ठगा था, उसी भगवान ने उनके दाएँ पैर को लकवाग्रस्त कर दिया है."

"फिर भी आप बताइए तो सही, आपको क्या उपाय बताया था?"

उनके बेटे ने भी उनसे कहा, "पापा! बताइए तो सही. क्या पता हमारे साथ भी धोखाधड़ी हुई हो."

वे मजबूर होकर बताने लगे, "गुरुजी ने मुझसे कहा था कि तुम खाली लोटा चारपाई के नीचे रखकर सो जाना. घड़ी में दो बजे का अलार्म लगाना. दो बजे रात को तुम जब उठकर देखोगे तो देखोगे कि वह खाली लोटा आधा चरणामृत से भरा है. जैसे ही उसे पीओगे, वैसे ही देवी माँ के दर्शन हो जाएँगे.

"रात में दो बजे जैसे ही मेरी नींद खुली, मैंने देखा कि उसमें चरणामृत छलछला रहा है. उसे पीने के बाद भक्ति रस की ऐसी मस्ती छाई कि लगा देवी मेरे सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दे रही हैं. यह था न गुरुजी का चमत्कार?"

हम चारों का सिर चकरा गया. जाहिर है वे घर का ताला बंद करके ही सोते होंगे.

तभी उनका बेटा सचिन कुछ झेंपता हुए बोला, "बाबूजी! वह चरणामृत तो मैंने लोटे में डाला था."

"क्या?" हम सबके मुँह से नि

"हाँ, गुरुजी ने वह मुझे एक
था. कहा था कि मैं आपको नहीं ब
अपने कमरे में रात को एक ब
लगाकर मैं भी सोया था. चुपचाप
का चरणामृत लोटे में डाल गया थ

"लेकिन तेरी ऐसी कौन-सी इच्
करता, जो तुझे यह उपाय करने क
गई?" प्रकाशजी ने

पहले तो सचिन
फिर हिम्मत क
"आप नीमा से शाद
दे रहे थे? देवी के
खुशी में आपने दू
स्वीकृति दे दी थी."

"और हम समझे
बताए उपाय ने यह
दिखाया है." दिविक

मैं भी तत्परता से
"जरूर इस बोतल मे
रही होगी, जिसे पीक
वही दिखाई देने लगा
गुरुजी ने बताया था."

"आपको भी खूब
बनाया." राजेश बोले

"कुछ भी हो, मेरी
गुरुजी के उपाय के
होनेवाली है." सचिन ने हँसते हुए क

फिर तो जैसे हम सब पर एक भूत
गया था. हम गुरुजी के सभी शिष्यों
सभी को उन्होंने बेवकूफ बनाकर रुप
थे. किसी को भभूत, ताबीज, किसी
देकर चमत्कार दिखाए थे. पता नहीं
कैसे खबर लग गई थी कि उनका
चुका है. वह एकदम से भूमिगत हो ग

अचानक एक दिन उनकी पत्नी प्रक
बाजार में मिल गईं, बहुत बदहाल थीं.
तो हुआ कि बाजार के बीच ही खरी-
दें, लेकिन वह स्वयं ही उनके सामने ह
लगीं, "हमें माफ कर दीजिए. मेरे प
भगवान का नाम लेकर लोगों को ठगा
भगवान ने उनके दाएँ पैर को लकव
दिया है."

क्या कहते प्रकाशजी उस सजायाफ्
क्या कहूँ मैं नख से शिख तक श्रद्ध
सुनयनाजी से? उनका भ्रम तोड़ दूँ या
श्रद्धा के सहारे जिंदगी गुजारने दूँ, मैं स
पा रही थी.


PREMIUM
Ultimate in luxury
PREMIUM
Beauty Talc
Creates a sensation all day long
A FAMILY FAVOURITE BY
Helene Curtis
HELENE CURTIS
Impulse/96
Helene Curtis Limited



शयनकक्ष में दमकता आपका व्यक्तित्व

• तारिक असल

शयनकक्ष में सजे-धजे रूप में अपने पति का स्वागत करना आप दोनों के लिए ही श्रेयस्कर होगा. आपका सुंदर व्यक्तित्व आपके थके-हारे पति के चेहरे को ताजगी से भर देगा, जिससे आपको स्वयं भी सुकून मिले[illegible] फिर तो ताजगी और [illegible] भरे उस माहौल में ए[illegible] सान्निध्य के एहसास [illegible] दांपत्य जीवन की सु[illegible] यादों से जुड़ जाएँगे.

"भला! यह भी कोई समय है सजने-सँवरने का. अब तो सोने का समय हो रहा है सरला. तू किसी और के यहाँ जाने की तैयारी तो नहीं कर रही है?" पड़ोस की अनीता ने अचानक उसे बनते-सँवरते देखकर पूछा तो पहले वह मुस्कराई, फिर बड़े ही रहस्यमय लहजे में बताने लगी, "यह कोई जरूरी थोड़े ही है कि कहीं आने-जाने के लिए ही बनाव-श्रृंगार करना चाहिए. अपने घर-परिवार में भी तो ठीकठाक दिखना चाहिए. जब अपने पति की दृष्टि में ही व्यक्तित्व प्रभावशाली नहीं होगा, तो औरों के दिखाने के लिए सज-धजकर क्या होगा?"

सरला ने अपनी बात तनिक गोलमटोल अंदाज में अनीता से कही, तो वह चौंके बिना [illegible] रह सकी. वह कुछ सोचने की मुद्रा में दिखाई दी. चूँकि उसने बड़े ही काम
कही थी, जिस ओर उसका अब तक
नहीं गया था. उसकी तो यह आदत थ
कहीं जाने की बात होती, वह घंटे
करती, किंतु घर में होने पर क
आवश्यकता अनुभव नहीं करती. उस
कि यहाँ कौन देखने और तारीफ कर
जिसके लिए मेकअप भी जरूरी हो.
समय उसे कभी यह ध्यान नहीं आया
उसका पति भी साथ होता है, जो ए
और वह औरों की तरह अपनी
साफ-सुथरे रूप में देखकर प्रशंसा कर
उसकी प्रशंसा गैरों की तारीफ से क
आह्लादित कर सकती है और इस
कुछ और सामीप्य का अनुभव कर
मुद्रा में शयनकक्ष में समय व्यतीत क

आज भी हमारे समाज में ऐसे परिवारों की ख्या ही अधिक है, जो सजने-सँवरने का सही मय पार्टी, समारोह और शादी-ब्याह के अवसर ो सर्वाधिक उपयुक्त मानते हैं. इसके कारणों ी पड़ताल से यह रहस्य उजागर हुआ कि ामतौर से विवाहित स्त्रियों की धारणा है कि घर भी साफ-सुथरे कपड़े पहनने ौर बनाव-शृंगार के साथ ीकठाक दिखने की क्या ावश्यकता है? फिर दूसरे लोग या कहेंगे इसलिए शयनकक्ष में ाने से पहले चेहरा-मोहरा ठीक रना कतई जरूरी नहीं समझा ाता, जबकि वास्तविकता यह है क यदि आप पति के बाहर से ौटते या फिर रात्रि में बेडरूम में जाने से पहले लके रूप में व्यक्तित्व को ठीक कर लेती हैं तो सका पति के मूड पर काफी अच्छा प्रभाव ड़ता है. एक थके-हारे पति को राहत के तिरिक्त तनावमुक्त होते और निराशा से उबरते ए देखा जा सकता है. आपका अच्छे रंग-ढंग साथ पति के समक्ष दो पल बैठना उनको कदम तरोताजा कर देता है. वह अपनी रेशानियों को दरकिनार कर राहत की साँस लेते , जबकि आपका सही अंदाज बेडरूम को धिक आकर्षक और उत्तेजक बना देता है. ापको एकदूसरे के प्रति अधिक आकर्षण का नुभव होता है और आप अधिक समर्पण भाव एकदूसरे को स्वीकार करते हैं. आखिरकार ति-पत्नी का मिलन स्थल बेडरूम ही होता है, सकी गरिमा बनाए रखने का दायित्व किसी क पर नहीं, बल्कि दोनों पर होता है. इसलिए ापका सोलह शृंगार करके शयनकक्ष में जाना ोई गुनाह नहीं कहा जा सकता और न ही लत.

शयनकक्ष कोई ऐसी जगह नहीं होती, जहाँ र-परिवार की गंभीर समस्याएँ सुलझाई जाएँ. ोते समय ऐसी कोई बात होनी भी नहीं चाहिए. ससे आपसी संबंध तनावग्रस्त होते हैं. साथ ही ारीरिक स्तर पर भी दूरी बढ़ने का खतरा रहता . फिर आप मूड खराब होने जैसी कोई बात ीं छेड़ें, जिससे आप दुख और वह चिंताओं से र जाएँ और शयनकक्ष के सपने एकबारगी ाशायी होते दिखाई दें.

आपमें चाहे जितने भी गुण मौजूद हों किंतु पति की आपसे पहली अपेक्षा यही होती है पत्नी सुंदरता की प्रतिमूर्ति दिखाई दे.

"पत्नी के नीरस रवैये से उकताए पति किसी र दिशा में कदम बढ़ा दें तो अचंभे की बात नहीं होगी. ऐसे एक नहीं, अनेक पतियों को देखने का का मौका मिला है, जो अपने ऑफिस से निकलने के बाद सार्वजनिक स्थानों, सिनेमा हॉलों, मंदिरों वगैरह के आगे निरुद्देश्य काफी समय तक आती-जाती स्त्रियों पर टकटकी जमाए चेहरों को घूरते हुए तृप्त होते हैं. उनकी अतृप्त इच्छाएँ ऐसा करने को विवश करती हैं, क्योंकि वह पत्नी में कोई आकर्षण ढूँढने में असफल रहते हैं या फिर पत्नी द्वारा उनकी चाहे-अनचाहे उपेक्षा होती है.

दूसरी अहम बात यह है कि आप चाहे सुंदर हों या न हों, यदि थोड़ाबहुत भी मेकअप कर लेती हैं तो आपका व्यक्तित्व निखर उठता है. आपका सजना-सँवरना अर्थहीन नहीं कहा जाएगा. इसका एक कारण यह भी है कि सज-सँवरकर आप स्वयं को भी अधिक संतुलित और आत्मिक रूप से संतुष्ट अनुभव करती हैं. पति स्वयं को पत्नी के आभा मंडल से घिरा पाकर प्रसन्नता ही पाते हैं, इस रहस्य को समझने का प्रयास कीजिए.

स्त्री के लिए उसका व्यक्तित्व सदैव महत्त्वपूर्ण होना चाहिए. इसके बिना अन्य गुण फीके पड़ जाते हैं. अतः बेडरूम में भी अपने व्यवहार से पति पर जादू चलाने से नहीं चूकें, बल्कि उनके मूड को ठीकठाक बने रहने में सहयोग करें. यह भी ध्यान रखें कि सिर्फ आपका व्यक्तित्व ही नहीं दमकना चाहिए, वरन शयनकक्ष स्वच्छता का प्रतीक भी होना चाहिए, जिससे शारीरिक ही नहीं, मानसिक स्तर पर भी अधिक तुष्टि का एहसास हो. ■



दांपत्य जीवन की नींव यौन संबंधों की सफलता पर निर्भर करती है. दो अपरिचित व्यक्तियों के बीच यह एक सबल आधार होता है, जिसके बिना दांपत्य जीवन का पहिया कभी सुचारू रूप से नहीं चल सकता.

दांपत्य जीवन में बिखराव के मूल कारण गृहस्थी की समस्याएँ, जैसे मासिक आय-व्यय, रिश्तेदार, बच्चे आदि को शयनकक्ष में उठाना है. अक्सर दंपती यह भूल जाते हैं कि शयनकक्ष में इस प्रकार के मुद्दों और समस्याओं को कतई नहीं उठाना चाहिए. यह गलत परंपरा होगी, यदि आप दोनों या आपमें से कोई एक ऐसा करता है. शयनकक्ष में तो इच्छाओं, कामनाओं, भावनाओं की बातें होनी चाहिए. तब आप दोनों के अलावा कमरे में कोई तीसरा नहीं होता. फिर अंतरंगता के मधुरतम क्षणों में आकर एकदूसरे से उलझें क्यों? यौन संबंधों के बीते क्षणों को याद कर इस लमहे को स्मरणीय बनाने का प्रयास करें. पति-पत्नी यह न भूलें कि यौन क्रियाओं में सक्रियता के लिए आपसी समझदारी अन्य मामलों से कहीं अधिक आवश्यक है.

स्मरण रहे कि बिस्तर पर तीखी नोकझोंक के उपरांत यौन संबंध भले स्थापित कर लिया जाए, परंतु न तो मानसिक और न ही भावनात्मक स्तर पर सफल माना जाएगा. यह तो एक तरह से खानापूर्ति होगी, जिससे न आप तृप्त होंगी और न ही आपके पति.

जब पति-पत्नी एकांत में हों, उन्हें न केवल कहासुनी से बचना चाहिए, बल्कि हल्के-फुल्के तौर पर पहले हँसी-मजाक, छेड़छाड़, आलिंगन, चुंबन के द्वारा समर्पण भाव दर्शाना चाहिए. यौन क्रियाओं के मामले में एकदूसरे की मनपसंद आदतों और तरीकों की मीठे शब्दों में चर्चा होनी चाहिए. तब पूरे तौर पर काम से संतुष्टि होगी अन्यथा मन में एक अनकही कसक और क्षोभ कुलबुलाता रहेगा. पति के मन में दबी अतृप्ति की इच्छा दूसरी स्त्रियों की ओर आकर्षित होने के लिए बाध्य करेगी, जो दांपत्य जीवन के लिए एक शुभ लक्षण नहीं कहा जा सकता. अतः एक पत्नी का यह तर्क कि वह मुझे समझने का कभी प्रयास ही नहीं करते और पति की यह शिकायत कि काम क्रिया के समय उसे घर-परिवार की सूझती है, दोनों बातें अपनी जगह ठीक होने के बावजूद इस मायने में गलत है.

यदि पति-पत्नी में से किसी एक की काम क्रिया में किसी कारण रुचि न हो अथवा इसका कारण सिरदर्द, बीमारी या किसी और कारण से अनिच्छा हो तो पति को उसकी बात मान लेनी चाहिए, न कि जबरदस्ती यौन संबंध बनाने की कोशिश करनी चाहिए. उक्त समस्याएँ पति के साथ भी जुड़ी हो सकती हैं, जिसे पत्नी को समझने का प्रयास करना चाहिए.

पति-पत्नी को एकदूसरे पर अकारण दोषारोपण न कर भावनाओं की भाषा समझने की कोशिश करनी चाहिए. यौन संबंधों के पीछे एक हाँ या ना के मध्य भी आपसी सहमति आवश्यक है.

जब तक यौन संबंधों में मधुरता और सहजता का भाव विद्यमान रहता है, दांपत्य जीवन के लिए कोई चुनौती बिखराव का कारण नहीं बनती. इसलिए पति-पत्नी का मानसिक और शारीरिक स्तर पर मेल-मिलाप सदैव ठीक रहना चाहिए. यौन क्रियाओं में निष्क्रियता नहीं आने देनी चाहिए, क्योंकि तभी सुखद दांपत्य जीवन की कामना की जा सकती है. आप यौन सुख को क्षणिक मानने की भूल न करें. इसी में दोनों की भलाई है. ■

बालविधवा सुनयना के मन में गुरु श्री महाराज के प्रति असीम श्रद्धा का भाव था. पर क्या गुरुजी वाकई उस श्रद्धा के पात्र थे या कुछ सम्मोहित करनेवाले हथकंडों के माध्यम से अपने समर्थकों की फौज खड़ी करने का उन्होंने ढोंग रचा था.

• नीलम कुलश्रेष्ठ

गुरु श्री महाराज

वैसे तो बस या रेल में बैठे हों तो पता भी नहीं लगता कि हम कब चुपके से एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में पहुँच गए हैं. सभी प्रदेशों की (शायद देशों की भी) धरती एक-सी ही होती है. ये विभाजन रेखाएँ तो मन ने बनाई हैं, लेकिन इस स्थान की दो प्रदेशों की यह सीमा रेखा मुझे बहुत रोमांचक लग रही थी. गुजरात के समुद्र तट पर बने गुजरात की सीमा रेखाओं को छूता गाँव अहमदपुर. इस गाँव में बना पर्यटन विभाग का रेस्टहाऊस 'वेहमदपुर माँडवी', लगता है कि किसी सौराष्ट्र के गाँव में निकले हैं, लेकिन उन झोंपड़ियों के अंदर जाकर कलात्मकता का एहसास होता है क्योंकि अंदर भरपूर आधुनिक सुविधाएँ हैं.

अहमदपुर माँडवी से आगे जाती मुख्य सड़क लंबी चलती-चलती अचानक ठिठक जाती है, कुछ रुककर साँस लेती है, आजू-बाजू की दीवारों का सहारा लेकर और बस गुजरात क सीमा खत्म. दरवाजों के बीच के गेट के उस प फैला हुआ है, केंद्रशासित प्रदेश गोवा, दमन अ दीव में से सिर्फ दीव. यहाँ की इमारतें भी गो की इमारतों जैसी यूरोपियन बनावट की और ह की गंध में गुँधे समुद्री थपेड़े बरबस गोवा क याद दिला देते हैं.

गुजरात की सीमा रेखा पार करके बस में ह पाँच-सात मिनट में गोधुला पहुँच गए. लंबी बाँ जैसे समुद्र तट के एक तरफ फैले दीव क देखकर ऐसा लगता है कि गोवा की ही भूमि क टुकड़ा यहाँ-वहाँ भटकता हुआ गुजरात क सीमा के पास आकर ठिठक गया है.

यहाँ की लंबी बाँह से समुद्र तट पर फैले दी को भरपूर आँखों से मैं देखने में मगन हो गइ



फैरी नाव आकर तट पर लग गई. उसमें सब
बड़े, बूढ़े, कुछ स्कूली बच्चे, टोकरीवाली
आरिनें.

दिविक के हाथ में रमा के दिए पैकेट्स हैं.
ने बहुत आग्रह से कहा था, "दीव में मेरी
र के पास ये पहुँचा देना. बिचारी कम उम्र में
विधवा हो गई थीं. अपने घर में स्कूल
लकर वहीं की होकर रह गई हैं. कभी-कभी
ी आ जाती हैं. हमें वहाँ जाने की तो कम ही
सत मिलती है."

कैसी होंगी सुनयना जी? बड़ा भला-सा लग
था कि घूमने के दौरान. अनजानी-सी जगह
कोई पहचान का सूत्र तो जुड़ा. चलते-चलते
किनारे से आ लगी थी. अब हम लोगों को
इने हाथ की तरफ मुड़कर जाना था. काफी
तक रास्ता कच्चा था. समुद्र के किनारे बने
थे मछुआरों के झोंपड़े. उन झोंपड़ों पर
लियाँ सूख रही थीं. मछली की गंध से हम
ों का सिर भन्ना रहा था. बदबू थी कि रूमाल
आर-पार जाकर भी दिमाग में कब्जा किए
थी. जब मछुआरों की वह छोटी-सी बस्ती
हुई, तब कुछ जान में जान आई.

उस घर का दरवाजा खोले जो महिला खड़ी
, वे सुनयना जी ही होंगी. उन्होंने हमें देखते



ही पूछा, "गुप्ता परिवार?"

'हाँ' कहने पर वे बोलीं, "रमा भाभी ने मुझे आप लोगों के बारे में लिखा था. आपके आने से मुझे बेहद खुशी हो रही है क्योंकि अपनी तरफ के लोगों की सूरत देखने के लिए आँखें तरस जाती हैं."

मैंने उनकी दी हुई कुर्सी पर बैठते हुए पूछा, "आज आपका स्कूल बंद है?"

"आप लोगों के आने की खबर थी, इसलिए मैंने बच्चों की जल्दी छुट्टी कर दी."

उनकी यह आत्मीयता मुझे छू गई. सुनयनाजी जब चाय बनाने में लगीं तो मैं उनके घर में घूम-घूमकर उनके छोटे से स्कूल की दीवारों पर लगे चार्ट, नर्सरी में रखे खिलौने देखने लगी. चाय पिलाने के बाद उन्होंने कहा, "आओ तुम्हें अपने गुरु महाराजजी से मिलवाऊँ."

"क्या वह भी आपके साथ रहते हैं?" मैंने उस छोटे कमरे में कदम रखते हुए पूछा.

"हाँ, उन्हीं के आशीर्वाद व उन्हीं के साथ के कारण मैं अपना यह अकेलापन काट रही हूँ." कहते हुए उन्होंने अपने छोटे से मंदिर के सामने पड़ा फूलों के प्रिंट वाला छोटा-सा पर्दा हटा दिया, जिसमें कृष्ण की मूर्ति, शिवलिंग, सरस्वती, रामसीता की फोटो थी. इन सबके बीच एक व्यक्ति की तस्वीर थी, जिस पर ताजे फूल की माला पहनाई हुई थी. उस व्यक्ति पर नजर जाते ही मैं बुरी तरह चौंक पड़ी. गुजरात की सीमा पार करके दीव तक भी इन गुरु की अनुकम्पा पहुँच गई है. सुनयनाजी ने श्रद्धा से हाथ जोड़कर सिर झुकाया, "मेरी जिंदगी तो इन्हीं के आशीर्वाद से कट रही है. आपका भी गुरु कल्याण करें."

मन हुआ कहूँ कि एक धोखेबाज पाखंडी मेरा क्या कल्याण करेगा? जाने किस कोने में पड़ा अपने कल्याण को तरस रहा होगा, लेकिन उनकी श्रद्धा ने जैसे मेरे होंठ सिल दिए.

दीव का नगीना द्वीप, सफेद गिरजाघर की विशाल मूर्ति में कहीं भी मेरा मन नहीं लग रहा था. बार-बार गुरुजी व सुनयनाजी की तस्वीर आँखों में घूम रही थी.

पुराने किले में बनी ऊँची वास्कोडिगामा की मूर्ति के सामने खड़े होकर दिविक ने पूछा, "क्या बात है? तुम क्यों अनमनी लग रही हो?"

"पता है सुनयनाजी के मंदिर में किसकी तस्वीर रखी है?"

"किसकी?"

"राधेश्याम गुरु की."

"क्या? तुमने उनके बारे में उन्हें कुछ बताया."

"क्या बताती? बहुत भक्तिभाव से उन्होंने उनकी फोटो मंदिर में रखी है. उस पर पड़ी माला को देखकर लग रहा था कि वे रोज अपने हाथों से गूँथकर माला चढ़ाती हैं. सच्चाई क्या है, यह तो उन्हें पता ही नहीं."

जब हम घूमकर लौटे तो खाना तैयार था. नीचे चटाई बिछाकर भोजन परोसा गया था. सुनयनाजी ने गिलास से थोड़ा पानी हाथ में डाला और बोलीं, "कहिए, जय गुरुजी महाराज."

अनचाहे ही हमें भी कहना पड़ा, "गुरुजी महाराज." उन्होंने कहकर जल छिड़का और बोलीं, "आरंभ कीजिए."

रोटी का कौर तोड़ते हुए दिविक ने पूछा, "आपकी इनसे पहचान कैसे हुई?"

"मेरा अहोभाग्य ही था कि वे इस द्वीप पर दस वर्ष पूर्व पधारे थे. मैं उन दिनों गहन अंधकार से घिरी हुई थी. उन्हीं दिनों मेरे पति की मृत्यु हुई थी. वे हमारे पड़ोसी के यहाँ पधारे थे. मैं इनके प्रवचन में जाने लगी. उनकी अमृतवाणी से मुझे ऐसी शांति मिली कि मैंने एक सप्ताह बाद ही उनसे दीक्षा ले ली. अब तो आप ऐसा कहिए कि वही मेरी जीवन नैया को पार लगा रहे हैं."

"कैसे?"

"जब उन्हें दो-तीन महीने में समय मिलता है, वे दीव चले आते हैं व शांति जाप करवाते हैं."

"उसके लिए रुपया जरूर ऐंठते होंगे." मेरे मुँह से जल्दी में निकल गया.

सुनयनाजी का चेहरा एकदम लाल पड़ गया, "आप मेरे गुरुजी महाराज के लिए ऐसी अशिष्ट भाषा मत बोलिए. वे कुछ नहीं माँगते. जो मेरी श्रद्धा होती है, उन्हें भेंट कर देती हूँ."

उनकी झिड़की से मेरी तो बोलने की हिम्मत ही नहीं हुई. दिविक ने पूछा, "क्या-क्या भेंट करती हैं?"

"कभी उनके लिए, कभी उनकी पत्नी के लिए वस्त्र, फल और कुछ रुपए."

उस ढोंगी राधेश्याम पर मुझे क्रोध उमड़ आया. एक विधवा स्त्री, जो कि एक छोटे-से स्कूल से अपना जीवनयापन कर रही है, का शोषन करने से भी नहीं चूक रहा.

रात को बिस्तर पर लेटने पर भी मुझे नींद नहीं आई. राधेश्याम का कुटिल चेहरा साधू के वेश में मेरी आँखों के सामने घूम रहा था. सत्या भी तो उनकी कितनी बन गई थी. उसने मुझसे कितनी जिद की थी, राधेश्याम गुरु श्री के प्रवचन में मैं भी उसके साथ चलूँ. मैंने ही 'ना' कर

पहले ही प्रवचन से सत्या के सिर पर गुरुजी भूत चढ़ गया था. मैं लाख उसे समझाती, "तू -चार घंटे वहाँ क्यों बर्बाद करने जाती है?"

"ऐसा मत कह, भगवान तुझ पर पाप एगा. मैं समय बर्बाद करने जाती हूँ? गुरु की ी में तो अमृत है. घर की झिकझिक से मैं रा जाती हूँ. उनकी बात सुनकर मेरा सारा व दूर हो जाता है."

"तुझे तनाव दूर करना है तो घर में कढ़ाई, ई, चित्रकारी कर. क्या प्रवचन में तीन-चार हाथ पर हाथ रखकर बैठी रहती है."

"मेरी बात तेरी समझ में नहीं आती. इसी ामोह में फँसकर ही तो लोग अपना परलोक ाड़ लेते हैं. उन्हें स्वर्ग कहाँ मिलता है? गुरु मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बता रहे हैं, स्त्रियों को ग, पुरुषों को अलग."

"क्या स्त्री-पुरुषों के लिए मोक्ष मार्ग भी ग होते हैं? यह बात तो मैंने नई सुनी है." मैं य करती.

"मेरे साथ प्रवचन में चल, और भी नई बातें ने को मिलेंगी."

"मुझे फालतू समय नष्ट नहीं करना. मुझे इस ाया में बहुत कुछ करना है. तू दुनिया से पीछा ा और मोक्ष प्राप्त कर स्वर्गधाम को सिधार." गुस्से से कहा.

"अरे! अरे! इतनी जल्दी मुझे स्वर्ग मत भेज, बच्चों का क्या होगा?"

"ओ हाँ, तेरे तो बच्चे भी हैं. तेरी यात्रा की धीमी हो. बच्चों की परवरिश के बाद तुझे क्ष प्राप्त हो." मैंने जल-भुनकर कहा था.

पढ़ी-लिखी सत्या की बातों से मेरा दिल कई तक कुढ़ता रहा था. एक हफ्ते बाद ही वह खें नचाती आ गई थी, "इनका प्रमोशन होने ला है."

मेरा ध्यान स्वेटर बुनने में था, "वह तो तू दो ल से कहती आ रही है."

"नहीं, इस बार एक महीने में ही प्रमोशन हो एगा."

"क्यों, क्या मुख्यालय से खबर आई है?"

"नहीं, नहीं, ग्रह खराब हो तो मुख्यालय क्या गा? गुरुजी ने एक उपाय करके ग्रह सीधे दिए हैं. तू देखना, अब खबर आती ही ी."

मैं भी हैरान हो गई थी. दस दिन बाद ही वह प्लेट में मिठाई लिए चली आ रही थी. उसने तरफ गर्वीली मुद्रा से देखा व प्लेट में से एक उठाया, "मुँह खोल."

"लेकिन क्यों?"

"इसलिए कि गुरुजी की कृपा से इनका प्रमोशन हो गया है." कहते हुए उसने वह पेड़ा मेरे मुँह में ठूँस दिया.

मुझे वह पेड़ा व सत्या की बात निगलते नहीं बन रही थी. सभी गुरुजी जैसे चमत्कारी हो जाएँ तो दुनिया से तो संकट ही दूर हो जाएँ.

दूसरे-तीसरे दिन सत्या व उसके पति राजेश हमारे घर आए. दोनों ही बहुत खुश थे. सत्या ने पानी का गिलास हाथ में लेते हुए अपने पति से कहा, "ये तो अब भी नहीं मानती है कि गुरुजी के प्रभाव से यह हुआ है."

उसके पति अचरज से बोले, "अब भी भाभी आप मानने को तैयार नहीं हैं? सबूत के तौर पर हम आपके सामने बैठे तो हुए हैं. मेरा प्रमोशन दो वर्षों से रुका हुआ था. गुरुजी के उपाय करते ही

> सबके बीच एक व्यक्ति की तस्वीर थी, जिस पर ताजे फूल की माला पहनाई हुई थी. उस व्यक्ति पर नजर जाते ही मैं बुरी तरह चौंक पड़ी. गुजरात की सीमा पार करके दीव तक भी इन गुरु की अनुकंपा पहुँच गई है. सुनयनाजी ने श्रद्धा से हाथ जोड़कर सिर झुकाया, "मेरी जिंदगी तो इन्हीं के आशीर्वाद से कट रही है. आपका भी गुरु कल्याण करें."

दस दिन में हो गया."

"यह संयोग भी हो सकता है."

"किसी एक के साथ संयोग हो सकता है, लेकिन हर किसी के साथ ऐसा नहीं हो सकता. प्रकाश नारायणजी को आप जानती हैं?"

"कौन से?"

"अरे! वही, जिनकी बिजली के उपकरणों की दुकान है." दिविक बीच में बोले.

"हाँ, तो उन्हें क्या हुआ?"

"उनकी बड़ी इच्छा थी कि उन्हें देवी के दर्शन हों. उन्हें भी देवी के दर्शन हो गए. प्रवचन में उन्होंने मुझसे स्वयं कहा था."

"कैसे हुए? गुरुजी ने क्या उपाय किया था?"

"यह मुझे नहीं पता." राजेश बोले.

"उनकी बात छोड़ो, तुम अपनी बात बताओ कि तुम दोनों ने क्या उपाय किए थे, जो प्रमोशन की लॉटरी हाथ आ लगी." दिविक ने राजेश से पूछा था.

"उपाय नहीं बताऊँगा, गुरुजी ने कसम ली है."

"अरे यार! बता भी दे. अब तो तेरा काम पूरा हो गया है और कौन मैं तेरे गुरु के पास जा रहा हूँ बताने?"

"नहीं, नहीं मैं नहीं बताऊँगा."

"वैसे तो बड़ी दोस्ती का दम भरता है. मेरे भी ऑफिस के काम अटके पड़े हैं. मैं सोच रहा था कि यदि वह उपाय मुझे सही लगे तो मैं भी गुरुजी के पास चलूँ." दिविक ने बात उगलवाने के लिए पासा फेंका.

राजेश बड़े असमंजस में फँस गए थे, फिर यही सोचा कि प्रमोशन तो हो गया है. अब क्या छिपाना, "देख यार! बता तो रहा हूँ, लेकिन तू किसी से नहीं कहना."

"हाँ, हाँ, बोल न!"

"गुरुजी ने मुझे अकेले में बुलाकर उपाय बताया था कि एक रुपए का सिक्का लेकर मैं उसे अपने घर के मंदिर में रखूँ. उसे रोली चावल का टीका करूँ. दिए से उसकी आरती उतारूँ और बाद में उसे उठाकर शहर के तालाब में फेंक आऊँ. वही सिक्का मुझे तीसरे दिन अपने घर के मंदिर के कपड़े के नीचे मिलेगा."

"तो ऐसा हुआ?"

"हाँ!" राजेश उत्तेजित हो कहने लगा, "पूनम की रात यानी कि सिक्का तालाब में फेंकने के ठीक तीसरे दिन वह मुझे मंदिर के कपड़े के नीचे मिल गया. सबसे बड़ा चमत्कार तो यह था कि तालाब के पानी में दो दिन रहने के बाद भी उस पर लगा रोली चावल ज्यों का त्यों था."

"क्या?" मेरे और दिविक के मुँह से एक साथ निकला.

"सुनो तो." सत्या को अपनी उत्तेजित साँस पर काबू पाना जैसे मुश्किल हो रहा हो.

"तुम्हें क्या हुआ?" हम सब उसकी हालत देखकर घबरा गए थे.

"वह...वह सिक्का गुरुजी के कहने पर पूनम के दिन रोली चावल से पूजकर उसकी आरती उतार कर मैंने रखा था, राजेश के ऑफिस जाने के बाद. मुझसे भी गुरुजी ने कहा था कि यदि यह बात तू ने किसी और को बताई तो तेरा पति मर जाएगा."

"तो वह सिक्का वह नहीं था, जिसे मैंने तालाब में फेंका था? गुरुजी ने मुझसे भी यही कहा था कि यदि अपने उपाय के बारे में किसी और को बताया तो तुम्हारी पत्नी मर जाएगी. इस उपाय के लिए, पूजा-पाठ के लिए उन्होंने एक हजार एक रुपया लिया है. वह सिक्का भी उन्होंने एक सौ एक में दिया था."

"मुझे भी." सत्या बोली.

अब जैसे सारी ट्रम्प्स मेरे हाथ में थीं. "मैं कहती थी न! इन साधुओं के चक्कर में मत पड़.

लग गई न एक हजार दो सौ दो रुपए की चपत, ऊपर से गुरुजी के आश्रम में आने-जाने व फल-मिठाई का चढ़ावा चढ़ाने में खर्च किया होगा, वह अलग. एक बात बता, क्या वे तुम्हें व राजेश को अलग-अलग बुलाते थे?"

"वे तो स्त्रियों व पुरुषों की सभा एक साथ नहीं करते थे. उपाय बताने के लिए हमेशा पत्नी, पति को भी अपने कक्ष में अलग-अलग बुलाते थे."

"उन्हें कसम दे देते होंगे कि किसी को बताना नहीं."

"तो फिर प्रकाश नारायण को भी देवी के दर्शन देने के लिए बेवकूफ बनाया होगा." राजेश ने कहा.

दिविक ने उठते हुए कहा. "चल! अब उसके पास पहुँचकर देखें तो सही, उसे कैसे देवी के दर्शन करवाए थे."

राजेश ने मुझे सम्मान देते हुए कहा, "चलो भाभी! तुम भी चलो न."

वे दुकान पर ही मिल गए. दिविक व राजेश से हाथ मिलाते हुए खुश होकर बोले, "आज आप लोग कैसे रास्ता भूल गए? चलिए, ऊपर घर में चलकर बैठते हैं." उन्होंने काउंटर पर बैठे अपने सहायक को निर्देश दिए और हमें ऊपर अपने घर में ले गए. उनके बड़े लड़के ने दरवाजा खोला. राजेश को देखकर तपाक से गले मिला, "जय श्री गुरुजी महाराज!"

"जय श्री गुरु श्री महाराज!" राजेश ने जबरदस्ती कहा व मुझे असमंजस में देखकर बोला, "राधेश्याम, गुरु के गुरु भाई ऐसे ही गले मिलते हैं."

थोड़ी-सी इधर-उधर की बातचीत के बाद दिविक असली बात पर आ गए. "प्रकाशजी! सुना है आपको एक बार देवी के दर्शन हुए थे?"

"ओह! आपने क्या बात याद दिला दी. पहले तो ऐसे लगा कि मैं हवा में उड़ा जा रहा हूँ. बादल को पार करके स्वर्ग में पहुँच गया हूँ, जहाँ सिंह पर सवार साक्षात दुर्गा माँ बैठी हुई थीं."

"अच्छी तरह सोचिए, [illegible]क पहले आपने कुछ उपाय किया होगा?"

"हाँ, जब मैंने अपनी प्रब[illegible] गुरुजी महाराज के सामने प्रकट की तो [illegible] उपाय बताया था."

"क्या उपाय था वह?"

"माफ कीजिए, वह उपाय मैं नहीं बता सकता. यदि बताता हूँ तो मेरा व मेरे बेटे का अनिष्ट हो जाएगा. गुरुजी ने मुझे कसम दी है."

"उन्होंने मुझे व सत्या को भी कसम देकर बेवकूफ बनाया था." राजेश ने सारी घटना संक्षेप में बता दी.

सारी घटना सुनने के बाद प्रकाशजी जोर से हँस पड़े, "माना आपको धोखा हुआ है, लेकिन मेरे साथ तो यह प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि मेरी पत्नी को मरे हुए पाँच वर्ष हो गए हैं."

"फिर भी आप बताइए तो सही, आपको क्या उपाय बताया था?"

उनके बेटे ने भी उनसे कहा, "पापा! बताइए तो सही. क्या पता हमारे साथ भी धोखाधड़ी हुई हो."

वे मजबूर होकर बताने लगे, "गुरुजी ने मुझसे कहा था कि तुम खाली लोटा चारपाई के नीचे रखकर सो जाना. घड़ी में दो बजे का अलार्म लगाना. दो बजे रात को तुम जब उठकर देखोगे तो देखोगे कि वह खाली लोटा आधा चरणामृत से भरा है. जैसे ही उसे पीओगे, वैसे ही देवी माँ के दर्शन हो जाएँगे.

"रात में दो बजे जैसे ही मेरी नींद खुली, मैंने देखा कि उसमें चरणामृत छलछला रहा है. उसे पीने के बाद भक्ति रस की ऐसी मस्ती छाई कि लगा देवी मेरे सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दे रही हैं. यह था न गुरुजी का चमत्कार?"

हम चारों का सिर चकरा गया. जाहिर है वे घर का ताला बंद करके ही सोते होंगे.

तभी उनका बेटा सचिन कुछ झेंपता हुए बोला, "बाबूजी! वह चरणामृत तो मैंने लोटे में डाला था."

"क्या?" हम सबके मुँह से निक

"हाँ, गुरुजी ने वह मुझे एक शी

था. कहा था कि मैं आपको नहीं बता

अपने कमरे में रात को एक बजे

लगाकर मैं भी सोया था. चुपचाप उठ

का चरणामृत लोटे में डाल गया था."

"लेकिन तेरी ऐसी कौन-सी इच्छा

करता, जो तुझे यह उपाय करने की

गई?" प्रकाशजी ने अ

पहले तो सचिन श

फिर हिम्मत करके

"आप नीमा से शादी

दे रहे थे? देवी के

खुशी में आपने दूसरे

स्वीकृति दे दी थी."

"और हम समझे

बताए उपाय ने यह

दिखाया है." दिविक

मैं भी तत्परता से

"जरूर इस बोतल में

रही होगी, जिसे पीकर

वही दिखाई देने लगा

गुरुजी ने बताया था."

"आपको भी खूब

बनाया." राजेश बोले.

"कुछ भी हो, मेरी

गुरुजी के उपाय के

होनेवाली है." सचिन ने हँसते हुए कह

फिर तो जैसे हम सब पर एक भूत

गया था. हम गुरुजी के सभी शिष्यों

सभी को उन्होंने बेवकूफ बनाकर रुपए

थे. किसी को भभूत, ताबीज, किसी

देकर चमत्कार दिखाए थे. पता नहीं

कैसे खबर लग गई थी कि उनका

चुका है. वह एकदम से भूमिगत हो ग

अचानक एक दिन उनकी पत्नी प्रक

बाजार में मिल गईं, बहुत बदहाल थीं.

तो हुआ कि बाजार के बीच ही खरी-

दें, लेकिन वह स्वयं ही उनके सामने ह

लगीं, "हमें माफ कर दीजिए. मेरे प

भगवान का नाम लेकर लोगों को ठगा

भगवान ने उनके दाएँ पैर को लकव

दिया है."

क्या कहते प्रकाशजी उस सजायाफ

क्या कहूँ मैं नख से शिख तक श्रद्ध

सुनयनाजी से? उनका भ्रम तोड़ दूँ या

श्रद्धा के सहारे जिंदगी गुजारने दूँ, मैं

पा रही थी.



"हमें माफ कर दीजिए. मेरे पति ने जिस भगवान का नाम लेकर लोगों को ठगा था, उसी भगवान ने उनके दाएँ पैर को लकवाग्रस्त कर दिया है."



आफत है!
धोबी
चित्र • नीरद
कथा • शैल नीरद
मालिक, पैसा...
लाओ!
देने नहीं, लेने आया हूं!
हैं! किस बात के?
आपके कपड़े धोए हैं, मैं धोबी हूं! पूरे चालीस रुपये हैं! पहले के नब्बे रुपये अलग!
नि कुल क सौ तीस रुपये!
जी! आप पढ़े-लिखे हैं... यह इक्कीसवीं सदी है! सबके भाव बढ़ रहे हैं फिर कपड़े धुलाई के क्यों नहीं?
ओह! ठीक है भई, देता हूं, मगर आज से तुम्हारी छुट्टी!
दूसरे दिन—
भाग्यवान! मैंने धोबी की छुट्टी कर दी है! कपड़े घर में धो कर खुद ही प्रेस कर लिया करो!
ठीक किया! इससे बचत भी होगी!
हुम्ब! नवनी साड़ी प्रेस कर रही थी और साड़ी पर आयरन रख कर रसोई में चली गई है!
नवनी... न-व-नी-!
हाय! मेरी साड़ी जल गई, पूरे पांच सौ रुपये की थी! एक साथ रसोई और आयरन आखिर सम्भालूं भी कैसे? आज ही मुझे एक नई साड़ी खरीद दो वरना!...
बूहूहूहू! धोबी रखूं, या न रखूं! आफत है!

• उमेश त्रिवेदी

काली पत्नी के फायदे

पत्नी का काला होना पहले तो मुझे सहज स्वीकार्य नहीं हुआ, लेकिन जब काली पत्नी से फायदे ही फायदे होने लगे, तब मुझे अपनी काली पत्नी की कालिमा पर गर्व होने लगा

पापा ने बेटे से कहा, "तुम मुझे कुछ भी कहो, मगर तुमको मेरी ही समझ का अत्यधिक आभास होगा. मैंने तुम्हारे लिए एक लड़की शादी हेतु पसंद की है, मगर वह काली है."

उपरोक्त बात मेरे पापा ने असमय कही थी, मेरे पापा मेरा रिश्ता काली लड़की से तय करके आए थे. मुझे मालूम हुआ कि यह बात बिलकुल सच है, तो मैं अंदर ही अंदर अपने पापा से बड़ा कुपित हुआ. मगर सोचा कि मुझे कुपित होने से क्या फायदा होगा, पापा ने जो किया, ठीक समझकर ही किया होगा.

पापा ने कहा कि मैं अपनी शादीशुदा जिंदगी जी रहा हूँ. वैसी जिंदगी बहुत कम लोग ही बसर करते हैं. शादी के जोड़े एकदूसरे को आपस में बुरा-भला कहते हैं. पति-पत्नी के बीच अक्सर इस वाक्य का उच्चारण होता है, 'मेरी तो तकदीर ही फूटी थी कि यह जो मेरे गले पड़ी या पड़ा'. लेकिन इस सच्चाई के बावजूद मैं निठल्ला हूँ और मेरी पत्नी काली है. हम दोनों पति-पत्नी ने एकदूसरे को अब तक की जिंदगी में बूरा-भला नहीं कहा.

किंतु मेरा भाग्य जरूर उदय हो गया. मेरा आँगन भी हरा-भरा हो गया. ऐसा यकीन हो गया. अभी शादी भी नहीं हुई थी कि हमारी माली हालत बहुत ही सुदृढ़ हो गई. पापा ने अपनी मिठाई की दुकान बंद कर दी और उन्होंने एक नया कारोबार शुरू कर दिया. मेरे बीमार भाई का इलाज, जो हौमियोपैथिक डॉक्टर से चल रहा था, वह बंद कर दिया गया और एक बड़े नर्सिंग होम में भर्ती कराकर इलाज शुरू कर दिया गया. मेरी तीन बहनें और दो भाइयों के लिए अलग-अलग अध्यापक पढ़ाने के लिए आने लगे. देखते ही देखते घर का रहन-सहन ही बदल गया.

हम लोगों की तरक्की से मोहल्ले के लोग ईर्ष्या करने लगे और पूरे मोहल्ले में यह चर्चा होने लगी कि लड़के की शादी में मोटी रकम ले ली है. यह बात सुनकर मेरा मन बेचैन-सा होने लगा.

एक रोज मैंने अपने पापाजी से कहा, "मोहल्ले वाले कहते हैं कि आपने दहेज में मोटी रकम ली है?"

"जलनेवाले ऐसा ही कहते हैं," मेरे पापाजी ने बेफिक्री से कहा. मैंने तुम्हारे दहेज के नाम एक कौड़ी भी नहीं माँगी है." फिर थोड़ी देर चुप
रहकर अपने सिर पर हाथ फेरते हु
बेटे, अगर वह लोग खुद हाथ उठा
तो हमको लेने से क्या एतराज हो

मुझे अपने पापा की बातों मे
आया. मैंने भी अपनी तरफ से क
की. किंतु जब मेरी सास मुझे देखने
मेरे हाथ में एक घड़ी, एक सोने की
पहनाई और बाद में एक नई मोटर
चाबी जबरदस्ती मेरे हाथों में दे ग
बार मना करने पर भी वह नहीं म
सब चीजें देकर ही गईं.

शादी के उपरांत मेरी पत्नी जब
से आई तो अपने साथ रंगीन टीवी,
सोफा सेट, डबल बेड व अन्य विभि
चीजें लेकर आई. शादी के दौरान
किसी को इतना सामान दहेज के
मिला. दूसरी तरफ बड़ी बूढ़ी औरतों
के रंग से ज्यादा चर्चा मुझे दहेज में
की होती.

सुहागरात वाले रोज मेरी हिम्मत
के कमरे में जाने की नहीं पड़ रही
का मुख्य कारण यह था कि मुँह दि
पास पत्नी को कुछ देने के लिए नह

मेरे घर के सदस्यों ने मुझे अप



में जबरदस्ती अंदर धकेल कर बाहर से ड़ बंद कर दिए थे. मैं जब उसके कमरे में तो कुछ आहट-सी हुई. मेरी पत्नी कर डबल बेड से उठ खड़ी हुई. मेरे पास ते ही उसने मेरे पैर पकड़कर अपना सिर पर रख दिया. मैंने उसे उठाकर अपने गन में भर लिया, फिर धड़कते हुए दिल से "अपना मुँह दिखाई क्या लोगी?"

प्यार, सिर्फ आपका प्यार," उसने घूँघट में री ओर देखते हुए कहा, "आप के स्नेह से र मेरे लिए कोई चीज नहीं है."

ह बात सुनकर मैं फूला न समाया. प्यार से गोद में उठाकर डबल बेड पर लिटा दिया. मैंने उसका घूँघट उठाया तो देखा उसका चेहरा, बड़ी-बड़ी आँखें, पतली नाक और हुई कदकाठी देखता ही रह गया. उसका रंग मुझे काली सावन की घटा के समान हक लगा. सुबह मेरी आँखें खुली भी नहीं कि कमरे में उसकी मधुर आवाज गूँजी, उए श्री मानजी, आपकी पत्नी चाय लेकर र है."

इतनी सुबह तुम क्यों उठ गई?" मैंने प्यार कहा, "संगीता या नीतू को चाय बनाने के कह दिया होता."

"मैंने आज से उन दोनों की छुट्टी कर दी. अब मैं खुद रसोई का काम संभालूँगी. आज से यह मेरी जिम्मेदारी है." फिर मेरी तरफ चाय का कप बढ़ाते हुए कहा, "अपनी चाय जल्दी लीजिए, मुझे ससुरजी को चाय देनी है."

मैंने चाय का कप हाथ में ले लिया. उसने मेरे माथे तथा मेरे गाल पर दो चुंबन लिए और कमरे से भाग गई. उसके काम और प्यार को देखकर मैं खुशी से फूला न समाया.

मैं पूरा दिन अपने दोस्तों की राह देखता रहा, किंतु कोई दोस्त मेरे घर नहीं आया. मेरे मन में अंदर ही अंदर बहुत कचोटन हो रही थी. शाम को जब मैं घर से निकला, तभी एक दोस्त मिला. उससे घर न आने की शिकायत की तो वह बोला, "तुम्हारी पत्नी को क्या देखना. वह अमावस्या की काली रात है." फिर रुककर बोला, "तुम्हें यह बात याद होनी चाहिए कि हम भौंरों की तरह उसी के चक्कर काटते रहे, जिसकी पत्नी रूप की रानी होती है."

यह बात सुनकर मुझे बहुत खराब लगा, मगर फिर मन को समझाया कि मेरी पत्नी के काली होने से मुझे ही फायदा है. मेरे मित्रगण मेरे घर नहीं आएँगे, न मेरा किसी प्रकार का कोई खर्चा होगा. दोस्त लोग मतलब-बेमतलब, वक्त-बेवक्त परेशान नहीं करेंगे. मै भी चैन से रहूँगा.

पर मुझे अब अपने में आभास होने लगा कि मेरी पत्नी वाकई अमावस्या की रात की तरह काली है. थोड़ी कम काली होती तो मेकअप से काम चल जाता और मैं उसे संग लेकर टहलने के लिए शान से निकलता. बीवी साथ घूमने की इच्छा प्रकट करती तो मैं बहाना बनाकर टाल जाता.

एक रात साढ़े दस बजे मैं पेट्रोल पंप के निकट मोटर साइकिल में पेट्रोल डलवाने गया तो साथ में मेरी पत्नी भी थी. वह मोटर साइकिल से उतर कर थोड़ी दूर पेट्रोल पंप से हटकर खड़ी हुई थी. उसी समय कुछ मनचले लड़के वहाँ आ पहुँचे, जो लड़कियों से संबंधित अश्लील बातें कर रहे थे. मैं घबराया कि कहीं वे मेरी पत्नी के साथ छेड़खानी न कर दें. पर उसके काले रंग ने उसे उन मनचलों से दूर रखने में अहम भूमिका अदा की.



पेट्रोल डलवाने के उपरांत पत्नी जब पास में आई तो मैंने उसे छेड़ते हुए कहा, "मेरी प्यारी सावन की काली घटा! तुम घर की चारदीवारी में ही नहीं, तुम बाहर सड़क पर और चौराहों पर पूरी तरह महफूज हो."

"आपका दिल?" उसने भी व्यंग्य भरे स्वर में पूछा.

"मेरा दिल? मेरा दिल तो तुम्हें देखकर ऐसे डोलने लगता है कि जैसे पेड़ की पत्तियाँ हवा के झोंकें में डोलने लगती हैं," यह कहकर मैंने मोटरसाइकिल स्टार्ट की.

मैं दूसरे रोज घूमने के लिए उसे लेकर निकलने लगा. कभी-कभार वह किसी दुकान, रेस्तराँ या पानी के पार्क के पीछे रह जाती तो मुझे किसी तरह की परेशानी नहीं होती कि कोई उसके समीप मँडरा रहा होगा. इसी कारण विवाह के पश्चात वह अपनी छुट्टियाँ समाप्त होने पर जब बैंक में ड्यूटी पर जाने लगी, तब मैंने किसी तरह का तनाव महसूस नहीं किया. मेरी जान-पहचान के एक जोड़े के घर आए दिन इसी कारण महाभारत होता रहता है. पति महोदय नहीं चाहते हैं कि उनकी पत्नी अब नौकरी करे. उन्हें शक है कि उनकी बीवी में उसका बॉस दिलचस्पी लेता है.

एक रोज तो मेरा सिर अपनी काली पत्नी के कारण गर्व से ऊँचा उठ गया, जब सुबह मेरी कांति मौसी मेरे घर आकर मेरी माँ से कहने लगीं, "मयंक की माँ, तुम तो बहुत खुशनसीब हो, जो इतनी अच्छी बहू मिली. बेचारी घर का सारा काम करती है और ड्यूटी पर भी जाती है. एक मेरी महारानी आई हैं, पलंग से नीचे पैर रखती ही नहीं. तुम्हारी बहू की तरह ढेर सारा दहेज लेकर आई होती तो पता नहीं क्या करती," फिर रुककर बोलीं, "मयंक की माँ, इस उम्र में मुझसे अब चूल्हा नहीं फूँका जाता."

"अरे मौसी, इतनी मामूली-सी बात के लिए भाभी की शिकायत क्यों करती हो? भइया से कहो, वह उनको समझा देंगे," मेरी बहन संगीता ने कहा.

"हूँ, उस निठल्ले पर तो रूप का जादू चढ़ा है," मौसी ने मुँह बनाकर कहा, "वह तो उसके इशारों पर नाचता फिरता है."

कांति मौसी के कहने के अंदाज पर हम सब हँस पड़े.

पर, तब काली पत्नी होने का मुझे बहुत गर्व हुआ और काली बीवी मिलने के फायदे होने का एहसास भी. ■

कथा माधुरी

पति परित्यक्ता बिन्नु ने कितने जतन से बेटे को सर्जन बनाया. पालन-पोषण ऐसा किया कि उसकी रग-रग में भारत की सोंधी माटी की गंध भर दी. इंग्लैंड जाकर भी एक ओर वह मातृभूमि से जुड़ा रहा, दूसरी ओर जुड़ा रहा माँ-बेटे का अटूट विश्वास. बेटे सृजन ने लिखा था, सर्दी में आऊँगा. यही बुआ के लिए अंतिम सच है. हर सर्दी में वह करती हैं, बेटे का अंतहीन इंतजार...



अंतिम सच

• चित्रलेखा

सूर्य के दर्शन चार-चार, पाँच-पाँच दिन के अंतराल से हो रहे थे. सूर्य देवता बीच-बीच में मुसकरा भर देते थे, बस. हँसना, अट्टहास, खिलखिलाना वह इन दिनों भूल-से गए थे. पर बिन्नु बुआ के अभ्यस्त हाथ हाड़ कँपा देनेवाली सर्दी में भी आंतरिक ऊर्जा से यंत्रचालित से सृजन भैया की आगवानी की तैयारी में व्यस्त थे. कहीं भी राई-रत्ती की कसर नहीं थी. बुआ का एक कदम नीचे आँगन में तो दूसरा ऊपर दुछत्ती में, एक स्टोर में तो दूसरा तख्तबंदी में चकर[illegible]-सा घूम रहा था. जो-जो बुआ को याद आता जा रहा था, रखती जा रही थी और जो उन्हें याद आने पर भी नहीं मिल रहा था, उसे अलग पन्ने पर लिख[illegible] थीं, फुरसत में ढूँढ-ढाँढ कर रखने [illegible] अभी वह इन न मिलनेवाली चीजों के उल[illegible] में उलझ गईं तो न जाने क्या-क्या रह जाए रखने से, इन एकाध चीजों के चक्कर में.

तभी खमानी पचास कुल्हड़ लगवा लाया. पलभर की याद करती-सी बुआ तरू को बताने लगीं, "सर्जन हमेशा कहेगा, अम्माँ, दूध और चाय कुल्हड़ में सोंधे-सोंधे से लगते हैं. सच कहता हूँ अम्माँ, इंग्लैंड में भी तुम्हारे कुल्हड़ बहुत याद आते हैं." कुल्हड़ की बात करते-करते बुआ को पत्तलों और दोनों की याद भी संग जुड़ी-सी आ गई. खमानी को फिर उतनी ही दूर दौड़ा दिया बुआ ने. फिर सुस्ताने बैठीं, बुआ कुछ न याद आने पर. पर मन ही मन 'कुछ रह तो नहीं गया' की गणना करतीं और ऊपर से तरू से बतियाती बुआ बोलीं, "इंग्लैंड में रहते हैं तो क्या, जब भी आते हैं तो पंगत में जीमने को [illegible] कर लेते हैं सर्जन. सरय्यों में आलू की सब्जी, शकोरे में बूँदी का रायता, पत्तल[illegible] लड्डू, सौंठ और देशी घी की पू[illegible] कचौड़ियों की महक आज भी उनके [illegible] खुशबू में डुबो जाती है. अभी भी सज[illegible] में दूध औटवाएँगे और बताशों से मि[illegible] पीएँगे."

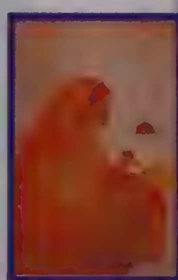
तरू का ध्यान बिन्नु बुआ के स्[illegible] कुल्हड़ों के हुजूम की ओर गया. इतने [illegible] फिर भी बुआ ने खमानी को का[illegible] कुल्हड़ लेने कुम्हारों में हल्कान कि[illegible] में घुमड़ते भाव बुआ कुशल मनोचिकि[illegible] ताड़ गईं. अत: उफनते दूध-सी तरू [illegible] पर बुआ ने समाधान के छींटे डाले, '[illegible] बरसों पुराने कुल्हड़ सर्जन के लिए मुं[illegible] जाऊँ. वह इतने सौंधिया तो नहीं सक[illegible]

ओह! तो शायद बुआ ने पिछली [illegible]

के आने पर उनके प्रिय कुल्हड़ और पत्तलों जग-ज्योनार की होगी. तभी तो स्टोर में हड़-पत्तलों का चट्टा लगा पड़ा है. होंठों तक ती हँसी अंदर गटक ली तरू ने.

बुआ अतीत के वर्षों में विचरण करने लगीं. की स्मृतियों का हिरण कभी कुलाँचें लगाता र कभी धीरे-धीरे चरता, पिछले वर्षों वाले रों के वन में, "देखा, पिछली बार पैंतीस ले थी तो कम पड़ गए थे. सृजन एक-एक दिन चार-चार कुल्हड़ फोड़ते थे. चाय कुल्हड़ में, कुल्हड़ में, शरबत कुल्हड़ में, और तो और, ी भी कुल्हड़ में."

कुल्हड़ महिमा पुराण सुनते-सुनते तरू मन मन हँसी, 'पैंतीस ही तो ले गई थीं. रोज र-चार फोड़ते थे. तो जूठे कुल्हड़ धो-धो के म में आते रहे क्या?' सोच को लगाम और ड़ को ब्रेक लगाकर तरू कण्डी में करकंदियाँ लगाने लगी. बुआ फिर टेप-सी लीं, " सुन तरू, मोटी-मोटी रखना. ओवन में भलाकर खिलाऊँगी सृजन को. ई तो मुंबई में अलोप ही हो ए."



तरू मुँह फेरकर झुँझलाई, बुआ भी बस न जाने क्या-क्या देंगी यहाँ से. सब मिलता है वहाँ. जन भैया को एहसान से लादेंगी आ कि देख तू मेरे लिए इंग्लैंड से आया है तो ा? मैं भी तेरे लिए हजारों किलोमीटर से ा-क्या लादकर लाई हूँ."

बिन्नु बुआ की दृष्टि में सृजन भैया इंग्लैंड की कीचड़ में भी भारतीय कमल हैं, सारे दिन सर्जन को तला-भुना इंडियन फूड ही ाहिए. मेरे इतना मना करने पर भी इतना खर्चा रके इंडिया आते हैं. जाएँगे तो लड़कियों की तह. मैके के दरवाजे से चिपट-चिपट जाएँगे." ू ने छेड़ा, "बुआ, कहीं इस बार दरवाजे पर विकोल मत लगा दीजिएगा, वरना प्लेन मिस्टर जन को लिए बिना ही उड़ जाएगा." तरू को टका लगा, 'दो महीने हो गए मुझे आए, पर भी मिस्टर सृजन का ऐरोग्राम तो आया नहीं. ा माँ को ट्रंककॉल पर ही मजमून पढ़ाते रहे आ के आज्ञाकारी श्रवण कुमार. और न ही भी बुआ ही इत्ते जोर से फोन पर बोलीं कि ाता है कि विदेश से बात हो रही है. माँ-बेटे यह कैसी डाक तार व्यवस्था है कि किसी कानोंकान खबर तक नहीं होती. हाँ, बुआ छले हफ्ते सादे कागज पर सृजन भैया की खी कुछ पंक्तियाँ लंबे-चौड़े पत्र के नाम पर दिखा तो रही थीं.' सृजन के मोती जड़े अक्षर तरू के दिमाग पर जड़ से गए थे, 'भैया के इत्ते बड़े होने पर भी तारीख न डालने की आदत गई नहीं. फूफाजी ने बुआ पर किसी बीमारी का अभियोग लगाकर उन्हें सृजन भैया समेत अपनी ससुराल भेज दिया था. इंटर तक की पढ़ाई सृजन भैया ने नानी के यहाँ रहकर की. तभी अक्सर मुझे टीचर्स की झिड़की मिला करती थी कि अपनी बिन्नु बुआ से कहना कि उनके लाडले कॉपी पर तारीख नहीं डालते हैं. बुआ बेचारी कह-कहकर हार जातीं, पर माता के आज्ञाकारी श्रवण कुमार तारीख न डालने की अवज्ञा कर ही जाते.' तरू सोच की सीढ़ियाँ धड़ाधड़ उतरती जा रही थी. उधर बिन्नु बुआ के बाँधने का कोई पार नहीं था. जिधर देखो, कमरे में, बरामदे में, आँगन में सूटकेस, बास्केट्स, टोकरियाँ, बैग्स कद्दू से लुढ़क रहे थे.

"देखा, पिछली बार पैंतीस ले गई थी तो कम पड़ गए थे सृजन एक-एक दिन में चार-चार कुल्हड़ फोड़ते थे चाय कुल्हड़ में, दूध कुल्हड़ में, शरबत कुल्हड़ में, और तो और, पानी भी कुल्हड़ में" कुल्हड़ महिमा पुराण सुनते-सुनते तरू मन-ही-मन हँसी

बिन्नु बुआ ने इस बिखराव को अगले दिन सुबह कार में सहेज-सँभालकर रखवा लिया. पर कार चलने से पूर्व ही बिन्नु बुआ की याददाश्त ने फिर जोर मारा, "मुंबई में चाहे सब मिल जाएँ, पर क्या मजाल जो सिंघाड़े मिल जाएँ. कचरी कितनी पसंद है सर्जन को." बुआ ने खमानी को सिंघाड़े लेने सीधे काछियों में ही भेज दिया. फिर बुआ सृजन की कचरी-पसंद बताने लगीं, "सर्जन पिछली बार कह रहे थे कि अम्माँ, अब की सर्दियों में ही आऊँगा. जीभर और प्लेट भर-भर कचरी ही कचरी खाऊँगा. सच अम्माँ, तुमने तो मुझे इंग्लैंड भेजकर वनवास ही दे दिया." बुआ का गला सूखने लगा बोलते-बोलते. तरू पानी लेने अंदर गई तो देखा कि गत्रों का गट्ठर तो यहीं छूटे जा रहा था. बुआ को याद आता तो शायद सृजन भैया के जीजान गत्रों के लिए कार अधबीच से ही लौटा लातीं. तरू ने गट्ठर लाकर बुआ के पैरों के पास पटक दिया. सिंघाड़ों के आते ही बुआ की बाँधा-बुँधी को पूर्णविराम लग गया.

बुआ की कार धूल उड़ाती चल दी. तरू गेट पर खड़े-खड़े स्मृतियों में विचरने लगी. बरेली बदली होते ही माँ ने तरू को बिन्नु बुआ के बारे में पहले ही चेता दिया था, "तरू, तेरी चेता बुआ की सहेली वनिता बुआ उर्फ बिन्नु बुआ बरेली में ही रहती हैं. न ही मिलो तो अच्छा है. पहले जैसी नहीं रहीं वह. पैसों को दाँतों से पकड़ने लगी हैं. लाखों की दौलत है, पर किसी को पाई भी नहीं देतीं, जैसे ऊपर साथ ले जाएँगी सब." और भी न जाने क्या-क्या बिन्नु बुआ की लगाइयाँ-बुझाइयाँ की थी अम्माँ ने पत्र में. माँ का पत्र पढ़कर तरू ने मन ही मन वाक्य पूरा किया था, "ऊपर एकाउंट ट्रांसफर करा लेंगी, और क्या?"

तरू ने माँ का पत्र मिलने के बाद किसी से भी बिन्नु बुआ का अता-पता जानने की कोशिश नहीं की, पर मन के किसी लॉकर में तरू की इच्छा अवश्य सुरक्षित रही, 'बचपन में देखी बिन्नु बुआ को पहचान भी पाऊँगी या नहीं. वे तो खिलता गुलाब थीं. पल-पल मोहक मुसकानों का छिड़काव करती रहती थीं. वसंत का उपवन उनमें समाहित था. पर अम्माँ के पत्र से मालूम हुआ कि पतझड़ दबे पाँव उनके स्वभाव में चला आया है. डेढ़ दशक पहले तक बिन्नु बुआ सदाबहार ऋतुराज ही लगती रही थीं तरू को.

इसी उहापोह में बिन्नु तरू को अचानक एक पार्टी में टकरा गईं. बदली-बदली सी थीं. मन के कैनवास पर छपी उनकी निगेटिव क्लोजअप के रूप में तरू को चेता गई, "यही तेरी बिन्नु बुआ हैं. हाँ, वह अब तुझे नहीं पहचान पाई हैं. तू अब चेता बुआ की पूँछ बनी रहनेवाली शर्मीली तरला नहीं रही न, इसलिए." तरू ने उन्हें पीछे से छुआ, "बुआ की बच्ची, दाल-दाल कच्ची." इतना सुनते ही बिन्नु बुआ के यादों के थान खुल गए. काफी देर तक 'अरे sss' का अलाप लेती बुआ के मुख से फूटा, "गोल-मटोल फुटबॉल, तू पिचक कैसे गई? तू तो बॉल भी नहीं रही." तरू ने अपने कान पकड़े ओर सस्पेंस के परदे हटाए, "डाइटिंग करके 'बुआ दी ग्रेट', डाइटिंग करके. स्लिम होने का जमाना है. बचपन की तरह हर 'समय चरते रहने और ठूँस-ठूँसकर खाने का नहीं. यूँ कहो कि सकल पदारथ हैं जग माँहि, डाइटिंग वाली नारि पावत नाहिं, वाला तुलसीदासीय दोहा कुछ संशोधन के साथ खूब फल-फूल रहा है."

कहीं भी कुछ भी तो नहीं बदला था. बिन्नु बुआ ने धप्प जड़ दिया कमर पर. बिल्कुल पहले की तरह. तरू ने सोचा कि माँ तो बस हरेक के

राई जितने दोष को भी बेर के बराबर बताएँगी. पर बिन्नु बुआ में तो राई बराबर भी खोट नहीं आया था. विजय को अभी ऑफिस से मकान नहीं मिल पाया था. अतः बुआ के हजार जोर देने पर तरू विजय को तब तक के लिए बुआ के कॉलोनी जितने लंबे-चौड़े मकान में ले आई थी.

बिन्नु बुआ अभी भी सृजन भैया को सर्जन ही कहती थीं, पढ़ी-लिखी होने पर भी. बचपन में सृजन भैया के मुँह फुला लेने पर वे हँसकर कहतीं, "बड़े होकर इसे सर्जन बनना है, तो क्यों न इसे अभी से सर्जन ही कहूँ." बुआ की जबान पर जैसे सरस्वती बैठी थी. सृजन भैया बड़े होकर सचमुच के सर्जन बन गए और आगे पढ़ाई के लिए बुआ ने उन्हें इंग्लैंड भेज दिया.

तरू बिन्नु बुआ के लौटने की प्रतीक्षा में थी. 'अब तक तो सृजन भैया आकर लौट भी गए होंगे,' तरू ने सोचा. रात को दो बजे कॉलबेल बजी, तो विजय अलसा गए, "अवश्य बुआ होंगी." सृजन भैया के समाचार सुनने की लालसा में तरू ने लपककर घर का शेर मुँह जितना लंबा-चौड़ा दरवाजा खोल दिया. डाकिये ने तार थमाया, तो तरू के होश उड़ गए. अर्जेंट तार था, तभी तो डाकिये ने इतनी रात गए जगाया, वरना विजय की सालगिरह की बधाई वाला अम्माँ का ऑर्डिनरी तार तो डाकिया दिन में भी थमा सकता था. कँपकँपाते हाथों में पकड़े तार पर तरू ने जबरदस्ती निगाह जमाई- 'शीघ्र आओ. वनिता को हार्ट अटैक,' कमला चैटर्जी. तरू को बुआ ने चलते समय अपने मुंबई वाले फ्लैट के सामने वाली का नाम कमला चैटर्जी ही तो बताया था.

आशंकाओं के सैकड़ों बिच्छू तरू को डंक मारने लगे. थरथराते हाथों से दरवाजा बंद करके तरू ने डाकिये को विदा किया और विजय को जगाया, "अभी रात में ही चलना होगा." तार पढ़कर विजय तटस्थता से उतराए, "तुम तो दूर-दूर की यात्राएँ अकेले ही कर लेती हो. लखनऊ से बंबई के लिए सीधी ट्रेन मिल जाएगी. चपरासी को ले जाओ, चाहो तो. ऑफिस में ईयरली चेकिंग है. डायरेक्टर साहब आ रहे हैं. सॉरी, नहीं जा सकूँगा तुम्हारे साथ."

तरू ने मन ही मन कहा, 'बचपन से ही मुझे सगी बुआ समान प्यार-दुलार [illegible] बिन्नु बुआ ने. मेरे जैसा भावनात्मक लगाव तुम्हें उनसे नहीं हो सकता. चपरासी भी पूरे होने चाहि[illegible] समय विजय साहबजी. अकेले ही जा[illegible]

रास्ता काटना तरू को भारी हो गया[illegible] बुआ की स्मृतियाँ उसके नेत्रों के दूरदर्शन [illegible] चित्रहार-सी अंकित होने लगीं. यदि कभी मैं बिन्नु बुआ के बगीचे से मैडम को देने के लिए चेता बुआ से फूल तोड़ देने के लिए जिद करती तो चेता बुआ झिड़क देतीं, पर बिन्नु बुआ हँसकर कहतीं कि ठीक है, तेरे लिए यह हिंसा भी मैं करूँगी, और सबसे सुंदर गुलाब तोड़ देतीं.

बिन्नु बुआ को मैके भेजकर फूफाजी और भी निश्चिंत होकर दौलत जुए में लुटाने लगे थे. यदि मैं कभी उनकी भाभियों के सिखाए से उन्हें छेड़ देती कि 'बुआ री बुआ तेरी बगल में चूहा' तो वह तुरंत बोल पड़तीं कि क्या करूँ भतीजी, तेरे फूफा खेलें 'जुआ.' फूफाजी का जुआ खेलना बुआ सरेआम स्वीकारतीं, पर उनके मुख पर गहन पीड़ा के बादल छा जाते.

तरू भगवान से मन-ही-मन मनाती रही कि बुआ का बाल भी बाँका न हो. जीवनभर फूफाजी की उपेक्षा सही बुआ ने और सृजन भैया ने. जमींदार घराने के अकेले कंठहार थे फूफाजी. बुआ को जेवरों से लाद तो दिया था फूफाजी ने, पर उन जेवरातों से लदी-दबी बुआ मन की बात कभी न कर पाईं फूफाजी से. स्वयं सृजन भैया भी तो स्नेही पिता के रूप में कभी न देख पाए फूफाजी को. उनकी रोबीली मूँछों से सदैव सहमे-सहमे रहे वह.

फूफाजी की बीमारी के दौरान बुआ के भाग्य खुले औ[illegible] [illegible]ह फिर ससुराल आ गईं. बुआ ने उनकी जी-जान से सेवा की. पर वह फूफाजी को यमराज के हाथों से फिर भी न खींच सकीं. सोचते-सोचते तरू को न जाने कब नींद आ गई.

आँख खुली तो गाड़ी मुंबई सेंट्रल पर खड़ी थी. पर्स से पता देखकर तरू सीधे बुआ के फ्लैट पर पहुँची. फ्लैट बंद था. धड़कते हृदय से तरू ने सामने के फ्लैट की घंटी बजाई. दरवाजा खोलने वाली अधेड़ा ने सूटकेस हाथ में देखकर तरू को तुरंत पहचान लिया, "तरू ही हो न, आओ."

प्रश्नसूचक दृष्टि से तरू ने कमला चैटर्जी को देखा. शब्द मुँह में ही अटक गए, "बुआ कैसी हैं?" कमला चैटर्जी ने कहा, "कोमा में हैं. अस्पताल में हैं." तरू मुश्किल से बोल सकी, "पहले अस्पताल चलूँगी, बुआ के पास."

तुरंत गाड़ी निकालकर कमला चैटर्जी तरू को अस्पताल ने गईं. बिन्नु बुआ स्थितप्रज्ञा-सी पड़ी थीं. तरू ने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई. साहस करके कमला चैटर्जी से ही पूछा उसने, "सृजन भैया [illegible]हाँ हैं? आकर चले गए क्या, शायद बुआ उनके [illegible] का सदमा बरदाश्त नहीं कर पाईं. इसी से..."

कमला चैटर्जी ने नीचे से ऊप[illegible]
घूरा, "क्या सचमुच तुम लोगों [illegible]
मालूम. सृजन अब है ही कहाँ, [illegible]
आकर चला जाएगा. तुम लोग तो [illegible]
बहुत निकट हो. तुम्हें भी कुछ नहीं [illegible]
ने. चार साल पहले सृजन इंग्लैंड [illegible]
एक्सीडेंट में अपना जीवन खो चु[illegible]
किसी अंग्रेज दोस्त ने उसकी डाय[illegible]
करके वनिता को पत्र द्वारा सूचित [illegible]
वनिता इस सच को स्वीकारती नहीं. [illegible]
इन्हीं सर्दियों में पिछले चार वर्षों से [illegible]
हैं पूरे ताम-झाम के साथ, जैसा [illegible]
रिसीव करने के लिए हमेशा आया [illegible]

"दोनों माँ-बेटों का अजब हाल [illegible]
बस 'इंडिया ही इंडिया' रटते रहते थे [illegible]
नाम सृजन के मुँह पर भूलकर भी न[illegible]
चार वर्ष पूर्व सृजन विश्वास दिल[illegible]
अगले वर्ष पूरी तरह से इंडिया आ[illegible]
तुम्हारी बुआ को यही ध्रुव विश्वास [illegible]
किसी काम में अटक गए हैं. इसलिए [illegible]
में देरी हो रही है. कह गए हैं तो अ[illegible]
उनके लिए वही पल सच है. बाद क[illegible]
के पास से वह अपनी सोच की कार[illegible]
से निकाल ले जाती हैं."

तरू को झटका लगा, "तो बुआ [illegible]
वह जग-ज्योनार के अवशेष कुल्हड़-[illegible]
थे. वे बुआ के विश्वास का आधार अ[illegible]
के आयाम हैं."

तरू निढाल-सी सोफे पर बैठ ग[illegible]
चैटर्जी ने तरू को थपथपाया. साहस [illegible]
होते ही तरू बोली, "बुआ ने बरेली तो [illegible]
मायके तक में किसी को कुछ नहीं ब[illegible]
सृजन भैया का वह पत्र जो बुआ ने मु[illegible]
था चलने से पूर्व?"

कमला चैटर्जी ने बताया, "वह [illegible]
अंतिम पत्र था. उसने चार वर्ष पूर्व वनिता [illegible]
था. वही पत्र जागते-सोते, उठते-बैठते [illegible]
कंठहार बना रहता है. कभी नहीं छूटता [illegible]

तरू ने जैसे स्वयं से कहा, "ओह [illegible]
विश्वास के मूल में कितना छलावा [illegible]
पीड़ा सह रही हैं. चलें, बुआ को दे[illegible]
उठकर पलंग के पास आई. बिन्नु बुअ[illegible]
पड़ी थीं. मुट्ठी बंद थी. तरू ने मुट्ठी [illegible]
हल्की-सी चेष्टा की. कमला चैटर्जी [illegible]
दिया, "रहने दो तरू. मुट्ठी में सृजन [illegible]
अंतिम पत्र बंद है. यही पत्र तो इनक[illegible]
शक्ति, इनका विश्वास है. यही तो इनका [illegible]
सच' है, वरना ये इस मन भर दुख [illegible]
की..."



"औद्योगिक विकास के साथ हरित क्षेत्र के विकास द्वारा ही हम समृद्धिशील बन सकते हैं"

बागवानी के शौक

• शीला श्रीवास्तव





छोटे सिंह सी.पी.डब्लू.डी. में हॉर्टिकल्चर के डाइरेक्टर हैं. उद्यान विभाग से एक लंबे समय से जुड़े रहने के कारण पेड़, पौधों और फूलों के बारे में इनके पास ज्ञान व अनुभव का भंडार है. विभिन्न अवसरों पर महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गाँधी, राजीव गाँधी आदि प्रसिद्ध व्यक्तियों की समाधियों को सजाने-सँवारने का काम भी हॉर्टिकल्चर निदेशालय इनके निर्देशन में ही करता है.

दिल्ली में आयोजित विभिन्न 'फ्लावर-शो' तथा 26 जनवरी के दिन राजपथ पर प्रतिवर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर निकलनेवाली शहरी विकास मंत्रालय की फूलों से सजी झाँकी के पीछे भी इनका ही मस्तिष्क काम करता है. इसके साथ ही इन्होंने ओसाका, जापान में

'मेडिसिनल प्लांट्स' की प्रदर्शनी में तथा मास्को में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया था. भारत को कई पुरस्कार भी मिले थे. प्रस्तुत है, इनसे की गई एक भेंटवार्त्ता :

आजकल समय और स्थान की कमी होने के कारण व्यक्ति अपना बागवानी का शौक कैसे पूरा कर सकता है?

हर इंसान को चाहे वह महिला हो या पुरुष, जब भी खाली समय होता है, कोई न कोई शौक पालता है. कोई टीवी देखता है, कोई रेडियो सुनता है या और कई तरह के शौक होते हैं, व्यक्ति उसके लिए समय निकाल ही लेता है. उसी तरह अगर व्यक्ति चाहे तो आराम से अपना बागवानी का शौक पूरा कर सकता है. मैं तो कहूँगा कि व्यक्ति इस शौक के जरिए हरियाली व प्रकृति से जुड़कर बेहतर और स्वस्थ महसूस करेगा.

औद्योगिक विकास अपने आप में समृद्धि का मानदंड नहीं हो सकता. वास्तविक समृद्धि इस बात पर निर्भर करती है कि औद्योगिक विस्तार के साथ हरित क्षेत्र के भी विकास से तथा दृष्टि से एक देश की पूरी जमीन का 33 प्रतिशत भाग अगर हरा-भरा है, तभी हम उस देश को वास्तव में समृद्धिशील कह सकते हैं. 1947 में हमारे देश का 22 प्रतिशत भाग हरा-भरा था, जो अब घटकर 12 से 14 प्रतिशत हो गया है. इसके बहुत से कारण हैं, जनसंख्या में वृद्धि, औद्योगिकीरण इत्यादि. अगर हम एक हेक्टेयर जमीन पर पेड़-पौधे, झाड़ियाँ, क्रीपर इत्यादि लगाएँ तो ये हमारे वातावरण से 24 घंटे में 900 से 950 किलो कार्बन डाइआक्साइड लेते हैं तथा इसके बदले में 600 से 650 किलो तक ऑक्सीजन देते हैं. इस आँकड़े से हम पेड़-पौधों व फूल-पत्तियों के महत्त्व का अंदाजा लगा सकते हैं.

चाहे ज्यादा जमीन हो, कम जमीन हो या कोई मल्टीस्टोरिड फ्लैट में ही क्यों न रहता हो बागवानी की जा सकती है. कम जगह है तो बोंसाई पौधे, हैंगिग बास्केट, इनडा... गार्डन (अगर आपके पास अपना ...), बोतल गार्डेनिंग, ट्रे गार्डेनिंग, स्ट्राबेरी, ... इत्यादि में, जो भी आपको ठीक लगे, अपना ... शौक पूरा कर सकती हैं. इससे निश्चय ही आपकी जीवन शैली जीवंत व बेहतर होगी, जीवन सुखमय व शांतिमय होगा.



शांतिवन व वीर भूमि का सौम्य पुष्प शृंगार.



ऐसे फूल, पेड़ व पौधे बताएँ, जो आसानी से लग सकते हैं?

सारे ही फूल व सजावटी पेड़-पौधे कहीं भी लग सकते हैं. आप सिर्फ जमीन की पी.एच. वैल्यू जरूर जाँच करा लें. पी.एच. वैल्यू 6.5 से 7.5 तक होनी चाहिए. अगर 6.5 से कम है, मिट्टी क्षारीय है और अगर 7.5 से ज्यादा है तो मिट्टी अम्लीय है और ऐसी स्थिति में जमीन का ट्रीटमेंट कराना पड़ता है.

विभिन्न मौसम में लगाए जानेवाले फूलों तथा उनकी देखरेख के बारे में भी बताएँ.

सर्दियों में लगाए जानेवाले फूल हैं-डहलिया, बेलाडोना, जाफरी, गेंदा, साल्विया, एंटीराहिनम, मोगरा, देशी व विलायती गुलाब. गरमियों में लगाए जानेवाले फूल हैं-कोचिया, पोटूलाका ...मरांथस, बालसम कॉस्मॉस, जीनिया, लिली व ...कैक्टस के फूल, बोगनवेलिया.

...दाउदी के फूल भी आप अभी लगा सकती हैं, जो नवंबर से प... खिलते हैं.

इन्हें क्यारियों या गमले... लगा सकती हैं.

फूलों की देखरेख ... सबसे ज्यादा इन्हें पानी क... पड़ती है. खासकर गरमि... हाल में पौधों को सही ... पानी मिले तो वे स्वस्थ ... जहाँ बड़ी पत्तियों वाले ... ज्यादा पानी की जरूरत ... वहीं छोटे पत्तियों वाले ... कम पानी की जरूरत ... है.

फूलों की देखरेख में म... की विशेष भूमिका होती है. ... समय व ध्यान दे सकती हैं. ... अगर आप फूलों को प्यार व ... पालती हैं, वे निश्चय ही ... अच्छी स्थिति में रहेंगे. उन्हें ए... की तरह देखरेख की जरूरत ... जितना ही आप उन्हें साफ... रखेंगी, उतने ही अच्छे व स्वस... खिलेंगे और आपकी बगिया म... पौधों को बिल्कुल माली और... के भरोसे छोड़ देने से वही ... होगी जो आया द्वारा पले ब... होती है. पौधों को भी सुखद स्प... स्नेह की पहचान होती है.

गुलाब के पौधों में कभी-कभी की... प्रकोप हो जाता है. ऐसी स्थिति में द... छिड़काव करें.

एक फफूँदीनाशक दवा है बावास्टी... पाउडर की दो ग्राम की मात्रा एक लीटर ... घोलकर छिड़काव करें.

दूसरी दवा है रोघर. इसकी दो मिलीली... मात्रा एक लीटर पानी में घोलकर 15 ... अंतराल पर छिड़काव करें.

इसके अलावा गुलाब के पौधों की ... एक बार छँटाई अवश्य करें. साधारणत... अक्तूबर के प्रथम सप्ताह में छँटाई करते ... यह आवश्यक नहीं कि यह समय छँटाई ... माकूल ही हो. इसके लिए एक विशेष ... की जरूरत पड़ती है, जिस पर ध्या... आवश्यक है. यह तापमान अकसर अ... अक्तूबर के तीसरे सप्ताह में मिलता है. ... रात के तापमान में जब दस डिग्री का ... और औसत तापमान 25 से. हो तो यह ... बिल्कुल उचित होगा.

सके अलावा पौधों की ई-गुराई भी आवश्यक है. इन्हें पानी से धोती रहें.

रमियों के मौसम में जब फूल खिलते हैं, बगीचे को, को हरा-भरा रखने के लिए करें?

अप्रैल, जून व जुलाई के महीने अपने बगीचे को हरा-भरा व बिरंगा बनाने के लिए आप नवेलिया की रंग-बिरंगी बेले एँ. वैसे लता और बेल के बगीचा अधूरा व सूना ही ना है पर गरमियों में इनका महत्त्व है. इन्हें किसी विशेष भाल की जरूरत नहीं. इन्हें न दा पानी की जरूरत है न खाद ह की. मकान की दीवार व टेरेस को सुंदर ने के लिए इन फूलदार झाड़ियों का अपना महत्त्व है. ये पौधे गरमी सहन करनेवाले हैं तथा छाया भी प्रदान करते हैं. इन्हें -छाँट कर एक निश्चित रूप प्रदान करते चाहिए. लाजसा ट्री इंडिका, जेट्रोफा आदि भी इसी श्रेणी में आते हैं.

गृहिणियों की आम शिकायत रहती है कि ड़े शौक से कीमती पौधे खरीद कर लाती पर वे शीघ्र ही मुरझा जाते हैं. इसका क्या ण है? क्या कुछ पौधों, जैसे रबड़ प्लांट, केरिया, एरिकापाम इत्यादि को गरमियों .सी. वाले कमरे में रखना जरूरी है?

सभी पौधों के लिए एक खास वातावरण की रत पड़ती है, साथ ही इन्हें आपके प्यार व की भी जरूरत है. ताजी हवा व धूप के व में इनकी साँस लेने व खाना बनाने की ली अवरुद्ध हो जाती है. अतः घर के अंदर नों में लगाए इन पौधों को हफ्ते में एक या दो शाम को बाहर निकालें व तापमान बढ़ने पर उचित मात्रा में पानी दें.

टेरेस गार्डेनिंग' के बारे में कुछ बताएँ.

अगर आपके पास पूरी खुली छत है तो आप शौक को पूरा कर सकती हैं. गमले में पौधे नाकर या पूरी छत पर मिट्टी, खाद डालकर लगा सकती हैं पर इसके लिए आपके न की 'वाटरप्रूफिंग' की सही व्यवस्था होनी ए, ताकि नमी से बचाव हो सके तथा उसमें ड वियरिंग कैपिसिटी' होनी चाहिए.

आजकल नए तरह के कैक्टस लगाए जा हैं. इसके बारे में हमारे पाठकों को कुछ कारी दें.



इस ताजी और सुगंधित हवा से हर आनेवाले को प्रकृति से जुड़े रहने का संदेश मिलता है.

कैक्टस दो किस्म के होते हैं: सेक्यूलैंट और ऑरनामेंटल. आजकल लोगों को इसका काफी शौक है और ये बहुत महँगे भी मिलते हैं. पर इसमें अत्यंत सावधानी की जरूरत है. अतः अगर आपके पास काफी बड़ा घर है, बड़ी जगह है तो एक हिस्सा कैक्टस के लिए सुरक्षित रख दें. छोटे बच्चों वाले घरों में इन्हें नहीं लगाना ही बेहतर है. साथ ही अगर आपका घर व बगीचा छोटा है तब भी इन्हें न लगाएँ. इन्हें पानी की जरूरत नहीं पड़ती है, अतः गरमियों में इन्हें लगाया जा सकता है.

घरों व दफ्तरों को सजाने के लिए इस्तेमाल किए जानेवाले गुलदस्तों में लगे फूल शीघ्र न मुरझाएँ, इसके लिए क्या करना चाहिए?

फूलों का ताजा बने रहना तापमान पर निर्भर करता है. कुछ लोगों का मानना है कि पानी में डिसप्रिन की गोली या चीनी डाल देने से फूल शीघ्र नहीं मुरझाते, पर इससे कोई फायदा नहीं. आप दो काम करें, एक तो रोज पानी बदल दें तथा दूसरे फूलों के नीचे के डंठल का पानी से खराब हुआ हिस्सा भी रोज काट दें. इससे फूल ज्यादा दिनों तक तरोताजा रह सकते हैं.

ऐसी कोई जगह बताएँ जहाँ से आम आदमी फूलों के बीज या खाद या पौध वगैरह खरीद सके, खासकर दिल्ली के लोगों के लिए?

अच्छी किस्म के बीज व खाद किसी प्रतिष्ठित दुकान से ही लें. खाद तो अगर खुद के बनाए हों, तो बेहतर है. अगर जगह हो तो आप बगीचे का एक कोना इसके लिए सुरक्षित कर दें. खाद पकी हुई होनी चाहिए. कच्ची खाद न डालें. इसके नुकसान ही होगा. कई सरकारी प्रतिष्ठान व बी.डी.ओ. के दफ्तर वगैरह में भी ये सारी चीजें उपलब्ध होती हैं.

दिल्ली में इसके लिए कई सरकारी संस्थान हैं, जैसे गर्वमेंट सुंदर नर्सरी, हुमायू टांब के नजदीक, निजामुद्दीन, नई दिल्ली. टेलिफोन नं. . 4619931.

दो तरह की खाद है. देशी ऑरगानिक यानी कंपोस्ट खाद, गोबर व नीम की खाद तथा इनऑरगानिक खाद जैसे यूरिया डी एपी. नाइट्रोजन की खादें सिर्फ पौधों की बढ़ोतरी के लिए डालें.

बोनमील (हड्डी की खाद) तथा नीम आयल केक को मिलाकर डालें. इसका असर धीरे-धीरे होता है. इससे पौधों के लिए तीन आवश्यक तत्त्व नाइट्रोजन, पोटाश तथा फास्फोरेस मिल जाते हैं.

क्या ऐसी कोई जगह है जहाँ जाकर व्यक्ति विभिन्न फूलों व पेड़-पौधों की जानकारी व सलाह ले सकता है?

दिल्ली में कई संस्थाएँ हैं जिसके सदस्य बनकर व्यक्ति फूलों से संबंधित कई तरह की जानकारी ले सकता है, इनके द्वारा आयोजित सेमिनार में भाग ले सकता है, इनके द्वारा आयोजित विभिन्न फलॉवर शो प्रतियोगिता में भाग ले सकता है. ये संस्थाएँ अपने सदस्यों को इससे संबंधित साहित्य भी उपलब्ध कराती हैं. इनके नाम हैं :

1. रोज सोसाइटी ऑफ इंडिया
   नेशनल रोज गार्डन
   चाणक्य पुरी, शांति पथ,
   नई दिल्ली.
2. क्राई जेंथीमम सोसाइटी ऑफ इंडिया
   सी-48, गुलमोहर पार्क,
   नई दिल्ली.
3. कैक्टस सोसाइटी ऑफ इंडिया
   20/78, पंजाबी बाग,
   नई दिल्ली.
4. बोगनवेलिया सोसाइटी ऑफ इंडिया
   द्वारा : फलोरिकल्चर [illegible],
   आई.ए.आर.आई. पूसा,
   नई दिल्ली.
5. बोंजाई सोसायटी ऑफ इंडिया
   द्वारा श्रीमती [illegible]
   सुंदर [illegible] दिल्ली.
6. [illegible] ऑफ इंडिया
   [illegible] एसोसिएशन

"आंतरिक सज्जाकार बनने के लिए सुंदर कल्पनाएँ व कड़ी मेहनत जरूरी है"



पायल कपूर

आंतरिक सज्जा कड़ी मेहनत, सृजनात्मकता और ग्राहक की जरूरतों की समझ की माँग करती है. आप जिनके लिए काम कर रहे हैं, वह परियोजना उनके व्यक्तित्व, विचारों एवं ख्वाबों का दर्पण होना चाहिए. पायल कपूर एक ऐसा ही व्यक्तित्व है, जिसकी आंतरिक सज्जा की समझ बेजोड़ है.

किलों और महलों से गुजरता हुआ राजस्थान के ऐश्वर्य, सौंदर्य, शाही ठाठ का नजारा दिखाता पहियों पर घूमता महल यानी 'पैलेस ऑन व्हील्स' हम भारतीयों के लिए भी एक नाज है. इस शाही रेलगाड़ी के हर सैलून की सज्जा शैली विविधता लिए हुए है. इसके अलावा डाइनिंग हॉल, बार, लाइब्रेरी, किचन आदि की आंतरिक सज्जा भी बेजोड़ है, जिसका श्रेय 31 वर्षीया इंटीरियर डेकोरेटर पायल कपूर को जाता है.

पायल के काम को देखकर जो छवि बनी, उससे काफी भिन्न है उसका व्यक्तित्व. कम उम्र और औसत कद-काठी की एक आम लड़की जैसी. वह जब 28 वर्ष की थीं, तभी उन्होंने 'पैलेस ऑन व्हील्स' का प्रोजेक्ट किया था. आज उनके पास पचासों महत्त्वपूर्ण परियोजनाएँ हैं. बेहद व्यस्त और काम के प्रति हद तक जुटी हुई लगीं वह. सालाना तकरीबन तीन करोड़ का कारोबार है उनका और



'पैलेस ऑन व्हील्स' का आरामदायक व सुरुचिपूर्ण सैलून.



जी.डी. गोयंका स्कूल के नन्हे शिक्षार्थियों के लिए उनकी पसंद की व्यवस्था.



इंटीरियर डेकोरेटर बनने के लिए आवश्यक शर्तें

यह तय है कि आंतरिक सज्जा कड़ी मेहनत, सृजनात्मकता और ग्राहक की जरूरतों की समझ की माँग करती है. आप जिनके लिए काम कर रहे हैं, वह परियोजना उनके व्यक्तित्व, विचारों एवं ख्वाबों का दर्पण होना चाहिए. घर के मामले में ये बातें खास मायने रखती हैं. अच्छा होगा कि निर्माण स्थल पर निर्माण के दौरान बिजली के कार्यों, प्लमबिंग, फ्लोरिंग आदि के बारे में तय करने के बजाय नक्शे में ही इसके बारे में विचार कर लें. निर्माण कार्य समाप्त होने पर खिड़की-दरवाजों, टॉयलेट, रसोई और एयरकंडीशनिंग आदि के कार्य कर डिजाइनिंग को पूर्णता दी जाती है. इस संदर्भ में निम्नलिखित टिप्स फायदेमंद साबित होंगे :

- निर्माण कार्यों में प्रयुक्त होनेवाले देशी उत्पादों के साथ-साथ विदेशी उत्पादों/उपकरणों की भी पूरी जानकारी रखें.
- कारीगर आपके पेशे की रीढ़ हैं. उनसे बहुत अच्छा तालमेल रखें. बढ़ईगिरी, पॉलिशिंग, मिस्त्रीगिरी आदि कार्यों की जानकारी रखें. इससे आपको बुनियादी स्तर पर समस्याएँ सुलझाने में मदद मिलेगी.
- परियोजनाओं को चरणबद्ध तरीके से पूरा करें. इससे डिजाइन को विकसित करने में मदद मिलेगी.

टल उम्मेद भवन पैलेस वेलकमग्रुप जोधपुर, ॉट प्लेस स्थित चाइनीज रेस्टोरेंट, जी.डी. ांका पब्लिक स्कूल (वसंत कुंज), एम.एस. ज, इंपीरियल होटल, नई दिल्ली (60 कमरे), .ए.ए. कॉम्युनिकेशन एडवरटाइजिंग, नायंस इंडस्ट्रीज, नई दिल्ली जैसे कुछ मी-गिरामी संस्थानों के आंतरिक सज्जा की म्मेदारी पायल ने ही संभाली है. इनके अलावा छ महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के घरों और फार्म उसों को भी अपने अनुभवों से सँवारा है.

पायल बताती हैं कि परियोजना कि जिम्मेदारी वक्त निश्चित अवधि और नियत रकम दि महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं. फिर उसे पूरा रने के लिए लगातार कड़ी मेहनत करनी ड़ती है. परियोजना की जरूरतें, बनवानेवालों रुचि पर खास ध्यान देना होता है, जैसे लेस ऑन व्हील्स' के लिए काफी शोध करना ड़ा. इसमें 'रॉयल पैलेसेज ऑफ इंडिया, लाइव्स फ द इंडियन प्रिंस' आदि किताबें सहायक ीं. इस चलते-फिरते पाँच सितारा होटल को विविधता में पेश करने में अंततः उन्हें सफलता मिली. डाइनिंग रूम से सटे बार को ऐसे सजाया गया है जिससे इसे कांफ्रेंस रूम, लाऊंज अथवा डांसिंग हॉल के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सके. इस ट्रैक क्वीन में प्रकाश व्यवस्था भी रुचिकर है. चाँदनी जैसी लाइट, इमरजेंसी लाइट, रिडिंग लाइट आदि संपूर्ण व्यवस्था है. झरोखा, जाली छतरियों का भी अनुकूल प्रयोग है.

पायल एक तरह से 'सेल्फ मेड' व्यक्तित्व है. उन्होंने कैरेमल कॉन्वेंट, दिल्ली से बारहवीं स्टैंडर्ड के बाद लाजपतनगर स्थित 'न्यू दिल्ली पोलेटेक्नीक' से इंटीरियर डेकोरेशन का कोर्स किया. पाठ्यक्रम के दौरान ही उन्हें 'मानसारा' का प्रस्ताव मिला. यहीं पर पायल ने अपने पाठ्यक्रम का व्यावहारिक ज्ञान पाया. फिर 'ड्रीमसिटी बिल्डर्स' में नौकरी की. यहाँ उन्होंने एक डिजाइनर की हैसियत से जनसंपर्क, प्रबंधन के कार्यों के अलावा कुशल कारीगरों, बढ़ई, पॉलिश करनेवालों, ऑटोमैटिक मशीन संचालकों से भी काफी कुछ सीखा. फिर अपनी प्रतिभा के स्वतंत्र विकास के लिए अपनी कंपनी 'विजन' की शुरुआत की. आरंभ में उन्हें इंपिरियल होटल के 60 कमरों की सज्जा की जिम्मेदारी मिली, पर धीरे-धीरे कारोबार बढ़ता गया. पहले साल में तकरीबन 90 लाख का कारोबार हुआ. पायल मानती है कि मैं भाग्यशाली रही. नए लोगों को शायद इतना मौका नहीं मिल पाता है. अपनी सफलता के लिए अपने सहयोगियों के भरपूर योगदान को वे स्वीकारती हैं.

पायल होटल प्रोजेक्ट को ज्यादा पसंद करती हैं. उनके मुताबिक यह जल्दी होता है और इसे विभिन्न चरणों में किया जाता है. घरों की परियोजनाएँ अपेक्षाकृत धीमी और व्यक्तिगत होती हैं. हमें ख्याल रखना पड़ता है कि रहनेवालों को पूरी संतुष्टि मिले और वे अपने घर पर गर्व करें. इसके लिए उनकी जीवनशैली पर ध्यान देती हूँ. यदि पंजाबी हैं तो वे 'बार' को प्राथमिकता देंगे. मैं किसी खास ट्रेंड की हिमायती नहीं हूँ. एक खास ट्रेंड में ऊब को आशंका बनी रहती है. कुछ ऐसी कल्पना, ऐसा

सृजन हो जिसमें न खत्म होनेवाली अपील हो.

पायल के अनुसार आंतरिक सज्जा में खूबसूरत कल्पनाएँ, फिर उसे साकार करने के लिए तेज दिमाग और कड़ी मेहनत तीनों का अनूठा संगम होना चाहिए. मेरे हिसाब से पायल के पास ये तीनों हैं. इनका अनूठा संगम उनकी परियोजनाओं में साफ परिलक्षित होता है.

पायल ने जी टीवी के 'आशियाना' कार्यक्रम के 34 धारावाहिकों का संचालन किया है. इसके अलावा सोनी की 'पहचान', एल की 'मानसी', जी टीवी की 'खूबसूरत', 'जायके का सफर' आदि धारावाहिकों में पायल के कार्यक्रम तैयार किए गए हैं.



पेशेवर रुख अपनाएँ

यों तो आज बाजार में प्रति परियोजना के लिए कंसलटेंट के तौर पर कुल परियोजना के दस से 14 प्रतिशत शुल्क लेने का चलन है. आप भी अपनी फीस तय कर लें. सबसे अच्छा तरीका है कि कोई भी परियोजना हाथ में लेने से पहले लिखित समझौता कर लें. यदि आप टर्नकी आधार पर कार्य करते हैं तो लाभांश परियोजना खर्च के 25 से 30 प्रतिशत तक हो जाता है, लेकिन इसके लिए आपस में घोर पेशेवराना रुख और ईमानदारी आवश्यक है.

इंटीरियर डेकोरेशन का प्रशिक्षण देनेवाले संस्थान

- न्यू दिल्ली पॉलिटेक्नीक फॉर वीमेन, नई दिल्ली.
- महारानीबाग पॉलिटेक्नीक फॉर वीमेन, नई दिल्ली.
- एपीजे स्कूल ऑफ वोकेशनल स्टडीज, नई दिल्ली.
- जेनसन एंड निकोलसन इंसि वोकेशनल स्टडीज, नई दिल्ली.
- जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स, मुं

इनके अलावा नेशनल इनफॉरमेश मद्रास से पूरे भारत में स्थित ऐसे सूची मिल सकती है. नेशनल नेटवर्क का टेलीफोन नं. 6262600, तथा फैक्स 6443879 है.



गृहसज्जा और वास्तुशास्त्र

• उमेश पांडे

तु विज्ञान दरअसल एक प्राचीन ान है. इसके अंतर्गत कुछ ामों व बातों का ध्यान रखकर ने घर के आंतरिक हिस्सों को ियोजित रूप दिया जा सकता ऐसी धारणा है कि वास्तुपरक ार्ण से सुख, शांति व समृद्धि र होती है.

यह बात सिद्ध है कि वास्तु एक प्राचीन विज्ञान है, जिसके अंतर्गत किसी भी भूमि पर कुछ सहज सिद्धांतों का आधार लेकर भवन निर्माण किया जाता है अथवा भवन की व्यवस्था की जाती है और इस वास्तुपरक निर्माण या व्यवस्था से वहाँ के रहवासियों के स्वास्थ्य, सुख-शांति एवं समृद्धि में पर्याप्त वृद्धि होती है. कोई भी वास्तुपरक निर्माण उपरोक्त बातों के साथ-साथ अन्य निर्माणों की तुलना में प्राकृतिक आघातों को सहने में भी बेहतर साबित होता है. यही कारण है कि वास्तु सिद्धांतों के आधार पर निर्मित अनेक प्राचीन इमारतें और मंदिर आज भी पर्याप्त उत्तम स्थिति में मौजूद हैं. दरअसल, 'वास्तु विज्ञान' में पृथ्वी की चुंबकीय शक्ति, विभिन्न ग्रहादि के विकिरण, सौर रश्मियाँ, वायु दिशाएँ इत्यादि को इस प्रकार संतुलित किया गया है कि वास्तुपरक निर्माण किसी को भी उपरोक्त फल अति सहजता से प्रदान करता है.

वास्तु की महत्ता को आज के जनमानस ने पहचाना है और इसीलिए इस लुप्तप्राय विज्ञान के प्रति जनसामान्य में रुचि जाग्रत हुई है. आज लोग भवन के निर्माण के समय वास्तु सिद्धांतों का आधार लेने लगे हैं. यही नहीं, घरों में भी वास्तु नियमों के अनुसार, इस विज्ञान पर आस्था







उन्माद से पीड़ित दंपती के शयनकक्ष में शीतल वर्णों का प्रयोग बेहतर रहता है.

घर के उत्तर-पश्चि
टीवी रखना श्रेष्ठ

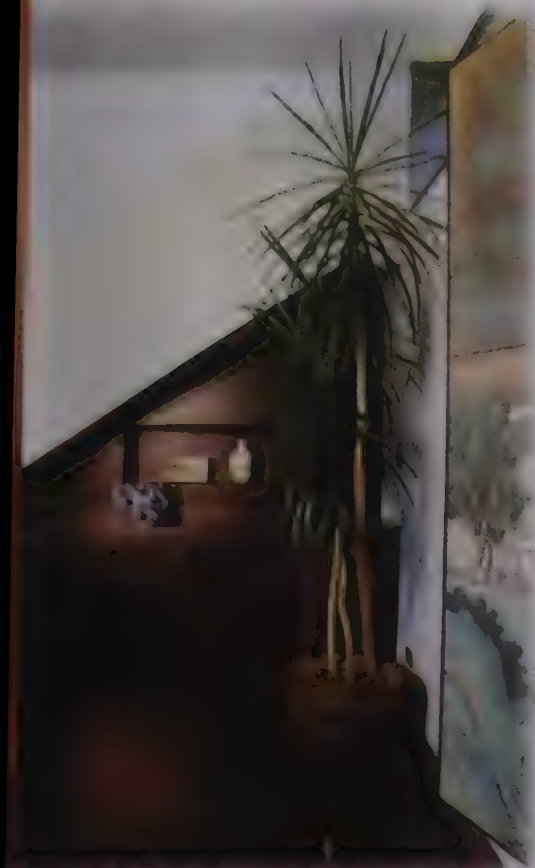
← उंमाद से पीड़ित
शयनकक्ष में शीत
प्रयोग बेहतर रहता है

रखनेवाले आवश्यक परिवर्तन करते देखे जा सकते हैं. प्रस्तुत लेख में ... अति सरल वास्तु सिद्धांतों को जनलाभार्थ प्रेषित किया जा रहा है. अति सामान्य-सी दिखाई देनेवाली ... बातों में कितना प्रभाव है, यह तो प्रयोगकर्ता ... सकता है :

● किसी भी घर में, चाहे वह छोटा हो ... बड़ा, एक देवस्थान का होना नितांत अनिवार्य है और यह देव स्थान सदैव उत्तर-पूर्वी कोण पर होना चाहिए. इस कोण को ईशान्य कोण भी कहते हैं. यह क्षेत्र जल के लिए भी है, अतः इस क्षेत्र में जलाशय/जल संचय इत्यादि इकाइयाँ बनाई जा सकती हैं. ड्राइंग रूम में इसी कोण पर 'फ़िश-एक्वेरियम' रखे जाने चाहिए.

● घर का दक्षि
आग्नेय कोण कहलाता
में रसोईघर का निर्माण
एक या दो कमरे की ही
भी रसोई संबंधी कार्य इ
होना चाहिए. किसी क
क्षेत्र में रसोई न रखी ज
उत्तर-पश्चिम कोण पर
चाहिए. इसी प्रकार ईशा
अग्नि संबंधी क्षेत्र नहीं होना चाहि
आग्नेय अथवा उत्तर-पश्चिम कोणों
के स्विच बोर्ड्स, टीवी आदि का
श्रेष्ठ है.

● घर का उत्तर-पश्चिम क्षेत्र
कहलाता है. इसका खुला होना श्रे
खिड़कियों एवं बालकनियों के लि



ंर प्लांट्स' में पाम जाति के पौधों को घर में
ना शुभ माना जाता है.

ंग रूम अथवा अन्य कमरों में इसी क्षेत्र पर
, कूलर आदि लगाना श्रेष्ठ है.

● घर का दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्र नैत्य कोण
लाता है. यह खुला हुआ न रहे अथवा इस
फ बहुत ही जरूरी हो तो कम खुला रखें. इस
में जितना अधिक वजन होगा, उतना ही शुभ
पुनः ईशान्य कोण पर वजन का न होना शुभ
बहुत जरूरी होने पर मूल ईशान्य कोण को
ड़ते हुए बहुत ही हलके सामान/पवित्र पदार्थ
इस क्षेत्र में रखना चाहिए.

● घर का केंद्र और इसी प्रकार प्रत्येक कमरे
केंद्र सदैव खाली रहना चाहिए. यह
ह्म-स्थान' कहलाता है. पुनः संपूर्ण इकाई का
'ब्रह्म-स्थान' दबा हुआ न हो तथा वह सदैव
च्छ रहे.

● मुख्य कक्ष (गृह के मुखिया का शयन
) नैतृत्य क्षेत्र में होना चाहिए. चाहे फिर वह
ाई एक कमरे की ही क्यों न हो. बच्चों का
नकक्ष पूर्व क्षेत्र में और उनका अध्ययन कक्ष
न्य क्षेत्र में होना शुभ है. कुँआरी लड़कियों
शयन वायव्य क्षेत्र में होना शुभ है.

● ऐसे शयनकक्ष जिनमें दंपती सोते हैं, वहाँ
के जोड़े के अथवा सारस के जोड़े के चित्र
ना अति शुभ माना गया है. ये चित्र इस प्रकार
कि शयन करते समय ये शयनकर्ताओं के
क्ष रहें. इससे उनमें विशेष प्रेम बना रहता

● गृह सज्जा में उदासीन चेहरे वाले चित्रों को, वीभत्स दृश्यों वाले पोस्टर्स या चित्रों को नहीं लगाना चाहिए. इसके विपरीत सुंदर प्राकृतिक परिवेश वाले चित्रों को अथवा मन को प्रफुल्लित करनेवाले चित्रों को लगाना वास्तुशास्त्र में शुभ कारक कहा गया है.

● जहाँ देव क्षेत्र का निर्माण किया जाए, वहाँ अस्त्र-शस्त्रों को रखना अथवा 'एक्झिबिट' करना अशुभ है.

● दंपती शयनकक्षों में नीले अथवा हरे वर्णों का प्रयोग शीतलता देनेवाला तथा नारंगी, पीले अथवा लाल वर्णों का प्रयोग विशेष उत्साहवर्द्धक होता है. उन्माद से पीड़ितों को शीतल वर्णों का ही प्रयोग बेहतर है. नीले, हरे, सफेद वर्ण शीतल होते हैं.

● शयनकक्ष की व्यवस्था इस प्रकार की हो कि शयनकर्ता के सिरहाने पूर्व अथवा दक्षिण दिशा की तरफ ही हों. इन दिशाओं में सिरहाना करने से पृथ्वी के चुंबकत्व का अनुकूल प्रभाव शरीर पर पड़ता है.

● घर के मुख्य द्वार पर शुभचिह्नों का होना शुभत्व देता है.

● ऐसा निर्माण जो कि आयताकार अथवा वर्गाकार भूखंड पर होता है, वह शुभ होता है.

● गृह साज-सज्जा में कई लोग पौधों का रोपण करते हैं, उद्यान लगाते हैं अथवा 'इंडोर-प्लांट्स' रखते हैं. वास्तु की दृष्टि से 'रबर' के पौधे का अथवा किसी भी प्रकार के ऐसे पौधों को जो कि मरुस्थलीय और बंजर इलाकों में होते हों, जैसे 'कैक्टस', 'शुल' वाले पौधे का तथा ऐसे पौधों का जिनमें दूध होता हो, घर की सीमा में होना अशुभत्व का कारक है. अशोक, पुन्नाग, मोलडी, चंपा, चमेली, केले, नारियल आदि के वृक्ष गृहसीमा में शुभ होते हैं.

● घर की सजावट में हाथी, घोड़ों तथा कच्छप के रूप में सजावटी खिलौनों का प्रयोग शुभ है.

● घर के उत्तर तथा पूर्व की ओर का भाग अधिक खुला होना तथा पश्चिम और दक्षिण का भाग कम खुला होना शुभ है.

● घर में जूतों का स्थान प्रवेश द्वार के दाहिने तरफ (प्रवेश करनेवाले के) नहीं होना चाहिए.

● घर में टूटे दर्पण, टूटी टाँग की कुर्सी, एक टाँग का पाटा तथा किसी जाम मशीन का रखा होना वास्तु दृष्टि से अशुभ कारक है.

इस प्रकार इन छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखकर एक छोटा-सा मकान भी 'बंगला बने न्यारा' की तर्ज पर ही श्री और कीर्ति को प्रदान करनेवाला साबित हो सकता है. ■



सूरत और आवाज से मिली शोहरत

कनुप्रिय

• दमयंती

दूरदर्शन के मेट्रो चैनल पर शनिवार को दिखाए जानेवाले चंदर चोपड़ा के धारावाहिक 'फिल्मी दुनिया की कहानी फिल्मी दुनिया की जुबानी' में निर्देशक की पत्नी की केंद्रीय भूमिका को जी रही है दिल्ली की 27 वर्षीया कनुप्रिया. अपनी हर भूमिका को काफी दक्षता से जीवंत बनानेवाली इस ग्लैमरस कलाकार का कहना है, "दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.एससी. की पढ़ाई [illegible] करने के बाद मैं कभी अपने दिमाग में यह बात नहीं [illegible] मीडिया में मैं अपना कैरियर बना सकती हूँ. [illegible] सहयोग और पारिवारिक प्रोत्साहन ने आज मुझे यहाँ [illegible] है."

कनु [illegible] परिवार से संबंध रखती है. प्रारंभ से ही यानी [illegible] के समय से ही नाटकों में भूमिकाएँ करने के लिए [illegible] नाटकों से अपनी अभिनय प्रतिभा को निखारने में उसे पर्याप्त सहयोग मिला है

मात्र ढाई साल से मीडिया से जुड़ी कनू को पहल दिया विक्रम सिंह ने, अपने धारावाहिक 'कहीं एक ग्रामीण पृष्ठभूमि पर बने इस धारावाहिक में कनु की विदेश से वापस आई एक डॉक्टर की थी.

अपने पहले ही धारावाहिक में राजेंद्र गुप्ता औ गुप्ता जैसी प्रख्यात टीवी कलाकारों के साथ काम कनु ने अपने अंदर की बेहतर अभिनय प्रमिभा व दर्शकों के सामने रखा. उसके बाद 'परदा उठाओ गिराओ', 'हीमात नागराज', 'मेरी कहानी', 'बातों ब 'कमाल है कमाल', 'सुचित्रा', 'निर्णय', 'पति रखो', 'हाल क्या है जनाब का', 'टूटने के बाद विभिन्न विषयों पर बने कई धारावाहिकों में

– शेष पृष्ठ



इस स्तंभ के अंतर्गत किशोर-किशोरियाँ अपने मन की बात बिना किसी हिचक के कह सकते हैं/पूछ सकते हैं. पता है: किशोर-किशोरी कोना, माधुरी, ए-28, सेक्टर-9, नोएडा-201301.

17 वर्ष का हूँ. मैं तीन साल से एक लड़की से प्यार करता था, पर कभी उससे कह पाया. वह भी मुझे शायद प्यार करती थी, भी इजहार नहीं किया. मैंने सोचा, शायद गलतफहमी है और मैंने अपना ध्यान उसकी से हटा लिया. इधर एक साल से एक दूसरी ी मेरी जिंदगी में आई है और हम दोनों सरे से बेहद प्यार करने लगे हैं. कुछ दिनों , पहलेवाली लड़की ने भी मुझसे प्यार का र किया और मेरे मन में भी उसके लिए । प्यार आ गया. इस लड़की के साथ शादी के लिए मेरे घरवाले भी राजी हैं, पर दूसरी के साथ नहीं. समस्या यह है कि मुझे दोनों र है, दोनों में कोई भी मुझे छोड़ने के लिए नहीं हैं. दोनों ही आत्महत्या करने की ो देती हैं. मेरी समस्या का समाधान करें.

–विजेंद्र, मंगोलपुरी

पने लिखा नहीं, आप क्या करते हैं. मेरे र में आपकी उम्र पढ़ने और कैरियर की है. आपके माँ-बाप को आपकी करने की इतनी जल्दी क्यों है? अभी को इन सारी बातों से अपना ध्यान हटाकर अपनी पढ़ाई में लगाना चाहिए. पढ़-लिखकर कुछ बन जाएँ, तभी शादी करने की सोचें. तब तक आप परिपक्व भी हो जाएँगे और आपके प्यार की गंभीरता का पता भी लग जाएगा.

–☆–

मैं बी.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा हूँ. मेरे पड़ोस का एक लड़का हमेशा मेरे पीछे पड़ा रहता है. उसने कई बार मुझसे प्रेम निवेदन भी किया, पर मैंने इनकार कर दिया. मुझे उससे प्रेम नहीं, पर सहानुभूति है. मैं क्या करूँ?

– सुधा गर्ग, मध्य प्रदेश

आपकी सहानुभूति ही इतना आगे बढ़कर प्रेम निवेदन करने की हिम्मत दे रही है. आप उसे बिल्कुल लिफ्ट न दें. सख्त बनें और जरूरत पड़े तो डाँट भी लगाएँ. उसके और अपने माँ-बाप से सारी बातें कह देने की बात कहें, वह स्वयं ही पीछे हट जाएगा.

–☆–

मैं कक्षा 11 की छात्रा हूँ. मेरे परिवार वाले तथा मैं स्वयं चाहती हूँ कि मैं इंजीनियर बनूँ, पर मैं इतनी मेहनत नहीं कर पाती. एक निराशा की भावना घेरे रहती है. डर लगता है कि प्रतियोगी परीक्षाओं में नहीं पास हुई तो क्या होगा?

– मृदुला सिंह, हरियाणा

आपकी निराशावादी प्रवृत्ति और आत्मविश्वास की कमी आपकी सफलता के लिए बहुत बड़ी रुकावटें हैं. किसी भी बड़े लक्ष्य को पाने के लिए आशावादी व आत्मविश्वासी होना बहुत जरूरी है. खूब मेहनत करें. अपने लक्ष्य पर दृढ़ रहें, फिर हम तो सिर्फ कर्म कर सकते हैं, फल पर हमारा कोई बस नहीं. गीता में भी कहा गया है कि, फल की चिंता न कर सिर्फ कर्म करो. सफलता जरूर मिलेगी.

–☆–

मैं 18 वर्षीय लड़का हूँ. मैं बहुत ही शर्मीले स्वभाव का हूँ. खासकर लड़कियों से बात करने में मुझे बहुत ही भय व झिझक होती है. मैं उनसे ठीक से बात नहीं कर पाता. मैं बहुत घबरा जाता हूँ. मुझे लगता है कि कभी उनसे ठीक से बात नहीं कर पाऊँगा.

– दीपक शर्मा, जयपुर

सबसे पहले तो आप अपने मन से डर और झिझक की भावना को बिलकुल निकाल दें. अपने शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक गुणों के बारे में सोचें, अपने आत्मविश्वास को मजबूत करें, अपने मन-मस्तिष्क को खुला रखें. लड़कियों से बात करते समय मुसकान के साथ उनकी किसी विशेषता की तारीफ करें. आईने के सामने खड़े होकर अभ्यास करें. फिल्में तथा टीवी ध्यान से देखें और सीखें. चिंता की कोई बात नहीं है.



फूलों के औषधीय गुण

● गुरमी

फूल महज खूबसूरती और भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए ही हों, ऐसी बात नहीं है. कई फूल अपनी मोहक खुशबू और खूबसूरती के साथ-साथ औषधीय गुण भी रखते हैं. सचमुच फूल इस धरती पर प्रकृति की सबसे नायाब भेंट हैं और यह आदमी पर निर्भर करता है कि वह इस नायाब भेंट का कितना सदुपयोग करता है.

फूल इस धरती पर प्रकृति की सबसे खूबसूरत भेंट हैं. अपनी खूबसूरती और मोहक खुशबू में यह समुचे परिवेश को मस्ती से सराबोर कर देते हैं. यह खुशी, उल्लास व श्रद्धा का प्रतीक होने के साथ-साथ हमारी भावनाओं का प्रतिबिंब भी हैं. विश्व में शायद ही ऐसा कोई देश होगा, जहाँ फूल न पाए जाते हों और शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति हो, जिसे फूल पसंद न हों. एक दार्शनिक ने तो यहाँ तक कहा है कि फूल हमारी रगों में नए उत्साह का संचार करते हैं. हमारी धड़कनों में संगीत भी देते हैं और चेहरे पर ताजगी ला देते हैं.

फूल महज खूबसूरती और भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए ही हों, ऐ... है. कई फूल अपनी मोहक खुशबू अ... के साथ-साथ औषधीय गुण भी र... सचमुच फूल इस धरती पर प्रकृति की ... नायाब भेंट हैं और यह आदमी पर निर्भर करता है कि वह इस नायाब भेंट का कितना सदुपयोग करता है.

केसर के पौधे.



गुलाब : फूलों का राजा कहा ज
गुलाब रूप, गंध में बेमिसाल तो है ही,
गुणों से भी भरपूर है. इसका उपयोग
ठंडाई, शर्बत और गुलाब जल के रूप
जाता है. यही नहीं, इससे अति उत्तम वि
इत्र भी हासिल होता है. गुलकंद जहाँ व
रामबाण औषधि है, वहीं इससे बन
मनमस्तिष्क को शीतलता व नई ताज
करता है. इसका जैम भी बहुत स्वादिष्ट
जो विटामिन-सी से भरपूर होता है. गुल
आँखों में डालने से नेत्र रोगों की शिकाय
होती है. गुलाबों के संबंध में कई एक
भी प्रचलित हैं. एक यूनानी कथा के
सौंदर्य की देवी वीनस जब अपने प्रेमी
से मिलने जा रही थी तो रास्ते में उसके
काँटा चुभ गया और खून बहने लगा. ज
खून की बूँदें गिरीं, वहाँ-वहाँ गुलाब
खिल उठे. प्रागैतिहासिक काल में भी गु

त्व था.

सर : कोई धार्मिक प्रसंग हो या
द की महिमा का गुणगान, केसर
उपस्थिति हर जगह दर्ज है.
-मुनियों और आयुर्वेदाचार्यों ने तो
खोलकर केसर की प्रशंसा की है
से एक तिलिस्मी फूल की संज्ञा दी
सर दमा, त्रिदोष जनित रोगों और
रोगों की चिकित्सा में तो सहायक
, रक्त के बहाव को रोकने में भी
है. आयुर्वेद में कहा गया है कि
से पाचन शक्ति बढ़ती है और खून
है. हैजा की शिकायत होने पर
केसर को नीम की पत्तियों के साथ
जाए तो चमत्कारिक प्रभाव होता
ानी चिकित्सा पद्धति में मधुमेह के
में केसर का सेवन शुद्ध घी के साथ
कर कराया जाता है. ऐसी बात भी नहीं कि
के औषधीय गुण ही हैं. शृंगारिक प्रसाधनों
ाथ-साथ खाद्य पदार्थों में भी केसर का
होता है. और अब तो तंबाकू व पान
ा उद्योग भी केसर के इस्तेमाल का दावा
लगा है.

से केसर के ढेरों गुण हैं, वैसे ही ढेरों नाम
इसके. अरबी में इसे 'जाफरान', स्पैनिश
जफरान', पारसी में 'लरकीमाशा', रूस में
ान' और संस्कृत में इसे 'अग्निशिखा' भी
जाता है और 'कश्मीरज' भी. केसर की
डेढ़ हजार मीटर से ढाई हजार मीटर तक
और प्राय: शुष्क शीतोष्ण क्षेत्र में होती है.
नी दोमट मिट्टी इसके उत्पादन में सहायक
र्दियों में वर्षा व हलका हिमपात तो केसर
धे झेल लेते हैं, लेकिन जब केसर पर बहार
है तो खुश्क मौसम रहना लाजिमी है.
के फूल बैंगनी रंग के होते हैं. प्रत्येक फूल
ीतर तीन पीले नर भाग तथा तीन ही लाल
भाग होते हैं. मादा भाग को ही केसर
जाता है.

हुआ : महुआ को 'मधुका इंदिका'
कहा जाता है. इसके पेड़ ज्यादातर
व उत्तर प्रदेश में देखने को मिलते
सके फूल शराब बनाने के काम भी
हैं और औषधीय गुण भी समेटे हैं.
फूल प्रोटीन व कार्बोहाइड्रेट से भी
होते हैं.

प्स : हाप्स बेलों में लगती है और इसे
प्राकृतिक हरे रंग में तोड़ लिया जाता
र सुखाकर इसे इस्तेमाल में लाया
है. बीयर बनाने में हाप्स का इस्तेमाल



पहाड़ी पर खिले बुरांस के फूल.

प्रमुख रूप से होता है और कई बहुमूल्य औषधियों में भी यह काम आता है. बिटर हाप्स और ऐरोमेटिक हाप्स इसकी दो प्रमुख किस्में हैं. इनमें बिटर हाप्स का इस्तेमाल जहाँ बीयर में कड़वाहट लाने के लिए किया जाता है, वहीं इसमें ऐरोमेटिक फ्लेवर के लिए ऐरोमेटिक हाप्स प्रयुक्त होती है. इस समय हाप्स की खेती विश्व के तीन दर्जन देशों में की जा रही है. भारत के हाप्स उत्पादन क्षेत्रों में लाहौल घाटी (हि.प्र.) के अलावा कश्मीर व लद्दाख प्रमुख हैं.

बनफ्शे के फूल : गला जकड़ गया हो या नाक बहते-बहते जम गया हो, इसके अलावा हलका ज्वर भी हो तो वैद्य दूध में काढ़े की सामग्री के साथ बनफ्शे के फूल भी उबालकर पीने की सलाह देते हैं. बनफ्शा हिमाचल, कश्मीर, नेपाल और हिमालय की ऊँची पहाड़ियों में पाया जाता है. अंग्रेजी में इसे 'स्वीट वायोलेट', लैटिन में 'विओला सर्पेस', अरबी में 'बनफ्सज' और गुजराती में 'बनफ्शा' कहा जाता है.



सूरजमुखी के फूल, जिसके बीजों से निकला तेल दिल के रोगियों के लिए उपयोगी माना जाता है.

चिलगोजा : समुद्र तल से करीब दो हजार मीटर की ऊँचाई पर पाया जानेवाला चिलगोजा दुनिया के केवल आधा दर्जन देशों में ही मिलता है, जिनमें भारत के अलावा अफगानिस्तान व बलूचिस्तान प्रमुख हैं. हिमाचल की किन्नौर घाटी में इसके काफी पेड़ हैं. चिलगोजा एक वृक्ष का नाम भी है और फल का भी. इस पेड़ पर 'लक्कड़फूल' लगता है, जो शुरू में तो हरा रंग लिए होता है, लेकिन सितंबर-अक्तूबर तक यही फूल कड़ा होकर फल में परिवर्तित हो जाता है. एक ऐसा फल, जिसे तोड़ने पर गिरी निकलती है, जो भूख बढ़ाने के साथ-साथ पाचन क्रिया को भी दुरुस्त करती है. बलगम में भी इसका सेवन लाभप्रद है.

बुरांस : पहाड़ों में बुरांस के पेड़ जहाँ अपने सुंदर फूलों से पर्वतीय सौंदर्य में वृद्धि करते हैं, वहीं इसका उपयोग कई बहुमूल्य दवाइयाँ बनाने में भी होता है. इसके फूलों को लोग खाते भी हैं और इसके रस का शर्बत भी बनाया जाता है. हलके मीठे स्वाद वाले इस रस की तासरी ठंडी होती है. इन फूलों का उपयोग कई बहुमूल्य दवाइयाँ बनाने में भी होता है. बुरांस के पेड़ भारत में गढ़वाल, कुमाऊँ, हिमाचल प्रदेश व कश्मीर में पाए जाते हैं. फरवरी से जुलाई माह तक इस पेड़ पर फूल खिलते हैं.

सूरजमुखी : आकर्षक पीले रंग की पंखुड़ियों वाले इस फूल के बीच काले रंग के बीज सटे रहते हैं और इनसे बना तेल दिल की बीमारियों में भी काम आता है तथा खाद्य पदार्थ के रूप में भी इसका इस्तेमाल अब आम होने लगा है. यह तेल प्रोटीन युक्त होने के साथ-साथ विटामिन ए और सी से भी भरपूर होता है. हमारे देश में इन फूलों की खेती बड़े पैमाने पर होती है. सूर्य की सी आभा रखनेवाले इन फूलों को 'सनफ्लावर' भी कहा जाता है.

इन फूलों के अलावा भी ढेरों ऐसे फूल हैं, जो औषधीय गुण रखते हैं. इनमें से सहजन (मोरिंगा ओलीफेरा), गुड़हल, कमल, वाटर लिली, सन, लौकी और लसोढ़ा के फूल ऐसे नाम हैं, जो आसानी से उपलब्ध हो सकते हैं. इन फूलों का इस्तेमाल आयुर्वेदिक औषधियों में बड़े पैमाने पर होता है. अतः यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि फूल अपने रूप, लावण्य और मोहक अदाओं से तो हमें [illegible] भी रखते हैं. ■



बेटियाँ चलीं ससुराल

• शैल

यूँ तो विवाह जिंदगी का एक सहज पड़ाव है, लेकिन महिला आश्रम में जो विवाह समारोह आयोजित हुआ, उसे विशिष्ट ही कहना पड़ेगा, जहाँ एक ही शुभ मुहूर्त में 11 शादियाँ संपन्न हुईं

तिहाड़ जेल के पड़ोस में समाज कल्याण विभाग का एक महिला आश्रम है निर्मल छाया. यहाँ मूलतः पीड़ित महिलाओं को आश्रय दिया जाता है. बलात्कार की शिकार बच्चियों से लेकर परिवार से पीड़ित और परित्यक्ता प्रौढ़ाओं के लिए यह घर जैसा है. मामले पर न्यायालय का अंतिम निर्णय होने तक उन्हें यहाँ के पहरे में ही रहना पड़ता है. आमतौर पर इन महिलाओं का बाहरी दुनिया के लोगों से संपर्क नहीं रहता, लेकिन उस दिन कुछ युवक जब इस महिला गृह के मुख्यद्वार पर पधारे तो सजी-धजी युवतियों ने फूलमालाओं और आरती से उनका स्वागत किया. ये युवक महिला आश्रम की कुछ संवासिनियों को ब्याहने आए थे.

यूँ तो विवाह जिंदगी का एक सहज पड़ाव है, लेकिन इस आश्रम में जो विवाह समारोह आयोजित हुआ, उसे विशिष्ट ही कहना पड़ेगा. सिर्फ इसलिए नहीं कि दिल्ली प्रदेश के मुख्यमंत्री इस विवाह समारोह में शरीक हुए और दिल्ली के समाज कल्याण मंत्री और उपराज्यपाल ने भी कई कन्याओं का कन्यादान किया, बल्कि एक ही शुभ मुहूर्त में शादियाँ संपन्न हुईं.

इस विवाह समारोह को खास मानने सबका अलग नजरिया हो सकता है इसकी सबसे बड़ी खासियत यही थी



11 बेटियों के माँ-बाप बने गुप्ता दंपती

यह तो ठीक है कि बेसहारा लड़कियों की कमाऊ लड़कों से शादी कर देना उनके समाज की मुख्यधारा में पुनर्वास के प्रयासों का सबसे अच्छा रूप है, लेकिन यह एक ऐसा काम है, जिसके लिए महिला आश्रम वाले सरकार से नहीं, समाज से भी कुछ आशा करते हैं. उन्हें निराश नहीं होना पड़ता, क्योंकि जिस समाज में ज्यादातर लोग संपन्न होने के बावजूद स्वार्थ की अंधी दौड़ में शामिल हैं, उसी समाज में अशोक और वीना गुप्ता जैसे लोग भी हैं, जो सचमुच समाज के जरूरतमंद लोगों की मदद के रास्ते ढूँढते रहते हैं. ग्यारह लड़कियों की शादी पर करीब साढ़े पाँच लाख रुपए खर्च हुए. इतने पैसे की व्यस्था गुप्ता दंपती ने ही की थी.



अभय महिला आश्रम की प्रमुख मिथिलेश भटनागर का मानना है कि अच्छे कामों के लिए भी धन जुटाया जाए तो भी लोग उँगलियाँ उठाने लगते हैं. इसलिए वह हर साल आश्रम की लड़कियो की शादी के लिए आर्थिक सहायता देनेवालो से सीधे धन न लेकर उनसे जरूरी चीजे देने और खर्चे खुद वहन करने को कहती हैं.

जब गुप्ता दंपती ने इस वर्ष की शादियों का तमाम खर्च उठाने का प्रस्ताव रखा, तो उनसे भी रुपए न लेकर शादी के खर्चे खुद करने को कहा गया. गुप्ता दंपती को बेटियाँ नहीं हैं. सिर्फ पाँच साल का बेटा है, लेकिन आश्रम की लड़कियो की शादी की तैयारियाँ उन्होंने ऐसी कीं, जैसे उन्हीं की बेटियों की शादी हो. ग्यारह लड़कियो की गृहस्थी बसाने के लिए कई महीनों से बाजार के चक्कर काटते गुप्ता दंपती ने पलंग, अलमारी पंखा, सिलाई मशीन, रंजाई, गद्दे, गैस चूल्हे बर्तन, कपड़े, यहाँ तक की हर लड़की के लिए कुछ गहने भी खरीदे. फिर शादी की रस्में पूरी कराने के लिए पंडित से लेकर खान-पान तक की तमाम छोटी-बड़ी जरूरतों का इंतजाम उन्होंने किया.

शादी के दिन परंपरा के अनुसार कन्यादान के लिए अशोक गुप्ता और उनकी पत्नी निराहार रहे. कन्यादान की रस्म करने के बाद ही उन्होंने व्रत तोड़ा. ■

ाज की नजरों में गिरी और बेसहारा लड़कियों हाथ थामने उनके वर के रूप में आए युवकों उत्सव था, पर्व था.

जिन ग्यारह कन्याओं के इस शुभ मुहूर्त में हाथ ते हुए, उनके वरों की खोज संस्था के सामाजिक र्यकर्ता काफी दिनों से कर रहे थे. इस महिला श्रम की प्रमुख मिथिलेश भटनागर ने बताया कि



वर की खोज के लिए अखबारों में विज्ञापन दिए जाते हैं और अखबारों में वधुओं की खोज के लिए दिए गए विज्ञापनों की भी मदद ली जाती है. वर पक्ष की ओर से संपर्क किए जाने पर महिला आश्रम के जिम्मेदार कार्यकर्ता और अधिकारी लड़के के रोजी-रोजगार और चाल-चलन जैसी जरूरी बातों का पता लगाते हैं. तब लड़के-लड़की की मुलाकात कराई जाती है, और दोनों की रजामंदी होने पर शादी तय कर दी जाती है.

दिल्ली सरकार के समाज कल्याण विभाग के अभय महिला आश्रम में जिस्मफरोशी के धंधे से मुक्त कराई गई महिलाओं के अलावा बलात्कार आदि दूसरे अपराधों और दहेज उत्पीड़न जैसी त्रासदियों की शिकार महिलाओं को न्यायालय के आदेश पर शरण दी जाती है.

जिन ग्यारह लड़कियों का कन्यादान कर उन्हें अपने घर नई जिंदगी शुरू करने का मौका दिया गया, उनमें अरुणाचल प्रदेश की सरस्वती का बचपन सुखमय नहीं था. उसके माता-पिता एक दुर्घटना में मारे गए थे. लेकिन बरसों समाज कल्याण विभाग की शरण में रहने के बाद अब उसे एक ऐसी पहचान मिली है, जो कम से कम उस लड़की के लिए तो एक बहुत बड़ी सामाजिक उपलब्धि है, जिसकी दूर तक यादों में भी परिवार जैसी कोई चीज नहीं है. एक कंपनी में ड्राइवर के रूप में काम कर रहे सोमत चमार की वह पत्नी बनी.

बातचीत में जब मध्य प्रदेश के एक गाँव में रहनेवाले अपने सास-ससुर का जिक्र आता है तो उसकी बोली में स्वाभाविक रूप से गर्व की अनुभूति होने लगती है.

उसी मंडप में पश्चिम बंगाल की कुमारी शबाना, श्रीमती शबाना दास बनी. इस बंगाली कन्या का हाथ थामा जम्मू-कश्मीर के बिशन दास ने. बिशन दास से शादी होने से पहले उसका कोई परिवार नहीं था. अब एक कश्मीरी परिवार की बहू भले बन गई हो शबाना, महिला आश्रम उसके लिए मायके जैसा ही है. महिला आश्रम के कार्यकर्ता शादी के बाद भी लड़कियों के घर जाती रहती हैं और शादी के बाद भी ये लड़कियाँ जब-तब आश्रम आती रहती हैं. वैसे भी होली, दिवाली आदि विशेष अवसरों पर इन्हें विशेष तौर पर बुलाया जाता है.

विवाह समारोह में आमंत्रित उन आठ सौ लड़कियों [illegible] सपरिवार आई थीं, जिन्हें कभी [illegible] विदा किया गया था. ■

युवतियों के लिए वरदान है कराटे

वर्तमान समय में गिरते सामाजिक स्तर के कारण आज महिला वर्ग स्वयं को चारों ओर से असुरक्षित अनुभव कर रहा है. ऐसे में युवतियों के लिए मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण नितांत आवश्यक हो गया है. कराटे करनेवाली महिलाओं को घरेलू कार्यों में कोई दिक्कत नहीं होती, बल्कि उनकी कार्यक्षमता में वृद्धि ही होती है.

• पी.के



कराटे कक्षा में बच्चियों व किशोरियों की बढ़ती संख्या इस बात का प्रमाण है.

नारी शोषण, व्य
तथा उत्पीड़न
दुरह परिस्थि
हमारे सामाजिक व नैतिक पतन की परिच
हैं. वर्तमान समय में गिरते सामाजिक स्तर के कारण
महिला वर्ग स्वयं को चारों ओर से असुरक्षित अनुभव कर रहा है
में युवतियों के लिए मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण नितांत आवश्यक हो ग
एक सर्वेक्षण के बाद जो तथ्य सामने आए हैं, उनके मुताबिक जूडो-
में प्रशिक्षित युवतियाँ स्वनिर्भर होने के साथ-साथ अपने इष्ट मि
सहेलियों तक की रक्षा करने में सक्षम सिद्ध हुई हैं.

मार्शल आर्ट की ये अद्‌भुत कलाएँ मूलत: भारत में ही जन्मी थीं, ले
दुर्गम व खतरनाक इलाके से सुगमतापूर्वक यात्रा करने की ललक



रत के कारण भारत के प्राचीन बौद्ध भिक्षुओं इस कला को सीखा तथा अन्य देशों तक चाने में मदद की.

लगभग 1,400 वर्ष पूर्व एक बौद्ध साधु द्धधर्म' ने दक्षिण भारत से चीन देश के लिए ा शुरू की. यह विद्वान साधु धर्म प्रचार के नसिले में विदेश की लंबी यात्राएँ करने के ए मशहूर थे. बौद्धधर्म मध्य चीन के हेनान के शाओलिन विहार में जाकर बस गए थे. विहार भी भारतीय मूल के ऋषि-श्रद्धालुओं बसाया हुआ था. बौद्धधर्म भगवान बुद्ध के ाइसवें वंशज थे. जापानी भाषा में उन्हें दारूमा संज्ञा दी गई थी. उन्होंने शरीर की हिफाजत ा दिमागी संतुलन बनाए रखने के लिए बौद्ध क्षा के एक अध्याय एक्कीन सूत्र का लगातार यास किया. बाद में यही कला शोरीनजी के



कराटे में 'ध्यान' का विशेष महत्त्व है.

न से प्रसिद्ध हुई. बौद्धधर्म द्वारा आध्यात्मिक त की खोज के फलस्वरूप चीन में अनेक युद्ध लाओं में लोगों की रुचि जन्मी. धीरे-धीरे ये त्मरक्षा की कलाएँ सर्वत्र होने लगीं. चीन का द्ध धर्म जब शनै: शनै: सांसारिक होने लगा तो राटे भी मंदिरों से बाहर प्रचलित होने लगा. द्धधर्म का मानना था कि मन और तन की द्धता के लिए घोर शारीरिक श्रम और शक्ति ड़द जरूरी है, क्योंकि दुर्बल व कमजोर शरीर धर्म समाहित नहीं होता. इन मठों में प्रारंभ में ष्य थककर पस्त पड़े रहते थे, लेकिन एक्कीन त के सामूहिक प्रभाव के कारण यही भिक्षु न के सर्वाधिक ताकतवर व समर्थ पुरुष सिद्ध ए. धीरे-धीरे यह कला रियोक्यू द्वीप में पहुँची र 'ओकीनावान्ते' के नाम से जानी गई. कई ताब्दियों तक ओकीनावान्ते ने काफी विकास या, जबकि कई जगह यह कला 'टोट' के म से भी जानी गई.

जब सोहाशी उस द्वीप का सम्राट बना तो ने समस्त द्वीपवासियों पर हथियार रखने पर ड़ा प्रतिबंध लगा दिया. यह प्रतिबंध लंबे समय तक लागू रहा. इस दौरान ओकीनावान्ते गुप्त रूप से विकसित होती रही. 1867 में आधुनिक कराटे के संस्थापक गीचिन फूनाकोशी का जन्म हुआ. उन्होंने ही इस कला को कराटे का नाम दिया. कराटे शब्द दो शब्दों के मेल से बना है. 'कर' का शाब्दिक अर्थ है खाली और 'ते' का अर्थ है हाथ, अर्थात खाली हाथों से लड़ी जानेवाली कला ही कराटे है.

कराटे में प्रशिक्षित युवती बिना किसी अस्त्र-शस्त्र के कुछ विशेष तकनीकों के जरिए अपने विरोधियों को पलभर में धूल चटा सकती है, लेकिन खेल में हथियारों का प्रयोग वर्जित है. फिर भी विषम परिस्थितियों में खेल भावना की दृष्टि से समुराई, तोम्फा, कामा, साई, नानचांक, जो बो नामक आर्ट हथियार प्रचलित हैं. आत्मरक्षा के अवसर पर इस्तेमाल किए जानेवाले ये हथियार इतने छोटे होते हैं कि सुगमतापूर्ण कपड़ों में छुपाए जा सकते हैं. छोटे हथियार महिलाएँ पर्स तक में रख सकती हैं. कराटे में शारीरिक व्यायाम पर विशेष ध्यान दिया जाता है. जब तक शरीर बहुत लोचदार, जानदार तथा हवाई करतब दिखाने के लायक नहीं हो जाता, तब तक कराटे के विद्यार्थी की शिक्षा पूर्ण नहीं मानी जाती. कराटे में सफेद, नीली, पीली, गहरी पीली, हरी गहरी, भूरी तथा ब्लैक बेल्ट पाठ्यक्रम (अभ्यास) होते हैं, जो कठिन परिश्रम, निरंतर प्रयास तथा अभ्यास के बाद फर्स्ट डॉन से शुरू होकर नौवें डॉन पर समाप्त हो जाता है. इसके बाद प्रशिक्षु को रेड बेल्ट दे दी जाती है.

कराटे सीखने के लिए कोई उम्र सीमा निर्धारित नहीं है. भारत व विदेशों के कई अच्छे प्रशिक्षण केंद्रों में चार वर्ष से लेकर 60 वर्ष की उम्र तक के लोग कराटे के अभ्यास में जुटे हैं. जापान में तो 80-80 वर्ष की आयु तक के वृद्ध कराटे का अभ्यास करते देखे गए हैं. युवतियों के लिए कराटे जहाँ उनकी आत्मरक्षा में सहायक होता है, वहीं उनके शारीरिक सौंदर्य को बनाए रखने में भी मददगार सिद्ध होता है.

हाँ, महिलाओं के प्रशिक्षण में कुछ सावधानियाँ अवश्य बरती जाती हैं. रोजाना आधे घंटे के प्रयास करने से कराटे विद्या में निपुण हुआ जा सकता है. कराटे करनेवाली महिलाओं को घरेलू कार्यों में कोई दिक्कत नहीं होती, बल्कि उनकी कार्यक्षमता में वृद्धि ही होती है. गर्भावस्था के दौरान कराटे नहीं करना चाहिए. ■



– पृष्ठ 74 का शेष/कनुप्रिया

अलग-अलग भूमिकाओं ने कनु को एक अच्छी ख्याति दिलाई. कनु ने 'खामियाजा', 'बंद होंठों की जुबान', 'दो फूल', 'फासले' 'दोषी कौन' समेत दूरदर्शन के लिए बननेवाली कई टेलीफिल्मों में भी काम किया है.

कनुप्रिया सिर्फ एक अभिनेत्री है, ऐसा कह देना उसके व्यक्तित्व के कई महत्त्वपूर्ण पक्षों की अनदेखी करना है. वह न केवल एक मॉडल है, बल्कि रेडियो के एफ.एम. चैनल व दूरदर्शन के कार्यक्रमों की एंकरिंग भी करती है. वह ए.टी.एन. की न्यूज रीडर भी है. जेवीजी सुपर वॉश, सलोरा टीवी, अयूर बादाम क्रीम, पुरी मैट्रेस आदि उत्पादों के लिए मॉडलिंग भी करती रही है. कनु बताती है कि वह लगभग पाँच सालों से आल इंडिया रेडियो व दूरदर्शन से बतौर एंकर और ड्रामा आर्टिस्ट जुड़ी हुई है. इसके लिए वह दूरदर्शन, ए.आई.आर. द्वारा एप्रूव्ड भी की गई है. उसे भारत सरकार के एजीसीआर द्वारा 1996 का ऑनर्ड मीडिया पर्सन घोषित किया गया है.

दिल्ली मीडिया से जुड़कर इतना काम करने के बावजूद कनु यहाँ के छोटे परदे के निर्माताओं के कामकाज से संतुष्ट नहीं है. वह बताती है कि यहाँ के प्रोड्यूसर मुंबई के प्रोडयूसर की तरह जोखिम उठाने से डरते हैं.

भविष्य की अपनी योजनाओं के संबंध में चर्चा करते हुए कनुप्रिया कहती है [illegible] मैं आगे चलकर प्रोडक्शन के काम में भी रुचि [illegible]

'फिल्मी दुनिया [illegible] कहानी, [illegible] लोगों की जुबानी' के बा[illegible] [illegible] 'कौंसिल कमल,' 'मिल्लत' त[illegible] [illegible]' आदि दूरदर्शन धारावाहि[illegible] परदे पर देखा जा सके[illegible] ■

सौंदर्य कुंज



नालंदा तथा तक्षशिला के विद्या-कुंजों की भाँति प्राचीन सौंदर्य कुंजों के अवशेष तो आज हमें नहीं मिलते, परंतु अजंता-एलोरा की श्वेत-श्यामल नायिकाएँ भारतीय सौंदर्य-शिक्षण की सनातन साक्षी अवश्य कही जा सकती हैं. सर्वप्रथम सौंदर्य शिक्षण प्रकृति ने ही मनुष्य को प्रदान किया. हर ऋतु में प्रकृति ने अपना रूप बदला, कभी ग्रीष्म में सुनहरी तपस से कुंदन काया पाई, कभी शरद में बरफ की ठंडी, श्वेत चादर ओढ़ी, तो सावन में धानी चूनर इसका आकर्षण बनी और कदाचित वसंत ने सतरंगे फूलों से इसका सोलह शृंगार किया. इसी प्रकृति पुत्री 'नारी' के भी स्वभाव में सौंदर्य व शृंगार स्वाभाविक है.

आज नारी मात्र नायिका या प्रेयसी नहीं रही. समय के साथ-साथ उसके क्षेत्र बदले, उसकी व्यस्तताएँ बदलीं, उसकी पहचान बदली और बदला उसका सौंदर्य. सौंदर्य प्रशिक्षण आधुनिक नारी की मूल आवश्यकताओं में जुड़ गए हैं.

आज सौंदर्य कुंज (सौंदर्य विद्यालय) या ब्यूटी पार्लर हर छोटे-बड़े शहर में यहाँ तक कि कस्बों व गाँवों तक में देखे जा सकते हैं.

सरकारी क्षेत्र में चल रहे सौंदर्य शिक्षण केंद्रों में शिक्षण शुल्क प्राय: कम होता है. यहाँ साधारण सौंदर्य प्रसाधनों की शिक्षा दी जाती है. कुछ केंद्रों में स्वास्थ्य व आहा[illegible] जानकारी भी दी जाती है. शुल्क कम हो[illegible] यहाँ भीड़ अधिक होती है और यही [illegible] व्यक्तिगत स्तर पर यहाँ ध्यान नहीं [illegible] सकता.

गैर सरकारी सौंदर्य विद्यालयों में खर्च अधि[illegible]

> सौंदर्य प्रशिक्षण आधुनिक नारी की मूल आवश्यकताओं में जुड़ गए हैं. आज सौंदर्य कुंज (सौंदर्य विद्यालय) या ब्यूटी पार्लर हर छोटे-बड़े शहर में यहाँ तक कि कस्बों व गाँवों तक में देखे जा सकते हैं.

होता है, पर इनमें विद्यार्थियों को अनेक सुविधाएँ व आधुनिक साधन प्राप्त होते हैं. यूँ तो आज हर गली-बाजार में गैर सरकारी सौंदर्य केंद्र देखने को मिलते हैं, परंतु शहनाज, पिवेट पांइट और आल्पस सौंदर्य शिक्षण संस्थान कुछ ऐसे प्रतिष्ठित संस्थान हैं, जहाँ से शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी आत्मविश्वास एवं एक विशेष पहचान के साथ संस्थान से बाहर आते हैं. आल्पस सौंदर्य शिक्षण संस्थान की स्वामिनी भारती तनेजा के अनुसार, "अच्छे सौंदर्य शिक्षण संस्थानों में भी कुछ अभाव खटकते हैं, जैसे व्यावहारिक शिक्षण में कुछ संस्थानों में निशुल्क ग्राहक सेवा उपलब्ध नहीं होती."

उनके अनुसार, "एक अच्छे सौंदर्य शिक्षण संस्थान में हर विद्यार्थी को पठन-पाठन के अतिरिक्त मुफ्त ग्राहक सेवा अवश्य प्रदान की जानी चाहिए, जिससे हर विद्यार्थी ग्राहकों की [illegible]ी, स्वभाव व शारीरिक आवश्यकताओं से [illegible]-भाँति परिचित हो सके."

[illegible]ोष पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों को अति

आधुनिक सौंदर्य तक[illegible]
की विशेष शिक्षा दी[illegible]
है. इसमें
अल्ट्रासोनिक, विशेष [illegible]
मास्क आदि की [illegible]
प्रयोग प्रणाली का [illegible]
होता है. इसके साथ[illegible]
केश विन्यास का भी [illegible]
विस्तृत पाठ्यक्रम [illegible]
संस्थानों में अवश्य रहत[illegible]
कोई भी सौंदर्य शिक्षार्थी केश विन्यास की [illegible]
के बिना अधूरा होता है. ऐसे विद्यार्थी [illegible]
अपना ब्यूटी पार्लर चलाते हैं और नि[illegible]
सेवाएँ भी अपने ग्राहकों को देना चाहते है[illegible]
भी ग्राहक कतराता है. ऐसे विद्यार्थियो[illegible]
व्यावसायिक जीवन का प्रारंभ काफी धीमी[illegible]
से होता है. भारतीजी का मानना है कि [illegible]
अच्छे सौंदर्य शिक्षण संस्थान का कर्तव्य है[illegible]
वह अपने विद्यार्थियों को पठन-पाठन तथा[illegible]
व्यावहारिक शिक्षा से अवगत करवाए, [illegible]
अपने भावी व्यावसायिक जीवन में उसके[illegible]
विद्यार्थी का पहला कदम पूर्ण आत्मवि[illegible]
तथा सफलता के साथ उठे.

उच्च स्तर के सौंदर्य शिक्षण संस्थान वे[illegible]
यहीं तक सीमित नहीं रहते, समय-समय[illegible]
मनोवैज्ञानिक, डॉक्टरों व तकनीकी विशे[illegible]
द्वारा विद्यार्थियों की विशेष शंकाओं का [illegible]
समाधान करवाया जाता है. ऑडियो विजु[illegible]
शिक्षा, कंप्यूटर, विचार गोष्ठी तथा छोटी [illegible]
प्रतियोगिताएँ भी विद्यार्थियों की रुचि को ब[illegible]
के काम आती हैं.

आज के प्रदूषित तथा तनाव से भरे जीव[illegible]
सौंदर्य उपजाते ये सौंदर्य प्रशिक्षण संस्थान [illegible]
होती व्यक्तिगत कांति को सँवारने में प्रयत्न[illegible]
हैं. यद्यपि अच्छे शिक्षण संस्थानों का अभाव[illegible]
फिर भी उनका स्वागत है.

*व जीवन के खेल भी
त्र हैं. जीवन में ऐसे
अवसर आते हैं, जब
ति अपने को प्रवाह में
जाने देता है और कोई
रोध उपस्थित नहीं
ता. वह अपने ही
ात का स्वयं भी एक
क हो लेता है. कहाँ तो
एकनिष्ठा पतिदेवा पूरे
साल निस्संतान रही
और कहाँ उसके
मानित पातिव्रत्य ने
जे पति के मिथ्या
मविश्वास का लाभ
में तनिक भी संकोच
किया. युवक अपने
मन टेस्ट का मखौल
ता रहा, पर उसकी
पढ़, ठेठ देहाती पत्नी
पति के सीमन टेस्ट का
ट लैबोरेटरी मेथड
काल ही लिया.*



अपुरुष

● डॉ. ईश्वरदत्त वर्मा

चालीस बरस पहले की बात है. मेरी नियुक्ति एक कस्बे ककरवई के चिकित्सालय में हुई. एक बार निकट के गाँव भोमई का एक युवक अपनी पत्नी का इलाज कराने के लिए उसे मेरे क्लीनिक में लेकर आया. नाम और गाँव जानने के बाद मैंने युवक दलबीर और उसकी पत्नी केला से समस्या पूछी. गाँवों में नाम ऐसे ही होते हैं. केला नाम मेरे लिए अजीब न था. उधर लड़कियों के संतरा, बरफी, इमरती जैसे नाम प्रचलित थे.

शादी को दस बरस गुजर चुके थे, पर कोई संतान न हुई थी. मैंने दलबीर से जानना चाहा कि मुझसे संपर्क से पूर्व भी उन्होंने कोई इलाज करवाया था या नहीं?

युवक ने उत्तर दिया कि वह सभी कुछ करके देख चुका था. जिसने जो बताया, वही किया गया. खोर-खटके, ओझे-हकीम से लेकर मंत्र-तावीज तक की लंबी फेहरिस्त उसने [illegible]

गाँव का डॉक्[illegible] स्थानीय समाज का ही [illegible] बन जाता है. उसे रोगी के परिवेश [illegible] उनके रहन-सहन की

[illegible] पृष्ठ 96 पर

मौस… खुशनु… दि… जवां…



मौसम कोई भी हो, सौम्य रंगों और आकर्षक डिजाइन वाला यह थ्री-पीस सूट हर मौसम और मौके पर फबेगा. ऐसे सूट [illegible] अथवा हलके आभूषण आप[illegible] को दोगुना करेंगे.



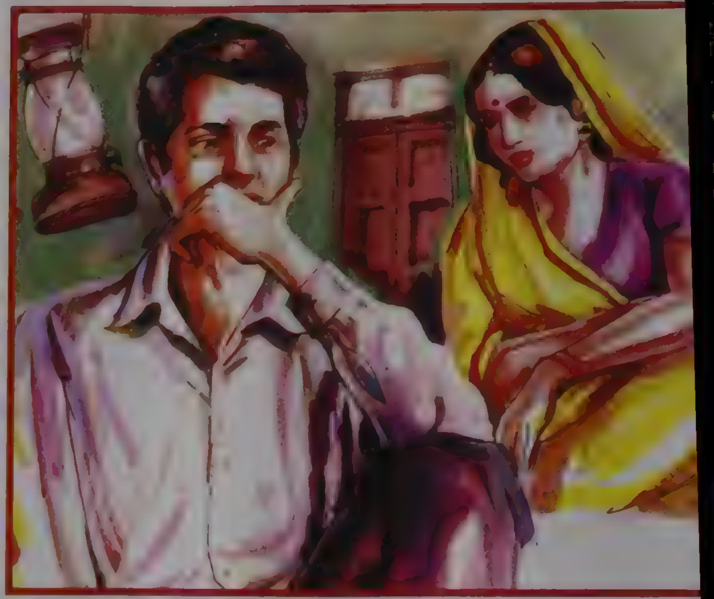
नीले सूट के अंगरखे और [illegible] में [illegible] से घनी कढ़ाई की गई है. [illegible] [illegible] सूट पर भी कमाल की कढ़ाई है. जब इन कुर्तों ने ही गजब [illegible] किया है तो दुपट्टे को क्यों न [illegible].



ब्लॉक प्रिंट वाली [illegible] के रंग के सूट
पर काले रंग की कढ़ाई पर [illegible]
के मेल का अनोखा नमूना है. पहनावा
ऐसा जैसे सावन में चली मचलती बयार.



ये दो विपरीत कांबीनेशन वाले थ्री-पीस सूट हैं. कुर्ते के योक, बाँहें और निचले किनारों को शीशेवाली कढ़ाई से सजाया गया है. फिर क्यों न मन ललचाए ऐसे आरामदेह खूबसूरत सूट पहनने को.



अब तक आपने पढ़ा...

भारतीय प्रशासनिक सेवा में कार्यरत विभा और उसके सहकर्मी करण के विवाह के दिन जैसे-जैसे बीते, वैसे-वैसे दोनों के विचार व व्यवहार में अंतर बढ़ता गया. अपने भाई की साली रुक्मिणी के प्रति करण की छात्र जीवन के समय की आसक्ति की याद भी शायद उसका कारण थी. उधर खूबसूरत और स्वभाव से अल्हड़ रुक्मिणी की शादी रजपुरे के अधेड़ चौधरी से कर दी गई थी. बेटे, पोते, नाती, दामाद वाले उम्र के तीसरेपन में प्रवेश कर चुके चौधरी का अकड़ भरा स्वभाव कोमलांगी रुक्मिणी पर जबरन हावी हो रहा था. यही कारण है कि सुख-सुविधाओं के बावजूद उसका मन वहाँ नहीं लग रहा था...

अब आगे पढ़ें.

● बाला शर्मा

दूसरी किस्त

राधा न रुक्मिण

करण घर से गए तो वापस आने का मन ही नहीं बना. ऐकैडमी जाने से पहले दो सप्ताह का समय खाली था उनके पास, परंतु घर! ओह, क्या करें उस कैद में जाकर. वहाँ कैद हो जाने का एहसास ही होता हो.

जिसे केवल दो-चार घड़ियों के लिए देखा था, उसके प्रति इतना मोह, इतनी ममता. इतने दुर्बल तो कभी नहीं थे वह. क्यों इन चंद दिनों में ही भइया-भाभी, अम्माँ-बाबूजी सभी पराए लगने लगे हैं और व्यंग्य और तिरस्कार जो उन्हें बदले में मिला है उसका तो कारण क्या हो सकता है, नहीं जानते.

नरेश ने जो उन्हीं के साथ पढ़ाई की थी, उन्हीं के साथ आई.ए.एस. में बैठे थे और पास भी हो गए थे.

"अरे यार, घर नहीं जाना है क्या." ज्वाइन करने से पहले नरेश ने टोका करण को, तो जैसे तंद्रा से जाग उठे थे. उनका बिखरा फैला सामान देखकर ही जिज्ञासा हुई थी नरेश को.

"ऊँ...हाँ! सोच रहा हूँ कि..."

"क्या..."

"सोच रहा हूँ कि कहीं और घूमने-फिरने चला जाए."

"क्यों, घरवालों से मिलने का मन नहीं हो रहा?"

"जाऊँगा वहाँ भी...पर थोड़ी सैर करने का भी मन हो रहा है."

"तब फिर चलो...मेरे साथ चलो." नरेश ने फिर आग्रहपूर्वक उनका सामान समेटना शुरू कर दिया तो वह इनकार नहीं कर सके. चलो अपरिचय का भी अपना एक सुख होता है. और फिर यह जो समय का भारी पहाड़ उनके सर पर खड़ा है, उसे काटने का साधन भी तो चाहिए न.

"बनारस जा रहा हूँ. वापस आकर दो दिन को आऊँगा. आप लोग चिंता न करें." दो पंक्तियों का छोटा-सा पत्र बापूजी को लिख दिया. अन्य किसी से व्यवहार करने की तो इच्छा ही मर गई थी जैसे! भाभी से जो मित्रता का नाता बना था, उसमें भी दरार पड़ गई थी, जो दोनों भाइयों में मनमुटाव कराके ही पूरी हुई थी.

"हूँ...रुपइया तां पेड़ पै लगे है ना...हियां हाड़ तोड़ रात-दिन उमर गला रए हैं...ऊ लाट साब घूमने जावै है."

"धारा के गढ़ही भर कै ले गया." बड़े बेटे के पैने नश्तर माँ को नहीं सुहाए. बेटे-बहू को सुनाकर पति से ही जैसे फरियाद लगा रही थीं.

बनारस की टेढ़ी संकरी गलियों में घूमते गंगा के घाट पर घंटों बैठे रहते. गोल चक्कर लगाते जल को निहारते रह जाते! न खाने की सुध रहती, न सोने की.

नरेश के पिता की छोटी-सी किराने की दुकान मणिकर्णिका घाट के एक किनारे से ही थी. गोल बताशे, इलायची दाना, पर्व-त्योहार पर खूब बिकता, सो अच्छी आ
हो जाती. नरेश से छोटे और भी दो बेटे, ए
थी. उन सभी का भविष्य नरेश के हाथों ह
है, यह जानते थे नरेश. शायद यही कारण
सस्ते साधारण कपड़े, जूतों को भी सहेज
कर रखते थे. तीक्ष्ण बुद्धि थी. सदा प्रथम
मिलती रही...और अब आई.ए.एस., बस
दलिद्दर दूर हुए समझो.

"घी का मटकी भरि कै रख दिहिस
साथ ले जइबे का."

माँ ने लाड़ से निहोरे किए.

"अरे नाही अम्माँ...हुआ ई सब
चलेगा." अम्माँ के सरल स्वभाव पर हो-
हंस उठे नरेश. करण बड़े ध्यान से माँ-बे
वार्तालाप सुन रहे थे. कलेजे में कील गड़
कसक हो रही थी. उनको भी तो इतना ही
इतना ही स्नेह मिलता था. फिर कहाँ हो ग
जो वे उन सबसे वंचित रह गए हैं. दो-चा
का दृष्टि विनिमय क्या दुनिया ही बदल दे
है. अम्माँ, बापू, भइया, भाभी सभी से
विमुख हो उठे हैं वे! उस सारे प्रकरण
बेचारों का क्या दोष? स्वयं ही प्रश्न-प्रति
उलझकर रह गए हैं करण!

"बाबा विश्वनाथ के चरणों में दंडव
जो मन की सारी मुराद पूरी करते हैं." न
जैसे राह सुझा दी, जिसे वे बीच में ही भट
थे. कहाँ था मन को चैन? वह तो न जा

कर ले गई थी. फिर विश्वनाथजी के चरणों
था टिकाए घंटों बिता देना. साँझ-सवेरे घाट
सीढ़ियों पर बैठे उस अथाह भीड़ को स्नान
देखना कि कितना विश्वास, कितनी श्रद्धा
जनमानस में तो कभी-कभी स्वयं की भूल
मे में आने लगी और मन विरक्त हो उठता.

सप्ताह बीत गया. सवेरे गंगा स्नान को जाते
टों उस अथाह जन समूह में खो जाते. ओह!
है उस मटमैली मंथर गति से बहती जल
में जो इतनी श्रद्धा, इतनी भावना लेकर
ों की संख्या में लोग आते हैं कि सारा दुख
दर एक गोता लगाते स्वयं ही समाप्त हो
है. फिर वे स्वयं, जो दोनों समय स्नान करते
बा के चरणों में माथा भी नवाते हैं, फिर क्यों
मिल पा रही उनके मन को शांति.

अनेकानेक जल कण देह पर गिरते बह जाते
प्रात: सूर्य की पहली किरणों का सुनहरा
ल जैसे गंगाजल को लोरियाँ दे रहा हो कि
-उठो, रात भर के विश्राम में पर्याप्त समय
दिया. अब कार्यरत हो जाओ. जन मानस
सेवा में स्वयं को उत्सर्ग कर देना, बस वही
रा लक्ष्य है. सहसा ही जैसे ज्ञानचक्षु खुल
करण को राह मिल गई थी.

फिर दूसरे ही दिन अपने वापस चले जाने का
य नरेश को बता दिया. बस, अब काम में
मन लगाकर ही सारा जीवन बिता देना होगा.

एक सप्ताह बचा है. इतने दिन घर पर रहकर अम्माँ-बापूजी के साथ बिता देंगे. भाई को जो शिकायत है, उसे भी तो दूर करना है. अगर संभव हुआ तो! परंतु घर की दिनचर्या जिस ढर्रे पर चल रही थी, वहाँ तो करण के लिए कोई स्थान ही नहीं था. गुमसुम-सी माँ दूध-छाछ के काम में लगी रहतीं. बापूजी हुक्के की नाल मुँह में लगाए शून्य में निहारते रह जाते और भाभी, पोने-पीसने में रात-दिन खटना, ताने-उलहाने भी चुपचाप सहन कर जाना. बस, यही तो एक राह बची है जीवन बिताने की. एक आश्चर्य अवश्य था कि इस सब में भाई ही थे, जो सारा दिन हल-बैल से जूझते रहते. तानों-उलहानों की श्रृंखला भी उन्हीं की ओर से प्रारंभ होती. क्यों था ऐसा? शायद करण को लेकर बहुत आहत हो उठे थे अथवा जन-समाज, नाते-रिश्तेदारों के सामने जो अपमान हुआ, उससे बहुत दुखी थे.

पाँच-सात दिन रहना था. इस बीच कपड़ों, जूतों, किताबों का प्रबंध करना था. मसूरी में सर्दी होती है. एक-दो गरम सूट उनके पास थे. एक पुलोवर बाजार से खरीद लेंगे, परंतु घर की स्थिति देख कुछ कह पाने में विवश हैं. बापूजी खेत-खलिहान अथवा अड़ोस-पड़ोस की चर्चा करते हैं, परंतु घर-परिवार की नहीं. भाई कतराकर निकल जाते हैं. भाभी निर्लिप्त बनी रहती हैं. दोनों समय खाने की थाली परोसकर सामने रख देती हैं. एक फुल्का और दूँ...या दाल-सब्जी और लाऊँ...बस और एक शब्द भी नहीं...कहाँ गई वह हँसने-बतियाने की आदत. तरह-तरह के पकवान बना, मनुहार कर खिलाती थीं. जो गृह लक्ष्मी थी अम्माँ की दुलारी बहू, अब गूंगी गुड़िया क्यों बन गई वह. अनायास ही घर-आँगन में चक्कर लगाती घूमती रहेंगी. व्यर्थ का अपराध-बोध क्यों माथे पर उठाए रहती हैं. कई-कई घंटे माथे पर कुहनी टिकाए अपनी कोठरी में पड़े रहने का कारण क्या हो सकता है भला. फिर अम्माँ ने लक्ष्य किया तो बहुत चिंतित हो रहतीं, फिर करण को ही टोका था एक दिन.

"बेटा, कितनी छोरियाँ के रिश्ते आ रए हैं...तू देखना चाहवै है के या फिर तेरे बापूजी ई सब तै कर दै?"

"ऊँ...अम्माँ, अब ब्याह-शादी का चक्कर मत चलाना." धीमे पर कड़े शब्दों में आदेश दिया हो जैसे.

"के कहै करण ब्याह क्या चक्कर होवे है...ई ता दुनिया में हर आदमी का धरम है...बंस-बेल तौ चलानी है ना." माँ एकाएक बहुत चिंतित हो उठीं.

"ठीक है, माँ बेटा ही चलाता है...तो भाई तो हैं न...वंश-बेल के लिए एक बेटा ही काफी है..." सीधे-सपाट स्वर में करण ने उत्तर दिया तो माँ भी आश्चर्य से देखती रहीं. उनके चेहरे पर यह निर्लिप्त, नितांत रुखापन देखकर बहुत दुख लगा उन्हें.

फिर अधिक बात नहीं हुई. भाई की झल्लाहट कि "लो, अब नई राड़ ब्याह नहीं करेंगे!" पिता का क्रोध में पाँव पटकते बखरी-बरामदे में चक्कर लगाना और माँ के आँसू. इन सभी का कोई असर नहीं हो रहा. केवल भाभी के दो शब्द कि, "ब्याह तो उसने भी कर लिया देवरजी" जो, बहुत धीमे और करुण स्वर में कहे गए थे कि कोई दूसरा सुन न ले...कानों में टंकार-से लगते रहे...ब्याह कर लिया है...ब्याह कर लिया है.

ह तो उसने भी कर लिया
जी," भाभी ने ये शब्द बहुत धीमे
करुण स्वर में कहे थे कि कोई
सुन न ले.



ब्याह के बाद एक बरस तक मायके नहीं गई रुक्मिणी और न ही वहाँ से कोई आया. चौधरी की मान-मनौवल अब क्रोध में परित होने लगी है. सब देख-समझ रही है. पर क्या करे, जो यह कठोर शिला, यह सूखे रेत की परत जम गई है कलेजे पर. इसका क्या

निदान हो. कैसे स्वीकार करे उन सबको, जो मन को नहीं भाता कि जो अब किसी अन्य का हो चुका है. जिन सपनों पर कोई दूसरा अधिकार जमा बैठा है, वहाँ बलपूर्वक कोई दूसरा अधिपत्य जमाने लगे...नहीं.

रात के शून्य पलों में जब चर-अचर सब कुछ स्थिर हो जाता है, तब जागती है मन की दुनिया, सपनों की दुनिया, वहाँ किसी अन्य का बल नहीं, केवल अपना स्वयं का अधिकार होता है. धुँधली-अँधेरी खोह में नन्हे टिमटिमाते दीए की अजास, भला उस तनिक-से प्रकाश पर भी किसी के जिद्दी अधिकार का प्रहार देने दे, नहीं असंभव, उस नन्ही-सी दूध पर किसी लौह पग के प्रहार नहीं.

जब पति नाम का वह पुरुष बहशी दरिंदे का रूप धारण करता है, तब सब कुछ चुपचाप, बिना सीत्कार कए ही स्वीकार करते चले जाना इसके अतिरिक्त अन्य कोई राह नहीं है. रात की तनहाइयों में जो दानव जागता, वह दिन के उजाले में मोम-सा पिघल जाता. बहुत आश्चर्य होता रुक्मिणी को. मन-ही-मन इस दोहरे व्यक्तित्व का विश्लेषण करती रहती, परंतु कभी मुँह खोलकर जानने का साहस नहीं किया. बस, धरती पर चोट पड़ती रही, फूटकर दरारें बनती रहीं. घर-आँगन, बेटा-बहू सब कोई अपने पंख समेटे निज स्वार्थ की दुनिया में लिपटे रहे. बारह महीना तीस दिन वही प्रकरण दुहराया जाता रहा. फिर परिणाम! दो बच्चियों का रूप लेकर सामने आ गया.

"नई चौधरन हमल सै है." पहली बेटी की बारी जन-समाज में खुसुर-फुसुर हुई.

"और के इब म्हारी छाती पै सिला धरैगी." बेटे ने व्यंग्योक्ति की और बहू तो जैसे सनाका खा गई थी. जो मित्रवत नाता बन चुका था, उसमें गहरी दरार पड़ गई थी.

"इब बुढ़ापा मैं मति मारी गई ऐ...कुण देखैगा इन गइया-बछैया नै..." प्रायः ही व्यंग्योक्ति कानों में पड़ती. वास्तव में तो उनका दोष भी नहीं था. तीन बरस तक जिस बेटे का एकछत्र राज्य रहा था, घर-द्वार, खेत-खलिहान सब कुछ पर, वही अब किसी अन्य को पनपते कैसे देख पाता.

"मिथला नै म्हारी गोद मैं डा[illegible] जी," बहू की सूनी कोख लरज उठी.

रुक्मिणी के चेहरे पर आश्चर्य, हर्ष, [illegible]

विरक्ति के बनते-मिटते भाव वह स्वयं की इच्छा के अतिरेक में नहीं देख पा रही कि ममत्व का एक कतरा भी तो नहीं था उन आँखों में.

"ठीक ऐ तमी संभालो," और बिटिया को परे सरका पीठ फेरकर सो गई तो बहू को भान हुआ. "ई कैसी महतारी ऐ." मन ही मन वितृष्णा से भर उठी.

न चरुए चढ़े, न जच्चा गाई, न कुआँ-खूँटा पूजा गया, न ही पंडित ने नाम धराई की. कोमल कली-सी नन्ही किसलय-सा गात और गुलाब की पंखुरी से होंठों पर रुई के फाहे से दूध का स्वाद चखती रही. मिचमिची पलकें उघाड़कर इस विशाल चर-अचर के प्रकाश को समेटती



बूढ़ा बाघ नख-दंत फैलाए शिकार को क्षत-विक्षत करने का आतुर था और वह कोमल कली डरे हुए मेमने-सी लग रही थी.

रही उन नयन-पाखियों में. उजले नीलवर्णी नेत्रों में दुनिया समेटती रही उन नयन-पांखियों में. और रुक्मिणी उस सबसे निर्लिप्त अँधेरे की खेह में डूबती चली गई.

छठी-जसूटन सारे समाचार अम्माँ-बापूजी तक पहुँचते. डल्ला मिठाई की औपचारिकता होती. भाभी का मान-मनौवल भरा पत्र आता कि अम्माँजी की अब अंतिम घड़ी है. एक बार केवल एक बार आँख भर देखने की चाह है. पर नहीं, यहाँ तो कोई प्रतिक्रिया ही नहीं. मन तो जैसे काठ, स्पंदनहीन हो चुका है कि सब कुछ झेलते चले जाना, जड़वत.

और वह जो इस सारे प्रकरण का कारण बना है, स्वयं का प्राप्य न मिलने पर और भी क्रोधी, अतिरिक्त गर्जन करता स्वयं के पौरुष का प्रदर्शन करने लगता. बूढ़ा बाघ नख-दंत फैलाए शिकार को क्षत-विक्षत करने का आतुर और वह कोमल कली डरे हुए मेमने-सी. स्त्री नहीं रेत की बोरी

अथवा ठंडी लाश. बस पल दर पल
सूई घूमती रहती.

कच्ची देसी और कभी-कभी श
विदेशी स्कॉच भी ले आते. ऊँचे
बढ़ती हुई उम्र की लकीरें उमेठी हु
सफेद धारी और चौड़े कंधे तनिक झुक
आँखों के पपोटे सुर्ख लाल कि
जलाकर भस्म कर दे. हवस की आग
कदम अथवा आयु के तीसरे पहर में
अंतिम लौ प्रकाश फेंक रही है.

पिता-पुत्र में वाक्युद्ध होने लगा है
का पावना है, वह पिता ही छीन ले
क्या बूढ़ों को माफ करेगी.

"इब घर मैं पड़े-
चढ़ा कै के घर बसै
दिन साँझ से बोतल
बैठक में मँगवा
बलजीत को आपा
भारी पड़ गया.
सामने चट्टान-सा खड़

"तौ, तू के मनै उप
आया ए?" क्रोध
फड़क उठे. हाथ पास
लाठी की मूठ पर च
तो लपककर कलाई प
बलजीत ने.

सशक्त जवान हथे
पकड़ से बूढ़ा चौध
का हाथ छुड़ाने में अ
रहा था. फिर चिकों
चूड़ियों की खनक सुनकर तो चिहुँक
दोनों.

"तू के करै हिंया...भीतर जा." बल
रुक्मिणी का वहाँ होना नहीं सुहाया.
बरस पहले जो गोरी गाय की बछिया-सी
उसके पिता ने लाकर उसकी माँ के
बैठा दी थी, उसे आज तक क्षमा नहीं
था बलजीत, और रुक्मिणी! वह तो उस
मात्र से काँप उठती. क्रोध से हुँकारे भर
डग रखता चिक उठाकर अंदर
जाते-जाते दो शब्द हवा में उछाल
"बेसरम...बदजात." रुक्मिणी पहले से ह
में थी अथवा देख नहीं पाया था, सो
अनाप-शनाप बोल गया.

ओह! ये संज्ञा-सर्वनाम, यह सब
रुक्मिणी की जिंदगी का अंग बन चुके
का ढीठ आचरण तो स्त्री को ही झेलना
फिर साथ में मिले रुसवाई और बद
प्रहार, वह भी तो उसी के भाग्य में लिखे

यह सब तो साँझ-सवेरे की कहानी बन
हैं.

क की ऊँची छत पर जालीदार रोशनदान
खट पर कबूतरों का जोड़ा गुटर-गूँ करता
और चौड़े पलंग पर सफेद झालरदार
, गद्दों, तकियों की सेज पर पड़ी रुक्मिणी
भेड़िये का ग्रास बनती रहती. ऊँची, लंबी
की अलमारी में तो पतली, लंबी कटार,
रें सजी थीं, उन्हें देखकर भी भयभीत हो
वह. जैसे पिंगल चिड़िया जैसे भोंथरी छुरी
बह हो रही हो.

रंतु अधिक अताई क्या रास आई है कभी.
चौधरी ने साठ वसंत उलांघ लिए, सो देह
जाने का समय आया है न. तब-तब वह
आयु की देह कद से सशक्त स्त्री जो
पुरुष के लालच का शिकार बन गई है,
का सुख तो भोगा ही नहीं. तीसरेपन में
चुके चौधरी के लिए तो बस कंठ की फाँस
ाने के अतिरिक्त अब कुछ भी नहीं है कि
ले बने, न निगले.

किसी प्रकार भी स्वयं की भूल मानने को
ही नहीं है चौधरी. फिर स्वयं को और भी
क शराब में गर्क कर लेते हैं. इसके
रिक्त और चारा और विकल्प भी नहीं पाते.
ब एक अनोखा परिवर्तन उजागर हो रहा
णी में. देह काठी पूर्ण सजग और सौष्ठव
है और स्वयं के प्रति अन्याय हुआ है, सो
में उन्मत्त भूखी बाघिन-सी नख-दंत गड़ा
ों को नोचने को उद्यत. उसका एक नया ही
जो उजागर हो रहा है, सो बहुत आतंकित
लगे हैं चौधरी.

थम वाक्‌युद्ध क्रोध में जो भी
स-बोतल सामने आता, उठाकर पटक देती.
क्रोध, नोच-खसोट, उठा-पटक दारू के दो
जो चौधरी मनुहार करके पिलाता था अब
बन चुकी है. नशे से उन्मत्त स्वयं पर से
हवास खोकर काबू उठ जाता है और चौधरी
बूढ़ा शेर की स्वयं की शक्ति कम हो जाने
ल में कसमसाता रहता है. आधी-तिपहरी
क बखरी युद्ध का मैदान बनी रहती. कभी
ी स्वयं ही उठकर बरामदे में जाकर सो
कभी रुक्मिणी लात खसोटकर उन्हें बाहर
देती. एक-दो बार उसे बालों से पकड़कर
-ताड़ना चाहा था, पर वह तो कितनी
हँसी लेकर जैसे आँखों से अंगार उगल
हो. चौधरी की सशक्त हथेली गालों और
ों पर अपनी छाप छोड़ जाती है. वह बाँहों
कंधों पर काटने-नोचने के निशान बना देती
है, फिर 'थू है' कहकर परे धकेल देती है. और वह बूढ़ा बाघ विवश हुआ सह जाने के अतिरिक्त कुछ भी कर पाने योग्य नहीं रहता. बकरी से शेरनी बन बैठी है रुक्मिणी, और उनके उस युद्ध के स्वर रात के सन्नाटे में दीवार लाँघ जाते तो उठाकर हँस उठता बलजीत.

"और करो मजा," कहकर पिता की ओर देखकर थूक देता घृणा से.

जीवन नर्क बन चुका था चौधरी के लिए. तभी वह भयानक कांड हो गया कि जिसकी कल्पना मात्र से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं. साँझ की दीया-बाती बहू ने कर दी तो भोजन ब्यालू की भी तैयारी हो गई. षटरस भोजन के थाल जो चौधरी के लिए नित्य ही बखरी में जाते थे, उसी में प्राय: रुक्मिणी का भी खाना-पीना निपट जाता था. दोनों बच्चियाँ तो जैसे बलजीत की बहू की होकर रह गई थी. स्वयं के ममत्व को तृप्त करने का तो बस वही एक उपाय रह गया था उसके पास.

उस दिन साँझ से ही बूँदाबाँदी होने लगी थी, सो बलजीत भी तनिक जल्दी ही घर आ गया. गाय-बैल को सानी करके कमरे में चले गए. बलजीत था कि पत्नी से विमुख ही रहने लगा है. शायद अपनी स्वयं की संतान नहीं, इसीलिए इतना चिड़चिड़ा हो उठा है.

सामने से दाई थाल लेकर बखरी में जा रही थी तो यकायक लात मारकर थाली फेंक दी तो कटोरी-थाली आँगन में बिखर गईं. फिर क्रोध में चीखता-चिल्लाता वह पिता के कमरे में ही जा पहुँचा, जो अभी नैश विहार की तैयारी में ही थे और रुक्मिणी से हँसी-ठिठोली का प्रयास कर रहे थे.

"बेस्वा, बदजात, तणै सरम-लिहाज कोनी," क्रोध से फुफकार रहा था वह. फिर बाँह पकड़कर परे धकेल दिया तो चौधरी पहले तो हतप्रभ हो उठे, पुन: क्रोध, वाक्‌युद्ध, हाथापाई और पिता-पुत्र के परस्पर जो एकदूसरे पर हो रहे वार स्वयं पर झेलती लहूलुहान हुई रुक्मिणी. बाहर तक आते चीखने-चिल्लाने के स्वर, फिर चौधरी के गों-गों करते स्वर, और एकाएक सब शांत हो जाना. चौधरी का आर्त स्वर में चीखना जो बलजीत के धक्का देने से दीवार में सिर टकरा जाने से निकला था और संज्ञाहीन हुए वे धरती पर ढेर हो गए. फिर बलजीत अब यकायक ही होश में आ गया और, "अरे, या के हो गया." और माथा पकड़कर चीखना, उसकी पत्नी का माथे में दुहत्थड़ मारना, दाई-नौकरों की भीड़ थर-थर काँपती जो कोने में पड़ी रुक्मिणी की देह को किसी का झिंझोड़कर उठा देना और आँख उघाड़कर देखकर पुन: काँपकर मूँद लेना कि खाकी वर्दी के मर्दाना हाथ उसे कंधे से पकड़कर उठा रहे थे. पुन: बलजीत की हथकड़ी-बेड़ियों से जकड़ी हुई देह का घिसटते हुए सरकारी जीप में डालकर ले जाना, सब कुछ तंद्रा में डूबते-उतारते हुए देखती रही थी रुक्मिणी.

स्त्री-बच्चों बूढ़ों के क्रोध में उफनते स्वर सुनती रही वह. उसके विस्फारित नेत्रों में एक बूँद आँसू भी नहीं टपका. पर चौधरी की निर्जीव देह जब काली गाड़ी में ले जाई जाने लगी तो यकायक ही बुक्का फाड़कर रो उठी रुक्मिणी.

"हूँ, खसम मार सत्ती हुई जाय." बहू का घृणापूर्ण स्वर पिघले सीसे-सा कानो में गूँजने लगा तो यकायक ही क्रोध से विफर उठी.

पुलिस के बूटों की ठक-ठक के स्वर साँझ-सवेरे बखरी पर ठकठकाते रहते. घर में कोई पुरुष नहीं. दो नारी दो रूप प्रतिरोधिनी क्रोध और शंका से परिपूर्ण, लड़ाई झगड़ा पूर्ण महाभारत, गाँव के बड़े-बूढ़ों की बीच-बचाव कराना सब कुछ व्यर्थ. परंतु अब एक अनोखा जो परिवर्तन आया था रुक्मिणी में कि घर के प्रति यकायक ही सचेत हो उठी थी. शायद पुरुष का साया जो उस घर से उठ गया था. उसी का भय उसके मन को झिंझोड़ गया और वही कारण था कि करण की पनाह में जाने को विवश हो गई.

करण को मसूरी एकैडेमी में जब फाइनल की परीक्षा समाप्त करने पर अपने बैच में सर्वोच्च अंक मिलने पर बहुत बड़ा जलसा मनाए जाने की सूचना मिली तो एकबारगी हर्ष से उछल पड़े वे. ओह, इतना सब होगा यह सब तो आशा भी नहीं थी उन्हें. वह जो थी उनकी प्रेरणा स्रोत, बस उसी के लिए तो उतनी मेहनत उतनी लगन से तैयारी की थी उन्होंने. पर, कहाँ है वह कि जिसे मन प्राण से चाहा और हृदय कपाट में आज तक संजोए बैठे हैं. तब किसके लिए किया वह सब.

"लव डजट नीड ए कैंसल, नॉट मनी, बट ए टैंडर लुक दैट पीयर्स यू थ्रो योर हार्ट वैरी डीप वैरी डीप रोमांस एंड रोमांस."

कहीं पढ़ा था सो हर समय पंक्तियाँ हर्ट करती हैं. हाँ, कोई महल नहीं चाहिए. कोई पैसा नहीं चाहिए. बस एक नर्म-सा अहसास चाहिए जो कहीं गहरे दिल में उतर जाए, बस वही काफी है. वही चाहिए, वही चाहिए प्यार, बस प्यार

दिन भर की गहमागहमी में समय का पता

नहीं चलता. पर रात के ये तन्हा पल बहुत कष्ट देते हैं. स्त्री संसर्ग की प्यास नहीं है, पर एक कोमल नर्म बाँह, एक उष्ण हथेली माथे पर फिराकर कोई दुख-दर्द बाँट लें तो.

विभा ने साथ-साथ कंपीट किया और करण के समकक्ष हर प्रकार से योग्य सुंदर पत्नी भी साबित हुई थी. जीवन मंथर गति से चल निकला था, इसमें संशय नहीं. फिर कहाँ पड़ गई फाँस कि कोमल प्रेम तंतु करकती गरम रेत में परिवर्तित होने लगे हैं. नर्म मीठे बोल पैने कठोर शूल बन जाते हैं और वाक्‌युद्ध की पृष्ठभूमि बनने लगती है.

"ब्याह का निर्णय तो तुम्हीं ने लिया था."

"हाँ, लिया था."

"फिर ये रोज-रोज की खिच-खिच." रूखा तल्ख स्वर विभा को तिलमिला गया.

"हाँ, लिया था. निर्णय मैंने ही लिया था परंतु करण से ब्याह करने का निर्णय लिया था. एक सुदर्शन पुरुष, एक संपूर्ण व्यक्ति से प्यार किया था मैंने. इस आधे-अधूरे पुरुष से नहीं."

"तब फिर ये कैसा था? एकदूसरे को नोचते-खसोटते हम, क्या लाभ है इन सबमें."

"हाँ, लाभ नहीं है. हम दोनों को ही लाभ नहीं है. पर दो अन्य प्राणी भी तो हैं ये हमारे बच्चे, उन्हें भी तो अपना जीवन जीना है न."

"हाँ, सही कहती हो. पर जो वातावरण हम उन्हें दे रहे हैं, वह कैसा है, कभी सोचा है?"

"हाँ, सोचा है. बहुत सोचा है. पर चारा भी क्या है सिवाय उन्हें हॉस्टल में भेज देने के."

रूखे सपाट स्वर को सुनकर तो चिहुँक पड़े थे करण. परंतु 'ठीक है' मुँह से केवल दो शब्द निकल पाए. आँख मूँदकर चित्त पड़े रहे. डबडबाए नेत्रों में दृष्टि धुँधला गई. विभा के चेहरे पर दृष्टि टिका सकें, इतना साहस नहीं हुआ. फिर दो-चार दिन में जब टुअर से वापस आए तो बच्चे हॉस्टल जा चुके थे और विभा, वह तो पहले से ही अपना ट्रांसफर ले चुकी थी. केवल करण को सूचना भर देनी थी. अटैची, बिस्तर और अन्य सामान देखकर करण ने अनुमान लगा लिया. एक पल को तो जैसे धरती धसकने लगी थी परंतु विभा के चेहरे पर जो विजय का दर्प फैला था, सो क्रोध से देह सनसना उठी.



क्या कहा? तू पहले जहाँ काम करता था वो सेठ-सेठानी झगड़ालू थे, इसलिए तूने केवल एक मास में ही नौकरी छोड़ दी, पर हमारे यहाँ तो तू 15 दिन भी टिक नहीं पाएगा!

फिर माह, पखवाड़ा, तीन-चार माह तक अलग रहना, बच्चों की छुट्टियों में एकदूसरे के साथ बनावटी प्यार का प्रदर्शन, छुट्टी लेकर आना, सब कुछ बहुत अटपटा-सा.

घर से संबंध तो उसी दिन समाप्त हो गया था जब विभा से ब्याह किया था. अम्माँ-बाबूजी पुनः भाई की मृत्यु उन्हें तोड़कर रख गई है. पिछले दिनों गाँव जाने पर भाभी का वह कातर विलाप, कलेजे पर शूल उतर गया हो जैसे. बस तभी से कहीं एक स्थान पर टिक पाना संभव नहीं हुआ.

दस बरस बीत गए कि जैसे पूरी सदी ही बीत गई हो. विभा से अलगाव, बच्चे बड़े हो गए हैं और उन्हें सारी जानकारी भी हो गई है. फिर जो तनाव, जो बोझिल व्यवहार बन गया है, करण को असह्य होने लगा है वह सब.

घर, खेती सब भाई ने संभाल ली थी तो निश्चिंत हो गए थे. बेटी का ब्याह, छोटे बेटे की पढ़ाई, वह सब साधारण से प्रकरण हैं, परंतु आज ये जो नई समस्या मुँह बाए खड़ी है, उसका क्या निदान हो, समझ नहीं पाते.

रात को तन्हा पल तो जैसे सर्पदंश का अहसास कराते हैं. भीगी चाँदनी में बरसता अमृत क्यों गरल बन देह को गलाने लगा है. आईना देखकर स्वयं पर ही तरस खाने जैसी स्थिति क्यों अपने लगी है. बहुत परवश बहुत दुर्बल पाते हैं स्वयं को. पर अब तो इतनी दूर निकल आए हैं कि कभी भी विभा से पुनर्मिलन होगा, उम्मीद नहीं. आज भी जो सपनों में छू-छइयाँ खेलता गदराया यौवन देह को तरंगित करने लगता है, विभा का, नहीं, बस वही है जो प्रथम प्यार की अनुभूति थी.

छोटे शहर में कलक्टर साहब का पद हुत ऊँचा होता है इसमें संशय नहीं बंगला, कार, बैर, अर्दली, नौकर-चाकरों की भीड़ जो हर स
है सो उनका अपना निजी पल न
मन की व्यथा सुख कहीं किसी स

"साहेब, एक औरत आपसे मि
उस दिन सवेरे-सवेरे जब लॉन प
तो बैरे न कहा. अनखा उठे थे क
घंटा नर्म कोमल घास पर नंगे पाँव
भर का परिश्रम जो थका देता है,
मिलता है. उस समय कोई बाधा अ
पसंद नहीं आया.

"कोई गाँव का औरत है साहेब
क्या चाहती है." बैरा साहेब के उस
देखकर दो कदम पीछे हट गया.

"हूँ...तो उससे कहो कि ऑफिस
मिले."

"वो कहती है कि..." सहसा
गया.

"क्या कहती है?" अबकी डपट
तो, "कहती है कि...आपको जानत
शब्दों में पूरी बात कह गया तो बहुत
हुआ उन्हें, उन्हें जानत
कहीं...कहीं...भाभी तो नहीं...द्रुत गति
गेट तक चले आए, और फिर गो
गदराए पाँव फिर लाल छींटदार स
कनेर, सीधा पल्लू जो सामने से ले जा
पर डाल दिया गया था. हाथ में मोटे
माथे पर तनिक-सा घूँघट कुछ अनोख
है, पर ये होंठ, ये सुघड़ ऊँची नासि
गोरा लालछौंहा रंग कोमल सुचिक्कण
हथेली और कलाई ये तो...ये त
पहचानी-सी लगती है. फिर...

"भित्तर आनै को भी ना कहोगे." स
तो कोहरा छँट गया और जैसे आकाश
यह अपनत्व, यह प्रीति भरा संबोधन तो
पहले कभी नहीं मिला था.

"तुम...तुम...मेरा मतलब है कैसे
हुआ." आश्चर्यपूर्ण स्वर सहज औपचारि
भूला बैठा वे. उसे अंदर आने का आग्र
भी भूल गए. यह रुक्मिणी थी. पीछे ख
कोचवान और इसके चेहरे पर पड़ी धू
की परछाइयाँ स्पष्ट संकेत दे रही थीं कि
से यात्रा करके आई है.

"जाऊँ फिर." धीमा परंतु तल
"ओ...हाँ...आओ...आ जाओ." राह छो
बरामदे तक चले आए...पीछे-पीछे यं
रुक्मिणी स्वतः ही उनके साथ ड्राइं
आकर खड़ी हो गई. फिर बैठने का आ
उसे एक टक निहारते रह गए करण
सदियों-सदियों से एकदूसरे को देखते ह

– पृष्ठ 83 का शेष भाग/अपुरुष

जानकारी रहती है. रोगी अपने कष्ट के अतिरिक्त डॉक्टर से व्यक्तिगत स्तर की बातें भी करते रहते हैं.

"कोई डॉक्टरी इलाज भी किया?" मैंने पूछा.

"जी हाँ," दलबीर ने तड़ाक से उत्तर दिया. "वह भी करके देख लिया." आप के कस्बे की मशहूर पुरानी कानी नर्स की मुद्दत दवा कराई, फिर गाजियाबाद की प्रसिद्ध डॉक्टरनी प्रतिभा के पास ले गया.

युवक से विदित हुआ कि डॉक्टरनी ने दवा की परची के साथ युवक को अपना वीर्य टेस्ट कराने की राय भी दी थी.

वीर्य टेस्ट वाली बात को युवक ने अन्यमनस्कता से लिया. यह उसके मतलब की बात न थी. मालूम हुआ कि वह दोबारा तो अपनी पत्नी के साथ फिर डॉक्टर प्रतिभा के पास शहर न गया, पर ग्रामीण मनोवृत्ति के अनुसार कैमिस्ट को नुस्खा दिखाकर वही दवा एक के स्थान पर तीन महीने सेवन की. गाँव का डॉक्टर होने के कारण मैं जानता था कि शहर के डॉक्टर जिस मंद स्वर तथा अभिजात्य लहजे में अपनी बात कह गुजरते हैं, वह आसानी से ग्रामीणों की पकड़ में नहीं आती! न डॉक्टरनी ने ही बहुत बल देकर वह बात समझाई होगी, न वह के मतलब की ही बात थी. पत्नी को भी कहाँ मालूम होगा कि संतान न होने के लिए स्त्री ही नहीं, पुरुष भी जिम्मेदार हो सकता है. उसके जाने तो वह ठीक मरद था.

मैंने शहर की डॉक्टरनी के मत की पुष्टि करते हुए दलबीर को अपना वीर्य टेस्ट कराने की सलाह दी और समझाया कि पुरुष के वीर्य में करोड़ों की तादाद में अदृश्य शुक्राणु रहते हैं, जिनकी सजीवता, संख्या और गतिशीलता का संतानोत्पत्ति में बड़ा महत्त्व है और किसी-किसी केस में तो वे सर्वथा अनुपस्थित होते हैं, तब तो संतान होने की कोई संभावना ही नहीं बनती.

किसी बात को यदि कोई समझने के लिए तैयार ही न हो तो वह बात शायद उसे सुनाई भी कम ही पड़ती है. युवक ने मेरी बात को भी अनसुनी कर दी. युवक ने प्रतिवाद में कुछ कटु होते हुए उद्धत स्वर में कहा, "पानी टेस्ट वाली तो बेकार की बात है वरना क्या पानी टेस्ट करके यह भी बताया जा सकता है कि किसी के पानी से लड़कियाँ ही लड़कियाँ होंगी, लड़का कोई होगा ही नहीं."

यह असंबद्ध इंगित उस ने अपनी पत्नी को आहत करने की गरज से किया था.

केला की बहनें ही बहनें थीं, कोई भाई न था. उसके पिता के घर में अनचाही लड़कियाँ आती गई थीं. जिसकी चाहत थी, वह अंत तक न आया. अपने मायके में भी वह मिलते-जुलते हालात देखती आई थी. अपनी माँ को भी उसने जड़ीबूटियाँ घिसते-पीसते ही देखा था. उसने इसके लिए अपनें बचपन में अपनी माँ को बार-बार प्रताड़ित होते देखा था. एक तरह के हाय के बीच उसका बचपन गुजरा था, दूसरी तरह के हाय के बीच उसकी जवानी जा रही थी. जिस तरह बचपन में उसने अपनी माँ को सब निशब्द बर्दाश्त करते देखा था, बहुत कुछ उसी तरह सब सहना उसकी भी प्रकृति बन गई थी.

जिस गाँव भोमई में केला का ब्याह हुआ था, उसकी हालत उसके मायत गाँव से भी बदतर थी. रोगियों को देखने के सिलसिले में मैं कई बार दलबीर के गाँव भोमई जा चुका था. वहाँ की

जब मैंने डॉक्टर प्रतिभा को सूचित किया कि दलबीर के घर में पुत्र ने जन्म लिया है तो वे एकदम से चौंक गईं, बोलीं, "क्या? उसे तो बच्चा हो ही नहीं सकता था, उसके सीमन में तो स्पर्म टोटली निल थे." अब चौंकने की बारी मेरी थी मैंने आश्चर्य से पूछा, "क्या उसका सीमन टेस्ट हुआ था?"

स्थिति मुझे अच्छी तरह मालूम थी. भोमई में लड़कियों का रिश्ता करते दूर पास के गाँवों के लोग घबराते थे. वहाँ न कोई सड़क था, न कोई सवारी. एक कुँआ तक नहीं था वहाँ. कस्बे के लिए वहाँ के वासियों को छः किलोमीटर रास्ता पैदल ही तय करना होता था. नदी जरूर बहती थी गाँव से लगकर, परंतु यह तो उस गाँव की औरतें ही जानती थीं कि घर से नदी तक का जरा-सा फासला भी कितना था. पीने से लेकर नहाने तक का पानी सिर पर ढोकर लाना होता. क्या आश्चर्य कि इलाज के नाम पर वहाँ जड़ी-बूटी, खोर-खटके, गंडे-तावीज की ही प्रधानता थी.

कुछ असंतुष्ट से वे दोनों मेरे क्लीनिक से उठकर चले गए. मुझे आश्चर्य हुआ कि जहाँ पुरुष की प्रतिक्रियाएँ इतनी उग्र तथा तीव्र थीं, वहीं ऐसा प्रतीत होता था कि स्त्री का जैसे इन सबसे कोई सरोकार, कोई लेना-देना ही न हो. वह निर्लिप्त और निर्द्वंद्व दिखाई पड़ती थी. एक सीधी-सादी ग्रामीण स्त्री की
अनुमान मुझे था कि कुछ अप
समझ, कुछ पारिवारिक पृष्ठभू
ससुराल में पति के दूसरे विवाह
रही खिचड़ी के बारे में जानकर वह
होगी. मुझे वह उस अपराधी की
जिसके केस का फैसला सुनाया जा
अब अगली अदालत में मामला
उत्साह ही उसके मन में शेष न हो

कुछ ही दिनों बाद सुनने में आय
के दूसरे ब्याह की बात चल रही
इतने क्रुद्ध तथा युवती के इतने नि
कारण मुझे इस केस में खासी दिल
थी. मेरे मन में सवाल उठता कि दू
पीछे कोरी संतान लालसा ही कारण
लगे हाथ एक नवीन रति सहचरी प्रा
गुंजाइश के कारण भी दलबीर बदल

उस गाँव से आनेवाले मरीजों से
हो गई थी कि युवक ने दूसरा ब्याह
तब मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उ
युवक की पहली पत्नी के दुर्भाग्य
अधिक खेद हो रहा था या उस नवा
वधु के अंधकारमय भविष्य का अधि
हो रहा था.

एक बरस बीतते-बीतते भोमई के
मुझे यह खबर मिली कि बड़ी ने
जनम दिया है और उसके परिवार
खुशियाँ मनाई जा रही हैं. गाँव के
ईश्वर की अद्भुत लीला बताते हुए
उसके यहाँ देर बेशक है, पर अँधेर
लोगबाग बातचीत में कई अन्य उदा
सुनाते, जब शादी के कई-कई स
पति-पत्नी माता-पिता बने थे.

तभी जिला मेडिकल एसोसिएशन
मीटिंग में मेरी मुलाकात डॉक्टर प्रतिभ
बातों ही बातों में भोमई के दलबीर क
आया. मुझे विदित था कि दलबीर ने अ
का इलाज उन्हीं से ही गाजियाबाद में क
जब मैंने डॉक्टर प्रतिभा को सूचित कि
दलबीर के घर में पुत्र ने जन्म लिया
एकदम से चौंक गईं, बोलीं, "क्या?
बच्चा हो ही नहीं सकता था, उसके सी
स्पर्म टोटली निल थे."

अब चौंकने की बारी मेरी थी. मैंने
से पूछा, "क्या उसका सीमन टेस्ट हुआ
तो इस टेस्ट का उपहास करता था तथ
जिकर मात्र से ही बिदकता था."

डॉक्टर प्रतिभा ने कहा, "अपनी

ेरे सुझाव पर भी उसने ऐसी ही प्रतिक्रिया की थी, पर एक दिन अकेले आकर वह सीमन टेस्ट करा गया था, परंतु रिजल्ट पर से विश्वास हुआ और न ही वह मेरे पास कभी अकेले या अपनी पत्नी के साथ "

मैं उस बात को सुनकर डॉक्टर की तरफ आश्चर्यमिश्रित नजरों से देखने लगा तो ने चुटकी लेते हुए जरा मुसकराकर कहा, या हुआ? बच्चे का क्या है, दलबीर को सकता था, उसकी पत्नी को तो हो ही है."

पने मन में मैं केला के पक्ष में तर्क उठाता. पूरे दस साल वह एक करार के तहत यणा रही थी. परिवार की लांछनाएँ, नाएँ उसने चुपचाप सही थीं. एक धिनी की भाँति सिर नवाए वह पति और की सेवा में जुटी रही थी. इस अविचल ीलता के पीछे एक संबल था कि वह पति की एकमात्र पत्नी थी. अपमानित होने वजूद गृहस्वामिनी थी, पर वही एकाधिकार दूसरे पक्ष की ओर से गाजे-बाजे के साथ हपूर्वक, सरेआम तोड़ दिया गया तो न का बोझ वह किसलिए ढोती. जो बंधन उसे बाँधे था, टूट गया. वह लक्ष्मण रेखा के बाहर आ गई.

एक दिन उसी दंपती ने बच्चे के साथ मेरे क्लीनिक में प्रवेश किया. बच्चा माँ की गोद में था. दोनों पर मेरी नजर पड़ी. माँ तो सुंदर थी ही, बच्चा उससे भी अधिक सुंदर था.

मेरे क्लीनिक में युवक का प्रवेश एक विजेता के सदृश हुआ. उसे शुरू से ही अपनी मर्दानगी पर कोई शुबहा न था और अब तो वह प्रमाणित हो चुकी थी.

बच्चे को दिखलाते समय इस मौके पर भी दलबीर अपनी पत्नी की भर्त्सना करने की अपनी आदत से चूक नहीं रहा था. अपनी पत्नी की ओर उँगली उठाते हुए दलबीर ने कहा, "इसी ने बच्चे की हालत इतनी खराब कर दी." मैं शुरू से ही आपको दिखाने के लिए कह रहा था, पर यह पढ़े हुए पानी पिला रही थी. इन पुरानी बातों में अब क्या रखा है डॉक्टर साहब. आज मैंने इसकी बात नहीं मानी, जबरदस्ती लाया हूँ."

मैंने अपना आश्चर्य दबाते हुए मुद्दे की बात पूछी, "यह कितने महीने का है?"

"फागुन का जनम है" इसका दलबीर ने उत्तर दिया.

मुझे जानकारी थी कि दलबीर की दूसरी शादी के समय कुछ दिनों के लिए केला मायके चली गई थी.

मैंने दूसरा सवाल किया, "किस हफ्ते का?"

केला आशंकित हो उठी. मुझसे आँखें चार होते ही उसने अपनी दोनों पलकें झुका लीं, फिर जो उठाईं तो उसकी कातर दृष्टि में भय और याचना के भाव स्पष्ट थे. एक रंगे हाथ पकड़ में आया व्यक्ति जैसे गिड़गिड़ा रहा हो. उसकी मर्मभेदी विह्वल दृष्टि ने मेरे सामने सारी स्थिति स्पष्ट कर दी. युवती की आँखें बार-बार कह रही थीं कि उसके बालक को मैं उसके पति की नजरों से ही देखूँ.

यथास्थिति को मान्यता देने के एक पक्ष के मौन निवेदन को दूसरे पक्ष ने कब अपनी मौन स्वीकृति दी, इसकी किसी तीसरे को खबर न हुई.

बच्चे की दवा लेकर माता-पिता जब चलने को हुए, केला ने सलज्ज कृतज्ञ स्वर में कहा, "बालक को अपना आशीर्वाद दीजिए डाक्टर साहब."

मैंने स्नेह से बच्चे के सिर पर हाथ रखते हुए युवती की तरफ देखा और कहा, "सुखी रहो." ■

पृष्ठ 32 का शेष/रिश्तों की सुगंध

की जिम्मेदारी सहर्ष उसने अपने कंधों पर उठा ली थी. अनीता की समस्या समझकर उसने मध्यस्थता करने का विचार किया. यद्यपि सतीश ने उसे समझाना चाहा था कि माँ कभी इस बात के लिए तैयार नहीं होंगी, किंतु उसने कहा कि प्रयास करने से पूर्व ही हार मान लेना बुद्धिमानों का काम नहीं है. वह भी माँ हैं, बेटी का भला चाहती हैं, सिर्फ अहम आड़े आ रहा है.

"ठीक है, जैसा तुम उचित समझो, करो." सतीश ने हथियार फेंकते हुए पुनः कहा, "तुम माँ के क्रोध से वाकिफ नहीं हो, अतः जो भी कदम उठाना, सोच-समझकर उठाना."

सुकन्या मौका ढूँढ ही रही थी कि कब कैसे बात प्रारंभ की जाए. एक दिन नीता देवी ने उसे आवाज लगाई और बोली, "बहू, घुटने में बहुत दर्द हो रहा है, उठा नहीं जा रहा. जरा मलहम उठाकर दे देना, लगा लूँ."

"माँजी, मैं लगा देती हूँ," सुकन्या ने मरहम लाकर उनसे कहा.

"नहीं बेटी, तू आराम कर ले. पूरे दिन काम करके थक जाती होगी. एक दिन की तो बात है नहीं. बुढ़ापे का दर्द है, मौत के साथ ही जाएगा. मैं लगा लूँगी."

"नहीं माँजी! ऐसे अपशब्द क्यों बोलती हैं आप? आपका प्यार एवं आशीर्वाद सदैव हमारे साथ रहे, यही कामना है," घुटने पर दवाई लगाते हुए सुकन्या बोली.

"तू कितनी अच्छी है, मेरा कितना ध्यान रखती है?" भावविभोर होते हुए नीता देवी बोलीं.

"माँजी, आप सचमुच मुझसे प्रसन्न हैं तो मैं एक बात कहना चाहती हूँ. वादा कीजिए नाराज नहीं होंगी."

"बोल तो सही, तेरी प्रत्येक बात मुझे मंजूर है." चेहरे पर आत्मसंतोष एवं प्रसन्नता झलक रही थी.

"माँजी, आप जानती हैं कि प्यार सिर्फ एक बार होता है, वह भी अचानक. यही क्या कम है कि दीदी पिछले चार वर्षों से आपकी सहमति की प्रतीक्षा कर रही हैं और सलीम साहब भी दीदी की ही प्रतीक्षा में कुँआरे बैठे हैं. सबसे बड़ा धर्म तो मानव धर्म है और फिर सलीम साहब ने कहा भी है कि अनीता दीदी को धर्म परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है. वह अनीता बनकर ही उनके घर में प्रवेश करेंगी और अपने धर्म तथा रीतिरिवाजों को मानने के लिए स्वतंत्र रहेंगी."

"किंतु हमारा समाज..."

"समाज के लिए क्या आप अपनी पुत्री की भावनाओं को रौंद देंगी, उसके स्वप्न देंगी? मेरी खातिर ही कम से क भावनाओं का सम्मानकर, सम्मानपू डोली को विदा कर दीजिए."

नीता देवी की स्वीकारोक्ति प प्रसन्नता से पागल हो उठे थे. बेटी क की जिद के पाटों में वह अकेले ह थे. हृदय परिवर्तन का कारण सु जानकर कह उठे, "कौन कहता है अपनी नहीं हो सकती. यदि दोनों ओ सागर लहराता हो तो राह में कितनी क्यों न आएँ, अपने वेग से उन च तोड़कर, समतल राह बनाकर अँधेरे भी प्रकाश की किरणें बिखेरी जा स

नीता देवी, अनीता को विदा करते मन से सोच रही थीं कि वर्षों से व्यर्थ रिश्तों के प्रति दुराग्रह पाले हुए थी ननद वाले घर में बेटी का विवाह नह रिश्ते आखिर रिश्ते ही होते हैं. इनकी म नकारा नहीं जा सकता. हाँ, वे परिव जरूर होते हैं. समय के साथ बहते हुए कभी-कभी नाजुक हो जाते हैं, किंतु समय पर सुगंध बिखेरकर ये जीवनरूपी को महकाते भी हैं, इसमें कोई शक नहीं.

जीतिए 10 हजार रु. के गिफ्ट हैंपर

माधुरी महिला पाठक सर्वेक्षण

रिवारिक विवरण

पकी आयु.................. परिवार के सदस्यों की संख्या..........

प नौकरी करती हैं? हाँ ☐ नहीं ☐

पकी व पति की सम्मिलित मासिक आय: रु. 1,500 से कम ☐

रु. 1,500 से 2,500 ☐ रु. 2,501 से 4,000 ☐

रु. 4,001 से 6,000 ☐ रु. 6,000 से अधिक ☐

पकी शिक्षा: मैट्रिक या मैट्रिक से कम ☐ इंटरमीडिएट ☐

स्नातक ☐ स्नातक से अधिक ☐

विजेताओं के नाम नवंबर अंक में प्रकाशित किए जाएंगे



त्र व्यवहार के लिए पता :
धुरी, ए-28, सेक्टर 9,
एडा - 201301. (यू. पी.)

आपको माधुरी कैसी लगी? बहुत अच्छी ☐ ठीक-ठीक ☐ अच्छी नहीं ☐

आपकी राय में माधुरी में किस विषय पर और सामग्री जोड़ी जाए, जिससे आम पाठकों को पत्रिका और अधिक रोचक लगे:

....

....

....

....

माधुरी के लिए 10 से 20 शब्दों का स्लोगन लिखें..........................

....

....

आपका पूरा पता:

....

....

....

त्येक अंक में ड्रा द्वारा 10 भाग्यशाली विजेताओं को एक-एक हजार रु. का गिफ्ट … दिया जाएगा.


आह! क्या खुशबूदार, लजीज मिठाइयाँ
समय है राष्ट्रीय उत्सव पहर है गुलजार. आइए, इस उत्सव में
शामिल हो जाएँ. अपनी को मधुरता से भर लें, इन लजीज
मिठाइयों का स्वाद लेकर बरफी, केसर, पिस्ते और खोये
से बनी मिठाइयाँ, बादाम रोल और मूंग दाल की बरफी
खाते ही कह उठेंगे ऐसी कभी नहीं खाई.
Haldiram's
FINEST INDIAN SWEETS



ह सितंबर का, गुलशन में फूल खिले कई रंग के, बिखरे पराग
ा, ऐसी ही अद्भुत स्वाद वाली रंग-बिरंगी मिष्ठी है कलाकंद, मूंग
ा और खोये की चाकलेट वाली बरफी, केसर के पेड़े, बादाम और
ते से सजी शाही बरफी. शेष है बस शहाना अंदाज में इन्हें पेश
ने का.

पालक करी में पनीर कोफ्त

चार व्यक्तियों के लिए.
तैयारी में लगनेवाला समय : दस मिनट.
बनने में लगनेवाला समय : 35 मिनट.

सामग्री : 500 ग्राम पनीर, 250 ग्राम/पौने दो बड़े चम्मच उबले व मसले आलू, 50 ग्राम/पौने चार बड़े चम्मच कॉर्न फ्लावर, चार ग्राम/पौने दो छोटे चम्मच नमक, तीन ग्राम/आधा छोटा चम्मच सफेद गोल मिर्च पाउडर, तलने के लिए तेल.

करी के लिए सामग्री : एक किलो पालक, 50 मिलीलीटर/पौने चार बड़े चम्मच तेल, पाँच ग्राम/एक छोटा चम्मच कटे लहसून, 100 ग्राम/आधा कप टमाटर प्यूरी, तीन ग्राम/आधा छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर, तीन ग्राम/ आधा छोटा चम्मच हल्दी पाउडर, तीन ग्राम/आधा छोटा चम्मच धनिया पाउडर, पाँच ग्राम/एक छोटा चम्मच नमक, 600 मिलीलीटर/तीन कप पानी, दो ग्राम/एक-तिहाई छोटा चम्मच गरम मसाला.

विधि : पनीर और आलुओं के कॉर्न फ्लॉवर, नमक और सफेद गोल मिर्च पाउडर के साथ मिलाएँ. मिक्सचर को 16 समान आकार की गोलियों में बाँट दें.

कड़ाही में तेल गरम करें. थोड़ा-थोड़ा करके गोलियों को सुनहरा भूरा होने तक तलें. पालक को उबालकर प्यूरी बना लें.

एक बरतन में तेल गरम करें. लहसु की प्यूरी डालकर दो-तीन मिनट त टमाटर प्यूरी डालकर अच्छी तरह मिल

लाल मिर्च पाउडर, धनिया पाउड पाउडर तथा नमक डालें. चार-पाँच ि पकाएँ. पानी डालें और इसे उबलने दें. पनीर की गोलियाँ डालें, आँच धीमी करे पाँच-सात मिनट तक पकने दें. गरम मस और पकाएँ. करी जब आधी रह जाए, उतार लें. गोली वाले कोफ्ते को सावध निकालकर परोसनेवाली डिश में रखें. करी डाल दें और नान के साथ गरम-गरम



पनीर अकबरी

ार व्यक्तियों के लिए.
यारी में लगनेवाला समय : 20 मिनट.
नाने में लगनेवाला समय : 35 मिनट.
ामग्री : 600 ग्राम पनीर.

रने के लिए : 20 ग्राम/चार छोटे चम्मच, 30 ग्राम/दो बड़े चम्मच पनीर, दस दो छोटे चम्मच कटे काजू, पाँच ग्राम/एक चम्मच कोई भी अचार मसाला; 20 ग्राम/ छोटे चम्मच टमाटर की गाढ़ी प्यूरी.

ोल/बैटर के लिए : 50 ग्राम/सवा तीन चम्मच फ्लावर, तीन ग्राम/आधा छोटा च नमक, चुटकी भर पीला रंग, जरूरी पानी.

री के लिए : दस मिलीलीटर/2 छोटे चम्मच तेल, दस ग्राम/दो छोटे चम्मच अदरक लहसुन का पेस्ट, 500 ग्राम/ढाई कप टमाटर की ताजी प्यूरी, पाँच ग्राम/एक छोटा चम्मच नमक, तीन ग्राम/आधा छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर, एक चुटकी सफेद गोल मिर्च पाउडर, एक चुटकी मेथी पाउडर, दस ग्राम/दो छोटे चम्मच गरम मसाला, दस ग्राम/दो छोटे चम्मच मक्खन, 20 ग्राम/चार छोटे चम्मच क्रीम.

विधि : पनीर को 16 टुकड़ों में काट लें.

भरने के लिए : खोया, पनीर, काजू, अचार मसाला और टमाटर प्यूरी को एक साथ मिलाएँ. पनीर के दो टुकड़ों के बीच भरें.

घोल/बैटर के लिए : कॉर्न फ्लावर, नमक, पीला रंग और पानी को एक साथ मिलाएँ.

पनीर के सैंडविच को घोल में डूबोएँ और दो-तीन मिनट तक गरम तेल में तलें. और निकालकर अलग रख लें.

एक बरतन में दस मिलीलीटर तेल गरम करें और अदरक, लहसुन का पेस्ट डालकर दो-तीन मिनट तक चलाएँ. टमाटर प्यूरी डालकर आठ-दस मिनट तक गाढ़ा होने तक पकाएँ. अब सारे मसाले डालकर तीन-चार मिनट तक पकाएँ. मक्खन और क्रीम डालकर चलाएँ, फिर चूल्हे से उतार लें. अब एक प्लेट में तले हुए पनीर के सैंडविच सजा लें तथा ऊपर से करी डालें.

क्रीम से सजाकर गरम-गरम परोसें.



लौकी नजाकत

चार व्यक्तियों के लिए.

तैयारी में लगनेवाला समय : एक घंटा.

पकने में लगनेवाला समय : 25-30 मिनट.

सामग्री : 650 ग्राम लौकी (मध्यम आकार की), 50 ग्राम खोया, 200 ग्राम (1 कप) पनीर, 40 ग्राम (3 बड़े चम्मच) काजू टुकड़ा, 30 ग्राम (2 बड़े चम्मच) तरबूज की मींग (मगज), 25 ग्राम (2 बड़े चम्मच) किशमिश, 3 ग्राम (आधा चाय का चम्मच) लाल मिर्च पाउडर, 2 ग्राम (एक-तिहाई चाय का चम्मच) गरम मसाला, नमक स्वादानुसार.

करी के लिए सामग्री : 50 ग्राम (पौने चार चम्मच) पकाने का तेल, 4 लौंग, 4 छोटी इलायची, 4 बड़ी इलायची, 2 इंच का टुकड़ा दालचीनी, 4 तेजपत्ता, 100 ग्राम (आधा कप) अदरक व लहसुन का पेस्ट, 100 ग्राम (आधा कप) काजू का पेस्ट, 125 ग्राम (आधा कप) दही, 80 ग्राम (साढ़े पाँच बड़े चम्मच) प्याज का पेस्ट, 180 ग्राम (1 कप) टमाटो प्यूरी, नमक स्वादानुसार, 12 ग्राम (ढाई छोटे चम्मच) पिसा धनिया, 5 ग्राम (1 छोटा चम्‌ लाल मिर्च, 2 ग्राम (पौना छोटा चम्‌ काली मिर्च, 100 ग्राम (आधा कप) बूँद केवड़ा.

विधि : 1. लौकी को छीलकर काटकर लंबे चाकू से बीच का गूदा एक ट्यूब-सी बना लें.

2. खोया, पनीर काजू, मगज, लाल मिर्च पाउडर, धनिया और नम‌ तरह मिलाकर लौकी में भर लें. फिर आटे से बंद कर दें.



3. कड़ाई में घी के लौकी को तल लें. लौकी का रंग न पाए. उतारकर घी से लें.

करी बनाने की

4. भरी तेल वाले पै‌ गरम करें. लौंग तेजप‌ इलायची, छोटी इ‌ दालचीनी डालकर तक भूनें.

5. अदरक लहसु‌ पेस्ट डालें और थोड़ा-‌ डालकर एक मिन‌ हिलाएँ.

6. दही में काजू व‌ मिलाकर पैन में डालक‌ मिनट तक चलाएँ.

7. प्याज का पेस्ट टमाटो प्यूरी, नमक, लाल मिर्च, काली पाउडर डालकर और आँच को हलका कर करी को गाढ़ा होने तक व साथ-साथ हिला‌ रहें.

8. आँच से उ‌ तेजपत्ता निकाल दें औ‌ और केवड़ा डाल दें.

9. पहले की प‌ लौथी के 1 इंच मोटे काटकर सर्विंग डिश मे‌ और करी से सजाएँ फौरन सर्व करें.

मखाने की खीर

ार व्यक्तियों के लिए.

ैयारी में लगनेवाला समय : 15 मिनट.

काने में लगनेवाला समय : 40 मिनट.

ामग्री : 50 ग्राम/पौन चार बड़े चम्मच फूल मखाना, डेढ़ लीटर/सात दूध, 20 ग्राम/चार छोटे चम्मच किशमिश, चुटकी भर छोटी इलायची र, चुटकी भर जावित्री पाउडर, चुटकी भर जायफल पाउडर, 100 आधा कप चीनी, सात ग्राम/पौने दो चाय का चम्मच पिस्ता, सात पौने दो चाय का चम्मच काजू, सात ग्राम/पौने दो चाय का चम्मच म.

ि‍धि : मखानों को साफ कर रख लें. कड़ाही में तेल गरम करें व न आँच पर मखानों को सुनहरा भूरा व करारा होने तक तल लें. कड़ाही न निकालकर अतिरिक्त तेल निकल जाने दें. तले हुए मखानों को तोड़

क बरतन में दूध गरम करें और उबलने दें. तोड़े हुए मखाने, मिश, इलायची पाउडर, जावित्री पाउडर, जायफल पाउडर डाल दें. धीमी कर 20 मिनट तक पकाएँ. बराबर चलाती रहें, जब तक कि घटकर तीन-चौथाई रह जाए.

ीनी डालकर चलाएँ. चूल्हे से उतारकर सर्व करनेवाले बरतन में डाल स्ता, बादाम तक काजू से सजाकर गरम-गरम परोसें.



दाल पंचमेल

चार व्यक्तियों के लिए.

तैयारी में लगनेवाला समय : 15 मिनट

पकाने में लगनेवाला समय : एक घंटा

सामग्री : 40 ग्राम मलका मसूर दाल, 40 ग्राम/ढाई बड़े चम्मच चना दाल, 40 ग्राम/ढाई बड़े चम्मच धुली उड़द दाल, 40 ग्राम/ढाई बड़े चम्मच अरहर दाल, 40 ग्राम/ढाई बड़े चम्मच धुली मूँग दाल, जरूरत के अनुसार पानी, दस ग्राम/दो बड़े चम्मच नमक, पाँच ग्राम/एक छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर, 35 मिलीलीटर/एक-तिहाई बड़ा चम्मच तेल, 15 ग्राम/एक



बड़ा चम्मच मक्खन, पाँच ग्राम/एक छोटा चम्मच जीरा, दस ग्राम/दो छोटे चम्मच कटी अदरक, 60 ग्राम/चार बड़े चम्मच कटे टमाटर, पाँच ग्राम/एक छोटा चम्मच हरी धनिया कटी हुई.

विधि : सारी दालों को साफ कर धो लें.

दालों को पानी, नमक, हल्दी पाउडर और लाल मिर्च पाउडर के साथ एक बरतन में डालकर धीमी आँच पर 40-45 मिनट तक पकाएँ, जब तक कि वे गल न जाएँ.

आँच से उतारकर अलग रख लें. तेल व मक्खन को एक बरतन में गरम करें. जीरा डालें, फिर अदरक डालें, और हलका भूरा होने तक भूनें. टमाटर डालें और एक मिनट तक चलाएँ. हरी धनिया डालकर चलाएँ और चूल्हे से उतार लें.

अब पकी हुई दालों को इस मिश्रण में डालकर गरम पेश करें.

टंगड़ी कबाब

चार व्यक्तियों के लिए.

तैयारी में लगनेवाला समय : एक घंटा.

बनाने में लगनेवाला समय : 15-20 मिनट.

सामग्री : 12 चिकेन ड्रमस्टिक, 20 ग्राम/चार छोटे चम्मच अदरक व लहसुन का पेस्ट, एक चुटकी सफेद गोलमिर्च पाउडर, 250 ग्राम/सवा कप दही, 150 ग्राम/दो-तिहाई कप क्रीम, चार ग्राम/तीन-चौथाई छोटा चम्मच नमक, पाँच मिलीलीटर/एक छोटा चम्मच सिरका, दो ग्राम/एक-तिहाई बड़ा चम्मच सफेद गोलमिर्च पाउडर, 30 ग्राम/दो बड़ा चम्मच अदरक, लहसुन का पेस्ट, चार ग्राम/तीन-चौथाई कप गरम मसाला, चार अंडे फेंटे हुए, 75 ग्राम/पाँच बड़े चम्मच अच्छी तरह पिसे हुए काजू, केसर की कुछ लड़ियाँ, चुपड़ने के लिए घी.

विधि : चिकेन ड्रमस्टिक को धोकर साफ कर लें. लंबाई में चार-पाँच चीरा लगा दें. पहले लिखे अदरक-लहसुन पेस्ट, सफेद गोलमिर्च पाउडर, नमक और सिरके को मिलाकर पेस्ट बना लें. ड्रमस्टिक के ऊपर इस पेस्ट को लगा दें. दरारों/चीरे के अंदर भी लगा दें. 15 मिनट के लिए फ्रीज में रख दें. दही, क्रीम, अदरक-लहसुन पेस्ट, सफेद गोल मिर्च पा[ड] मसाला, नमक तथा केसर के साथ इसे मेरिनेड करें (मिलाकर कुछ देर [छ] 15 मिनट के लिए फिर से फ्रिज में र[ख]

ड्रमस्टिक को छेद कर आधे पकने में तीन-चार मिनट के लिए सेंकें/भूनें. निकालकर दो-तीन मिनट के लिए ल[ट]

इन पर तेल लगाएँ और पूरा पकने पीसे हुए काजू और फेंटे हुए अंडों को मिलाएँ. ड्रमस्टिक पर लगाएँ और अंडों तक फिर से सेंकें. निकालकर गरम-गर[म]



भल्ले बल्ले : दही भल्ले

चार व्यक्तियों के लिए.
तैयारी में लगनेवाला समय : दो घंटे.
पकाने में लगनेवाला समय : 30 मिनट.

भल्ले के लिए आवश्यक सामग्री : 200 /एक कप धूली उड़द दाल, 600 मिलीलीटर/तीन कप पानी, पाँच ग्राम/एक छोटा चम्मच जीरा, दस ग्राम/दो छोटा चम्मच कटी अदरक, पाँच ग्राम कटी हुई हरी मिर्च, 250 मिलीलीटर/पौने दो कप तेल, दो ग्राम/एक तिहाई-छोटा चम्मच नमक.

दही के मिक्सचर के लिए : 400 ग्राम/दो कप गाढ़ा फेंटा हुआ दही, पाँच ग्राम/एक छोटा चम्मच चीनी, दो ग्राम/एक-तिहाई छोटा चम्मच नमक. चार ग्राम/तीन-चौथाई छोटा चम्मच भूना व पिसा जीरा, दो ग्राम/एक-तिहाई छोटा चम्मच काला नमक, दो ग्राम/एक-तिहाई छोटा चम्मच सफेद गोल मिर्च पाउडर.

सजाने के लिए : पाँच ग्राम/एक छोटा चम्मच अदरक कटी हुई, पाँच ग्राम/एक छोटा चम्मच हरी मिर्च कटा हुआ, पाँच ग्राम/एक छोटा चम्मच हरी धनिया कटा हुआ, एक चुटकी लाल मिर्च पाउडर, एक चुटकी भुना पिसा हुआ जीरा, चार पुदीने की पत्तियाँ, 40 ग्राम इमली की चटनी.

विधि : उड़द की दाल साफ करके दो घंटे के लिए पानी में भिगो दें. पानी से निकालकर महीन पेस्ट बना लें. जरूरत हो तो थोड़ा पानी डालें. अब इसे एक बरतन में डालें. नमक, जीरा, अदरक, हरी मिर्च डालकर अच्छी तरह मिलाएँ. समान आकार की गोलियाँ बना लें.

कड़ाही में तेल गरम करें. एक बार में कुछ गोलियाँ डालकर तलें. गीले हाथों का इस्तेमाल करें व तलने के पहले अँगूठे से गोली के बीच में एक छिद्र बना दें. गोलियों के सुनहरा भूरा होने पर निकालें और अतिरिक्त तेल निकल जाने दें. सारे तैयार भल्लों को पर्याप्त हलके गरम पानी में मुलायम होने तक डुबोएँ.

फेंटे हुए दही में चीनी, नमक, जीरा पाउडर, काला नमक और सफेद गोलमिर्च पाउडर डालें. अच्छी तरह मिलाएँ.

भल्लों को पानी से निकालें. दबाकर अतिरिक्त पानी निकाल दें और दही में डाल दें. 10-15 मिनट तक रहने दें. अदरक, हरी मिर्च, हरा धनिया, लाल मिर्च [illegible] [illegible] पाउडर, [illegible] की पत्तियों व [illegible] की [illegible] के साथ [illegible] ठंडा-ठंडा [illegible]. ■



अशोक होटल के मास्टर शेफ्स द्वा[illegible] निर्मित व्यंजन संग्रह 'रायल [illegible] रेसिपी' से साभार.



वाह! हर दिल अजीज
मिठाइया
हम यह नहीं आइए आपका मुँह मीठा कराते हैं. ये
मिठाइयाँ बस इतना नहीं करती बल्कि दीवाना बना देंगी
आपको अपनी खुशबू, सजावट से. असर ऐसा करेंगी,
बार-बार आप ललक उठेंगे को. थाली में सजी तिरंगी
बरफी, कलाकंद, केसर पेठे, खोये के बॉल और
मिल्क केक, आपके लिए ही तो कैसी?
Haldiram's
FINEST INDIAN SWEETS


हा! ऐसी सुंदर स्वादिष्ठ मिठाइयाँ, ज्यों आधा चाँद आकर थाली
सिमट गया हो. स्वाद की मत पूछिए, सुगंध ही खींच लेगी आपको.
नहीं है इस में. किसी को अपना बना लेने के लिए काजू रोल,
ते से सजे बॉल, तिरंगी केसर, खोये की बरफी और पाकीजा, सभी
तो है.
Haldiram's

इकेबाना

फूलों की सुंदरतम व्यवस्था





इकेबाना जापानी शब्द है और इसका शाब्दिक अर्थ है, 'इके' अर्थात जीवित और 'बाना' अर्थात फूल. व्यावहारिक दृष्टि से इसका अभिप्राय है एक खास सौंदर्य दृष्टि से फूलों को सजाना, प्रकृति को बाहर से घर के अंदर लाना. स्वाभाविक है कि इकेबाना की शुरुआत भी जापान से हुई. दरअसल बौद्ध संप्रदाय में उपासना पद्धति के तहत फूलों को सुंदर तरीके से प्रस्तुत करने की परंपरा थी. छठी शताब्दी में बौद्ध धर्म जापान पहुँचा. आरंभ में जापानी पुरोहित ही फूलों को सजाने का कार्य करते थे और उनकी शैली शास्त्रीय थी. इसे 'रिक्का' कहा जाता था तथा ये ... सजाए जाते थे. हम भारतीयों को ... चाहिए कि बौद्ध धर्म भारत से जापान पहुँ... इसकी उपासना पद्धति के तहत कलाप्र...



जापानियों ने 'इकेबाना' [illegible] की. 15वीं शताब्दी में यह [illegible] 'कला' की संज्ञा में आ गया और मुख्यत: दो वर्गों, एक बुद्ध को अर्पित करने के उद्देश्य से और दूसरा शुद्ध सजावटी रूप में विभक्त हो गया. 16वीं शताब्दी में पुरोहितों, राजदरबारों और सैनिक अधिकारियों के बीच एक सजावटी सामान के रूप में प्रतिष्ठित इकेबाना का प्रचलन आम लोगों के बीच भी हो गया.

जापान में इकेबाना के कई स्कूल हैं. इसकी मुख्य रूप से तीन शैलियाँ प्रसिद्ध हैं. इनमें इकेनोवा शास्त्रीय, ओहनारा परंपरागत और सोगेस्टु आधुनिक शैली है. 20वीं शताब्दी में सोगेस्टु धारा की शुरुआत के साथ ही इकेबाना अधिक सृजनात्मक और प्रयोगात्मक कला बन गई. सोगेस्टु विश्व की सबसे लोकप्रिय शैली है. भारत में इकेबाना के प्रचार खासकर सोगेस्टु शैली में इस कला को पल्लवित करने का श्रेय वीना दास को जाता है.



वीना दास

वीना दास सोजेस्टु स्कूल, नई दिल्ली शाखा की संस्थापक सदस्य हैं और पिछले 22 वर्षों से इसकी निदेशक भी. उन्होंने बताया, "आरंभ से ही मैं प्रकृति, फूलों से आत्मिक लगाव महसूस करती थी और 1960 में जापान प्रवास के दौरान इसे फलने-फूलने का पर्याप्त मौका मिला. फूलों को सुंदरतम तरीके से व्यवस्थित करने की इस कला ने मुझे काफी आकर्षित किया. वहीं से मैंने इकेबाना का प्रशिक्षण लिया. दरअसल यह प्रकृति को विभिन्न रूपों में चित्रित करने की मेरी कोशिश है. इकेबाना का फलक और इसकी परिभाषा वैसी ही व्यापक है जैसे हमारे शास्त्रीय नृत्य. इस शैली में सजे पुष्प विभिन्न गाथाओं, मुद्राओं भाव-भंगिमाओं और मौसम की व्याख्या करने में सक्षम हैं. जैसे कोई कवि, चित्रकार अथवा नृत्य साधक अपने [illegible] को अपनी कविताओं, चित्रों और नृत्यों के [illegible] से व्यक्त करता है. इकेबाना [illegible] है, प्रकृति को [illegible] करने का."

वीना [illegible] इकेबाना इंटर[illegible] 1990-92 में



इसकी अध्यक्ष थीं. इन्होंने दूरदर्शन पर इकेबाना पर बने कार्यक्रमों का भी संचालन किया है. जापान के प्रधानमंत्री और राजकुमार-राजकुमारी के भारत आगमन पर राष्ट्रपति भवन में श्रीमती दास से विशेष तौर पर इकेबाना की व्यवस्था करवाई गई थी. पाँचवें एशियाई सम्मेलन में भी इन्होंने इकेबाना की प्रदर्शनी की. यह प्रदर्शनी विश्व में अपने ढंग की अकेली थी, जिसमें इन्होंने भारत के पाँच प्रमुख ऋतुओं शरद, वसंत, ग्रीष्म, सावन, पतझड़ को इकेबाना के जरिए दर्शाया था. प्रत्येक ऋतुओं के साथ उस मौसम के त्योहार की झलक भी प्रस्तुत की गई थी अर्थात फूलों का अद्भुत उत्सव प्रस्तुत किया गया था. इसी दौरान इकेबाना की सबसे प्राचीन और प्रमुख शैली के स्कूल ने इन्हें सम्मानित किया. इकेबाना के इतिहास में इसे एक आश्चर्य माना गया कि एक शैली ने दूसरी शैली को मान दिया. गत मई माह में उन्हें अति सम्मानित पुरस्कार 'इयोशो' से भी नवाजा गया.



श्रीमती दास ने बताया कि सोगेस्टु सर्वाधिक लोकप्रिय शैली है. इसमें उपयोग में आनेवाले सजावटी सामानों के चयन में कोई बंधन नहीं है. पीतल, लोहा, पत्थर, शीशा, प्लास्टर ऑफ पेरिस, बाँस, तने आदि के अलावा कई बार बगैर फू पत्ते, तने, जड़, तार, शाखा इकेबाना की तैयारी की जात लिए सामानों के बेहतर इ साथ ही रंगों, डिजाइन खूबसूरत संगम अनिवार्य है का प्रमुख उत्पादन है कंटे पात्र, जिसमें फूल सजाए पात्रों को सही चयन कि चाहिए.

इकेबाना में प्राकृतिक स उभारें. कृत्रिमता इसके सौंदर्य करती हैं. आधुनिक डिजाइन महत्त्वपूर्ण नहीं है कि किन इस्तेमाल हुआ है, महत्त्वपूर्ण कि कैसे इस्तेमाल हुआ है. पि दिखने नहीं चहिए. इसे छिपाने संगमरमर के टुकड़े, चिप्स, उ का प्रयोग कर सकते हैं. ब पिनहोल्डर नहीं लगाएँ. कोई शाखाएँ या पुष्प एक ही ऊँचाई के व्यवस्था के दौरान मध्य भाग पर अवश दें. संपूर्ण सौंदर्य पर नजर रखें, किसी ए के सौंदर्य पर नहीं.

– विशेष प्रति

फूलों को तरोताजा कैसे रखें?



गृहसज्जा के लिए फूलों का अपना अलग ही महत्त्व है. गुलदस्ते के रूप में कमरों के भीतर रखे गए फूल अत्यंत नयनाभिराम दृश्य प्रस्तुत करते हैं. फूलों के सौंदर्य से अभिभूत मनुष्य यह चाहता है कि उसके कमरे में सजावट के लिए पौध से काटकर रखे गए फूल लंबे समय तक तरोताजा रहकर मन-मस्तिष्क में उत्साह का संचार करते रहें. लेकिन फूलों को लंबे समय तक तरोताजा कैसे रखा जाए. फूलप्रेमियों के लिए यह एक बड़ी समस्या है.

सजावट के लिए पौध से काटे गए फूल अधिक समय तक ताजा रहकर अपनी रौनक बिखेरते रहें, इसके लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना होगा :

- फूलों को सूर्यास्त से पहले या सूर्यास्त के बाद ही काटना चाहिए.
- फूलों को पौधे से काटने के लिए किसी तेज धार वाली कैंची या चाकू का प्रयोग करना चाहिए, ताकि उनके उत्तकों को नुकसान न पहुँचे. फूलों को हाथ से तोड़ने का प्रयास न करें.
- जिस स्थान पर कटे हुए फूलों को रखना हैं, वहाँ के वातावरण में नमी तथा उचित तापक्रम होना चाहिए. यदि वातावरण में 10-15 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान तथा 80 प्रतिशत आर्द्रता है तो ऐसे स्थान पर फूल अधिक समय तक तरोताजा रह सकते हैं.
- पुष्प की टहनियों पर लगी पत्तियों को हटा ना चाहिए, जिससे वाष्पोत्सर्जन घट जाता है और फूल लंबे समय तक ताजा बने रहते
- फूलदाल में इतना पानी जरूर होना कि कटी हुई टहनियों के खुले भाग उसमें
- जिस पात्र या फूलदान में कटे हु को लगाना है, उसे साफ पानी से धोने के स्वच्छ जल से ही भरना चाहिए.
- फूलदान को कमरे के ऐसे कोने मे चाहिए, जो सबसे अधिक ठंडा हो. ऐसे स फूल अधिक समय तक ताजा रहते हैं.
- फूलों को लंबे समय तक तरोताज के लिए फूल के पात्र या फूलदान को समय बाहर ओस में रखना लाभदायक हे
- कई फूलों की टहनियाँ सख्त व मोट हैं. ऐसी टहनी के निचले भाग को पाँच सेंटीमीटर तक बीच से चीर देने से अपे अधिक पानी अंदर जाता है.
- यदि आप फूलों को अधिक सम ताजा रखना चाहते हैं तो फूलदान के पानी चम्मच चीनी, नमक तथा डेटॉल की कु भी डाल सकते हैं. फूलदान के पानी चम्मच चारकोल का चूरा मिला देने से भी को अधिक समय तक ताजा रखा जा है.

– अनिल

चीजें नई-नई

क नया शैंपू 'हेड एंड शोल्डर'



प्रोक्टर एंड गैंबल इंडिया लिमिटेड ने 'पैनटीन' के बाद अंतरराष्ट्रीय ब्रांड का एक और शैंपू निकाला है, 'हेड एंड शोल्डर'. यह शैंपू बालों को रूसी से मुक्त तो करता ही है, बाल बेहतर दिखेंगे, इसका भी दावा है.

100 मिली-लीटर के पैक की कीमत 51 रुपए है तथा 200 मिली-लीटर के पैक की त 97 रुपए है. इसके छह मिली लीटर के की कीमत तीन रुपए है.

अब मैगी मैकोरॉनी स्नैक

नब नैसले ने मैगी ब्रांड के अंतर्गत अपने पदार्थों की सूची में मैकोरॉनी को शामिल । है.

मैगी मैकोरॉनी स्नैक' के नाम का यह क्ट टमाटर, चिकेन और मसाला फ्लेवर में ब्ध है. कंपनी के अनुसार यह ोर-किशोरों को ध्यान में रखकर बनाया गया नाथ ही वैसे लोगों के लिए भी है, जो मैगी स खाते हैं. प्रसिद्ध धुन 'माकारेना' की तर्ज पर बनाया गया इसका जिंगल 'न्यू मैगी मैकरोनी तुम रोज बेबी खाना' आकर्षक है.



फ्लेवर के अनुसार इनकी कीमत नौ और 11 रुपए है.



लक्स सुपर रिच शैंपू

हिंदुस्तान लीवर ने 'लक्स सुपर रिच' के नाम से एक नया शैंपू निकाला है. इसने बालों को चकाचौंध चमक देने का दावा किया है. साथ ही कंपनी का दावा है कि यह पहला शैंपू है, जिसमें नमी है और जो बाल धोने के बाद उन्हें आवश्यक नमी देने में सहायता करता है. यह दो रूपों में उपलब्ध है - 'शाइन' सामान्य बालों के लिए तथा 'शाइन' रुखे बालों के लिए.

ये 200 मिलीलीटर के व 100 मिलीलीटर के पैक में उपलब्ध हैं. कीमत है, 54 रुपए और 29 रुपए. इसके आठ मिलीलीटर के सैशे की कीमत है डेढ़ रुपए.



सुपर कंडोम

भारत में उपभोक्ता वस्तुओं के मुख्य डिस्ट्रीब्यूटर और मैन्यूफैक्चरर तथा प्रसिद्ध ड्यूरेकस कंडोम के निर्माता लंदन इंटरनेशनल ग्रूप ने भारत में ड्यूरेकम की मार्केटिंग की शुरुआत की है. यह विश्व का नंबर वन ब्रांड है.

आरंभ में यह प्रोडक्ट दो रूपों में उपलब्ध है, ड्यूरेक्स सुपर थिन तथा ड्यूरेक्स एक्सट्रा सेफ. कंपनी के अनुसार ये दोनों ब्रांड गर्भधारण और यौन संक्रमित रोगों से सुरक्षा प्रदान करता है यह तीन और छह के पैक में उपलब्ध है.

रासना 'मिंट क्रीम'

रासना हर्बल प्रोडक्ट्स ने नई 'मिंट क्रीम' लाए हैं, जिसमें तुलसी और मिंट के अतिरिक्त 'कैलेंडुला' और 'बेरबेरीस अरिसटाटा' के सुगंधित तेल डाले गए हैं. निर्माता का दावा है कि यह तैलीय त्वचा के लिए बहुत लाभकारी है. यह मुँहासों को रोकती है. बंद रोम छिद्रों को खोलती है और धूप से झुलसी त्वचा को राहत



पहुँचाती है. इसके 40 ग्राम के पैक का मूल्य है 53 रुपए.

इनाल्सा का वर्ल्ड क्लास जूसर मिक्सर ग्राइंडर

इनाल्सा लिमिटेड, जो अपने वर्ल्ड क्लास होम अप्लायंस के लिए जानी जाती है, अब नए मॉडल में जूसर मिक्सर ग्राइंडर लेकर आई है. इसका नया लुक इसे बाजार में मौजूद बाकी मॉडलों से अलग श्रेणी में ले आएगा.

ये नया 'जेएमजी 607' हर तरह की गीली और सूखी पिसाई करने में सक्षम है. एक छोटा चटनी पीसनेवाला ग्राइंडर इसके साथ है, जो इसकी विशेषता है. साथ ही इसमें एक खास लौकिंग की सुविधा दी गई है, जो इसे चलाने के समय अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान करती है. इसका मूल्य 2850 रु. है.



व्यंग्य



शादी की वीडियो रिकार्डिंग

● मुरली मनोहर श्रीवास्तव

मुझे विज्ञान के बम से अधिक खतरनाक अविष्कार वीडियो रिकार्डिंग लगता है. बम तो बस एक बार ब्लास्ट होकर खत्म हो जाता है, मगर वीडियो कैसेट जब चाहे तब आप रिवाईंड, फारवर्ड और प्ले करके अच्छेभले घर में ब्लास्ट करा सकते हैं.

फिल्मी धुनों पर थिरकनेवाले बारातियों की कौन कहे, मंत्रोच्चारण करनेवाले पंडितजी [illegible] दूल्हा-दुलहन समेत शादी में शामिल सारे महानुभाव अपना मुस्करा[illegible] लेकर वीडियो कैमरे के सामने [illegible] लालायित रहते हैं.

वीडियो रिकार्डिंग तक तो ठीक था. एक दृश्य-संवाद तकनीक समझकर हम खुश हो लेते. इसके द्वारा अच्छे नाटक बनते, खबरें तैयार होती, भला हमें क्या आपत्ति थी. समस्या तो उस दिन से खड़ी हुई जब किसी भलेमानस ने इसका प्रयोग शादी, ब्याह में कर दिया. भाई, यह भी कोई बात हुई कि दस-बीस साल बीतने के बाद भी आप जब चाहे तब उस हादसे को प्रारंभ से अंत तक तरोताजा देख लें. मैं पूछता हूँ अपनी पिटती फिल्मों से तंग आकर रामसे ब्रदर्स इस घटना से आॅडियो क्यों नहीं लेते.

बहरहाल मैं अभी तक आश्वस्त नहीं हो पाया कि शादी की वीडियो रिकार्डिंग होती क्यो है? होती है, तो इसके पीछे साजिश रचनेवाला खतरनाक दिमाग कौन-सा है? अंतिम बात, इस रिकार्डिंग से अदद दूल्हे को क्या हासिल होता है?

यह सर्वविदित है कि आदमी अपनी जिंदगी में सबसे अधिक पिटा-पिटा शादी के [illegible] नजर आता है. जाहिर-सी बात है कोई भी [illegible] ऐसे मौके पर अपनी तसवीर कैद करा[illegible] चाहेगा. दरअसल उसके परिचित और [illegible] मिलकर उसे धोखा दे देते हैं. वे अपने खि[illegible] चेहरे और पार्टी के लुत्फ को पूरी [illegible] तरोताजा बनाए रखना चाहते हैं, इसलिए [illegible] रिकार्डिंग की तरफदारी करते हैं. दूल्हे के [illegible] शादी से एक-दो महीने पहले ही गायब [illegible] हैं. वह बेचारा कुछ कहने-सुनने की हाल[illegible] नहीं रहता. वक्त की नजाकत के साथ, ब[illegible] से लेकर दोस्तों, यारों की हाँ में हाँ मिला[illegible] है. जब तक उसे होश आता है बहुत देर ह[illegible] होती है. मतलब वीडियो फिल्म आँख के [illegible] तैयार नजर आती है.

रही लड़की की बात, तो यह उसकी [illegible] चाहत होती है कि वीडियो जरूर बने. [illegible] स्पष्ट है. शादीवाले दिन वह जितनी सुंदर [illegible]

सुंदर न तो वह पहले कभी लगी है और कभी उसे लगना है. बाकी की उम्र रोब लिए यह वीडियो तसवीर ही तो काम जब चाहे तब उसे चालू कर कहा जा , "किसी हीरोइन से कम क्षमता नहीं थी ह तो घर-गृहस्थी ने मेरा ऐसा हाल बना ना..."

तो मोटे तथ्य हैं, असली तथ्य तो वीडियो पास होते हैं. उन्हें पता लगना चाहिए कि दी-ब्याह का आयोजन हो रहा है. बस, ौल में वे अपने एक-दो एजेंट वहाँ पहुँचा

जेंट बात-बात में वीडियो की चर्चा छेड़ते आप शादी-ब्याह में गहने और कपड़े की गे, वो वीडियो रिकार्डिंग के फायदे गिनाना रेंगे. आप लेन-देन पर उतरेंगे और वे कराएँगे कि मार्डन जमाने में बिना वीडियो के शादी का स्टैंडर्ड ही नहीं है. बातों- वे यह भी बता देंगे, फलाना वीडियो वाला सबसे अच्छा वीडियो रिकार्डिस्ट है. अभी महीने ही तो उसने नया कैमरा इंपोर्ट कराया क जैसा प्रोसेसिंग लैब किसी के पास नहीं कंप्यूटराइज तकनीक है. क्या आर्टिस्ट है. मुझे तो आग लगती है. दूल्हा बेचारा क्या दुल्हन को देखेगा. वीडियोवाले ने तो उस ऐंगिल से वैसे ही स्क्रीन पर बेपर्दा कर मला छुई-मुई सी नजाकत और मुँह दिखाई स्मों की अब कौन-सी औपचारिकता रह गई. सुर, क्या जेठ सब देख रहे हैं वीडियो, पर्दा ात का. ये तो बाद के पहलू हैं, पहला पहलू डयो रिकार्डिंग.

भैया, वीडियो रिकार्डिंग प्रारंभ होते ही, र्जुग, पंडित पीछे हो जाते हैं. सबसे आगे , वीडियो कैमरा. जब कैमरा आगे होगा कुछ उसकी निगाहों में कैद होगा, हँसी, ी, मुँह चिढ़ाना, उच्छृंखलता, सब पर लग गई. हर व्यक्ति, सभ्य व टकेटेड नजर आने की कोशिश करता है, के सामने. कहीं ऐसी-वैसी बात कैमरे में गई तो जनम भर का लांछन.

ना पर भी संतोष हो जाता, हद तो तब होती हर सीन पर कैमरामैन डायरेक्शन देना करते हैं. बस फिर क्या, जयमाल हो या फेरे पर रीटेक चलते रहते हैं. हमारे कैमरामैन तो महेश भट्ट होने की तमन्ना भी पूरी करते शादियों में. मजाल है जो एक भी घटना मर्जी के खिलाफ हो जाए. जयमाल में नहीं कि करीबी सखी जाए. वह तो कैमरे गल से देखा जाएगा कि खूबसूरत कौन नजर आता है. फिर चाहे किसी को इस शुभ कार्य के लिए किराए पर ही क्यों न बुलाना पड़े. हर्ज क्या है? जब किराए के जेवर, टेबल, कुर्सी, पंडाल आ सकते हैं तो जयमाल में साथ देनेवाले क्यों नहीं. इस मशीनी युग में असंभव कुछ भी नहीं है.

पंडितजी भी वीडियो वाले से दबे-दबे नजर आते हैं, हर मंत्रोच्चारण और रस्म के बाद शॉट ओके पूछ लते हैं. कौन कहता है शादी सात फेरों में होती है. मेरे एक परिचित के फेरे बारह री-टेक में पूरे हुए थे.

इनका दखल यहीं तक नहीं है. नाच-गाने, खाने-पीने पर भी इनका स्पष्ट प्रभाव नजर आता है. नाचनेवाले खास तौर पर तभी अच्छा नाचते हैं, जब वीडियो रिकार्डिंग हो रही हो. वेटर और मेजबान वीडियो रिकार्डिंग का खास ध्यान रखते हैं. सारी तारीफ या बदनामी यहीं से मिलनी है.

मजा तब आता है जब सामान्य सूरत के चलते घर के करीबी रिश्तेदार कैमरे में नहीं आ पाते और एक-दो नायाब चेहरों को देख सब एकदूसरे से पूछते हैं, आखिर ये है कौन. दरअसल यह वीडियो की क्वालिटी मेंटेन रखने के लिए किया जाता है. हमारे वीडियो फिल्ममेकर महोदय को अपनी ऐसी कैसेट दिखाकर ही तो आगे ऑर्डर मिलते हैं.

अब गीत के संगीत का पक्ष देखिए. हर वीडियो में आवाज रिकार्ड करने की क्षमता होती है. लेकिन मैंने आज तक किसी वीडियो में शादी के दौरान बजनेवाले लोकगीत और पंडित के मंत्रोच्चारण नहीं सुने. हाँ, एक से बढ़कर एक मनोरंजक गीतों और धुनों से सजे होते हैं ये कैसेट. आपने कभी सोचा है, ऐसा क्यों?

क्योंकि हर वीडियो फिल्म मेकर जानता है कि पूरी शादी की कैसेट झेलना किसी माई के लाल के बस की बात नहीं है. यदि एक-दो शादी की कैसटें किसी ने देख रखी हैं तो यह और भी मुश्किल है. मात्र चेहरे बदलते हैं, बाकी सारी रस्में तो वही हैं. बस हर आदमी अपनी शक्ल बार-बार देखने की लालसा में कैसेट देखता चला जाता है. ऐसे में उसे सोफे से चिपकाए रखने के लिए मधुर संगीत तो चाहिए ही, फिर कैसेट हर उम्र के लोग देखेंगे. जो उम्र के साथ पक गए हैं, उन्हें कैसे रोका जाए. तो उसके लिए उनके पुराने दिन याद कराते हुए कुछ रूमानी, कुछ भावनात्मक गीत डाल दिए जाते हैं.



लेकिन छोड़िए, आप इन बातों में मत आइए. यह सब निराशावादी बातें हैं. जो किसी भी हालत में विडियो रिकार्डिंग नहीं करा सकते, वे ही ऐसे पिछड़ेपन की बातें करते हैं.

आप वीडियो रिकार्डिंग कराइए, जरूर कराइए. इस बात से क्या फर्क पड़ता है कि घर में वी.सी.आर. है या नहीं. यह सुविधा तो जब चाहे, किराए पर प्राप्त की जा सकती है. और फिर इस जरा-सी चीज के लिए शादी का स्टैंडर्ड तो नहीं गिराया जा सकता.

कैसेट कोई दो-चार साल में खराब होनेवाली चीज तो है नहीं. यह तो पीढ़ी दर पीढ़ी चलनेवाली चीज है. यह कहाँ लिखा है कि आप अपनी शादी की वीडियो कैसेट किराए पर देख रहे हैं, तो आपके नाती, पोते भी उसे किराए पर देखेंगे.

आप देखते जाइए. इक्कीसवीं सदी की सासें, अपनी बहुओं को पुराने कंगन, स्टोर की चाबी, और जरी की साड़ी के साथ अपनी शादी की वीडियो कैसेट भी अमानत की तरह सौंपेंगी.

पीढ़ी दर पीढ़ी जब ऊँच-नीच के झगड़े होंगे तो लोग अपने स्वर्गीय दादा-दादी की शादी की वीडियो कैसेट देखकर हैसियत का अंदाजा लगाएँगे.

अतः आप इस बात पर गंभीरता से विचार कजिए कि जीवन में ऐसे अवसर बार-बार नहीं आते. यह मधुर स्मृतियाँ कैमरे में कैद होने से वंचित रह गईं तो उम्र भर आपको अफसोस रहेगा. उठिए और किसी अच्छे से शादी की वीडियो फिल्म बनानेवाले से संपर्क साधिए. यदि आपकी शादी हो चुकी है तो भी निराश होने की आवश्यकता नहीं. वह कंप्यूटर की मदद से आपका चेहरा किसी भी शादी की कैसेट पर फिट करके आपकी शादी का रंग उसे दे सकता है. बाद में यह मत कहिएगा हमने आपको रास्ता नहीं दिखाया, क्योंकि वर्तमान युग में अपने शादी की वीडियो कैसेट बनवाना एक महान उपलब्धि है. इस महान उपलब्धि से वंचित रहना आपको शोभा नहीं देता.

सरल हृदय वाले नरूका चाचा की हैसियत से बस इतना चाहते थे कि मकान बनवाने के लिए दो-तीन कदम जमीन ही सही, हरदा पूछ तो लेता, हथियाने की क्या जरूरत थी. बात मुकदमे और कचहरी तक पहुँची. हरदा कंगाल होता रहा, पर माफी नहीं माँगी. झूठा अहम् जो चट्टान-सा अड़ा था. फिर भी स्नेह से भरे नरूका काका ने क्या हरदा को बर्बाद होने दिया?



• प्रेमसिंह नेगी

नरूका चाचा

"टोपी जाने कहाँ गई? न जाने कहाँ रख दी थी मैंने? मिल ही नहीं रही," अपेक्षाकृत हलकी आवाज में कह गए नरूका.

कहने को वे अपने से ही कहे जा रहे थे, लेकिन सच कहें तो वे कह रहे थे पत्नी से ही. बुदबुदाते हुए वह कह भी गए, "साला, कोट-कच्हरी, मुकदमे का मामला, हार-जीत दाँव पर. सुबह-सुबह घर.से ही ठीक नहीं. एक तरह से अपशकुन ही तो हुआ यह सब."

यही कारण रहा होगा कि नरूका ने सीधे-सीधे संबोधित नहीं किया पत्नी को. शायद उन्हें डर रहा होगा कि कहीं पत्नी टोपी ढूँढने में उनकी मदद के बजाय उलटे भिड़ न जाएँ. यही कि अपनी चीजों को संभाल के क्यों नहीं रखते? इत्ती-सी बात पर टल्लियाँ चढ़ते-चढ़ते खास बिजूका खड़ा न हो जाए घर में.

पत्नी वहीं खटिया पर लेटी थी. सोने का बहाना नहीं तो स्वांग रचे हुई थीं. या यूँ कहें कि सुबह की मीठी नींद के पंख सहला रही थीं प्यार से. मगर कमरे में खटर-पटर, नरूका की चहल-कदमी और अंततः उनकी बड़बड़ाहट का व्यवधान था कि नींद पंख फड़फड़ा कर उड़ गई. चुपके-से आँखें खोलीं, देखा, पति हाथ में लालटेन उठाए कमरे में इधर से उधर चक्कर लगा रहे हैं.

"क्यों, क्या ढूँढ रहे हो?" पत्नी ने पूछ ही लिया.

"टोपी ढूँढ रहा हूँ. जाने कहाँ..."

"वह आपके सिर पर जो है?"

नरूका ने सिर पर हाथ फेरा. सचमुच वह पहने हुए थे. बोले, "हर जगह ढूँढ लेकिन हाँ, सिर में ही ढूँढना बाकी रह ग आखिर, ससुरी मिली भी वहीं. भले बताय तो अंगोछा ही सिर पर बाँध के जाना सुबह-सुबह ठंड भी तो कितनी होती है! दे देव दरबार और राज दरबार में भला नं कौन जावे है."

काकी यानि कि नरूका की पत्नी फि हँस दी. शायद यह सोचकर कि टोपी तो थी ही, तब नंगे सिर होने की बात कहाँ.

तभी हरदा के भारी बूटों की आवाज

खड़की से छनती हुई नरूका के कानों तक हुँची. नरूका को इसी पदचाप की प्रतीक्षा वे मन ही मन कहते हैं, "लौंडे के पास रैट नेवाली घड़ी जो है. इसीलिए हमेशा ही रैट पर निकल लेता है घर से. घड़ी का टाइम नहीं दे सकता, अन्यथा मुर्गे की बाँग या मान के तारों का कोई भरोसा नहीं." बात सही है. उस बार उन्हें रानीखेत से नैनीताल पहली बस पकड़नी थी. सिर्फ पलक झपकने की देर हुई थी. ससुरी वो बस भर्र-से आगे भाग निकली, उनके सामने से. दूसरी बस से तो वही किस्सा कि मेला उठा तो सियार की के अलावा वहाँ कोई नहीं. निरर्थक ही था वहाँ जाना.

पुरानी याद रही बातों का सिलसिला था कि ही एक और घटना से जुड़ गया. उस रोज पहली बस से ही जाना था कहीं और को. इस बार लेट होने का खतरा था कि जोखिम उठाना चाहते थे. वहाँ लगा कि सारा शहर नींद में डूबा हुआ है. शहर भर के खर्राटे कि चीड़-देवदार के वृक्षों की साँय-साँय में ए हुए हों. पूरब दिशा के किवाड़ों पर वो र ताला था कि खुलने का नाम ही न ले. ह होने की प्रतीक्षा में ही उन्होंने खासी-भली भी ले ली. जगे तो धार (क्षितिज) पर की उजास दिखी थी. बताओ भला, कोई सा है आकाश के तारों और बाड़े के मुर्गों कब ये आसमानी टिमकटिम्मे बादलों का लाफ ओढ़ लें? और ये ससुरे कुक्कड़ (मुर्गे) चिल्ला-चिल्लाकर अपना गला बैठा लें, ई ठिकाना है?

नरूका लाठी-झोला उठाकर देहरी लाँघ गए. र नीरू काकी को 'फिस्स-फिस्स' छूटती ी. नरूका के जाने के बाद भी कमरे में खरती रही. बीच-बीच में अलबत्ता 'फिं हीं ईं' की आवाज के साथ उस फिसफिसाती ी की लंबी पूँछ भी वह वहाँ खड़ी कर देती . आज की टोपी ढूँढनेवाली बात से शायद वह ी ही पिछली बहुतेरी घटनाओं को याद कर ी होंगी. सच कहें तो अकेली ही वह एक ना ऐसी थी, जिसे वह क्या, सारे गाँव के लोग द करके आज भी फुक्का मार हँसी से पेट ाते दिखाई देते हैं.

रहीं होगी वह घटना (या दुर्घटना) कोई -बारह बरस पहले की. तब अनुमान है कि रूका भी कोई 50-52 के रहे होंगे. मगर आदत की वही बचपने वाली. हर काम में ऐसी ल्दबाजी कि सोच-विचार कोसों पीछे छूट .

घर के कुछ काम पहले से ही जैसे उन्होंने अपने जिम्मे बाँध लिए थे. सुबह-सुबह नौले (जलाशय) से ताजे जल का घड़ा भर के ले आना, दोपहर का भोजन तैयार करना जैसे काम बिना नागा एक कठोर नियम की तरह करते आ रहे हैं वे. उस रोज भी रात का काला कंबल उठ चुका था, मगर प्रकाश की धवल चादर भी ठीक से नहीं बिछी थी धरती पर. तांबे का घड़ा उठाकर चले थे नौले को. वापस आए ताजा जल लेकर. आते ही पत्नी से बोले थे, "पारो की माँ...!" नीरू काकी ने चूल्हे की आग फूँकते हुए हामी भरी थी.

"आज...आज की एक विचित्र बात...!"

"क्या?"

> *"क्यों, क्या ढूँढ रहे हो?" पत्नी ने पूछ ही लिया.*
> *"टोपी ढूँढ रहा हूँ. जाने कहाँ..."*
> *"वह आपके सिर पर जो है?" नरूका ने सिर पर हाथ फेरा. सचमुच टोपी वह पहने हुए थे. बोले, "हर जगह ढूँढ मारा. लेकिन हाँ, सिर में ही ढूँढना बाकी रह गया था.*

"आज तक...इत्ती उमर बीत गई, कभी नहीं...किसी ने भी ऐसा सलूक नहीं किया, जैसा कि आज किया उन...!"

"बता तो रहे नहीं. सुबह-सुबह आखिर हो क्या गया ऐसा-वैसा-जैसा?" नीरू काकी ने नरूका की बात काटते हुए पूछा.

"आज...न जाने क्यों...पनिहारिनें मुझे देखकर बड़बड़ाती थीं. मुझे शक होता है कि वे जरूर मुझे गालियाँ देती थीं. उनमें से दो-एक हँस भी पड़ी थीं. यानि कि मेरी हँसी उड़ाती थीं, जबकि मैं...!"

नीरू काकी ने पीछे मुड़कर पूछा, "कौन थीं वे? किसी को पहचाना?" तभी उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना हथेलियों से मुँह छिपाते हुए खिलखिलाकर हँस पड़ीं काकी. नरूका छिन-पल को विस्मित से खड़े रह गए, पत्नी को इस तरह हँसते देखकर. तभी नरूका की नजरें अपने शरीर के निचले आधे भाग पर पड़ी और वे वहाँ से कुठड़िया की ओर ऐसे भागे, जैसे भूत ने उनका पीछा किया हो.

काकी कह रही थीं, "देवा के बाउज्यू, जाने काहे बूढ़ा रहे हो तुम. बेशरमी की हद हो गई. अगर नागा बाबा बनने का ही शौक हो तो गृहस्थी छोड़कर भभूत क्यों नहीं रमा लेते तन-बदन पे?"

बेचारे नरूका मारे शर्म के पानी-पानी हो गए. घुटने से नीचे तक की धोती पहनने के बावजूद भी वे कई दिनों तक अपने आप को नंगा ही महसूस करते रहे. खेतीबाड़ी के व्यस्त दिनों में कई बार होता कि नरूका जुड़वाँ चूल्हों में दाल और भात चढ़ा देते. मगर जल्दबाजी में नमक बजाय दाल के भात में डाल देते. बोलने-बतियाने में भी उनका वही हाल था. अकसर उलटा-पुलटा बोलते. मसलन 'खेत में खाद डालनी है' कहना चाहेंगे, मगर कहेंगे 'खाद में खेत डालनी है.' अपनी इस आदत पर उन्हें अफसोस तो होता, किंतु बहुतेरी कोशिश के बावजूद भी अपनी इस बीमारी सरीखी आदत से छुटकारा नहीं पाते.

कोर्ट-कचहरी की बात शुरू में उठी भी, लेकिन बहक गए, जाने कहाँ-कहाँ को. कोर्ट-कचहरी का यह झंझट आज से नहीं, छह वर्ष पहले से चला आ रहा है. झगड़ा हुआ था घर के पिछवाड़े की शाकबाड़ी को लेकर. एक अच्छाखासा खेत है वह. इस खेत का आधा भाग नरूका का है और आधा भाग हरदा के पास. जब तक दोनों उस खेत में शाक-सब्जी उगाते रहे, कभी कोई विवाद नहीं हुआ, लेकिन एक रोज उस खेत में हरदा ने अपने मकान की नींव डाली. रातों रात घुटने तक की चिकनाई भी उठा ली. नरूका को लगा कि हरदा ने अपने निर्माणाधीन मकान की दाईं दीवार उनके खेत में जानबूझ कर डाल दी है. उनका कहना है कि कदम नाप से कोई ढाई-तीन कदम उनकी जमीन हरदा ने हथिया ली है.

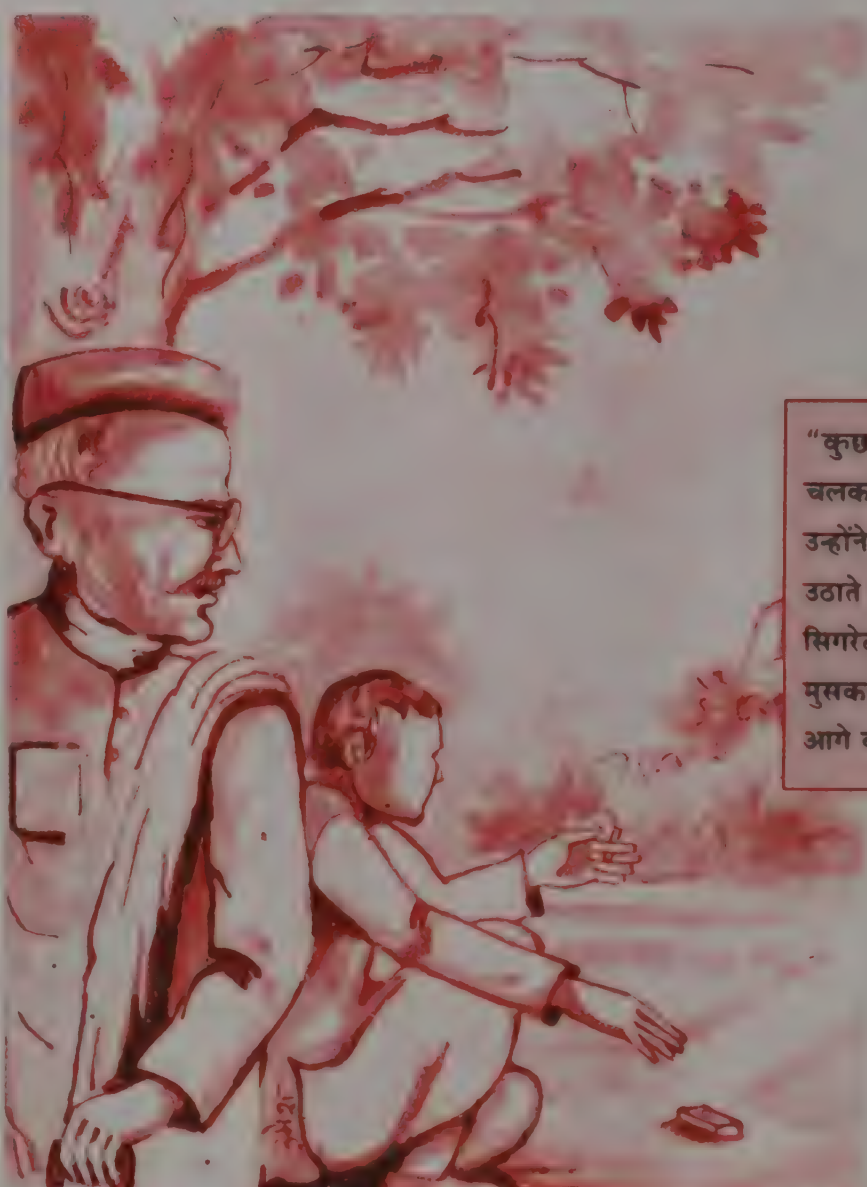
नरूका को सचमुच आश्चर्य हुआ था, हरदा की इस हरकत पर. उनका गुस्सा इस बात पर था कि हरदा को अगर उनकी जगह चाहिए ही थी तो उनसे माँग सकता था. वे उसे खुशी-खुशी वह जगह मुफ्त में ही दे देते. आखिर वह उनका भतीजा ही तो था. वैसे, चाचा-भतीजे का उनका रिश्ता बिल्कुल नजदीकी नहीं तो बहुत दूर का भी नहीं है. हरदा के दादा और नरूका के पिता दो सगे भाई थे. लेकिन अब वे एकदूसरे के दुश्मन हैं. नहीं, दुश्मन शब्द शायद इनके लिए भारी है, क्योंकि इन्हें कभी आमने-सामने लड़ते किसी ने नहीं देखा. यों कहें कि वे घोर प्रतिद्वंद्वी

थे. भीतर ही भीतर एकदूसरे को धर पटकने के फिराक में थे, सिर्फ अपनी-अपनी चालों के द्वारा.

अलबत्ता कभी-कभी इनकी नाराजगी छनकर बाहर भी आ जाती है. मसलन, नरूका कहते सुनाई देंगे, "ये हरदा जाने क्या समझे बैठे है अपने को! कल का छोकरा मुझ से टंडा लेने पर तुला है. हुअँ, सियार की माँ को डरावे, इसी को तो कहते हैं." उधर हरदा भी अपने मित्रों के बीच नहले पर दहला ठोकते कहेंगे, "ये नरूका जो है ना, कहने को तो चचा हैं अपने. लेकिन ये वो चीज हैं, जिनके बोल हों परमेश्वर के और करतब हो राक्षस के. जड़ में सेंध लगाते ये दिखाई नहीं देंगे, मगर पेड़ सूखता ही नजर आएगा."

इधर की उधर, उधर की इधर कहने वालों के माध्यम से जब नरूका के सामने हरदा के बोल परोसे जाएँगे तो नरूका ताल ठोंककर कहेंगे, "ये ससुरा हरदा अपने सिर पर विचरती भैंस को तो नहीं, पराए सिर की जूँ ढूँढने का आदी है."

अपने-अपने घरों में बंद यह वाक्युद्ध एक दिन सचमुच कोर्ट-कचहरी तक जा पहुँचा था. नरूका ने हरदा के खिलाफ दीवानी मुकदमा ठोंक दिया. इस प्रकार कोर्ट-कचहरी का चक्कर लगाते-लगाते पूरे दो साल बीत चुके थे, मगर मामला जहाँ का तहाँ ठहरा हुआ था. उन्हीं दिनों हरदा को लगा कि उसने नरूका से अनावश्यक झगड़ा मोल लिया है. मकान बनाने में जमा पूँजी स्वाहा हो चुकी थी, ऊपर से मुकदमेबाजी का झमेला. रोजी-रोटी के भी लाले पड़ने की नौबत आ गई थी. मुकदमे के कारण ही हरदा गाँव से बाहर नहीं निकल पा रहे थे. एक तरह से घर में ही कैद होकर रह गए थे. वह चाह रहे थे कि किसी तरह नरूका से सुलह हो जाए और झंझट से मुक्ति मिले. लेकिन स्वयं वह इस प्रस्ताव को लेकर नरूका के पास जाएँ तो कैसे! हेठी नहीं होगी उनकी? तो भी हरदा ने राजीनामे का प्रस्ताव बिचौलियों के माध्यम से भिजवाया कि वह तिगुनी-चौगुनी जमीन उन्हें देने को तैयार है, मुकदमा वापस लेने की शर्त पर. मगर नरूका थे



"कुछ कदम आगे चलकर नरूका पीछे मुड़े. उन्होंने हरदा को माचिस उठाते हुए देखा. हरदा को सिगरेट सुलगाते देखकर मुसकराते हुए नरूका आगे बढ़े."

इस बात पर अड़े हुए कि उसने शुरू में ही उनसे जमीन न माँगकर जबर्दस्ती हथियाई है. अब वे उसे मजा चखा के ही रहेंगे. हरदा का मकान गिरा के ही दम लेंगे. हाईकोर्ट तक नहीं छोड़ेंगे उसे.

घर के आँगन की झाड़ू-बुहारी करती काकी को लगा कि सूरज भगवान भी किरणों को झाड़ू हाथ में लेकर पूरी धरती को बुहार चुके हैं. गाँव के ऐन सामने खड़ी पहाड़ी जैसे दूधो नहा गई थी. पहाड़ी के मखमली वक्ष के मध्य की पैदल बटिया काकी को हमेशा से ही चाँदी की हँसुली-सी दिखाई देती रही है. आज भी उनकी नजरें स्वभावतः उधर उठीं. वहाँ दिखाई दे गए पैदल राह नापते नरूका और हरदा, जिनका रिश्ता अब चाचा-भतीजा से मुद्दई-मुद्दालेह के हो गए थे. घर से निकलते वक्त हरदा आगे थे और नरूका दस-बारह कदम पीछे. लेकिन इस

समय नरूका आगे हो गए थे, त
कदम के अंतर से. जाहिर है कि
लघु-दीर्घ शंका के निमित्त ही अ
क्रम गड़बड़ाया होगा.

जबसे इन दोनों के बीच कोर्ट
चक्कर चला है, तभी से काकी दे
हैं इस फासले को. 15-20 कदम
कभी भी नहीं दिखा यह फासल
बटिया पर. शुरू में आँखों देखी का
खयाल नहीं किया, लेकिन बाद में व
भी पुष्टि होने लगी.

पिछली तारीख की बात है. बता
से आ रहे गिरदा ने कि सात मील
चढ़ाई पार कर सुस्ताने बैठे थे
दस-बारह कदम के
हरदा अपनी सिगरे
बैठे थे. नरूका ने
बीड़ी दाग ली. तभ
'धत्त तेरे की' कहते
की खाली डिब्बी झा
दी और सिगरेट की
से जेब के हवाले
शायद माचिस की अ
गई तीली भी हवा
संघर्ष करती हुई खेत हो गई थी. निय
पर बैठे नरूका यह सब देखकर उठ
तभी उनके कपड़ों से माचिस की
छुटकती हुई नीचे गिर पड़ी. वे वहाँ से
आगे चल दिए, जैसे उन्हें माचिस के
पड़ने का कोई अहसास ही न हो. गिरद
तमाशा कुछ फासले से देख रहे थे, पेड़
में आ गए. उन्होंने यह भी बताया थ
कदम आगे चलकर नरूका पीछे मुड़े
हरदा को माचिस उठाते हुए देखा.
सिगरेट सुलगाते देखकर मुसकराते हु
आगे बढ़े." हाँ, गिरदा ने यह भी
"हरदा जानते थे कि माचिस नरूका
इसलिए उन्होंने माचिस की उस डिब्बी
छोड़ दिया. भला वे नरूका जैसे अपने
प्रतिद्वंद्वी की माचिस अपनी जेब में क्यों

अगली तारीख फैसले की थी. न
ही मन हार-जीत की संभावना
रहे थे. उन्हें अपनी जीत और हरदा की
पलड़े धरती और आसमान को छूते
जाते, अपनी कल्पनाओं में. वे अपनी
संभावना को रुपए में सौ पैसे आँक कर
हो जाते. कई बार उनकी इच्छा हुई कि
निश्चित विजय का डंका बजा दें, ले

क थी जो कि उन्हें डंका बजाने से रोक रही इधर कई दिनों से वे भरसक कोशिश में थे विजय की घोषणा को जबान पर आने से लें. हो सके तो पूरी तरह पचा लें. लेकिन का की उतावली प्रकृति थी कि पचाने के कतई सहयोग नहीं कर रही थी. जबान पर ी घोषणा को वे बार-बार पीछे की ओर ने की कोशिश करते, मगर घोषणा की तासीर कि जुगाली की तरह फिर-फिर जबान की उन्मुख हो जाती.

जुगाली सचमुच रुकी नहीं. उस दिन उन्होंने लते-संभलते भी पत्नी के आगे उगल ही ा, "देवा की माँ, तुम्हें मालूम है कि मुकदमे अगली तारीख फैसले की है?"

"वह तो तुम कई बार बता चुके हो," घर के र-काज में व्यस्त देवा की माँ यानी काकी ने ा उनकी ओर मुखातिब हुए ही कहा.

"अच्छा? मगर एक बात नहीं बताई होगी..."

"वह क्या?" काकी इस बार उनकी ओर ातिब हुईं.

"यही कि...मगर तुम किसी से कहना ...रहने दो, औरतों के मन में बात पचती ...इसलिए नहीं कहता."

"नहीं कहना चाहते हो, ना कहो. मेरा कौन-सा काम अटका पड़ा है तुम्हारी बात के बिना..."

"मुकदमे में अपनी जीत पक्की है. यही बताना चाहता था, लेकिन तुम हो कि इत्ती बड़ी...! वाकई तुम्हारे लिए हँसी-खेल है यह सब. भले ही इस समय तुम्हें यह सब गिल्ली-डंडे की हार-जीत जैसा लगता हो, मगर वह दिन, वह घड़ी...कल्पना करो, जब हमारे खेत में बनी हरदा के मकान की दीवार को तोड़ने का हुक्म अदालत देगी."

थोड़ी देर के लिए अपने में ही खोए हुए दिखाई दिए हरदा. दरअसल, उन्होंने अपने चेहरे पर नितांत निजी किस्म का गंभीर आवरण ओढ़ लिया था. उनके होंठों में कैद हुई अभिव्यक्ति धीरे-धीरे मुक्त होकर काकी के कानों तक आ पहुँची, "...बेटे हरदा, देखा तुमने, साँप और केंचुआ की लड़ाई का नतीजा! आखिर केंचुआ कितनी ही गलतफहमी पाल ले, साँप की बरबादी नहीं कर सकता. यही एहसास तुम्हें कराना था बस!...लड़ाई यहीं पर खत्म. तुम्हारा मकान हम नहीं टूटने देंगे...आखिर हो तो तुम अपने भतीजे ही!"

नीरू काकी फिक्क-फिक्क करती हुई हँसे जा रही थीं. ■

महिलाओं में पनपता अम्ल पित्त

मिलावट के इस युग में कई तरह के रोगों ने भी जन्म लिया है. खानपान की तरफ ाबर सावधानी न बरतने से 'अम्ल पित्त' (एसिडिटी) हो जाता है. अम्ल पित्त होने के मूल रण हैं, मस्तिष्क में तनाव का रहना, दूषित जन करना, शराब, चाय, काफी व सिगरेट का रूरत से ज्यादा इस्तेमाल करना. इन्हीं कारणों से ारी पाचन शक्ति ठीक नहीं रहती.

अम्ल पित्त रोग घरेलू महिलाओं की अपेक्षा करीपेशा महिलाओं में जल्दी पनपता है, योंकि वे अपने खानपान की सीमा को लाँघ ती हैं.

अमेरिकन ट्रिब्यून के अनुसार, अमेरिका में छले एक दशक में 35 प्रतिशत महिलाओं को म्ल पित्त ने अपना शिकार बनाया है. वैसे पुरुष र्ग में भी अम्ल पित्त के खतरे दिन ब दिन बढ़ते जा रहे हैं. इस रोग से बचने के लिए अपने ाहार पर ध्यान देना होगा.

अम्ल पित्त से कैसे बचें?

- चार चम्मच मूली के रस में एक-दो म्मच चीनी मिलाकर दिन में तीन बार सेवन रें.
- करेले का रस खाना खाने के उपरांत सेवन करें.
- प्रातः शुद्ध हवा में घास पर नंगे पैर भ्रमण करें.
- आलू को बालू रेत में भूनकर सुबह या शाम को खाएँ.
- एक प्याला गरम पानी, एक चम्मच नीबू का रस मिलाकर दोपहर व रात को पिएँ.
- किसी तरह का तनाव (टेंशन) न पालें.
- रात्रि में फीका दूध पीकर सोएँ.
- एक केले को भली प्रकार मथकर, दो छोटी इलायची के बीज पीसकर, साथ में एक चम्मच चीनी मिलाकर सुबह-शाम सेवन करें.
- बाजारू चाट-पकौड़ों से दूर रहें.
- मौसम के मुताबिक फलों का सेवन करें.
- देह पर खादी या सूती वस्त्र धारण करें.
- पैरों में चमड़े के जूते-चप्पल न पहनें.
- कंघी व साबुन अपनी ही इस्तेमाल करें.
- खट्टे दाहकारक पदार्थ, जैसे उड़द या मट्ठा का प्रयोग न करें. ■

– ईलू रानी



नहीं पहचाना

मुझे पत्रमित्रता का बहुत शौक है. मेरे पास अक्सर दूर-दूर के दोस्तों के खत आते रहते हैं, जिनका जवाब मैं बड़ी ही मुश्किल से दे पाता हूँ.

एक बार मैं और सलीम जून की छुट्टियों में आगरा घूमने गए. ताजमहल घूमने के बाद हम लोग सामने बाईं ओर पार्क में बैठ गए. कुछ देर बाद सामने से आती हुई एक बहुत ही खूबसूरत लड़की पर मेरी नजर पड़ी. देखते ही देखते वह हमारे करीब आई और बोली, "हैलो जिदी साहब, कैसे हो?"

"ठीक हूँ, पर मैंने आपको पहचाना नहीं."

"लेकिन मैंने आपको पहचान लिया, आप जिला बदायूँ के रहनेवाले हैं न."

"जी हाँ, पर आप कौन हैं?"

"अपकी फ्रेंड! मेरा नाम शमां है. मैं फतेहपुर सीकरी में रहती हूँ."

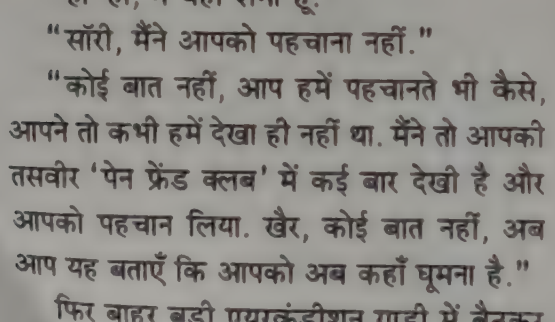
"ओह! अच्छा-अच्छा, याद आया. तुम वही शमां हो न, जो अक्सर खतों के जरिए मुझसे कुछ न कुछ पूछती रहती हो."

"हाँ-हाँ, मैं वही शमां हूँ."

"सॉरी, मैंने आपको पहचाना नहीं."

"कोई बात नहीं, आप हमें पहचानते भी कैसे, आपने तो कभी हमें देखा ही नहीं था. मैंने तो आपकी तसवीर 'पेन फ्रेंड क्लब' में कई बार देखी है और आपको पहचान लिया. खैर, कोई बात नहीं, अब आप यह बताएँ कि आपको अब कहाँ घूमना है."

फिर बाहर बड़ी एयरकंडीशन गाड़ी में बैठकर हम लोग किले पहुँचे. किला घूमने के बाद शमां की जिद के कारण हम लोगों को शमां के घर



फतेहपुर सीकरी भी जाना पड़ा. वहाँ उसके अम्मी और अब्बू से मिलकर अच्छा लगा. वह लोग बहुत ही नेकदिल और खुशमिजाज थे. दो ही दिन में हम इतना घुलमिल गए कि ऐसा लगता था जैसे हम बचपन के दोस्त हों. दो दिनों के बाद जब हमने घर आने की इजाजत माँगी तो वे लोग हमें स्टेशन तक छोड़ने आए.

शमां का उदास चेहरा देखकर मेरी आँखें भर आईं और मेरे दिल में मीठा-मीठा दर्द होने लगा. मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा है.

हमारी मुलाकात का सिलसिला, जो एक बार शुरू हुआ, तो फिल चलता ही गया. धीरे-धीरे हमारे प्यार की भनक हमारे घरवालों तक पहुँच गई और फिर एक दिन मेरे पिता ने मेरी सालगिरह की पार्टी में मेरी मँगनी की घोषणा कर दी और मैंने शमां की नाजुक उँगली में अपने नाम की अँगूठी पहना दी. **– जमीर, बदायूँ**

वो सेल्समैन

उस दिन घर में केवल मैं और दीदी ही थीं क्योंकि मम्मी और पापा किसी आवश्यक काम से बाहर गए हुए थे. हमारे यहाँ सुबह से चार सेल्समैन आ चुके थे और दरवाजा खोलते-खोलते हम परेशान हो चुके थे.

कुछ देर बाद फिर हमें पाँचवीं बार घंटी की आवाज सुनाई दी. इस बार हम पूरी तैयारी से थे कि यदि अब कोई सेल्समैन आया तो उसे हम बहुत खरी-खोटी सुनाएँगे. दरवाजा खोला और देखा सामने एक स्मार्ट युवक बकायदा कोट-टाई लगाए हुए तथा साथ में एक एयर बैग लिए खड़ा था. हमने अपनी योजना अनुसार उसे खूब खरी-खोटी सुनाई और दरवाजा बंद कर दिया और उनके बहुत देर तक घंटी बजाने पर भी हमने दरवाजा नहीं खोला. इस घटना के एक हफ्ते बाद दीदी को लड़केवाले देखने आए. लड़के के मम्मी-पापा दीदी को देख चुके थे. सिर्फ लड़के को ही लड़की देखनी थी. पर फिर से लड़के के मम्मी-पापा का लड़के के साथ देखने आना, यह बात हमारे गले नहीं उतर रही थी. जब वे लोग हमारे यहाँ आए, तब लड़के को देखकर मैं और दीदी दोनों शर्म से पानी-पानी हो गए क्योंकि हमारे होनेवाले जीजाजी ही अकेले हमारे घर आए थे और हमने उन्हें खूब सुनाया था. यही कारण था कि अब वे अपने मम्मी व पापा को साथ लेकर आए थे. हमारे जीजाजी इंजीनियर थे. दिखने में भी स्मार्ट थे. उनका परिवार भी काफी अच्छा था, इसलिए शादी की बात लगभग तय हो चुकी थी, फिर भी पिताजी ने उनसे ऐसे ही पूछ लिया, "क्यों बेटे, अंजली पसंद आई न तुम्हें?" तब जीजाजी ने भी जवाब दिया, "हाँ अंकल, अंजली तो मुझे पहली नजर में ही भा गई, पर जरा अंजली
से भी तो पूछ लीजिए कि एक च
सेल्समैन के साथ शादी करके वह
न!" पहले तो पिताजी यह बात नहीं
में बताने पर सब मिलकर खूब हँसे.
शादी उसी सेल्समैल वाले जीजाजी
चुकी है और आज भी सब उस घटन
खूब चिढ़ाते हैं. **– कु. आर. रीनू**

हार्ट स्पेशलिस्ट

अस्पताल के लैब में हम पहली
आँखें चार हो गईं और मुझे प
लेकिन मेरी तरफ उन्होंने देखा था कि
मुझे पता नहीं चला. उनका आखिरी
इसलिए हम सब उन्हें विदाई दे रहे थे.
समारोह में उन्होंने गाना गाया, "ए मेरे
एक जरा इंतजार, सुन सदाएँ दे रही हैं
की." और फिर मैंने गाया था, "तेरे जाने
है और दिल क्यों उदास है, दूर हम हुए त
तो दिल के पास है." वह हमसे स
इसलिए दस लड़के-लड़कियों का कैंप
के साथ सर्वे करने गया था. तब मैंने सुन
समझकर उन्हें प्रेमपत्र लिखा था. उन्होंने
दिया. उस दिन से मैंने उन्हें देखना ही
क्योंकि फिर हमारी परीक्षा थीं. मुझे मे
पूनम ने बताया कि विशाल औरंगाबाद
और उसने मुझे तुम्हारे लिए यह खत दिय
ऐसा लगा कि अब मैं उसे कभी भी न मिल
आप जानते हैं, उस खत में क्या लिखा
तक किसी प्रेमी ने अपनी प्रेमिका को ऐस
लिखा होगा. वह प्रेमपत्र था, कागज पर
स्याही से लिखा हुआ. सारांश था:

'मैंने तुम्हें उस वक्त जवाब इसलिए
क्योंकि तुम्हारी परीक्षा थी और तुम मेरे ह
में बसी रही. हमारे मम्मी-पापा ने हमें य
कैरियर बनाने के लिए भेजा है. इसलिए
हूँ कि तुम मन लगाकर, पढ़कर अपने म
का नाम रोशन करो. मैं तुम्हें जरूर
मिलूँगा, क्योंकि मैं भी तुम्हें बहुत च
लेकिन मैंने अपना प्यार अपने दिल में द
मुझे मालूम है तुम्हें कितना दुख हुआ
जवाब पाकर, इसीलिए मैंने अपने खून
लिखा है. मुझसे कोई गलती हुई होगी
माफ कर देना.'

मुझे विशाल पर बहुत गर्व है, वरना आ
हॉर्ट स्पेशलिस्ट नहीं बन पाती. आज एक
सहयोग देते हुए विशाल और मैं एक सुख
जीवन बिता रहे हैं. **– विद्या विशाल, औ**

**इस स्तंभ में आप कोई ऐसी रोचक 'पहली
विचारार्थ भेज सकते हैं, जो जीवन की दास्तान
प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 200 रुपए की उपयोगी
जाएँगी. पत्र इस पते पर भेजें : माधुरी, जब वो मिले
बार, ए-28, सेक्टर 9, नोएडा - 201301.**

डर? और मुझे? Never !

"टेलीफोन की घंटी बजी तो डर। इनके दफ्तर से कोई दोस्त लोग आनेवाले हों तो घबराहट. अगर इन्होंने कहा - पार्टी में जाना है, तैयार हो जाओ - तो डर. मेरे बच्चों के कानवेन्ट स्कूल टीचरों से बातचीत करने में डर. मेरे इस तरह डरने का कारण था मैं अंग्रेजी नहीं जानती थी. लेकिन विवेकानन्द के हाई-पॉवर इंग्लिश कोर्स ने मेरे जीवन का रुख ही बदल डाला. अब किसी भी माहौल में मैं बिना कोई डर, बडी आसानी से, अंग्रेजी में बोल पाती हूँ. आप भी ट्राई करके देखिए न !

आपको यकीन हो जाएगा कि मैं बिलकुल सच कह रही हूँ ."

दीपा श्रीवास्तव



लगन और परिश्रम हो तो आप आसानी से अंग्रेजी सीख सकते हैं. इसके लिए क्रमबद्ध शिक्षा प्रदान करता है विवेकानन्द इंस्टिट्यूट. विवेकानन्द के हाई पॉवर कोर्स को बुनियादी - व्याकरण - बोलचाल - इन तीन स्तरों में विभाजित किया गया है. अपने लिए आवश्यक स्तर को चुनिये और घर बैठे, बैठे फुरसत के समय आसानी से अंग्रेजी सीख लीजिए. गलती करने के डर से मुक्त होकर, फटा फट अंग्रेजी बोलते जाइए.

विवेकानन्द का
हाई पॉवर इंग्लिश कोर्स

LEVEL - 1 (बुनियादी अंग्रेजी) ABCD से शुरू करके अंग्रेज़ी शब्द पढने, लिखने के लिए आसान शिक्षा, शुल्क केवल रु.150/-

LEVEL - 2 (व्याकरण की शिक्षा) अंग्रेज़ी व्याकरण बखूबी सीखकर, बिना ग़लती के पत्र, लेख लिखने के लिए सही शिक्षा, शुल्क केवल रु.175/-

LEVEL - 3 (स्पोकन इंग्लिश) किसी भी माहौल में बिना झिझक के आसानी से अंग्रेजी में बातचीत करने के लिए नूतन पद्धति की शिक्षा, शुल्क केवल रु. 200/-

LEVEL - 2&3 दोनों लेवलों में शिक्षा पाने के लिए शुल्क केवल रु. 325/-

LEVEL - 1,2&3 तीनों लेवलों में शिक्षा पाने के लिए शुल्क केवल रु. 450/-

अग्रिम राशि भेजने की आवश्यकता नहीं.
पाठों को हम V.P.P. द्वारा भेज देंगे.

यह कूपन पूरा करके आज ही भेजें

मैं विवेकानन्द के हाई पॉवर इंग्लिश कोर्स में दाखिल होना चाहता हूँ. पाठों को मुझे V.P.P. द्वारा भेजें. डाकिये को पैसा चुकाकर, छुड़ालूंगा.

(आवश्यक कोष्ठक में ✔ निशान लगायें.)

LEVEL - 1 ☐	नाम : ....
LEVEL - 2 ☐	पता : ....
LEVEL - 3 ☐	....
LEVEL - 2&3 ☐	....
LEVEL - 1,2&3 ☐	पिन कोड : ....

VIVEKANANDA INSTITUTE

MDM

9, (H) Natesan Street, T. Nagar, Madras-600 017.

16 YEARS OF EXPERIENCE MORE THAN 6 LAKH STUDENTS BENEFITTED



मनोचिकित्सक से जानिए

अपने एकतरफा प्रेम का क्या करूँ?

मैं 32 वर्षीय सरकारी कर्मचारी हूँ. दो बच्चे हैं. मैं अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता हूँ, पर कुछ दिनों से अपने से दो-तीन साल बड़ी अपने दफ्तर की एक सहकर्मी से प्यार करने लगा हूँ. उसके बिना मेरा जीवन नीरस लगता है. मेरा प्रेम पवित्र है. वह अपने विवाहित जीवन में सुखी व प्रसन्न है. मेरा प्रेम एकतरफा है. मुझे डर है कि कहीं मेरे कारण उसके सुखी दांपत्य जीवन में दरार न आ जाए. वह भी मुझे काफी समझा चुकी है. मैं सच्ची तपस्या कर रहा हूँ कि अगले जन्म में हमारा मिलन अवश्य हो. क्या मेरा सोचना गलत है? कृपया मुझे सही राय दें.

– अनिल कुमार, दिल्ली

किसी से मन में लगाव हो जाना प्राकृतिक है, परंतु उस लगाव को प्रकट करने से पता चलता है कि आपको अपनी भावनाओं पर नियंत्रण नहीं है. हैरत की बात है कि आपको इस बात का फिक्र है कि उस लड़की के विवाहित जीवन में कोई दरार न आ जाए, परंतु आपको इस बात की फिक्र नहीं है कि आपकी शादी में भी दरार आ सकती है. शायद इसलिए कि बीवी तो आसानी से छोड़कर कहीं जाएगी नहीं, रो-धोकर चुप रह जाएगी, इसलिए जो मर्जी करो. यदि आपकी पत्नी का किसी और से लगाव हो जाता, तो आप क्या करते? अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा, वापस अपने गृहस्थ जीवन में लौट जाइए. कोई आपका इंतजार कर रहा है. यदि आप अपनी पत्नी के साथ 15 दिन के लिए छुट्टी मना आएँ, तो फर्क महसूस करेंगे.

अजीब समस्या से ग्रस्त हूँ

मैं एक 19 वर्षीय लड़का हूँ. मैं दो-तीन वर्षों से एक अजीब समस्या में ग्रस्त हूँ. मैं विभिन्न तरह की हरकतें करता हूँ और सोचता हूँ कि अगर ऐसी हरकतें नहीं करूँगा तो संन्यासी बन जाऊँगा या मेरा अगला जन्म बेकार होगा. कभी-कभी जमीन पर देखकर चलता हूँ कि कहीं कोई जीव न मर जाए. इससे मुझे पाप लगेगा, जिसे मुझे ही उतारना पड़ेगा. एक बार मैं वैष्णो देवी की यात्रा पर गया तो सोचने लगा कि इस संसार को छोड़कर मुझे संन्यासी बन जाना चाहिए. मैं यह बहुत अच्छी तरह जानता हूँ कि यह मेरी मानसिक बीमारी है, पर मैं इससे छुटकारा पाना चाहता हूँ, अन्यथा आत्महत्या के अलावा मेरे पास कोई उपाय नहीं. आप कोई दवा लिखें तथा यह भी लिखें कि यह दवा कहाँ मिलेगी?

– योगेश दत्त, आबू रोड

प्रिय योगेश आपके पत्र में ऐसा कुछ नहीं है कि आप आत्महत्या कर लें. ये चिंता और अवसाद के चिह्न हैं. आपको किसी मनोवैज्ञानिक को दिखाना चाहिए. अक्सर जब नीचे देखकर चलने के विचार मन में आते हैं कि कोई जीव-जंतु न मर जाए तो सोचें कि किस-किस को आप बचाएँगे. ऐसा कब होता है? जब आपको अपने पर भरोसा नहीं रहता. इसीलिए थोड़े से संकेत मैं आपको दे दूँ कि आप और क्या-क्या कर सकते हैं.

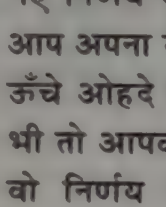
- **तीन किलोमीटर सैर अवश्य करें.**
- **रोज डायरी लिखें. एक सप्ताह बाद अपनी सात दिन की डायरी दोबारा-तिबारा पढ़ें. धीरे-धीरे आप देखेंगे कि कितने नकारात्मक विचार आप स्वयं बदल लेंगे.**
- **कोई खेल अवश्य खेलें, चाहे वह बैडमिंटन हो या कुछ और. दौड़ना या पैरों के तेज-तेज व्यायाम करना अच्छा होता है. खेल में हारना तथा जीतना व्यक्ति सीखता है. यह सब प्रयास कीजिए, फिर पत्र लिखिए.**

शादी को लेकर परेशान हूँ

मैं 29 वर्षीय लड़की हूँ. घर में माँ-पिताजी व छोटा भाई हैं. मैं उच्च पद पर कार्यरत हूँ और अपना घर खुद चलाती हूँ. पिताजी व भाई कभी कोई कार्य नहीं करते. मैं छह वर्षों से उच्च पद पर कार्यरत अपनी ही जाति के एक युवक से प्यार करती थी. हमने शादी का फैसला भी किया था, पर मेरे घरवालों ने इंकार कर दिया और मुझे बहुत प्रताड़ित किया कि मैंने किसी युवक की ओर देखा भी क्यों? युवक के घरवालों ने भी मेरे परिवारवालों को समझाया, पर वे नहीं माने. उसके घरवालों ने गुस्से में उस युवक की कहीं और शादी कर दी. मेरे घरवाले मुझे प्रताड़ना देते हैं तथा चरित्रहीन भी कह मेरी शादी की बात चल रही है. कई त मुझे देखने आते हैं. मैं अपनी प्रदर्शनी हो गई हूँ. अब मैं सारी उम्र अविवा चाहती हूँ. क्या इसमें कोई बुराई है? मु आत्मविश्वास है. क्या समाज में मुझे मिलेगा? मैं मानसिक रूप से बहुत प सुझाव दें.

– साधना,

प्रिय साधना, आपने पत्र में लिख आपमें बहुत आत्मविश्वास है, पर नहीं लगता कि घरवालों के सामने आत्मविश्वास किसी काम में आता है जो लड़का आपने स्वयं पसंद किय उसके घरवाले भी मानते थे, फिर वजह से आप दब गईं. अपनी प्रदर्शनी में आप थकती हैं, उसे मैं समझ क्योंकि मैं जानती हूँ कि यह चुभने बात है. मैं यह भी कहूँगी कि आप शादी न भी करें, आपको समाज में स मिल सकता है, क्योंकि समाज में जगह बनाना आपके अपने हाथ लेकिन शादी न करने का निर्णय समझदारी से नहीं कर रहीं, गुस्से मे रही हैं. गुस्से में या भावना में बहकर गए निर्णय कभी ठीक नहीं होते. अ आप अपना साथी स्वयं चुन सकती हैं. ऊँचे ओहदे पर काम कर रही हैं. वह भी तो आपको निर्णय लेने पड़ते होंगे. वो निर्णय भी आप अपने घरवाल पूछकर लेती हैं? कहने का तात्पर्य यह अब आप बच्ची नहीं रहीं. या तो आप निर्णय लेने में डरती हैं कि अगर कोई के बाद ऊँच-नीच हुई तो घरवाले कहेंगे. इसके जवाब में तो मैं यही क कि घरवाले जो लड़के ढूँढकर देते हैं, वहाँ ऊँच-नीच नहीं होती. ऊँच-नीच किसी भी रिश्ते में होती है. आप जीवनसाथी की तलाश कीजिए जीवन में समझौता करने की तै कीजिए.



डॉ. अरुणा ब्रूटा

इस स्तंभ में आप की मानसिक सम का निदान डॉ. अरुणा (रीडर, मनोविज्ञान वि दिल्ली विश्वविद्यालय) करेंगी.
अपने पत्र निम्न पते पर भेजें :
माधुरी, मनोचिकित्सक से
ए-28, सेक्टर 9, नोएडा - 20

आतंकवाद की धरती पर विकास की किरणों का

'उजाला'

ल्ली में बन रहे धारावाहिकों की दिन प्रतिदिन बढ़ती संख्या में गुणवत्ता और विषयों के कुशल चयन की लगातार अनदेखी हो रही ही कारण है कि दर्शक यहाँ के धारावाहिकों में कम रुचि रखते हैं. माहौल में भी छोटे परदे से जुड़े कुछ प्रबुद्ध लोगों ने अपने धारावाहिक र्माण में समुचित, संतुलित व विषयात्मक कहानियों का प्रयोग किया

शे से अधिवक्ता व छोटे परदे के लिए लगभग एक दशक से निर्माण से जुड़े विनोद श्रीवास्तव ने अपने नए धारावाहिक 'उजाला' की ति को रोचक, प्रेरक व संदेशात्मक बनाने के लिए एक उत्कृष्ट ात्मक कहानी का प्रयोग किया है.

उजाला' गिरिवन अंचल नामक एक ऐसे वनप्रदेश की कहानी है, अशिक्षित और पारंपरिक रुढ़ियों से जकड़े लोगों का प्रदेश है. ाओं की दुहाई देकर वहाँ के कुछ उग्र नवयुवकों ने उन्हें अपने कवाद के साये में जीने को मजबूर कर दिया है. ऐसे में विकास के क के रूप में वहाँ उभरे एक आइ पी एस ऑफिसर की ासोन्मुख गतिविधियों और वहाँ के आतंकवादी प्रवृत्ति में टकराहट स्वाभाविक है, पर इस टकराहट में जीत उस ऑफिसर के प्रयासों ही होती है, जिसे उस प्रदेश की विकास की इच्छुक एक युवती का ोग मिलता है.



संपूर्ण धारावाहिक में आतंकवादी और विकासोन्मुख प्यास की जद्दोजहद को दिखाया गया है, जिसमें सांगा (मयंक श्रीवास्तव) व सुष्मिता (रुचिका गुलयानी) जैसे आतंकवादियों ने भी अपनी करतूतों को बखूबी अंजाम दिया है. बारह एपिसोड के इस धारावाहिक लगभग 80% शूटिंग पूरी हो चुकी है. इसे दिल्ली व देहरादून (डाक र), गुड़गाँव (दमदमा झील) आदि स्थलों में फिल्माया गया

धारावाहिक के निर्देशक मनीष श्रीवास्तव हैं.

अजय त्रेहण, पूजा रावल, अनुपमा चौधरी, रुचिका गुलयानी, मयंक ास्तव, सुबोध श्रीवास्तव, मयूर, उदय भट्ट और प्रवीण पांडेय आदि की मुख्य भूमिकाओं में हैं.

निर्माता के अनुसार दूरदर्शन के मुख्य चैनल पर सितंबर से धारावाहिक प्रसारण प्रारंभ हो जाने की संभावना है.

मानसिक विकलांगों के लिए

'एक घर आसपास'

(भाग दो)

मानव जीवन वैसे ही कई प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त होता है और समस्याएँ यदि विकलांग लोगों से जुड़ी हों तो और भी कठिन और असहनीय हो जाती हैं. धारावाहिक 'एक घर आसपास' में ऐसे ही विषयों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, निर्माता प्रो. अली वाकर ने. उन्होंने अध्ययन-अध्यापन के अपने कार्यक्षेत्र में इन समस्याओं पर काफी काम करने के बाद धारावाहिक के माध्यम से लोगों तक पहुँचाने का निश्चय किया है.

मानसिक विकलांग यानी मंदबुद्धि बालकों पर बनाए गए धारावाहिक 'एक घर आसपास' के भाग एक के तेरह एपिसोड को दूरदर्शन के मुख्य चैनल पर दिखाया जा चुका है, जबकि इसके दूसरे भाग के तेरह एपिसोड दूरदर्शन पर ही दिखाए जानेवाले हैं.



धारावाहिक के प्रथम भाग में एक मंदबुद्धि लड़के के समस्या ग्रस्त जीवन को न केवल दिखाया गया था, बल्कि इस तरह के बच्चों की समस्याओं के समाधान के उपाय भी दिखाए गए थे. धारावाहिक के दूसरे भाग में ऐसी ही एक मंदबुद्धि लड़की की कहानी है.

दिल्ली महानगर के निम्न, मध्यम और उच्च तीनों स्तर के परिवारों की जीवन शैली को दिखाते हुए कहानी के घटना क्रम मूलतः मंदबुद्धि लड़की अंजू पर घूमती है, जो इस कहानी का केंद्रीय पात्र है.

सफलता-असफलता, आशा-निराशा, घृणा-प्रेम, आकर्षण-विकर्षण, संदेह-समर्पण, लोभ-त्याग, उत्तरदायित्व-पलायन जैसे अनेक भावों की सहज अभिव्यक्ति इस धारावाहिक के माध्यम से देखी जा सकती है.

समाज के हर वर्ग के लिए दर्शनीय इस धारावाहिक में महानगरीय सभ्यता के हर पक्षों को तो दिखाया ही गया है, महानगरीय जीवन की कुंठाओं, समस्याओं से जूझने की प्रेरणा भी दी गई है.

धारावाहिक की कहानी स्वयं प्रो. अली वाकर ने लिखी है जो प्रारंभ से ही मंदबुद्धि व्यक्तियों की समस्या पर का[illegible] हैं. इसके निर्देशक प्रमोद माथुर हैं.

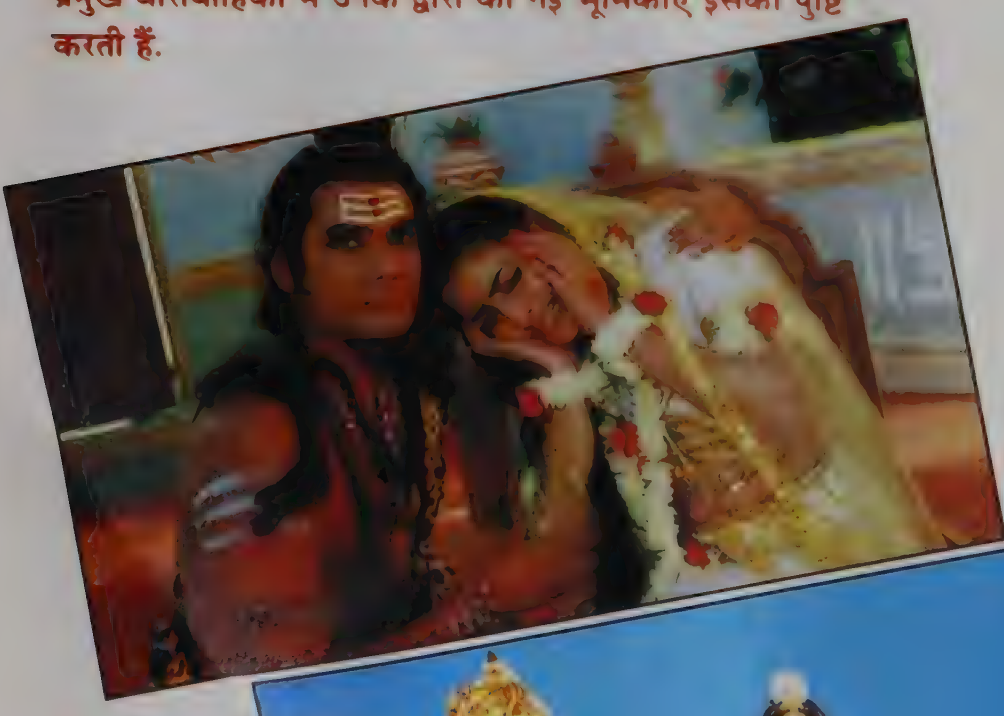
जयश्री आरोड़ा, वीना, प्रदीप कुकरेजा, नूतन, सूर्या, डॉली अहलूवालिया, सुधीर कक्कड़, अ[illegible] शर्मा, कामला कोचर, फ्लोरा बोस व अनील चौधरी की इसमें मुख्य भूमिकाएँ हैं.

– अमर आनंद



"शरीर, रूप और नाचगाना किसी को स्टार नहीं बनाता"–राधाकृष्ण द

अभिनय के प्रति राधाकृष्ण की प्रारंभिक रुचि और उसके लिए की गई मेहनत ने आज उन्हें एक सफल अभिनेता बना दिया है. दूरदर्शन के चर्चित प्रमुख धारावाहिकों में उनके द्वारा की गई भूमिकाएँ इसकी पुष्टि करती हैं.



'श्री गणेश' में शिव के किरदार में



'जय गणेश' में विष्णु की भूमिका में

● नारायण

किस प्रकार सहनशीलता, ि धैर्य और अटूट लगन के ब कोई सफलता की ऊँचाइयों लेने में सफल हो सकता है, इस सच्च प्रमाणित करनेवालों में एक नाम है युवा क राधाकृष्ण दत्त का.

राँची निवासी 28 वर्षीय राधाकृष्ण छात्रजीवन से ही अभिनय और संगीत क उन्मुख हो गए. वे स्कूल की पढ़ाई के साथ नाटकों में भी अभिनय किया करते थे. वे स्कूल ऑफ ड्रामा, नई दिल्ली से स्नात अभिनय के अलावा लेखन, निर्देशन और में भी उनकी गहरी रुचि थी. वे अच्छा तबल लेते हैं. हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, अवधी भोजपुरी धाराप्रवाह लिख-बोल सकते हैं.

बिहार में दिल्ली के नेशनल स्कूल ऑफ का तीन महीने का शिविर लगा. इस शि उन्हें कर्नाटक के प्रसन्न, बेरी जॉन, बी. ए बादल सरकार जैसे मंजे हुए नाट्य कलाक मार्गदर्शन मिला बिहार सरकार के विभाग में इन्हें स्टैटिस्टिकल असिस्टेंट की मिल गई, किंतु तीन महीने बाद ही वे छोड़कर दिल्ली चले आए और एन.सी.ड

हुए उन्होंने कई ख्यातिलब्ध निर्देशकों के अनेक नाटकों में अभिनय और कई नाटकों निर्देशन भी किया. उन्होंने अल्बेई कामू, यर, रंजीत कपूर, जॉन रिटालिक, रोबिनदास, भारती, के.एन. पणिकर प्रसन्ना थम्बीस र्थी, कार्लो गोल्दोनी जैसे विख्यात कारों के बहुचर्चित नाटकों में अभिनय भी और उनका सफल निर्देशन भी. राधाकृष्ण अभिनेता के साथ-साथ नाट्यनिर्देशक भी हैं. धाकृष्ण ने कई रंगमंच कार्यशालाएँ दिल्ली, , राँची आदि कई जगहों पर आयोजित कीं. ने बीवियों का मदरसा, हिंदुस्तानी, हड़ताल, : राजा, मुन्ना, न्यायप्रिय तथा प्रेमचंद की नियों का नाट्यनिर्देशन किया. नाटकों के साथ कई टेलीफिल्मों में भी काम किया, ं 'संत ज्ञानेश्वर' प्रमुख है. इस फिल्म में ने संत ज्ञानेश्वर की भूमिका की है. वह कई प्रिय टीवी सीरियल में महत्त्वपूर्ण भूमिका चुके हैं और अभी भी कर रहे हैं.

टीपू सुल्तान' में बालकृष्ण, 'किस्मत' में त्य गोखले, 'प्रेम पहेली' में बबुना, 'पी.ए. ' में डिपुटी सी.एम. (गिरधारी लाल), र्टर' में चंद्र, रामानंद सागर के 'श्रीकृष्ण' में ंध (प्रधान खलनायक), 'चंद्रकांता' में



'श्री कृष्ण' धारावाहिक में जरासंध की भूमिका के तेवर दिखाते राधाकृष्ण दत्त.

बादल, 'शीशे' में रवि दत्ता (प्रधान खलनायक), 'जय गणेश' में विष्णु , 'अहसास' में जुल्फी (नायक), 'गीता रहस्य' में उधव, मोती सागर द्वारा निर्मित 'अलिफ लैला' में साबिर हुसैन (प्रधान नायक) तथा अभी चल रहे सीरियल 'जुनून' में भी इन्होंने काम किया है. इनके अलावा 'चाणक्य' में अखलायन, 'भारत के शहीद में' चौराचौरी कांड के हिंदु नेता खिलावन भट्ट और 'सात बात की एक बात' सहित अनेक धारावाहिकों में इन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ की हैं.

कई आनेवाले धारावाहिकों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए इनका चयन किया जा चुका है. इनमें मीराबाई, बाइबिल की कहानियाँ, गुत्थियाँ, चंद्रिका, उड़न छू, बादल, सत्य की हत्या आदि है.

अपनी अभिनय कला और शैली के विषय में राधाकृष्ण कहते हैं कि मेरी कोई खास शैली नहीं है. नाटक की माँग के मुताबिक मैं शैली का चयन करता हूँ. कथावस्तु के प्रभावशाली संप्रेषण के लिए शैली की आवश्यकता होती है. अत: शैली के विषय में लचीला रुख अपनाना चाहिए.

अभिनय के विषय में राधाकृष्ण का कथन है कि शरीर, रूप और कुछ नाचगान किसी को स्टार नहीं बना सकता. मूल तो अभिनय है. अत: अभिनय से ही दर्शकों का दिल जीता जा सकता है. अपने विषय में वे कहते हैं कि मैं कभी ऐसी भूमिका नहीं करना चाहूँगा, जो मेरी आयु और शरीर की संरचना के अनुकूल नहीं बैठती हो. पात्र और चरित्र के साथ पूरा न्याय होना चाहिए. ■

---

19 का शेष/किचेन गार्डन

- घर जाकर लोगों को फल-फूल, सब्जी के बारे में जानकारी देते थे तब ऐसा लगा बहुत से लोग इस को सीखना नहीं चाहते हैं. हमने कई कोर्स शुरू किए, जैसे फ्रूट र्वेशन, इकेबाना, बोंसाई, रंगोली, वेजीटेबल विंग, बेसिक गार्डेनिंग कोर्स आदि. ये सभी कहीं न कहीं फल-फूल, सब्जियों से जुड़े हैं. जब इसको कोई करनां चाहता है, तो उसे न गार्डेन के बारे में बहुत कुछ जानकारी जाती हैं. फिर स्वत: ही वह हमारा सदस्य जाता है.

यह कोर्स जो हमारी संस्था द्वारा चलाए जाते बहुत लंबी अवधि के नहीं होते हैं. राजधानी हर वर्ष एक-दो बार हम कोर्स कराते हैं. महिलाओं की माँग के अनुसार भी कोर्स की स्था कराई जाती है. राजधानी से बाहर के यों के लिए पत्राचार द्वारा कोर्स कराने की स्था है.

अभी हाल ही में इस संस्था ने रेड क्रास , गोल्फ लिंक में इस कोर्स की व्यवस्था की. के अनुसार यह दो पारियों मे किया गया- प्रात: दूसरा सायं. बेसिक गार्डेनिंग कोर्स की धि दस दिन है और एडवांस गार्डेनिंग की



सरलाजी अपने घर के बगीचे को भी पूरे लाड़ से संभालती, सँवारती हैं.

पाँच दिन. इकेबाना, रंगोली भी पाँच-पाँच दिन की अवधि वाले कोर्स हैं तथा वेजीटेबल कार्विंग प्रशिक्षण की अवधि तीन दिन निर्धारित है. इसके लिए प्रशिक्षार्थियों को कुछ फीस भी देनी पड़ती है. इस कोर्स की विशेषता यह है कि इसे महिला या पुरुष कोई भी कर सकता है. इसके अलावा उम्र और शिक्षा का कोई सरोकार नहीं है. यह प्रशिक्षण भी हिंदी में दिया जाता है.

सरलाजी बताती हैं कि हमारी संस्था की सदस्यता शुल्क मात्र 15 रुपए सालाना है. आजीवन सदस्यता शुल्क दो सौ रुपए है. हमारे बहुत से सदस्य चाहते हैं कि सदस्यता शुल्क बढ़ना चाहिए, पर मैं अड़ी हुई हूँ क्योंकि मैं चाहती हूँ कि पैसा उतना होना चाहिए, जिससे एक गरीब तबके का आदमी भी जुड़ सकें, जानकारी हासिल कर सके.

जनता की आवश्यकता देखते हुए इस संस्था ने कुछ वर्ष पूर्व टैरेस गार्डेन कोर्स भी शुरू किया. इससे पहले यह किसी ने भी नहीं किया था.

आज इस संस्था ने इतनी प्रगति कर ली है कि घर-घर जाने की जरूरत नहीं रहती. अब जहाँ 15-20 महिलाएँ इकट्ठी होती हैं, जैसे किटी पार्टी आदि में, और वहाँ हमें बुलाया जाता है, तो वहीं हम जाते हैं.

अपनी संस्था के भविष्य की योजना बताते हुए सरला भार्गव कहती हैं कि [illegible] योजना है कि 'हर्बस' के विभिन्न प्रकार के [illegible] उद्यान लगाए जाएँ. उनके बारे में [illegible] है. सफाई और पौधों के प्रति [illegible] में रहनेवाले लोगों को जागरूक करें. [illegible] में होनेवाले 'शो' में प्रतियोगि[illegible] हरित क्रांति के लिए [illegible] —नीरा कुमार

आँखों-कानों से गुजरते हुए दिलोदिमाग पर छाया एक सिलसिला

हिंदी सिनेमा

60 के दशक में फिल्मों में रंगीन क्रांति हुई. पोस्टरों में खासतौर पर लिखा जाने लगा 'इस्टमैनकलर'. शम्मी कपूर की 'याहू' अदा ने फिल्मों का तेवर बदल डाला. स्टूडियो सेट्स का जमाना ढल चुका था. आउटडोर शूटिंग के दौरान दिलकश नजारे कैमरे में कैद होने लगे. तकनीकी दृष्टि से भारतीय फिल्मी दुनिया काफी प्रगति कर चुकी थी. डबल-ट्रिपल रोल ही नहीं, अब अभिनेता-अभिनेत्री कई-कई रोल करने लगे. हीरोइन का लंबी-लंबी चोटियों को झुला-झुलाकर शर्माते हुए, हलके-हलके मटककर गीत गाने और हीरो का बिना किसी खास एक्शन के हीरोइन को देखते हुए गाना गाने का मौसम भी खत्म हो चुका था. जमाना जवाबी हमले जैसा आ गया. जैसे हीरोइन ने नृत्य किए, वैसे ही हीरो ने भी.

पार्श्व गायन और संगीत में लक्ष्मीकांत प्यारेलाल, राहुल देव बर्मन, जयकिशन, कल्याणजी आनंदजी (सभी संगीतकार), लता, आशा, कुमार, मोहम्मद रफी, मन्नाडे, मुकेश जैसे नामी-गिरामी गायक-गायि के अलावा हेमलता, चंद्राणी मुखर्जी, आरती मुखर्जी, अनवर, शैलेंद्र चंचल, मनहर उधास जैसे कुछ सुरीले स्वर भी उभरे.

सत्तर के दशक में सबसे उल्लेखनीय रहा राजेश खन्ना और अ बच्चन का उभरना. वस्तुतः राजेश खन्ना ने सुपर स्टार जैसे खिताब की





रखी. यों तो इससे पहले भी अभिनय, बाँकापन और रोमांटिक अदाउ दिलीप कुमार, राजकुमार, राजकपूर, देवानंद, राजेंद्र कुमार, शम्मी जैसे बड़े अभिनेताओं ने बुलंदी तक पहुँचाया, किंतु सामाजिक व्यवस कहें कि उस समय उतना खुलापन नहीं था, जो दर्शक अपनी दीवान सरेआम प्रदर्शित कर पाते. इस दौर में वह दीवार ढह रही थी. दर्शकों, समीक्षकों ने राजेश खन्ना को सुपरस्टार का ताज पहनाया. 'आरा 'अमरप्रेम', 'दाग', 'रोटी', 'नमक हराम', 'हाथी मेरे साथी', 'दो



• राजश्री दत्त

एक शताब्दी का सफर



अमिताभ : 'द वन एंड ओनली'.

र', 'कटी पतंग', 'आनंद', 'बावर्ची', ूबा', 'प्रेमनगर' आदि फिल्में इस सच्चाई जबान हैं. अपनी रोमांटिक छवि से लबरेज ा खन्ना जहाँ यौवनाओं को प्रेमातुर कर रहे हीं सही मायने में हीरो की छवि लिए धर्मेंद्र ा और शबनम', 'अनपढ़', 'शिकार', ाकत', 'किस्मत', 'लोफर', 'काजल', ते', 'आदमी', 'सत्यकाम', 'फूल और ', 'अनुपमा', फिर 'चरस', 'जुगनू', त', 'धरमवीर' आदि में खूब जँचे. ा रोबीली भूमिकाएँ धर्मेंद्र के ूल रहीं. थोड़े अंतराल पर उभरे द. 'गुनाहों का देवता', 'गीत गाया ों ने', 'कारवाँ', 'हमसफर', चारी', 'मेरे हुजूर' वाला जितेंद्र की फिल्मों में बाँका छैला बनकर मजनूँ की छवि में ढल गया. गुलजार ने 'परिचय', 'किनारा', 'खुशबू' आदि फिल्मों में जितेंद्र की गंभीर छवि बनाई.

छोटे-बड़े सितारों के बीच कुछ ऐसे उल्लेखनीय नाम रहे, जो एक गति से हमेशा लोकप्रिय बने रहे. इनमें संजीव कुमार का नाम सबसे आगे है. 'खिलौना', 'मौसम', 'परिचय', 'आँधी', 'नया दिन-नई रात', 'नौकर', 'त्रिशूल', 'शोले', 'पति-पत्नी और वो', 'कोशिश' आदि कुछ ऐसी फिल्में हैं, जिन्होंने दर्शकों को संजीव कुमार के अभिनय का कायल बना दिया. इस बीच कपूर खानदान का एक सलोना-सा चेहरा शशी कपूर ने भी 'जब-जब फूल खिले', 'एक हसीना दो दिवाने', 'फकीरा', 'शान', 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्', पुनः 'उत्सव', 'विजेता', 'कलयुग', 'सिद्धार्थ' के जरिए अपनी अलग छवि बनाई.

इनके बीच से उभरा लंबे कद और विशेष केश-विन्यास से सुसज्जित अमिताभ बच्चन, हिंदी फिल्मों का महानायक और

रेखा, श्रीदेवी, माधुरी जैसी अभिनेत्रियाँ अकसर हीरो पर हावी रहीं.







एक ओर 'अंकुर', 'अर्धसत्य' और 'व
कला फिल्मों ने दर्शकों पर एक खास







पहला एंग्री यंगमैन. अमिताभ ने हिंदी फिल्मों की काया पलट कर रख दी और बच्चे-बूढ़े, युवा सबके मनोमस्तिष्क पर छा गए. सत्तर से अस्सी दशक तक वे हिंदी सिनेमा के बेताज बादशाह रहे. एंग्री यंगमैन की छवि बनी फिल्म 'जंजीर' से, फिर यह यात्रा 'दीवार', 'डॉन', 'आनंद', 'नमक हराम', 'शोले', 'ग्रेट गैंबलर', 'नमक हलाल', 'अभिमान', 'सिलसिला', 'मि. नटवरलाल', 'मुकद्दर का सिकंदर', 'सुहाग', 'अमर अकबर एंथोनी', 'शक्ति', 'शराबी' तक रही. कुछ समय तक थमी, फिर 'जादूगर', 'तूफान', 'खुदागवाह' आदि में कोई खास तिलस्म नहीं छोड़ पाए, पुनः यह यात्रा 'मृत्युदाता' से नए सिरे से आरंभ हुई है.

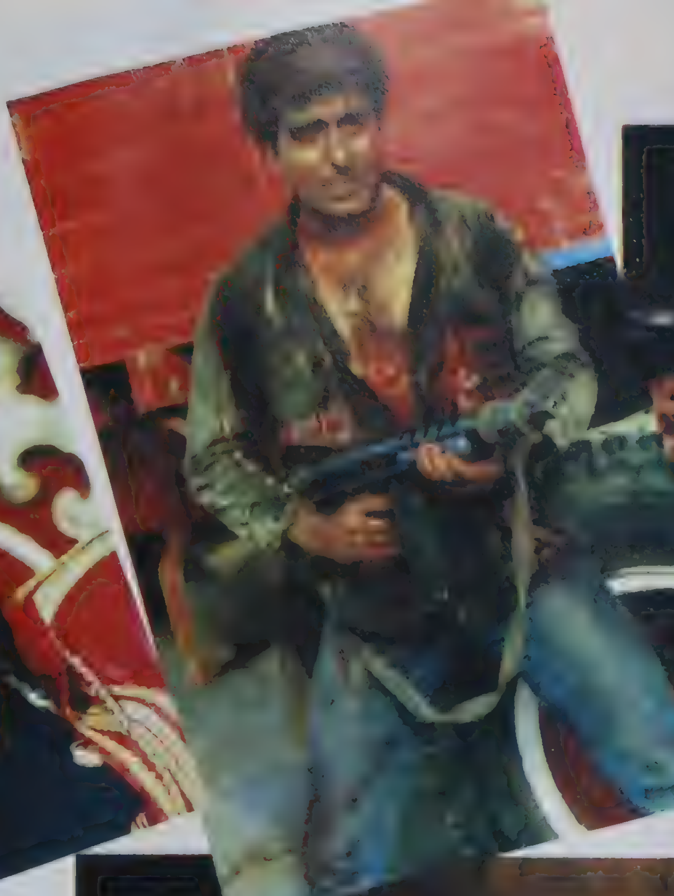
बीच-बीच में विनोद खन्ना, शत्रुघ्न सिन्हा, फिरोज खान, संजय खान, रण... नवीन निश्चल जैसे अभिनेता भी जगम... पड़ते रहे. सत्तर के दशक में ही एवर... ने अपनी नई खोज जीनत अमान को '... हरे कृष्णा' में धमाके के साथ प्रस्तुत कि... जीनत ने शैली, अभिनय की दृष्टि से भारतीय सिनेमा में काफी हद तक खुलापन और पश्चिमी रंग भरे. दक्षिण से आई दो हीरोइनें सत्तर और अस्सी के दशक में रुपहले परदे पर अभिनय की रंगीनियाँ बिखेरती रहीं. ये अभिनेत्रियाँ थीं 'ड्रीमगर्ल' हेमा मालिनी और मासूम आँखोंवाली रेखा. भारतीय सौंदर्य के मानदंडों पर खरी उतरती इन अभिनेत्रियों ने लंबे समय तक दर्शकों के दिल पर राज किया. हेमामालिनी की 'सपनों का सौदागर', 'तेरे मेरे सपने', 'सीता और गीता', 'महबूबा', 'ड्रीमगर्ल', 'मीरा', 'रजिया सुल्तान' 'प्रतिज्ञा', 'शोले' और रेखा की 'सावनभादो', 'किस्मत', 'खूबसूरत', 'झूठी', 'मुकद्दर का सिकंदर' आदि फिल्मों ने खूब तहलका मचाया और इससे ज्यादा शोर मचा हेमा-धर्मेंद्र और रेखा-अमिताभ की रोमांटिक जोडी को लेकर फिल्मी चमक-दमक के बीच अपनी सादी छवि से मन मोहनेवाली एक अभिनेत्री जया भादुड़ी के ...ना इस दशक की अभिनय यात्रा अधूरी रह ... जया ने 'गुड्डी', 'परिचय', 'नौकर', 'जवानी दीवानी', 'अनामिका', '... 'सिलसिला', 'फागुन', 'बावर्ची' आदि ... में बेहतरीन अभिनय का प्रदर्शन किया.

सत्तर के उत्तरार्द्ध में टीनएजर अभि... का आगमन आरंभ हो चुका था. शोमैन रा... ने अपनी फिल्म 'बॉबी' में भव्यतापूर्वक इ... पर उतारा. इस सिनेमा को देखने के बाद ... कितने टिनएजर्स ने आपस में प्यार-मोहब्ब... कसमें उछालीं. फिर तो बाद के निर्देश... इससे खूब प्रेरणा ली. 'जूली', 'दो जासूस' ... स्टोरी', 'एक दूजे के लिए' और आज टी... पर बनी फिल्में इसके चरम पर हैं. ... मुमताज, शर्मिला, आशा पारेख, नंदा वगैरह ... से पहले आ चुकी थीं, फिर भी इस दौरान ... ग्राफ ऊँचा रहा. 'एक दूजे...' के साथ ही ... सिनेप्रेमियों को कमला हसन जैसा बे... अदाकार मिला.

महानायकों, खूबसूरत और ड्रीमगर्ल ... के बाद जमाना पूरी तरह से टीनएजर्स ... चॉकलेटी हीरो, फिर मसलमैन जैसे अभि... का आ गया. 'लव 86' की नीलम-गोविं... जोड़ी खूब चली. इससे पूर्व अस्सी के ... और सत्तर के अंत में ऋषि-नीतू की जोड़ी

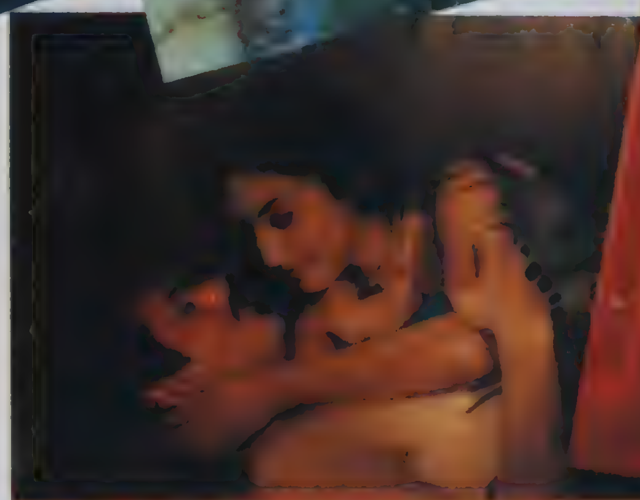
ओर फिल्मों में सेक्स, हिंसा, बलात्कार, बेडसीन साल दर बढ़ते गए.











धूम मचाई. टीना भी चमकी. ऋषी कपूर खासियत रही कि लंबे समय तक वे टिक हीरो के रूप में परदे पर बने रहे. हर ीरोइन के साथ उनकी जोड़ी जमी. रंजीता, प्रदा, टीना मुनीम, जेबा बख्तियार, किम, ा, तब्बू आदि कुछ ऐसे ही नाम हैं.

सत्तर के दशक में प्रकाश मेहरा, बी.आर. ड़ा, यश चोपड़ा, हरमेश मल्होत्रा, ोहन देसाई जैसे नामी निर्देशकों ने ोस्टारर फिल्मों की भरमार कर दी. इस न बतौर अभिनेता-निर्देशक मनोज कुमार ने 'क्रांति', 'रोटी, कपड़ा और मकान', ासी', जैसी सुपरहिट फिल्में बनाईं. चूँकि -अस्सी के दशकों में फिल्म में तमाम तरह मसाले और मनोरंजन मौजूद थे, अतः अभिनेताओं ने काफी हद तक हास्य अभिनेताओं की जगह भी ले ली थी. फिर भी असरानी, जगदीप, सदाबहार महमूद, केश्टो मुखर्जी जैसे हास्य अभिनेता अपनी जगह पर डटे रहे.

विशुद्ध व्यावसायिक फिल्मों के दौर में भी हलके-फुलके मनोरंजन वाली और गंभीर कला फिल्मों ने अपना वजूद नहीं खोया. राजश्री प्रोडक्शन की 'दुल्हन वही जो पिया मन भाए', 'चित्तचोर' के अलावा 'रजनीगंधा', 'गोलमाल', 'खट्टा-मीठा' आदि फिल्मों को दर्शकों ने खूब सराहा. दूसरी ओर श्याम बेनेगल की 'अंकुर', 'निशांत', 'भूमिका' लीक से हटकर फिल्में रहीं. 'मृगया', 'पार', 'पार्टी', 'पोस्टर', 'इंटरव्यू' आदि यथार्थवादी फिल्में भी बनीं.

अस्सी के दशक में जहाँ फिल्मों के नाम 'लव' और 'खून', 'लहू' आदि शीर्षक से बने, वहीं 'नदिया के पार' जैसी ग्रामीण पृष्ठभूमि पर बनी सीधी-सादी, कर्णप्रिय गीतों से भरी फिल्म ने भी खूब दर्शक इकट्ठे किए. दूसरी ओर सई परांजपे की सहज मनोरंजन वाली फिल्में 'चश्मेबद्दूर', 'कथा', 'मिर्च-मसाला' आदि ने भीड़ में अपनी अलग पहचान बनाए रखी

पार्श्व गायन और संगीत [illegible] का दशक मिलाजुला रहा [illegible] गायक-गायिकाओं [illegible] नजर आ रही [illegible] सेन-समीर [illegible] मलिक, जतिन-[illegible] अलका या[illegible] कृष्णामूर्ति, अनुराधा

चाकलेटी हीरो के अलावा धर्मेंद्र और नाना जैसे कलाकारों ने भी दर्शकों के दिल में जगह बनाई.





दिलीप, राज और देव की तरह कई नए हीरो भी अपनी अलग पहचान बनाने में सफल रहे.

पौंडवाल, साधना सरगम, उदित नारायण, कुमार शानू, सुदेश भोंसले (गायक-गायिका) इस दशक के उल्लेखनीय नाम हैं. 'ओए-ओए' और 'एक-दो-तीन-चार' तेज धुनवाले जॉज, डिस्को, रॉक के साथ-साथ 'मैंने प्यार किया' के कानों में मिश्री घोलनेवाली संगीत के स्वर भी सुनाई पड़ रहे हैं. 'चोली के पीछे क्या है', 'सरकाय लो खटिया' जैसे गाने जहाँ विद्रूपता भरते हैं, वहीं 'एक लड़की को देखा' जैसी क्लासिक धुनें भी बन रही हैं.

आज भारतीय सिनेमा तकनीकी दृष्टि से बहुत समृद्ध एवं लोकप्रिय हो चुका है. कोई भी विषय भारतीय सिनेमा की सूक्ष्म दृष्टि से अछूता नहीं रह गया है. हाँ, एक भारी बदलाव अवश्य आया है, नब्बे के दशक में कि 'सेक्सी' शब्द सौंदर्य का पयार्य बन गया है. अब किसी खास अभिनेत्री को 'सेक्स बम' नहीं कहा जाता. यहाँ तो सेक्सी धमाकों की भरमार हो गई है.

इन मानदंडों के बीच श्रीदेवी, माधुरी दीक्षित जैसे क अभिनेत्रियाँ जिन्होंने नृत्य और सौंदर्य तीन लोहा मनवा सचमुच इस द लाजवाब अभि ये. काजोल में टच है. करिश्मा उर्मिला, मनीषा आदि ने भी अप तैयार कर ली है.

पिछले दो द हिंदी सिनेमा क मजबूत पक्ष अभिनेताओं का यदि कहा जाए कि आज अधिकांश हिंद चरित्र अभिनेताओं के बूते पर चलती हैं न होगा. नसीरुद्दीन शाह, नाना पाटेकर, अ अमरीश पुरी, शक्ति कपूर, परेश रावल, खेर, कादर खान आदि ऐसे ही श्रेष्ठ अभि जिनका कद कभी-कभी हीरो से ऊँच आता है.

नब्बे के दशक में जहाँ अजय देवगन शेट्टी, अक्षय कुमार जैसे एक्शन अभिने अपना रंग जमाया, वहीं आमिर खान, स गोविंदा, शाहरूख, अनिल कपूर और सन्नी ने अपनी अलग इमेज बनाई है.

खर्राटों का आतंक

खर्राटों से भला क्या नहीं हो सकता? दिल का दौरा व उच्च रक्तचाप से लेकर तलाक तक. चौंक गए न आप, भला इतने खतरनाक भी साबित हो सकते हैं खर्राटे. जी हाँ, यह एक सच्चाई है.

अपनी बेगम के बलात् खर्राटों से परेशान तेहरान में एक शौहर ने तलाक के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाया है. निकाह हुए अभी चालीस दिन भी नहीं गुजरे कि गुलाम अपनी पत्नी फरजाना से पीछा छुड़ाने की कोशिश में लगा गुलाम ने अदालत में कहा कि उसकी पत्नी हर उसके खाने में नींद की दवा मिला देती थी, ताकि जब वह खर्राटे ले, तो वह जग न जाए. लेकिन एक दिन गुलाम बिना खाना खाए ही सो गया. कुछ देर बाद फरजाना के तेज खर्राटों से हड़बड़ाकर वह उठ बैठा. गुलाम ने बताया कि वह फरजाना को डॉक्टर के पास भी ले गया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ. हारकर उसे तलाक के लिए कोर्ट जाना पड़ा.

खर्राटे जीवन के लिए भी खतरनाक साबित हो सकते हैं. पिछले दिनों लखनऊ में खर्राटों पर आयोजित कार्यशाला में डॉ. जे.सी. सूरी व डॉ. एच.एस. हीरा ने बताया कि खर्राटों से दिल का दौरा और उच्च रक्तचाप की बीमारी भी हो सकती है. डॉक्टर के अनुसार जो व्यक्ति सोते समय पैर चलाते नींद में बिस्तर पर पेशाब कर देते हों या जिनके पेट में ज्यादा अम्ल बनता हो अथवा जो सो रुक-रुककर साँस लेते हों, उन्हें खर्राटों की हो सकती है. शराब पीनेवाले, भारी शरीर थायराएड की कमी से भी खर्राटे या एलीप के रोग से ग्रस्त हो सकते हैं. चिकित्सकों कि खर्राटों के कारण सोते वक्त व्यक्ति को दौरा भी पड़ सकता है, जबकि रुक-रुकक आने से उच्च रक्तचाप की बीमारी हो सक अत्यधिक रक्तचाप बढ़ने से अन्य गंभीर बी भी हो सकती हैं.

चिकित्सकों का कहना है कि खर्राटों से ब लिए जहाँ मोटे लोगों को अपना वजन कम क कोशिश करनी चाहिए, वहीं शराब से परहेज चाहिए तथा ज्यादा ऊँचा तकिया नहीं चाहिए.

– रश्मि



परदा है परदा

• शशी

आधुनिक युग में ही नहीं, अपितु पुरातन समय में भी परदे का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है. 'इंटीरियर डेकोरेशन' या आंतरिक सज्जा तो परदे के बिना अधूरी ही है. परदों का प्रयोग केवल सौंदर्य वृद्धि के लिए ही नहीं किया जाता, बल्कि किसी वस्तु को ढकने के लिए, किसी भी आवेग को रोकने के लिए किया जाता है. आपको रोशनी का या हवा का वेग परेशान करता है, तो फिर परदों की शरण लीजिए. कोई सुंदर या असुंदर चीज आप छिपाना चाहती हैं, तो एक बार फिर परदों का सहारा लीजिए.

याद कीजिए वह समय, जब घूँघट या परदा प्रथा का चलन था. नई-नवेली दुल्हन को यह परदा और कितना सुंदर बना देता है, यह तो मन का उतावलापन ही बता देता था. परदे के पीछे क्या है, ताकने-झाँकने से आगंतुक स्वयं को रोक नहीं पाता और उसकी प्रबल इच्छा और तीव्र होती जाती है. जब तक...! अगर परदे आपके हाथों से सजे हों, आपकी कलात्मकता का परिचय देते हों और रं चयन में भी आपकी सूझबूझ की दाद देते हों, तो कहन क्या!

आइए, परदे बनाने की कुछ विधियों से परिचित कराएँ. कपड़ा कौ और कैसा लें? रंगों का चयन किस प्रकार करें?

कपड़े का चुनाव

रदा किसी भी प्रकार के कपड़े का बनाया कता है. बाजार में विभिन्न प्रकार के कपड़े हैं, लेकिन चुनाव करते समय विशेष रखें कि कपड़ा वजन में बहुत भारी न हो, आप आसानी से साफ-सुथरा रख सकें. को पहले 24 घंटे पानी में भिगोकर सुखा ग पक्के हों, ताकि आपकी मेहनत व्यर्थ न

रंगों का चयन

ह सज्जा में रंगों का चयन अर्थात रंग ना का भी बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है. रंग एक ग शैली में और विरोधी रंग में भी प्रयोग जा सकते हैं. रंगों का चुनाव घर के किस में करना है, इस पर भी निर्भर करता है. रणत: आज सोफे गलीचे के रंग से भी मैच सकते हैं. दीवारों पर जो रंग किया गया हो, को भी आधार मान सकते हैं. यह आपकी पर निर्भर करेगा. जाली के परदे ब्लाइंड्स ामने अथवा डाइनिंग हॉल में डाले जा सकते या आप बाहर के दृश्य की झलक की-हलकी देखना चाहें.

मान लीजिए, कमरे में हलका बादामी रंग ा हुआ हो और गलीचा मॉस ग्रीन रंग का ा हो, तो परदे हलके गहरे रंग के ले सकती ा फिर मॉस ग्रीन रंग के या फूलों का प्रिंट भी सकती हैं. बेडरूम में जिस कपड़े का कवर बना रही हों, उसका परदा भी बना ती हैं.

ऊपर की झालर या शैम

आजकल इन झालरों का बहुत चलन है. खिड़की की चौड़ाई से 10" फालतु कपड़ा लें यानी 60" लंबा और 20" चौड़ा. इसमें 20" की ओर से एक रुख से प्लेट डाल लें. यह कपड़ा परदे के रंग का भी हो सकता है और विरोधी रंग का भी. अब 20" × 20" के दो टुकड़े काट लें. इनको तिरछा काटकर चार टुकड़े काट लें और तीन ओर से सिलाई लगाकर पलट लें और प्रेस से प्लीट्स डालकर दोनों कोनों पर जोड़ दें और रॉड के अनुसार ऊपर पट्टी लगा दें या फिर कर्टेन टेप और हुक.



ाली का परदा

"खूब परदा है, चिलमन से लगे बैठे हैं किं
साफ छुपते भी नहीं, सामने आते भी नहीं"



इसमें तैयार लंबाई लीजिए. किंतु चौड़ाई से दुगना कपड़ा लीजिए अर्थात दो लंबाई और बीच में ऊपर की ओर 6" सिलाई लगाकर दोनों टुकड़ों को जोड़ दीजिए. नीचे दोनों पल्लों में लेस या झालर लगा लें. ऊपर की ओर रॉड के अनुसार पट्टी लगाएँ या फिर सीधी पट्टी लगाकर कर्टेन टेप और हुक लगा लें. परदों को दोनों ओर से बाँधने के लिए 12"-12" लंबी, डेढ़ इंच चौड़ी दो पट्टी बना लें या फिर रिबन का प्रयोग करें.

चुन्नट वाला परदा

इसमें जितनी भी लंबाई हो, उसका लगभग तीन गुना कपड़ा और चौड़ाई से 10" फालतु कपड़ा लीजिए. चुन्नटें हलकी रखना चाहें तो लंबाई का ढाई गुना कपड़ा भी ले सकती हैं. अब दोनों किनारों पर तथा 12" की दूरी पर चुन्नटें डाल दीजिए. लंबाई जो आपको चाहिए, वह तैयार हो जानी चाहिए. फिर आप चाहें तो नीचे की ओर झालर लगा दें. ऊपर रॉड की मोटाई के अनुसार कपड़े की पट्टी [illegible] कर्टेन टेप और [illegible] लीजिए, [illegible] परदा तैयार [illegible] ■



लोकप्रियता की सीढ़ियाँ चढ़ता धारावाहिक 'हसरतें'

जी टीवी पर हर सोमवार साढ़े नौ बजे रात दिखाया जानेवाला धारावाहिक 'हसरतें' दिनोदिन लोकप्रिय होता जा रहा है. मगर इसकी लोकप्रियता के बावजूद भी इसे कहीं-कहीं तो सिर्फ इसलिए विवादास्पद माना जा रहा है कि समाज के लिए वर्जनीय रिश्तों और नातों की सारी वर्जनाएँ तोड़कर उच्छृंखल पात्रों के रूप में प्रस्तुत किया गया है.

धारावाहिक के निर्देशक अजय सिन्हा के अनुसार 'हसरतें' में दिखाए जा रहे पात्र अथवा दृश्य समाज का ही एक हिस्सा हैं. इसलिए दर्शकों को इसे निर्भीकतापूर्वक स्वीकार करना चाहिए.

शिकायतों-विवादों के बावजूद लोकप्रिय हो रहे धारावाहिक से निर्देशक अजय सिन्हा के अतिरिक्त जिन कलाकारों की हसरतें जुड़ी हैं, वे हैं, केतकी द्वे, सीमा कपूर, सेनाल शाह, हिमानी शिवपुरी, धर्मेश व्यास, मृणाल देव और हर्ष छाया.



पूनम का रुख भी छोटे परदे की ओर

जानीमानी अभिनेत्री पूनम ढिल्लो अपने फिल्म कैरि अवसान के बाद अंतत: छोटे परदे की ओर रुख किया. 'खाना खजाना' की तरह की एक कार्यक्रम 'रेस्टोरेंट शो' जा रही है. इस कार्यक्रम का निर्माण उसके निर्मात अशोक ठाकरिया करेंगे, जबकि इसके निर्देशक हैं सु चड्ढा. इस शो के अंतर्गत देश के बड़े-बड़े होटल बावर्चियों को शामिल किया जाएगा.

पूनम अपने इस कार्यक्रम से काफी उम्मीदें रखती उसकी ये उम्मीदें दर्शकों की रुचि ही पर निर्भर करेंगी.

शेखर, वैदेही और प्रेस

शेखर सुमन आजकल दीवाना हो गया है और पाग दीवाना तो हुआ है वह वैदेही के प्यार के चक्कर में, पागल हुआ है प्रेस के लिए. क्योंकि वह अब पागलप हद तक प्रेस की मुखालफत करने लगा है. प्रेस से दुश्मनी इस बात को लेकर है कि प्रेसवाले उसके और की प्रेम कथा को मिर्च-मसाला के साथ छाप रहे हैं, शेखर यह नहीं चाहता है कि वैदेही से उसके इश्क के आम हों.



'जस्ट मुहब्बत' सोनी पर

पिछले दिनों सोनी चैनल पर एक नए धारावाहिक जस्ट मोहब्बत की शुरुआत की गई. इस धारावाहिक को टोनी सिंह व दिया सिंह के संयुक्त निर्माण में बनाया गया है.

धारावाहिक की कहानी यद्यपि एक दस वर्षीय बालक जय पर केंद्रित है, फिर भी इसे बाल धारावाहिक मानने से निर्माता इंकार करते हैं. मासूम बातों, किलकारियों और बालसुलभ शरारतों से परिपूर्ण इस धारावाहिक के लेखक हैं विजय आचार्य.

धारावाहिक में मुख्य किरदार हर्ष लुनिया का है. इसकी अन्य भूमिकाओं को अलीफिया आफतान, सलीम शाह, कविता कपूर, अशोक लोखंड और आदित्य कपाड़िया ने निभाया है.

रूबी का नया रूप

...क अदाओं की मलिका, चर्चित वीजे रूबी भाटिया अब चैनल 'वी' के ...ा के अलावा धारावाहिकों में अभिनय करके भी दर्शकों का मनोरंजन करेगी.



रूबी स्टार प्लस के लिए बनाए जा रहे धारावाहिक 'राज' में पुलिस ऑफिसर की भूमिका निभा रही है. धारावाहिक को यू टीवी के अंतर्गत करण जारदान के निर्देशन में बनाया जा रहा है. इस धारावाहिक में रूबी भाटिया का अभिनय किरण बेदी के स्टाइल का होगा.

दरअसल यह रूबी का नया रूप है जो उछलकूद और मोहक अदाओं से अलग हटकर है. देखते हैं, रूबी अपने नए रूप में दर्शकों को कितना पसंद आती है.

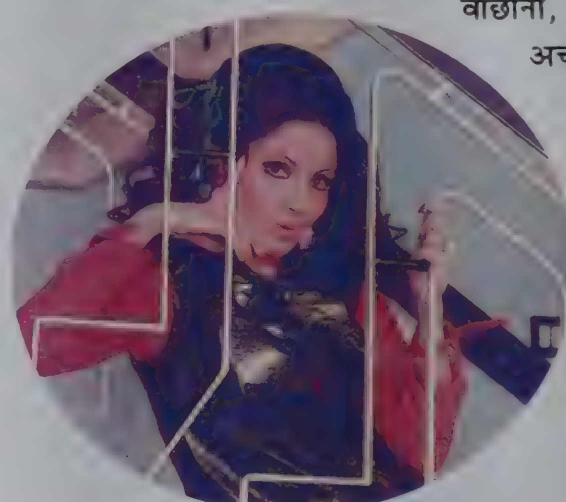
बिंदु का 'षड्यंत्र'

खलनायिका के रूप में अच्छीखासी ख्याति अर्जित करनेवाली बिंदु ने भी अब छोटे परदे के समक्ष खुद को समर्पित कर दिया है.

आजकल वह एस.पी. श्रीवास्तव की कि एक रहस्यमय कहानी पर आधारित धारावाहिक 'षड्यंत्र' का निर्माण कर रही है.

बावन कड़ियों वाले इस धारावाहिक के निर्देशक संजय उपाध्याय और निर्माता बीना श्रीवास्तव हैं. संवाद लेखन है एम.सलीम का.

इस धारावाहिक में बिंदु के अतिरिक्त कलाकार हैं अजीत वाछानी, भरत कपूर, अर्चना पाटकर, मेहुल कुमार और सुहास खांडके.





डी डी वन पर 'मैं दिल्ली हूँ'

भारत की ऐतिहासिक राजधानी दिल्ली के अतीत की तलाश तथा उससे सबक लेने के उद्देश्य से नादिरा बब्बर द्वारा निर्मित धारावाहिक 'मैं दिल्ली हूँ' का प्रसारण पिछले दिनों डीडी वन पर शुरू किया गया. इसकी कहानी की शुरुआत आर्यों के [illegible] के पूर्व राजा ययाति के शासनकाल से की गई है. इसमें दिल्ली में अब तक की [illegible] व सामाजिक उथल-पुथल को दिखलाया गया है. नादिरा का [illegible] आजादी के पचास वर्ष पूरे होने पर यह देशवासियों के लिए नायाब [illegible]

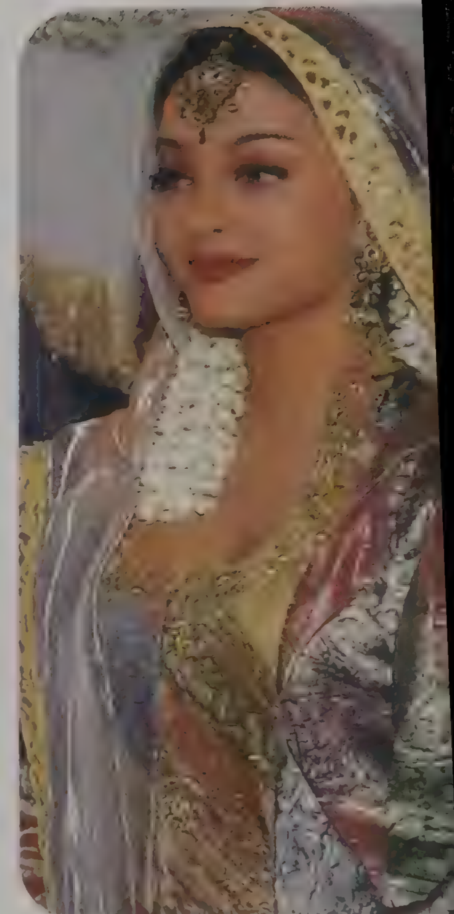
धारावाहिक को बी.आर. चोपड़ा और रवि चोपड़ा [illegible] निर्देशित किया है. राजबब्बर के अतिरिक्त इसमें शरत सक्सेना, [illegible] कलाकार हैं. धारावाहिक में संगीत राजकमल ने दिया है. ■



ऐश्वर्या और सुष्मिता : फिल्म में भी आमने-सामने

मॉडलिंग के क्षेत्र में सफलता के झंडे गाड़नेवाली ऐश्वर्या राय और सुष्मिता सेन यूँ तो फिल्मों में आकर पिट गईं, जैसा कि इनकी फिल्मों (ईरूवर और दस्तक) से पता चलता है. मगर फिर भी बॉलीवुड के फिल्मकारों का इनके प्रति आकर्षण अभी कम नहीं हुआ है.

कैरियर में प्रतिद्वंद्वी इन दोनों सुंदरियों को महेश भट्ट ने अपनी नई फिल्म के लिए साइन किया है. अब देखना यह है कि फिल्मों में शुरुआती दौर में ही फ्लॉप होनेवाली ये सुंदरियाँ महेश भट्ट की इस फिल्म में कितना असर दिखा पाती हैं.







शादी अश्विनी की

फिल्मों से निरंतर दूर होती जा रही अश्विनी भावे ने अब शायद शादी करके अपना घर बसा लेना ही उचित समझा. यह सुनकर अश्विनी के प्रशंसक थोड़ा निराश जरूर होंगे, लेकिन उन्हें खुश होना चाहिए कि कम से कम उनकी चहेती अभिनेत्री का घर बसनेवाला है.

सुना जाता है कि अश्विनी ने अपने [illegible] के रूप में चुना है, विदेश में रह रहे एक अरबपति भारतीय किशोर [illegible]. अश्विनी अपने चुनाव से काफी खुश बताई जाती है. किशोर की पाने [illegible] में वह भारत छोड़कर विदेश में बसने के बारे में भी सोच ले तो आश्चर्य की बात नहीं होगी.

'परदेस' की महिमा

'परदेस' की महिमा स्वाभाविक रूप से ही मोहक है, पर मोहकता कितनी टिकाऊ होगी, यह तो फिल्म 'परदेस' का बॉक्स पर होनेवाला हश्र ही बताएगा. बहरहाल महिमा की निर्दोष, भोली और आकर्षक छवि फिल्म के लिए एक सकारात्मक पक्ष होना चाहि सिने पंडितों का मानना है.

पर कुछ लोगों को अभी से ही यह चिंता सता रही है कि कहीं का हाल 'राम तेरी गंगा मैली' की मंदाकिनि या 'मैंने प्यार कि भाग्यश्री की तरह न हो जाए. लेकिन यह तो आनेवाला वक्त ही कि महिमा की मोहकता लोगों पर कितना असर करेगी.

दिलीप कुमार 'निशान-ए-इम्तियाज' पुरस्कार से सम्मानित हुए

जादी के पचास वर्ष पूरे होने पर तान सरकार ने कुछ भारतीय और तान में जन्मे कुछ ख्यातिप्राप्त लोगों को त किया है. इस अवसर पर अभिनेता कुमार को पाकिस्तान के सर्वोच्च र 'निशान-ए-इम्तियाज' से नवाजा गया तव्य हो कि दिलीप कुमार का जन्म भी तान में ही हुआ था, जिनका पूर्व नाम खान है.

लीप कुमार के अतिरिक्त वहाँ की सरकार क्षेत्रीय लोगों को भी पुरस्कृत किया है. त कलाकारों में पाकिस्तानी गायिका ाँ भी हैं.

ई के चक्कर में चंद्रचुड़

द्रचुड़ सिंह पहले तो गैरफिल्मी लड़की के र में था, पर नई खबरों के अनुसार अब वह ई चकोरी के चक्कर में है. वह चकोरी है गरम सेक्सी अभिनेत्री उर्मिला मातोंडकर. ना चला है कि चंद्रचुड़ और उर्मिला अब ड़ी बिल्डिंग में रहते हैं. अकसर आते-जाते में भी यदा-कदा उनकी टकराहट हो जाती नों में नजदीकियाँ सचमुच बढ़ गईं मालुम हैं. उर्मिला चंद्रचुड़ के साथ एक फिल्म वाली तो है ही, अभी हाल में ही दोनों ने -साथ एक अंग्रेजी पत्रिका के लिए कदार फोटो सेशन भी किया है.





ऋषि व राजेश अब दोस्त बने

ऋषि कपूर व राजेश खन्ना की दुश्मनी काफी पुरानी है. यह दुश्मनी डिंपल को लेकर ही ऊपजी हुई है.

बॉबी के नायक ऋषि कपूर को उस समय अपनी फिल्म की नायिका डिंपल से प्यार हो गया था और तब के सुपर स्टार राजेश खन्ना ने अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर उससे शादी कर ली थी.

पर अब स्थितियाँ काफी बदल चुकी हैं. डिंपल भी दोनों में से किसी के पास नहीं है बल्कि एक तीसरे नायक सन्नी देओल के पास है. वैसे भी सन्नी से उसका प्रेम जगजाहिर हो चुका है.

शायद यही कारण रहा होगा दोनों की दोस्ती का. बहरहाल इनकी दोस्ती एक व्यावसायिक आकार लेते हुए फल-फुल रही है. 'काका' ऋषि की गृह निर्माण संस्था आर. के. स्टूडियो के बैनर की फिल्म 'आ अब लौट चलें' में काम भी कर रहे हैं.



मनीषा के नखरे

'बॉम्बे' और 'अग्निसाक्षी' जैसी फिल्मों से शोहरत की बुलंदियों पर पहुँचनेवाली मनीषा के नखरे अब काफी बढ़ गए हैं. उसके दरवाजे पर निर्माता-निर्देशकों की बढ़ती भीड़ ने उसके दिमाग को सातवें आसमान पर पहुँचा दिया है. अब वह उन्हें अपनी ऊँगलियों पर नचाने लगी है. यहाँ तक कि उसने प्रसिद्ध निर्माता, निर्देशक व अभिनेता मनोज कुमार को भी नहीं बख्शा. मनोज कुमार अपनी फिल्म 'जय हिंद : द प्राइड ऑफ इंडिया' के लिए मनीषा के वास्ते उसके घर के कई चक्कर लगा आए और वह है कि इन्हें घास ही नहीं डाल रही.

मनीषाजी, लगता है आपको शिखर के बाद के अवसान का एहसास नहीं है.



दिन फिर रहे हैं संजय के

पिछले वर्षों में वक्त ने संजय पर काफी कहर बरपाए हैं. टाडा के चक्कर में बार-बार जेलयात्रा की परेशानी से जब वह पूरी तरह मुक्त हो गया तो उसकी पत्नी ऋचा इस दुनिया से चल बसी. अब संजय के खुशियों के दिन वापस आ रहे हैं.

'खौफ', 'दस', 'दौड़' व 'दुश्मन' जैसी कई फिल्मों में वह काम कर रहा है. फिल्म 'दौड़' में उसके साथ उर्मिला ने इस फिल्म में 'रंगीला' से भी अधिक बेबाक दृश्य दिए है. इसलिए उसे इस फिल्म से काफी आशाएँ हैं. अपनी मॉडल दोस्त रिया के साथ शादी करने की भी योजना वह बना रहा है.

भगवान न करे कि यह खबर किसी तरह माधुरी मेम साहब तक पहुँचे, वरना उनका दिल टूट जाएगा. ■





स्वर माधुरी

ऐ मेरे वतन/आर्चीज
संगीत : जवाहर वत्ताल

आर्चीज म्यूजिक डिवीजन ने राष्ट्रीयता की भावना को लेकर एक नई एलबम निकाली है, जिसमें पुराने देशभक्ति गीत हैं, जिन्हें नए गायकों ने गाया है. इस एलबम में कुल आठ गीत हैं. साइड 'ए' में चार गाने हैं, जिसमें से ऐ मेरे प्यारे वतन' और 'कर चले हम फिदा' गीत बड़े ही प्रभावशाली ढंग से गाए गए हैं. बाकी दोनों गीत 'ऐ मेरे वतन के लोगों' व 'ऐ वतन, ऐ वतन' साधारण हैं. गायकी में कोई दम नहीं है.

साइड 'बी' में भी चार गीत हैं, जिनमें ताकत वतन की हमसे है,' कोरस गीत है और इसलिए सुंदर बन पड़ा है. अन्य गीत अपनी आजादी को' व 'सारे जहाँ से अच्छा' प्रभावशाली ढंग से गाया गया है. 'जिस देश में गंगा बहती है' गीत को मुकेश के अंदाज में ही गाया गया है.

कुल मिलाकर कैसेट सुननेवालों पर अपना प्रभाव छोड़ती है. इस कैसेट के निर्माता हैं जवाहर वत्ताल.

दिल डोले/ए वन ऑडियो

'ए वन ऑडियो' मार्किट में अभी नया-नया ही आया है. इस कंपनी का यह पॉप एलबम 'दिल डोले' संगीतप्रेमियों को बहुत पसंद आएगा यह दावा किया जा रहा है.

इस एलबम में कुल आठ गीत हैं, जिन्हें स्वर दिया है, विनोद राठौर, कविता कृष्णमूर्ति, मो. अजीज और सपना मुखर्जी ने. गीत लिखे हैं विक्की नागर और अफसर आजाद ने व संगीत दिया है शेखर शर्मा ने.

साइड 'ए' का पहला गीत 'टाइट पैंट' एक शरारत भरा गीत है, जिसे विनोद राठौर ने बड़ी खूबसूरती के साथ गाया है. दूसरा गीत 'माथे पे बिंदिया' कविता ने बड़े ही मीठे स्वर में गाया है. तीसरा गीत 'संडे बचके' हास्य पैदा करता है, जिसे विनोद राठौर ने अपने ही ढंग से गाया है. चौथा गाना 'सोना ना चाँदी' सपना मुखर्जी का साधारण गीत है.

साइड 'बी' के गीत 'दिल मेरा डोला' (मो. अजीज), 'ओ छली' (विनोद राठौर), 'अरे तू प्यार कर' (सपना मुखर्जी) ने ठीक ढंग से गाए हैं. एक गीत कविता ने गाया है, 'मेरा पिया घर आया' स्टाइल में, जिसमें नयापन कुछ नहीं है.

कुल मिलाकर गीत के बोल और संगीत ठीक हैं. कैसेट साधारण है.

जागो भोर भई/इनर वाइस

'इनर वाइस' ने कैसेट को भक्ति भावना से प्रेरित होकर निकाला है.



इस कैसेट में गीतों के बोल महान संत-कवियों द्वारा रचे गए हैं, जैसे मीराबाई, पुरुषोत्तम स्वामी, सूरदास, कबीर. इन गीतों को बनाया है पंडित जसराज ने, जिन्हें स्वर दिया है, उभरते सितारे रतन मोहन शर्मा ने. इन गीतों के बीच में कुछ गद्यात्मक पद भी हैं, जिन्हें रचा है मधुरा जसराज ने और स्वर दिया है हरीश व रेखा भिमानी ने.

इस कैसेट का प्रारंभ देवी गायत्री को याद करते हुए एक श्लोक के साथ है, जिसे पढ़ा है पंडित जसराज ने. ईश्वर भक्तों के लिए यह कैसेट एक अच्छा तोहफा है.

साईं चिंतन कथा/टिप्स

टिप्स कंपनी ने चर्चित गायक उदित नारायण की आवाज में साईं चिंतन कथा कैसेट निकाल कर धार्मिक आस्था वाले लोगों के लिए अच्छा संकलन तैयार किया है. बृज भूषण के संगीत से सजे इस कैसेट में 11 भजन और कथा सार हैं, जिनमें 'तू बिगड़ी सबकी सँवारे' को चार बार गाया गया है, हालाँकि बोल में अंतर है. बाकी सभी भजन कथा के रूप में हैं. गीत व कथा लिखे हैं, भरत आचार्य ने.

आजादी/टिप्स

आजादी के 50 साल पूर्ण होने का जश्न चारों तरफ है. ऐसे में कैसेट कंपनियाँ भी पीछे नहीं हैं. टिप्स कं. ने 'आजादी' नाम से कैसेट निकाला है, जिसमें कुल आठ देशभक्तिपूर्ण गीत हैं. साइड बी' में अंतिम गीत की धुन लुईस बैंक्स ने तैयार की है, जो अच्छी बन पड़ी है. देशभक्ति में अच्छे गानों के संकलन के रूप में इस कैसेट को रखा जा सकता है.

साइड 'ए' के गीत हैं – 'ऐ मेरे वतन के लोगों', 'हम हिंदुस्तानी', 'वतन की राह में', 'सारे जहाँ से अच्छा' और साइड 'बी' में 'कर चले हम फिदा', 'अपनी आजादी को हम', 'है प्रीत जहाँ की रीत सदा', 'हर करम अपना करेंगे' गीत शामिल हैं.

आवाज दी है साधना सरगम, सूरज कुमार, बंसी तिवारी और साथियों ने.

बूढ़े पहाड़ों पर/पान म्यूजिक

इस कैसेट में अच्छे गीत हैं, जिन्हें गुलजार ने लिखा है और स्वरबद्ध किया है विशाल ने. सभी गीतों को गाया है सुरेश वाडेकर ने. इस एलबम की पूरी टीम इससे पूर्व 'माचिस' जैसी हिट फिल्म दे चुकी है. और शायद यही कारण है कि उसके संगीत का बहुत कुछ प्रभाव इस एलबम के गीतों पर भी है.

साइड 'ए' का पहला गीत 'ना जाने क्या था' और दूसरा गीत 'यार जुलाहे' अच्छे बोलों और हलके संगीत के कारण बहुत सुंदर बन पड़े हैं. तीसरा गीत 'कल की रात' धीमा गीत है. चौथा गीत 'बैरागी बादल' भी अच्छा बन पड़ा है. पाँचवाँ गीत 'ख्वाब टूटे ना कोई' के बोल भी अच्छे हैं और बखुबी गाया गया है.

साइड 'बी' का पहला गीत 'लॉकेट' भी ठीक ही है. दूसरा गीत 'तेरी आँखें' व तीसरा गीत 'कितनी सदियों से' भी अच्छे बन पड़े हैं. इस एलबम का आखिरी गीत 'बूढ़े पहाड़ों पर' बहुत ही [illegible]

कु[illegible] मिलाकर यह एक बहुत अच्छा एलबम क[illegible] ■

मिस इंडिया 'नार्थ'



मिस इंडिया (नार्थ) तान्या बीच में, प्र
उप विजेता नताशा दाएँ, द्वितीय उप वि
प्रतिमा, फिल्म अभिनेत्री रागेश्वरी, फि
अभिनेता राहुल रॉय तथा प्रसिद्ध
डिज़ाइनर जे.जे. वलाया के साथ.

पिछले दिनों चंडीगढ़ में सुंदरियों का सैलाब आ
जहाँ देखो, वहीं सुंदरियाँ. अवसर था, मिस इ
(नार्थ) का आयोजन. मिस चंडीगढ़, मिस प
मिस नार्थ इंडिया, मिस्टर एंड मिस नार्थ आदि-आदि शीर्ष
उकता चुके लोगों में इस बार एक विशेष आकर्षण को मं
रखते हुए आयोजकों ने उन्हीं पुराने ढर्रे से बँधी



अभिनेत्री रागेश्वरी ने ... दर्शकों का मनोरंजन ...



निर्णायक मंडल में मिस इंडिया दिव्या चौहान.



नवजोत सिंह सिद्धू क्रिकेट के साथ-सा
सौंदर्य प्रतियोगिता में निर्णायक भी



मिस इंडिया (नार्थ) तान्या : सुंदरता के साथ-साथ आत्मविश्वास भी.



मिस कैटवाक, मिस ब्यूटीफुल हेयर, मिस परफेक्ट टेन, मिस फोटोजेनिक आरती.



द्वितीय उप विजेता प्रोतिमा.

ोगिताओं को नए अंदाज में पेश करने का न किया और इस बार प्रतियोगिता को नाम दिया इंडिया (नार्थ)'.

स प्रतियोगिता का मुख्य आकर्षण यह भी रहा इसे लुधियाना, अमृतसर, चंडीगढ़ सहित -भिन्न स्थानों पर करवाया गया. दिल्ली, पंजाब, गढ़ सहित उत्तर भारत की कुल 21 रूपसियों समें भाग लिया. लक्मे खूबसूरत की रश्मि ानी द्वारा निर्देशित इस शो में अमृतसर तथा याना में पहले करवाए गए मुकाबलों में आरती खूबसूरत केश' का खिताब दिया गया, जबकि ा को 'मिस टैलेंटेड' घोषित किया गया. सुंदर ों के मुकाबले में रूपिका भंडारी प्रथम रहीं.

उसके बाद चंडीगढ़ के प्रेस क्लब में आयोजित कैटवाक' तथा 'मिस ब्यूटीफुल स्माइल' के क्रमशः आरती तथा नताशा को चुना गया.

जानीमानी राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय कंपनियों प्रायोजित इस सौंदर्य प्रतियोगिता में 'मिस या (नार्थ)' के अंतिम मुकाबले को देखने के चंडीगढ़ तथा आसपास के लोगों का अपार मूह उमड़ पड़ा.

निर्णायक मंडल में अन्य विशिष्ट व्यक्तियों के बॉलीवुड के प्रसिद्ध अभिनेता राहुल रॉय, नेत्री तथा गायिका रागेश्वरी, जानेमाने क्रिकेटर ोत सिंह सिद्धु तथा मिस इंडिया दिव्या चौहान

मिस ब्यूटीफुल आइज रूपिका.



शामिल थे. मंच संचालन कुशलता से निभाया भूतपूर्व मिस इंडिया तथा टीवी स्टार शिखा स्वरूप ने.

सबसे पहले 21 सुंदरियों ने मंच पर एक-एक करके अपना-अपना संक्षिप्त परिचय दिया. उसके बाद काली मिनी स्कर्ट राऊंड में युवतियों ने कैटवाक की. कार्यक्रम के बीच में ही 'मेरी कैट वॉक' गीत से प्रसिद्धि पा चुकी टीवी कलाकार अनामिका ने अपने समूह के साथ 'औजार' फिल्म के 'दिल दे दे देना' गीत पर आकर्षक पश्चिमी नृत्य प्रस्तुत किया. निर्णायकों द्वारा अंतिम प्रश्नोत्तर दौर के बाद अच्छी तरह जाँच-परखकर पटियाला की मिस टैलेंटेड तान्या मंढेर को मिस इंडिया नार्थ घोषित किया गया. मिस ब्यूटीफुल स्माइल नताशा को प्रथम उपविजेता तथा प्रोतिमा को द्वितीय उप विजेता के खिताब से नवाजा गया.

आयोजकों द्वारा समाचारपत्रों में जारी बयान कि मिस इंडिया 'नार्थ' को 'फैमिना मिस इंडिया' मुकाबले में भेजा जाएगा, की पुष्टि के लिए आयोजकों के पास कोई जवाब नहीं था. यहां तक कि फैमिना मिस इंडिया [illegible] यहाँ मौजूद नहीं थ [illegible] हो सकता है [illegible] मिस इंडिया प्रतियोगिता [illegible] की किन [illegible] गया है. ये सब सौंदर्य [illegible] अन [illegible]

— अनूप कुमार ■





"पहले मुनादी अंग्रेजों के खिलाफ थी, अब भ्रष्टाचार के खिलाफ है"

1914 में अंग्रेजी फौज के लिए मुनादी के काम को शुरू करनेवाले रामलाल भल्ला अपने 82 वर्ष के मुनादी के अनुभव कुछ इस प्रकार बताते हैं "शुरू में कनस्तर पीट-पीटकर गीत गाए. 'भरती हो जा रे बाहिर खड़े रंगरूट' और लोगों को अंग्रेजों की फौज में भर्ती होने के लिए प्रेरित किया." फिरंगी सरकार ने उनकी बुलंद आवाज से खुश होकर उन्हें छह मेडलों से सम्मानित किया. पर जलियाँवाला बाग के हादसे ने उनकी आवाज का रुख ही बदल दिया. अब आजादी के गीत उनकी मुनादी के बोल बन गए, जिसकी एवज में उन्हें उसी सरकार से मिली, 14 साल की काल कोठरी. आज भी उनका संघर्ष उनकी मुनादी के जरिए जारी है. आँधी हो, बारिश हो, गरमी हो, सर्दी हो, रिक्शे में सवार होकर अपनी सुरीली आवाज और ढपली की थाप से [illegible] गरीबी और रिश्वतखोरी जैसे शत्रुओं का मु[illegible] निकल पड़ते हैं, अमृतसर की गलिया [illegible] वर्षीय रामलाल भल्लाजी.



बाघ मेरे दोस्त हैं

"मैं बाघों को यह महसूस कराना चाहता था कि मैं उनका सच्चा दोस्त और हितैषी हूँ बाघ मेरे नजदीक आते गए, मैं उन पर अपना प्यार लुटाता रहा... और एक दिन मुझे महस हुआ कि अब ये मेरे अपने हो चुके हैं." ये शब्द हैं रामप्यारे के, जो दो दशक से बाघों क देखभाल कर रहे हैं. इस दौरान बाघ प्यार से भी अगर एक जोरदार धौल जमा दें तो र प्यारेजी बस रामजी को ही प्यारे हो जाएँ. पर शायद उनके ये दोस्त इतनी बात समझ चु हैं, और प्यार व सेवा का बदला भी चुकाते हैं.



'राजा' (बकरे) के राजसी नखरे

बीकानेर के धोबी तलाई मोहल्ले का 'राजा' नाम का बकरा अपनी रुचि विशेषताओं के कारण आजकल चर्चा का विषय बना हुआ है. इसकी आदतें बकरों से अलग हैं. 20 वर्षीय 'राजा' कचौरी, समोसे, भुजिया, गुलाब जामु रसगुल्ले बड़े चाव से खाता है.

इसकी मालकिन नसीवन बाई ने बताया कि खराब चीजें देने पर यह बच्चों की रूठकर छत पर भाग जाता है. पिछले दस सालों से यह सूर्य देवता की भक्ति आ रहा है. सूर्योदय से सूर्यास्त तक यह लगातार सूर्य की ओर देखता रहता है. पैरों से दरवाजे की सांकल खोल लेता है तथा मुँह से नल खोलकर पानी पी लेत

बकरे के मालिक इसका नाम 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स' में लिखव प्रयास में हैं.





'औरों को शीतल करे आप भी शीतल होय'

गैल्लीआनो के अब तक के डिजाइन किए दो सबसे खूबसूरत सांध्य परिधान, जो पहननेवालों को कितना आराम व शीतलता प्रदान करते हैं, यह तो वे ही जानें, पर देखनेवालों की आँखें जरूर शीतल हो जाती हैं. एक है सिल्वर जरदोजी के खूबसूरत डिजाइन का परिधान, मोहक कलगी के साथ और दूसरा है मयूरपंखी परिधान. इनमें गैल्लीआनो ने अपनी आधुनिक कल्पनाशक्ति का भरपूर रंग भरा है, जो देखनेवालों को मदहोश करने के लिए काफी है. गैल्लीआनो के डिजाइन किए विभिन्न खूबसूरत परिधानों का एक शो पेरिस के बागाटेले गार्डेन के परिसर में खुले आसमान के नीचे आयोजित किया गया. खूबसूरत गुलाब और दूसरे फल-फूलों तथा बहते जल के बीच आयोजित इस शो के मादक व खूबसूरत दृश्य के लिए हर व्यक्ति के दिल से प्रशंसा की धारा फूट पड़ी थी. महसूस होता था कि वह खूबसूरत परियों के लोक की सैर कर रहा है.



184 बार रक्तदान

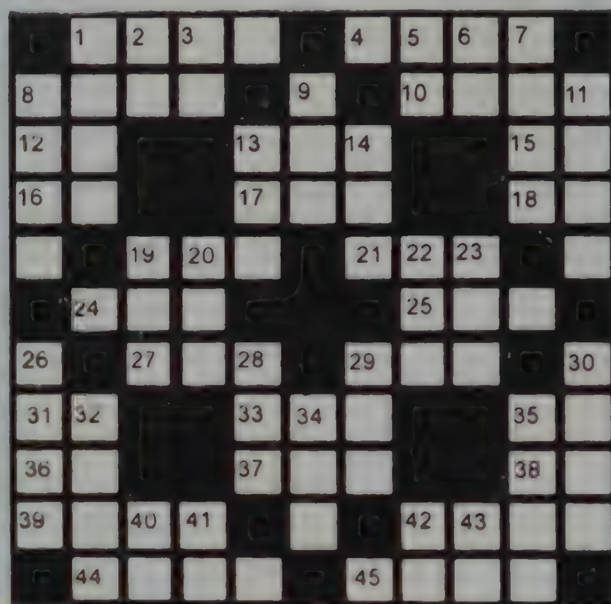
1954 से लेकर 1997 तक इंदौर निवासी अरविंद कुमार आगार 184 बार स्वेच्छा से रक्तदान कर चुके हैं. वैसे रक्तदान करने में उनके चारों भाई भी कम नहीं हैं. प्रत्येक ने 25 बार से अधिक बार रक्तदान किया है. अरविंदजी ने इसके अतिरिक्त पूरे भारत का स्कूटर द्वारा भ्रमण किया. अपने इस 2 लाख किलोमीटर लंबे सफर के दौरान 3000 रक्तदान शिविर लगवाए तथा लगभग 35,000 लोगों से रक्तदान करवाया. अ[illegible] अरविंद कुमार आगार का नाम 'लिम्का बु[illegible] दर्ज है. ■

माधुरी वर्ग पहेली नं. 108

संकेत

बाएँ से दाएँ

1. एक ही माँ से उत्पन्न, सगा भाई (4) 4. एक मूर्ख व्यक्ति जो बाद में बड़ा विद्वान बना (4) 8. संन्यासी, चतुर्थाश्रमी (4) 10. मजबूत (4) 12. गोपियों के साथ श्री कृष्ण अकसर यह लीला रचाया करते थे (2) 13. संगीत में सातों स्वरों का राग सहित उच्चारण (3) 15. चमड़ा (2) 16. सप्ताह का दिन, हमला (2) 17. आराम, सुख (3) 18. इच्छा (2) 19. ऋषि-मुनियों का निवास (3) 21. वह व्यय जो किसी वस्तु के तैयार करने में लगे (3) 24. खिंचाव, मजबूत पकड़ (3) 25. शरमाना (3) 27. क्रिकेट की एक राष्ट्रीय ट्राफी (3) 29. खयाल, इच्छा (3) 31. पैर, एक छंद का चतुर्थांश (2) 33. बालिग (3) 35. विशुद्ध, बिल्कुल (2) 36. प्रशंसा अथवा आश्चर्य सूचक शब्द (2) 37. सोहागा, विलास (3) 38. टेढ़ा (2) 39. लाव लश्कर, समूह के साथ (4) 42. बिना उपयुक्त समय के (4) 44. अयोग्य (4) 45. कृपा करना (4).



माधुरी वर्ग पहेली 108

नाम..............................

पता..............................

....

ऊपर से नीचे

1. बिल्कुल, एकदम (4) 2
(2) 3. मोटे सूत का बना बिछौना
गधे अथवा घोड़े का मल (2) 6
(2) 7. अच्छा आचरण (4) 8
दोनों किनारे, (4) 9. राय (3) 1
बाद ईदुल-फितर प्रारंभ होता है (
विश्राम (3) 14. बारीक, महीन (
लक्षण, चिह्न (3) 20. सुनना, का
22. सड़न (3) 23. त्याग देना (
नियम विरुद्ध (4) 28. साहस, हिम्म
29. सूर्य, आग, सोना (3) 30.
पुरुषार्थ (4) 32. डर से चौंकना
उठना (4) 34. भाई बंद, नातेदार
(3) 35. रहना (4) 40. आफत, भ
की बाधा (2) 41. गाने का सुंदर ढंग
42. विधवा (2) 43. आनंद (2).

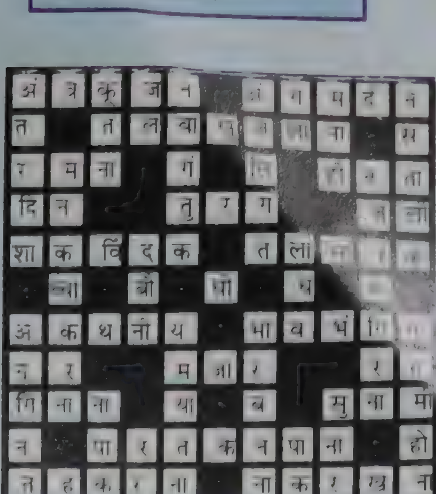
'माधुरी वर्ग पहेली 106' के जवाब में काफी संख्या में प्रविष्टियाँ आईं, जिनमें अनेक शुद्ध हल प्राप्त हुए. लॉटरी के द्वारा निम्न प्रतियोगियों का चयन पुरस्कार हेतु किया गया:

प्रथम पुरस्कार : भाग्यश्री देशमुख, टी-6, डाकतार आवास गृह, कस्तूरबा नगर, रतलाम 457 001

द्वितीय पुरस्कार : चित्रा भटनागर, द्वारा यूको बैंक, 48, सिविल लाइंस, बरेली (उ.प्र.) - 243 001

तृतीय पुरस्कार : मोनाली, ए-22, सेकेंड फ्लोर, विजय नगर, दिल्ली 110 009

सांत्वना पुरस्कार : कु. श्रेया शर्मा, मंदसौर श्रीमती गीता मिश्रा, लखनऊ. पांडेय अजय सिन्हा, पटना आभा गुप्ता, हजारीबाग मनोष कुमार, उज्जैन गीता सोलंकी, अहमदाबाद रजनी, कोटा कुंजबाला एम. ठाकुर, अहमदाबाद. कु. नेहा ठाकुर, बरौदा. रेणु सोलंकी, उज्जैन



जीतिए 5 हजार के पुरस्कार

ADITYA — VACUUM FLASKS • THERMOWARES • PLASTIC PRODUCTS — GIFT SETS WITH BONE CHINA CROCKERY









प्रथम पुरस्कार :
1 मरकरी टी सेट, मूल्य 1466 रु.
द्वितीय पुरस्कार :
1 मयखाना डीलक्स, मूल्य 977 रु.
तृतीय पुरस्कार :
1 एबोनी कॉफी सेट, मूल्य 752 रु.
सांत्वना पुरस्कार :
10 हॉट-ओ-चिल जग, मूल्य 181 रु.

निर्देश :
● विजेताओं के
निर्णायकों का निर्ण
और सर्वमान्य होगा.
संबंध में किसी त
पत्र-व्यवहार नहीं
जाएगा.
● चन्द्रप्रभा प
के कर्मचारी व उनके
संबंधी इस प्रतियोगित
नहीं ले सकते.
● इस प्रतियो
लिए कोई प्रवेश शुल्क

...लों के ड्रा द्वारा पुरस्कारों का निर्णय किया जाएगा. पुरस्कारों की घोषणा नवंबर ... जाएगी. अपनी प्रविष्टियाँ 30 सितंबर तक निम्न पते पर भेजें : माधुरी वर्ग पहे... ए-28, सेक्टर-9, नोएडा-201301, (यू.पी.).

यह इनामी प्रतियोगिता है,
प्रमोटर्स के सौजन्य से. विजेत
क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृ
अलावा सांत्वना पुरस्कार भी दि

पिछले 30 दिनों के समाचारों पर एक नजर

के चर्चे रहे

● प्रख्यात भारतीय पर्यावरणविद महेश चंद्र को 1997 के प्रतिष्ठित मैगसायसाय ...ार के लिए चुना गया.

● पूर्व प्रधानमंत्री गुलजारी लाल नंदा तथा ...ता सेनानी स्व. अरुणा आसफ अली को ... रत्न से सम्मानित किए जाने की घोषणा की

● विख्यात भारतीय उपन्यासकार महाश्वेता को पत्रकारिता, साहित्य और रचनात्मक ...द कलाओं के लिए मैगसायसाय पुरस्कार से ...ानित किया जाएगा.

● मिस्र के राष्ट्रपति मोहम्मद हुस्नी मुबारक को ...राष्ट्रीय सद्भाव के लिए वर्ष 1995 का प्रतिष्ठित ...हर लाल नेहरू पुरस्कार के लिए चुना गया है.

● कोचेरिल रमन नारायणन ने 25 जुलाई को ...के दसवें राष्ट्रपति के रूप में कार्यभार संभाल ...ा.

16 जुलाई: मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव की ...य जनता दल ने बिहार विधानसभा में ...वास मत हासिल किया.

17 जुलाई: उपराष्ट्रपति के. आर. नारायणन ...ार्ड बहुमत से भारत के नए राष्ट्रपति चुन लिए

22 जुलाई: इंग्लैंड के एक विकलांग पूर्व ...य अधिकारी ने एक पाँव के सहारे लगातार ... दिन तक दौड़कर 200 किलोमीटर की यात्रा ... की .

● बिहार के राज्यपाल को प्रधानमंत्री व ...मंत्री से मुख्यमंत्री को अग्रिम जमानत नहीं ...लने की स्थिति में उनकी गिरफ्तारी व ...र्खास्तगी से निबटने तथा राज्य में कानून ...वस्था की स्थिति बरकरार रखने संबंधी ...कम्मल आदेश दिए गए .

24 जुलाई: हवाला कांड की सुनवाई कर ... विशेष अदालत ने चार और राजनेताओं ...तीलाल वोरा, यशवंत सिन्हा, पी. शिवशंकर ...ा अजीत पांजा को आरोप मुक्त कर दिया.

● सउदी अरब सरकार ने याद दिलाया है कि ... की महिलाएँ सार्वजनिक स्थानों पर खुद को ...क ढंग से ढककर जाएँ और पुरुषों को यह ...निश्चित करने की सलाह दी है कि महिलाएँ ...का पहनें और सही ढंग से अंग ढके बिना घर ... बाहर नहीं निकलें.

25 जुलाई : बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने आखिरकार अपने पद से इस्तीफा दे दिया. उनकी जगह पर उनकी पत्नी राबड़ी देवी को मुख्यमंत्री के रूप में पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई गई.

28 जुलाई: हिमसागर एक्सप्रेस तथा कर्नाटक एक्सप्रेस के बीच टक्कर में कम से कम 50 लोग मारे गए. यह दुर्घटना फरीदाबाद रेलवे स्टेशन पर हुई.

29 जुलाई: बिहार की मुख्यमंत्री राबड़ी देवी ने राज्य विधानसभा में कांग्रेस और झामुमो की मदद से विश्वास मत प्राप्त कर लिया.

31 जुलाई: बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव को साढ़े नौ अरब रुपए के चारा घोटाला कांड के सिलसिले में आत्मसमर्पण के बाद न्यायिक हिरासत में ले लिया गया.

31 जुलाई: स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर को राष्ट्रीय सौहार्द में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए ढाई लाख रुपए का राजीव गांधी सद्भावना पुरस्कार दिया जाएगा.

श्रद्धांजलि



कैसेट किंग गुलशन कुमार की 12 अगस्त को मुंबई के चार बंगला इलाके में अज्ञात हमलावरों ने गोली मारकर हत्या कर दी.ऐसे व्यक्तित्व को 'माधुरी' परिवार की ओर से श्रद्धांजलि, जिन्होंने नए कलाकारों को मौका दिया, अपना वजूद साबित करने का,अपनी जमीन तैयार करने का.

31 जुलाई: पटना उच्च न्यायालय ने बिहार के मुख्यमंत्री और राजद के अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव को साढ़े नौ अरब रुपए के चारा घोटाला कांड की साजिश में पहली नजर में संलिप्त पाया.

2 अगस्त: करोड़ों रुपए के बहुचर्चित जैन बंधु हवाला कांड ने उस समय दिलचस्प मोड़ ले लिया, जब विशेष अदालत ने जनता दल अध्यक्ष शरद यादव के खिलाफ अभियोग निर्धारित करने का महत्त्वपूर्ण आदेश दिया.

4 अगस्त: वरिष्ठ कांग्रेसी नेता डॉ. जगन्नाथ मिश्र और उनके समर्थकों ने पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व के खिलाफ खुलेआम बगावत कर दी.

5 अगस्त: केंद्र सरकार ने 19 जुलाई को लागू किए गए पाँचवें वेतन आयोग की सिफारिशों के अमल पर रोक लगाने का निर्णय किया.

6 अगस्त: बाएँ हाथ के सलामी बल्लेबाज सनथ जयसूर्या (अविजित 326) और रोशन महानमा (अविजित 211) के बीच दूसरे विकेट की विश्व रिकार्ड साझेदारी 548 रन की हुई

6 अगस्त: उच्चतम न्यायालय ने 133 करोड़ रुपए के यूरिया आयात घोटाले के सिलसिले में पूर्व प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिंह राव के पुत्र पी. वी. प्रभाकर राव की अग्रिम जमानत रद्द कर दी.

8 अगस्त: बिहार की मुख्यमंत्री राबड़ी देवी बिहार विधान परिषद की सदस्य बनेंगी. इसके लिए परिषद के राजद सदस्य रवींद्र ताँती ने परिषद की सदस्यता त्याग दी है.

9 अगस्त: दिल्ली के मुख्यमंत्री की कुर्सी पर साहिब सिंह वर्मा के बरकरार रहने के हाईकमान के फैसले से आहत होकर मदनलाल खुराना ने भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष तथा पंजाब व राजस्थान के प्रभारी पद से इस्तीफा दे दिया.

10 अगस्त: बागी कांग्रेस नेता ममता बनर्जी ने कलकत्ता में आयोजित एक विशाल रैली में समानांतर कांग्रेस की घोषणा की, जिसका नाम फिलहाल तृणमूल (ग्रासरूट) कांग्रेस रखा गया है.

11 अगस्त: दिल्ली के चर्चित तरुण पुरी अपहरण कांड का पर्दाफाश करते हुए पुलिस ने अपहृत बालक को बरामद कर लिया.

12 अगस्त: हिमाचल प्रदेश के शिमला और किनौर जिलों में हुई भयंकर वर्षा से आई बाढ़ में पाँच सौ से अधिक लोगों के मरने की आंशका है.

15 अगस्त: देश के विभिन्न भागों में आजादी की पचासवीं वर्षगाँठ बड़े धूमधाम और हर्षोल्लास से मनाई गई. प्रधानमंत्री इंद्र कुमार गुजराल ने ऐतिहासिक लाल किले की प्राचीर से देशवासियों को रिश्वतखोरी व भ्रष्टाचार के खिलाफ सत्याग्रह शुरू करने का आह्वान किया ■

आपका भाग्य

(जन्मतिथि पर आधारित) सितंबर 1997 में ग्रहों का

मेष (21 मार्च से 19 अप्रैल)



आपके सूर्यकुंडली के सप्तम भाव में शुक्र के प्रवेश करने से दांपत्य जीवन में प्रेम व माधुर्य बढ़ेगा. सगाई, विवाह के लिए मास का आखिरी सप्ताह अनुकूल है. अनुबंध, मुकदमा, मोलभाव, समझौता, भागीदारी तथा पब्लिक से संबंधित मामलों में सफलता मिलेगी. दूसरों से परस्पर सहयोग बढ़ेगा. मॉडलिंग के काम में विशेष सफलता मिलेगी. आप अपने काम व प्रतिभा से प्रशंसकों का ध्यानाकर्षण करेंगी. गला, साँस, फेफड़े, आँत से संबंधित विकारों तथा बच्चों के स्वास्थ्य का ध्यान रखना पड़ेगा.

वृष (20 अप्रैल से 20 मई)



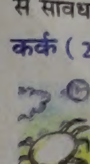
शुक्र के छठे भाव में प्रवेश से नौकरी व कार्यस्थल की स्थिति में सुधार होगा. अभी तक जो तनाव आदि चल रहा था, वह न्यूनतम हो जाएगा. नौकरी मिल जाएगी. अधीनस्थ काम करनेवाले, किरायेदार, पालतू जानवरों से संबंधित मामलों में कारवाई सफल होगी. नए वस्त्र प्राप्त होंगे और पहने जाएँगे. स्वास्थ्य, आहार व पोषण संबंधित कार्यों व नौकरियों के लिए मास विशेष शुभ है. स्टेनो, हेल्थ सेक्रेटरी की तरक्की या लाभ होगा. आप पर इस मास कलात्मक कामों का आनंद रहेगा. इस मास ज्यादा चीनी या मीठी चीजें व स्टार्च कम खाएँ.

मिथुन (21 मई से 21 जून)



लव अफेयर, रोमांस, आमोद- प्रमोद, मनोरंजन, अवकाश, हॉबी, स्पोर्ट्स, क्राफ्ट्स के लिए शुभ समय है. सृजनात्मक कार्यों में विशेष सफलता मिलेगी. साहित्य व मंच से जुड़े जातकों की आशातीत प्रगति होगी. संतानोत्पत्ति व बच्चों के शिक्षा से संबंधित मामलों में सुधार होगा. प्रकाशन का कार्य आगे बढ़ेगा. यदि आप मनोरंजन संबंधित किसी संस्था की सदस्य हैं तो मास आनंददायी है. मास का अंतिम सप्ताह सुख से परिपूर्ण है. द्वितीय व तृतीय सप्ताह में काम में या कार्यस्थल पर छोटे-मोटे परिवर्तन होंगे. सप्ताहांत में मंगल के पृष्ठ भाव में प्रवेश के कारण नौकरी, लड़ाई-झगड़े व दुर्घटनाओं से बचें. अधीनस्थ कर्मचारियों से सावधान रहें.

कर्क (22 जून से 21 जुलाई)



घर की सजावट व घर को सुव्यवस्थित करने का योग है. आप मेहमानों की आवभगत करेंगी. फूलों व बागवानी के काम में प्रभावशाली उपलब्धियाँ होंगी. परिवार के सदस्यों से पूर्ण सहयोग मिलेगा. मनोदशा आशावादी होगी, जिसके फलस्वरूप आपकी महत्त्वाकांक्षाओं को बल मिलेगा और प्रयास में सफलता प्राप्त होगी. पैसे से संबंधित जोखिम वाला काम, जैसे शेयर आदि के लिए समय ठीक नहीं है. आवेग में न आएँ. स्पर्धावाले काम से बचें. बच्चों को ट्रेनिंग देने व अनुशासित करने के काम में आपको सराहना मिलेगी.

सिंह (22 जुलाई 21 अगस्त)



मंगल-हर्षल की परस्पर दृष्टि के कारण आपके दिमाग में बहुत सारे विचार व योजनाएँ आएँगी. आप कोई नवीन कार्य करें, नए ढंग या तरकीब से. दूसरों के प्रति आपके आक्रामक व आलोचक रवैये के कारण लक्ष्यप्राप्ति में बाधा आएगी. किंतु 24 तारीख के बाद आपकी स्थिति में सुधार होगा. काम की बारीकियों पर पूरा ध्यान दें. समझौता सरल हो जाएगा. आनंददायक लघु यात्राएँ होंगी. आप रोचक पत्र लिखेंगी, जिससे आंतरिक सुख मिलेगा. तृतीय व चतुर्थ सप्ताह में आपमें संवेदनशीलता, भावुकता, कामुकता, आकर्षण और ऊर्जा तीव्र और अत्यधिक रहेगी. प्राइमरी स्कूल के शिक्षिकाओं के लिए समय शुभ है.

कन्या (22 अगस्त से 22 सितंबर)



अभी तक धनाभाव में मंगल पर कुछ ग्रहों की अशुभ दृष्टि के कारण अत्यधिक धनव्यय हुआ होगा और आपने धनवृद्धि या प्राप्ति के लिए परिश्रम भी खूब किए होंगे. किंतु द्वितीय सप्ताह से संतोषजनक सुधार होगा. ब्यूटीशियन, डिजाइनर, कलाकार, फ्लोरिस्ट, ज्वेलरी, बेडरूम में इस्तेमाल की जानेवाली वस्तुएँ, कॉसमेटिक्स, दुल्हन के वस्त्र, फैशन एकसेसरीज, टेलरिंग, विवाह व पार्टी से संबंधित वस्तुएँ, आर्ट गैलरी, बुटीक, कंफेक्शनरी, कॉपर की वस्तुएँ, ड्रेसेज, एम्ब्रायडरी, लेस या जरी, लाकेट्स, रिबन, इनगेजमेंट रिंग, पेस्टेल रंग, नेकलेस से अच्छी आय होगी. साप्ताहांत में घर में झगड़ा व आग से पूर्ण सावधान रहें.

तुला (23 सितंबर से 22 अक्तूबर)



एकादश भाव में चंद्र संचार के कारण आप अपने लक्ष्यों में फेरबदल करेंगी, किंतु किसी संस्था का कार्य आप कुशलता से करेंगी. मित्र व परिचितों से मदद मिलेगी और उनसे तालमेल अच्छा रहेगा. किंतु झूठे मित्र आपसे नाजायज फायदा उठा सकते हैं. 24 तारीख को शुक्र का आपके सूर्यलग्न में प्रवेश भाग्यवर्द्धक है. आप अपने को आकर्षक बनाएँगी, सुंदर वस्त्र पहनेंगी और सांस्कृतिक कार्यक्रमों व उत्सवों में भाग लेंगी, जिससे सुख मिलेगा. अपने आवास व रहन-सहन को सुंदर बनाएँगी. मीठी चीजों को खाने की ओर आकर्षण ज्यादा रहेगा. संगीत से आनंद मिलेगा. फ्लर्टिंग, डेटिंग व सेक्स में अतिरिक्त आनंद रहेगा.

वृश्चिक (23 अक्तूबर से 21 नवंबर)



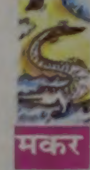
कर्म भाव में सूर्य, चंद्र व बुध के संचार से मास के प्रथम सप्ताह में आपको ख्याति मिलेगी. नौकरी मिल जाएगी या नौकरी में तरक्की होगी. यदि आप राजनीति से जुड़ी हों, तो आपको कोई पद मिल सकता है. आप अपने सर्किल में अग्रणी रहेंगी. आपकी सृजनात्मक महत्त्वाकांक्षा जोरों पर होगी, पर आवेग में आने से बचें. नौकरी बदलने के लिए योग अच्छा है. 9 तारीख के बाद नर्स, स्कूल टीचर, क्रेच चलानेवालों, डेंटिस्ट, बीमा, डॉक्टरों, हेयर ड्रेसरों को पैसे का विशेष लाभ होगा. प्लमबिंग पाइप संबंधी कार्य, प्लास्टर, आंतरिक सज्जा सरलता से निपट जाएँगे. 24 तारीख के बाद ऐथलेटिक्स, नृत्य, मॉ स्विमिंग और पी.टी. से जुड़े जातकों को विशे होगा.

धनु (22 नवंबर से 21 दिसंबर)



चंद्र, सूर्य, बुध के नवम भाव में कारण प्रथम सप्ताह में आप कल्पना औ ख्यालों में खोए रहेंगे. बेचैनी भी हो अंत:प्रेरणा और अंदर की आवाज पर अ ध्यान दिया तो रहस्यमय अनुभव होंगे. कान और भाषा के सीखने व ज्ञानवर्द्धन के लिए बहुत अ चल रहा है. यदि आप किसी विदेशी से लंबी यात्रा या मिले हैं और उससे शादी करना चाहते हैं तो इच्छा पू उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने से संबंधित मामले आ आप गुप्त व एकांत स्थान पर काम करेंगी या समय गुप्त प्रेम सक्रिय होगा. किसी बात या रोग की गहराई पता लगाने व जासूसी करने में आखिरी सप्ताह में सफलता मिलेगी.

मकर (22 दिसंबर से 20 जनवरी)



मास के प्रथम सप्ताह में आपके पा माता या किसी स्त्री के माध्यम से धन लाभ टैक्स, वसीयत, बीमा, बैंक, एक्सरे, केमि पुरातत्त्व से संबंधित मामले आगे बढ़ेंगे. फेफड़ों का ख्याल रखें. सांस्कृतिक कार्य आनंद मिलेगा. 9 तारीख को शुक्र के दशम भाव में प्र आपके सामाजिक जीवन में विशेष उपलब्धियाँ होंगी सफलता मिलेगी. ऐसे व्यक्ति मिलेंगे, जो आपकी मदद के लिए तत्पर रहेंगे. मास के आखिरी सप्ताह में आप लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए परिश्रम करेंगी और स मिलेगी. नए मित्र बनाएँगी, किंतु यह मैत्री ज्यादा दि चलेगी.

कुंभ (21 जनवरी से 19 फरवरी)



कुछ जातक अपना दूसरा या एक औ रखेंगे. व्यवसाय, प्रतिष्ठा से संबंधित समाचार मिलेगा. परिवर्तन या पदोन्नति महत्त्वाकांक्षा पूरी होगी. बॉस से मतभेद है. शुक्र व सूर्य के एकादश भाव में संच फलस्वरूप आपके कुछ कलाकार मित्रों से स मिलेगा. आपमें से कुछ जातक अपने प्रोफेशन के से विवाह करेंगे. आप जो प्राप्त करना चाहती है सितंबर के बाद प्राप्त कर लेंगी. आप चुनौतियों कुशलता से सामना कर लेंगी और सामाजिक का अच्छे ढंग से व्यवस्थित कर लेंगी.

मीन (20 फरवरी से 20 मार्च)



कर्म भाव में शुक्र व सूर्य की स्थि सितंबर के बाद नौकरी व व्यवसाय से सं प्रयासों में सफलता दिलाएगी. प्रमोशन मि सरकारी नौकरी मिल जाएगी. कल चिकित्सा या डॉक्टरी से संबंधित व्यवस तरक्की होगी.

उच्च शिक्षा से संबंधित मामले आगे बढ़ेंगे. दूर से महत्त्वपूर्ण संचार होगा. परिवार और घर पर ज्यादा दिया जाएगा, जिससे घरेलू समस्याएँ सुलझ जाएँगी.

कुछ जातक आवास बदलने में सफल होंगे. मूल्यवान वस्तुओं से संबंधित व्यवसाय में विशेष होगा. ऐंटीक कलेक्शन और उसकी देखभाल के समय शुभ है.

– आचार्य बृह

सितंबर 1997 के व्रत और त्योहार. संवत 2053

तारीख

1. सोमवती अमावस देवपितृकोर्यअमावस, पिठौरी व्रत
7. रवि व्रत, आकाश पंचमी, जैन बड़ी पंचमी
9. महालक्ष्मी व्रत प्रा.
13. जलझुलनी ।। व्रत
16. महालय श्राद्धारंभ




अपनी पॉकेटमनी
से खरीदिए
अपनी सनी
Sunny ZiP
Rs 499/-
*
Sunny ZiP
bajaj
केवल 499 रुपये में
ले जाईए अपना
मनपसंद सनी जिप।
★ शेष राशि 36 ब्याज मुक्त
किश्तो में अदा करें।
• सरल एवं सुविधाजनक फाईनेन्स
• कोई डाक्यूमेन्टेशन या फाईल चार्ज नहीं
• मुफत राईडिग लैसन
आज ही टेस्ट-ड्राइव के लिए
शोरूम में पधारे!
UNITED AUTOMOBILES
DELHI TRUST. COMMITMENT. CARE.
512/2 बी, झील खुरंजा, दिल्ली फोन : 2248111, 2217334
80/ए, राधा पुरी एक्सटेंशन, दिल्ली फोन : 2244780, 222204

RNI No. 65255/
REGD. NO. L/GBD/518/